पिठौरागढ़ सम्भाग की बोली और उसका लोक साहित्य

(इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी० लिट्० उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध)

प्रस्तुतकर्त्ता

डॉ० भवानीदत्त उप्रेती

एम० ए०, डी० फिल्०, डिप्० लिंग्विस्टिक्स

निर्देशक

डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय,

एम० ए०, डी० फिल्०, डी० लिट्०,

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष

हिन्दी तथा भारतीय भाषा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

१९७०

विषय सूची

मानचित्र

विषय - सूची

प्रथम खण्ड

पिठौरागढ़ सम्भाग की बोली

द्वितीय - खण्ड

पिठौरागढ़ सम्भाग का लोक साहित्य

परिशिष्ट

मानचित्र

मान चित्र :-

पिथौरागढ़ सम्भाग

संकेत पत्र

संकेत पत्र

अ	-	स्वर
क	-	व्यंजन
उदा०	-	उदाहरण
पृ०	-	पृष्ठ
। ।	-	स्वनिम प्रकरण में स्वनिम लेख चिह्न
[ ]	-	संस्वन लेख चिह्न
{ }	-	रूपिम लेख चिह्न
। ।	-	रूपिम प्रकरण में संरूप लेख चिह्न
√	-	धातु चिह्न
>	-	यह चिह्न 'पूर्व रूप से बनता है' अर्थद्योतक है।
∽	-	विकल्पात्मक प्रयोग या मुक्त परिवर्तन अथवा 'स्वनिमिक प्रक्रिया से प्रतिबन्धित' लेख चिह्न।
∞	-	'रूपिमिक प्रक्रिया से प्रतिबन्धित' लेख का चिह्न।

भूमिका

भू मि का

०.१ अनुसंधान का उद्देश्य

प्रस्तुत अनुसन्धान का उद्देश्य पिठौरागढ़ सम्भाग की बोली और उसमें प्राप्त लोक साहित्य का अध्ययन करना है।

०.२ अध्ययन की पद्धति

अध्ययन वर्णनात्मक (डिस्क्रिप्टिव) पद्धति से किया गया है। बोली के विश्लेषण में भाषाशास्त्र की अधुनातन प्रविधियों को अपनाया गया है और लोक साहित्य का अध्ययन भी विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है।

०.३ क्षेत्र परिचय

०.३.१ पिठौरागढ़ सम्भाग २४ फरवरी सन् १९६० से अस्तित्व में आया जब इसे एक भिन्न जिला घोषित किया गया। इससे पूर्व यह अल्मोड़े जिले का ही एक भाग था। आलोच्य सम्भाग हिमालय के उत्तरी भाग में तिब्बत से और पूर्व में नेपाल राज्य से मिला हुआ है। पश्चिम में चमोली तथा अल्मोड़े जिले के पर्वतीय प्रखण्ड एवं दक्षिण में भी अल्मोड़े जिले का भाग है। यह २९.५° अक्षांश उत्तरी से ३०.९ अक्षांश उत्तरी तथा ८०° पूर्वी देशान्तर से ८१° पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसका क्षेत्रफल ३०८८ वर्गमील तथा सन् १९६१ की जनगणना के अनुसार जनसंख्या ६२१५९ है। उत्तरी भाग में बीस हजार फीट से भी अधिक ऊंची हिमालय की अनेक हिमाच्छादित चोटियां हैं। उनसे अनेक वेगवती नदियां निकलती हैं। यहां की जलवायु ठण्डी और स्वास्थ्यप्रद है। संप्रति यह संभाग चार तहसीलों -- पिठौरागढ़, डीडीहाट, धारचूला और मुन्स्यारी में विभाजित है।

०.३.२ आलोच्य भाग मूलत: कुमाऊं मण्डल का भाग है। यहां के मूल निवासियों के विषय में विभिन्न मत हैं। प्रागैतिहासिक काल में किन्नर, यक्ष, गन्धर्व आदि जातियों का होना माना जाता है। एटकिन्सन का मत है कि किरात जाति का सम्बन्ध गन्धर्वों और किन्नरों से था।[१] इनको उन्होंने विदेशी

१- हिमालयन डिस्ट्रिक्ट्स (जिल्द ११, पृ० ३३६)।

माना है । आज भी पिठौरागढ़ के अस्कोट क्षेत्र में "राजी" लोग रहते हैं उनको इन्हीं का वंशज समझा जाता है । वर्तमान `नायक` और `डूम` जातियां सम्भवत: गन्धर्व, यक्ष आदि के वंशज हैं जो परवर्ती जातियों की क्रमिक दासता के कारण हीन अवस्था तक पहुंच गये ।[1] आदिम निवासियों में नाग जाति की गणना होती है किन्तु उन्हें किरातों के बाद आने वाला कहा गया है ।[2] इन लोगों की भाषा के कुछ अवशेष कुछ देशज शब्दों में देखे जा सकते हैं । राहुल सांकृत्यायन देवतावाचक `शु` (सु) शब्द को किन्नर-किरात शब्द मानते हैं ।[3] नागों का प्रभाव भी विविध रूपों में लक्षित होता है । अनेक त्यौहार और व्रत इनसे संबंधित हैं तथा नाग मन्दिर भी इसी की पुष्टि करते हैं ।

०.३.३ यहांकी सबसे प्रसिद्ध जाति "खसों की है । राहुल जी के अनुसार यह जाति सम्भवत: ईसा पूर्व द्वितीय सहस्राब्दी के आरंभ में मध्य एशिया की ओर से आई ।[4] यह जाति किसी समय सम्पूर्ण हिमालय के पर्वतीय भाग में फैली हुई थी । ग्रियर्सन के अनुसार हिमालय के निचले भाग में कश्मीर से लेकर दार्जिलिंग तक आर्य भाषा बोलने वाली जनसंख्या उसी खस जाति की वंशज है जिसका वर्णन महाभारत में है ।[5] वर्तमान समय में खश लोगों के वंशज महत्वपूर्ण जातियों में से हैं । इन्हें क्षत्री कहा जाता है । ये स्वयं को राजपूत भी कहते हैं ।

०.३.४ वर्तमान ब्राह्मण, क्षत्री आदि जातियां बाद में आयीं । शक जाति का यहां आगमन प्राय: निश्चित ज्ञात होता है । आज भी पिठौरागढ़ के मुन्स्यारी और धारचूला क्षेत्रों में रहने वाली एक जाति "शौका" कहलाती है । सम्भवत: यह शक जाति से सम्बन्धित है । `शौका` लोग `भोटिया` भी कहलाते हैं । इन्हीं क्षेत्रों में `हुनिया` या `हुणिया` लोग भी पाये जाते हैं । इनका आचार-

---

१- कुमाऊं का लोक साहित्य : डा० त्रिलोचन पाण्डेय, पृ० ४४ ।

२- हिमालय डिस्ट्रिक्ट्स -- एटकिन्सन । जिल्द २। पृ० ३६३ ।

३- कुमाऊं -- राहुल सांकृत्यायन, पृ० २५ ।

४- वही, पृ० २७ ।

५- भारत का भाषा सर्वेक्षण -- जिल्द ९, भाग ४, पृ० ८ ।

व्यवहार, भाषा आदि तिब्बतियों से मिलता-जुलता है। मध्यकाल में भारत के अनेक भागों से अनेक जातियां इस ओर आईं। अनेक लोग राज सम्मान पाकर राज-गुरु या पुरोहित के रूप में भी आये। यह वर्ग ब्राह्मणों का है जिसका कार्य अब भी पौरोहित्य कार्य करना समझा जाता है। यहां का व्यापारी वर्ग 'शाह' लोगों के नाम से प्रसिद्ध है।

१.३.४क. यहां के लोगों का प्रमुख व्यवसाय खेती है किन्तु खेती से पूर्णतः जीविका नहीं चलती। अतः ग्रामों में परिवार के कुछ लोग कृषि कार्य देखते हैं और शेष नौकरी या व्यापार करते हैं। शहरों या कस्बों में कुछ लोग व्यापार तथा कुछ नौकरी करते हैं। छोटे-छोटे व्यवसाय भी लोग कर लेते हैं। प्रस्तुत क्षेत्र का पुरुष जनसंख्या का एक बड़ा भाग सेना में सेवा करता है।

१.३.५ प्रस्तुत क्षेत्र के लोगों का जीवन परिश्रम प्रधान और सीधा-सादा है। स्त्री पुरुष दोनों ही बाहर भीतर साथ-साथ कठोर परिश्रम के अभ्यस्त होते हैं। स्त्रियां विशेष परिश्रमी होती हैं। धार्मिक प्रवृत्ति के कारण सच्चाई एवं ईमानदारी के पालन में महत्व का अनुभव करते हैं। परस्पर स्नेह तथा सहयोग की भावना से कुटुम्ब की भांति जीवन यापन यहां के लोगों की विशेषता है। इस भाग में कोई बड़ा शहर नहीं है। आज पिठौरागढ़ एक कस्बा-सा है। अन्य प्रधान स्थलों में कुछ दुकानें, स्कूल, डाकखाना, अस्पताल आदि ही मिलते हैं और जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है। ग्राम छोटे-छोटे हैं। बहुत से ग्रामों में दो-चार घर ही हैं। ग्राम दूर-दूर पर्वतीय ढालों या घाटियों में जहां जल, धूप आदि जीवन की सुविधाएं मिलती हैं, बसे हुए हैं। अपनी आवश्यकता की सामग्री को लोग अदला-बदली द्वारा प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। जैसे "शौका" नामक लोग नमक [illegible] देते हैं और उसके बदले [illegible] चावल देते हैं।

१.३.६ स्वभाव से धार्मिक होने के कारण यहां के लोग दान, धर्म, तीर्थ यात्रा एवं पूजा-पाठ आदि पर विशेष महत्व देते हैं। स्थान-स्थान पर कथाएं और पूजन होते रहते हैं। स्थल-स्थल पर देवी-देवताओं के थान (देवस्थल) बने हुए हैं जहां विशेष तिथियों पर मेले लगते हैं अथवा कुछ थानों में केवल पूजा होती है। कुछ मेले व्यापारिक दृष्टि से भी लगते हैं। इनमें जौलजीबी नामक स्थान पर लगने वाला मेला बहुत प्रसिद्ध है जो १४ नवम्बर से आरम्भ होकर दस दिन तक रहता है। इस मेले में नेपाली

भोटिये आदि के साथ दिल्ली, कलकत्ता आदि दूरस्थ स्थानों से भी व्यापारी आकर लेन-देन करते हैं । धार्मिक विचार से भीष्टमाणू, थल केदार, ध्वज, कालिका, रामेश्वर आदि देवस्थलों पर मेले लगते हैं जिनमें प्रमुखत: देवपूजन होता है और गौण रूप से लेन-देन भी होता है । त्यौहारों में हिन्दू-धर्म- हिन्दुओं के आम त्यौहार प्राय: सभी मनाये जाते हैं । घुघुती, खतुड़वा, फूलदेई, हर्याली आदि यहां के विशेष त्यौहार हैं ।

0.1.7 यहां धान, गेहूं, जौ, उड़द आदि अनाज होते हैं । अपनी आवश्यकता के लिए पूरा अनाज उत्पन्न नहीं होता है और भोजन के लिए मैदानी भागों पर निर्भर रहना पड़ता है । भोजन में प्रात: चावल और सायंकाल रोटी रहती है । स्थानीय अनाजों में महत्व, भट, मडुवा, मदिरा, कौनी आदि हैं । काफल, हिसालु, किल्मोड़ी आदि फल प्रचुर मात्रा में वनों में पाये जाते हैं । सेव, नाशपाती, आड़ू, खुबानी, अनार, अखरोट आदि फल लगाये और प्राप्त किये जाते हैं । सब्जियों में आलू, मूली, कद्दू, लौकी, तोरई, मीठा करेला, तीता करेला, आदि उत्पन्न होते हैं । कंदों में गेठ, कुछ तेडुन और गेठि प्रमुख हैं । ये जंगलों में भी मिलते हैं और बस्तियों में उत्पन्न भी किये जाते हैं । अधिकांश लोग मांसाहारी हैं और वे प्राय: बकरी का मांस लेते हैं । प्राप्त होने पर मछली भी लेते हैं । कुछ ब्राह्मण पुरोहित मांस, प्याज, लहसुन आदि से हमेशा दूर रहते हैं ।

0.1.8 छूत-छात की भावना का अब भी पर्याप्त प्रभाव है । उच्च वर्ग के पुरानी पीढ़ी के लोग शूद्रों द्वारा छुए जाने पर अब भी जल छिड़ककर शुद्धि करते हैं । नित्य धुली हुई धोती पहन कर भोजन करते हैं । भोजन के समय बिना जनेऊ संस्कार वाले तथा अन्य जाति के लोग भी अछूत समझे जाते हैं । ब्राह्मण क्षत्रियों के हाथ का बना खाना नहीं खाते हैं और शूद्रों का छुआ जल भी नहीं पीते हैं । रजस्वला होने पर स्त्रियों को अछूत समझा जाता है और उनसे छू जाने पर गोमूत्र छिड़ककर शुद्धि की जाती है ।

0.1.9 आभूषणों में नथ को बहुत महत्व दिया जाता है । पहुंची, झांवर, ठीप या गलूबन्द, लच्छे, बिछुवे, धुवांकी आदि अन्य विशिष्ट आभूषण हैं । किन्तु शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ आभूषणों का प्रयोग सीमित होता चला रहा है । चरेऊ ।काले मोती के समान दानों की माला। सुहाग का चिह्न समझा जात

जाता है। `नथ' और `चरेऊ' विधवा स्त्रियां नहीं पहनती हैं। मूंगे की माला, चांदी के रुपए, अठन्नी-चवन्नी की माला तथा चांदी की जंजीर का भी प्रचलन है। आभूषणों का लोक देवताओं की पूजा में भी स्थान मिला है। कुछ आभूषण देवताओं के नाम पर बनाकर रख दिये जाते हैं। धार्मिक संस्कारों, मेलों, उत्सवों तथा मांगलिक कार्यों के अवसरों पर यहां की स्त्रियां अपने पूरे आभूषण पहनती हैं।

०.२.१० मनोरंजन की दृष्टि से मेले, उत्सव, त्यौहार, आदि के साथ-साथ लोक-गीत, लोक-गाथा, लोक-कथा, लोकोक्ति आदि का स्थान है। राम लीला, नाटक का अभिनय सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व के साथ-साथ मनोरंजन का साधन भी बनता है। इस नाटक का अभिनय बड़े उत्साह से स्थान-स्थान पर तथा समय-समय पर होता है और इसका प्रमुख समय दशहरे के आसपास रहता है। खाली समय में स्त्रियां एकत्र होकर जंगलों में लकड़ी, घास आदि के लिए जाती हैं और प्रकृति के मध्य अपने परिश्रम को भूल जाती हैं।

०.२.११ खश, नाग, किरात आदि का ऊपर उल्लेख हुआ है। खश लोग किन्नर, किरात जाति की प्रधानता के बाद धीरे-धीरे यहां सर्वेसर्वा हो गये। महाभारत के युद्ध में खश लोग सात्यकि (कौरवपक्षीय) के साथ लड़े थे।[1] मनु ने भी खशों का उल्लेख किया है।[2] खश, खस, और कस एक ही शब्द के भिन्न-भिन्न उच्चारण है। नेपाल से कश्मीर तक की प्रभावशाली जातियां अब भी खस या कस (कश्मीरी) से पुकारी जाती हैं।[3] खश और शक मूलत: एक जाति थी।[4] किरातों और खशों के बाद वैदिक आर्यों का इस ओर आगमन हुआ। हिमालय का प्रथम राजवंश कत्यूरी रहा है। राहुल जी ने कत्यूरी राजवंश का शासन काल ८५०-१०५० ई० होने की बात कही है।[5] कुछ कथनों के अनुसार कत्यूरी शासन दो-तीन हजार वर्ष रहा

१- महाभारत द्रोण पर्व १२१।४३, उद्योग पर्व १६०।१०३।

२- कुमाऊं -- राहुल सांकृत्यायन, पृ० २७।

३- वही, पृ० २८।

४- वही, पृ० ३०।

५- वही, पृ० ३०।

और यह शासनकाल केवल ७०० ई० तक रहा ।[1] कत्यूरी शासन के छिन्न-भिन्न होने पर चंदवंशी राजाओं का शासन हुआ । चन्दों का शासन सन् १७९० तक रहा जब गोरखों ने चन्दों को हराकर इस भाग पर अपना अधिकार कर लिया । गोरखों के उक्त शासन से पूर्व भी सोर क्षेत्र में बम, वर्मा या ब्रह्म राजवंश की सत्ता थी । यह राजवंश डोटी की ही शाखा थी । इनकी राजधानी पिथौरागढ़ के पास उदयपुर थी, किन्तु जाड़ों में ये धूमतप्पी के लिए रौल पट्टी में रामेश्वर की ओर बेलौरकोट में जाया करते थे जहां इनके महलों के खंडहर मौजूद हैं ।[2] चन्द राजाओं के शासनकाल में सुधार और उन्नति के कार्य हुए, गोरखों का राज्य १७९० से १८१५ ई० तक ही रहा, गोरखों का शासन एक प्रकार से सैनिक शासन था । इनका शासन अत्याचार के लिए कुख्यात है । १८१५ ई० में अंग्रेजों द्वारा ये पराजित हुए और तबसे शेष भारत के साथ इस भाग का सम्बन्ध हुआ । अंग्रेजी शासन में इस भाग की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया यद्यपि साथ में लगे हुए पश्चिमस्थ अल्मोड़ा, रानीखेत, नैनीताल, आदि स्थलों को आकर्षक तथा शिक्षा-सम्पन्नता से युक्त बनाने में पर्याप्त प्रयत्न किये गये । स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व आलोच्य क्षेत्र में कोई भी पक्की सड़क या मोटर यातायात का साधन नहीं था । स्वतंत्रता के उपरान्त सन् १९५१ में इस भाग में सर्वप्रथम मोटर वाहनों का प्रवेश हुआ । चीन द्वारा तिब्बत को हड़प लेने के उपरान्त उस की गतिविधियों से सतर्क रहने की दृष्टि से सन् १९६० में इस भाग को जिलास्तर की एक भिन्न इकाई माना गया और केन्द्र तथा राज्य सरकारों द्वारा विकास के विविध प्रयास आरम्भ किये गये जिसके फलस्वरूप अब यहां पूरे जनपद में पश्चिम से पूर्व तथा दक्षिण से उत्तर तक पक्की सड़कें बनाई जा रही हैं और आवागमन की सुविधायें विस्तृत हो रही हैं । शिक्षा, चिकित्सा, कृषि, बागवानी आदि की ओर भी ध्यान दिया जा रहा है ।

०.४ भाषा

०.४.१ आलोच्य संभाग की भाषा कुमाऊंनी का एक भेद है जिसके अन्तर्गत बोलियों के रूप में अनेक रूपान्तर मिलते हैं । कुमाऊंनी की अनेक विशेषताएं इसमें

१- कुमाऊं का इतिहास -- बद्रीदत्त पाण्डेय, पृ० १८ ।

२- कुमाऊं -- राहुल सांकृत्यायन, पृ० ७३ ।

मिलती है किन्तु इस पर समीपस्थ भाषा नेपाली का भी पर्याप्त प्रभाव है। साथ ही इसकी अपनी उल्लेखनीय विशेषताएं हैं। अभी तक यहां की बोली को कुमाऊंनी के अन्तर्गत परिगणित करके ही सन्तोष कर लिया गया है जबकि आलोच्य बोली तत्वतः वैभिन्य रखती है। उदाहरणतः कुमाऊंनी में जो राजस्थानी के प्रभाव की बात कही जाती है और उसकी पुष्टि के लिए उसमें `ण` और `ळ` की उपस्थिति दिखाई जाती है[1] अथवा परसर्ग `को` स्थान पर `कणि` के प्रयोग की जो कुमाऊंनी की विशेषता कही जाती है,[2] वह पिठौरागढ़ की प्रमुख बोली के लिए लागू नहीं होती है। `ण` के स्थान पर यहां `न` तथा `ळ` का व्यवहार नहीं होता है। परसर्ग `को` के लिए `श` या `स` व्यवहार्य है। फिर भी यह अभिप्राय नहीं है कि आलोच्य बोली कुमाऊंनी नहीं है वरन् कथनीय है कि कुमाऊंनी बोलियों को कम से कम तीन वर्गों में रखा जा सकता है। पहले वर्ग में अल्मोड़े की बोलियां जिनके अन्तर्गत `खसपरजिया`, `फल्दा कोटिया`, तथा `पछाईं बोलियां आती हैं। दूसरे वर्ग में नैनीताल की कुमाऊंनी, रामपुर की भाबरी कुमय्यां, चौगरखिया, गंगोली बोली और दानपुरिया का उल्लेख हो सकता है। तीसरे वर्ग में सोर्याली, अस्कोटी, सीराली, जोहारी, दरमियां और कालिपारी बोलियां मुख्य हैं। इस बात की ओर जार्ज ग्रियर्सन का भी ध्यान गया था और उन्होंने अपने भाषा सर्वेक्षण में कुमाऊंनी के उक्त त्रिवर्गीय वैभिन्य को स्वीकार भी किया है।[3] उपर्युक्त तीसरे वर्ग की बोलियां पिठौरागढ़ क्षेत्र की बोलियां हैं जिन्हें समूह रूप में प्रस्तुत अध्ययन में "पिठौरागढ़ की बोली" या "पिठौरगढ़ी" नाम से अभिहित किया गया है। पिठौरागढ़ क्षेत्र के अन्तर्गत गंगोली क्षेत्र भी सम्मिलित है, अतः साथ-साथ गंगोली बोली का भी विश्लेषण विवेचन हुआ है।

१- ग्रामीण हिन्दी -- डा० धीरेन्द्र वर्मा, पृ० ८३;
   हिन्दी भाषा -- डा० भोलानाथ तिवारी, पृ० ३१४।
   हिन्दी उद्भव, विकास और रूप -- डा० बाहरी, पृ० ८६ आदि
२- हिन्दी उद्भव, विकास और रूप -- डा० बाहरी, पृ० ८२।
३- भारत का भाषा सर्वेक्षण -- सर जार्ज ग्रियर्सन,
   जिल्द ६, भाग ४, पृ० १०२।

०.४.२ पिठौरागढ़ क्षेत्र का नेपाल के पश्चिमी भाग से जिसे डोटी कहते हैं, घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। यह सम्बन्ध सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक आदि अनेकश: अब भी चला आ रहा है। उन्नीसवीं शताब्दी से पूर्व लगभग साढ़े तीन सौ वर्ष तक इसके और क्षेत्र का डोटी से राजनैतिक सम्बन्ध भी समीपस्थ रूप में रहा है[1]। ~~उन्नीसवीं शताब्दी से पूर्व लगभग साढ़े~~ अत: भाषा विषयक तत्वों की दृष्टि से भी सम्बन्ध रहना अस्वाभाविक नहीं है। पिठौरागढ़ के एक बड़े भाग में, जो धारचूला से लेकर उत्तर में तिब्बत से मिला है, जिन भोटिया बोलियों का व्यवहार होता है, वह हिन्दी या कुमाऊँनी से किसी रूप में साम्य नहीं रखती हैं। अपितु वह तिब्बत बर्मी परिवार की भाषाएं हैं। चीनी आक्रमण से पूर्व बहुत से तिब्बती पिठौरागढ़ के अनेक भागों में लेन-देन के लिए आया जाया करते थे और इस प्रकार तिब्बतियों के साथ इस क्षेत्र के भाषा भाषियों का बहुत पहले से निकट का सम्बन्ध रहा है। व्याँस और दारमा उपक्षेत्रों के लोग तो गर्मियों में हिमालय के ऊँचे स्थानों में रहते थे और जाड़ों में निचले स्थानों में आ जाते थे जिससे दो भिन्न भाषाओं -- भोटिया और पिठौरागढ़ी को परस्पर संयोग में आने का निरन्तर सुयोग मिलता रहा। इस क्षेत्र के ऊँचे-ऊँचे पर्वत और वेगवती नदियां भी एक स्थान की भाषा को दूसरे स्थान की भाषा से निकटत: भिन्नता प्रदान करने में सहायक रही है। यही कारण है कि पिठौरागढ़ के उत्तर-पश्चिमी उपक्षेत्र मुन्स्यारी की बोली तिब्बती, गढ़वाली और कुमाऊँनी का मिश्रण लिए हुए है किन्तु ऊँची पर्वत श्रेणियों के पार उत्तरी उप जनपद धारचूला के उत्तरी भाग की बोली समीपस्थ होते हुए भी नितान्त भिन्न है।

०.४.३ विवेच्य संभाग की बोली में ध्वनियों और शब्दावली की दृष्टि से बंगाली पंजाबी, मराठी, गुजराती आदि दूरवर्ती भाषाओं के भी अनेक तत्व मिलते हैं। क्रिया के साथ 'छ' का प्रयोग बंगाली, गुजराती आदि भाषाओं से मिलता है। 'कथाँ', 'यथाँ', 'उथाँ', 'आदि -- पंजाबी के कित्थे, इत्थे, उत्थे आदि के निकट है,

---

१- हिमालय डिस्ट्रिक्ट्स गजट, जिल्द २, पृ० ५२८ और
कुमाऊँ -- राहुल सांकृत्यायन, पृ० ७२ ।

इत्यादि । यही नहीं द्रविड़ भाषाओं के भी कुछ तत्व, विस्तृत मराठी और हिन्दी प्रदेशों को पार करके यहां मिलते हैं । व्यंजन ध्वनियों के परस्पर पास आने पर संयुक्तत्व की प्रवृत्ति, पुल्लिंग नामों का उकारान्त मिलना, ह्रस्व `ए`, `ओ` की सत्ता आदि पिठौरागढ़ी और तमिल दोनों में समान हैं, यद्यपि हिन्दी की भी कुछ अन्य बोलियों में ह्रस्व `ए` और ह्रस्व `ओ` का व्यवहार होता है । पड़ि [लेटना], मट्ट [बुरा] आदि शब्द तमिल में भी इसी रूप में मिलते हैं । इस प्रकार आलोच्य बोली विभिन्न भाषाओं की ध्वनि एवं शब्दावली सम्बन्धी अ अत्यन्त रोचकता विमिश्रित सामग्री प्रस्तुत करती है जिसका अध्ययन हिन्दी भाषा की समृद्धि ही नहीं देश की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक आदि स्थितियों से सम्बन्धित अब तक अज्ञात अनेक बातों का उद्घाटन कर सकता है । यहां की समृद्ध भौगोलिक, वानस्पतिक आदि शब्दावली हिन्दी तकनीकी शब्दावली को समृद्ध करने में योग दे सकती है । हिन्दी की अपेक्षा इस बोली की अभिव्यंजनात्मकता पर्याप्त महान है ।

०.४.४ उपर्युक्त अन्तर्परिस्थितियों के साथ-साथ उल्लेख्य है कि आधुनिक शिक्षा प्रसार के समानान्तर यहां की बोली में तीव्रगति से परिवर्तन हो रहे हैं । प्राकृत ध्वनियां, रूपतत्व, मूल शब्दावली आदि लुप्तोन्मुख हैं । यदि समय रहते इस ओर ध्यान न दिया जाय तो वर्तमान पुरानी पीढ़ी के समाप्त होते-होते, आलोच्य जनपद में उपलब्ध महत्वपूर्ण भाषा सामग्री से सदा के लिए अपरिचित रहना पड़ेगा । यदि हिन्दी में इस बोली की ध्वनियों शब्दावली आदि का उपयोग किया जा सके तो उसकी समृद्धि में उल्लेखनीय योगदान प्राप्त होगा । इस दृष्टि से विवेच्य क्षेत्र की बोली के अध्ययन का महत्व निर्विवाद है ।

०.४.५ आलोच्य क्षेत्र की बोली के दो प्रमुख भेद हैं -- एक सोर्याली बोली और दूसरा गंगोली बोली । इन्हीं के अन्तर्गत अन्य रूपान्तर हैं । सोर्याली में गंगोली की अपेक्षा मृदु ध्वनियां मिलती हैं । यहां गंगोली `ड़` के स्थान पर `र`, `ण` के स्थान पर `न` प्रायः मिलता है । पूर्वी क्षेत्रों में सहायक क्रियाओं में `छ` के स्थान पर `थ` मिलता है । सोर्याली में तालव्यीकरण की प्रवृत्ति विशेष परिलक्षित होती है । सोर्याली पर ही डोट्याली का प्रभाव मिलता है । बोलियों ~~का~~ इस प्रकार का विभाजन दक्षिण में स्थानीय रामगंगा के आसपास के स्थानों से

दोनों ओर चलने पर मिलता है। बोली में दूसरा विभेद जातिगत है। ब्राह्मणों की भाषा, क्षत्रियों की भाषा से कुछ सीमा तक अन्तर लिए रहती है। यह अन्तर्ध्वनि एवं रूपात्मक दोनों प्रकार का है।

0.५ लोक साहित्य

भाषा की भांति ही आलोच्य क्षेत्र का लोक साहित्य अपनी विशेषताएं समेटे हुए है। शताब्दियों तक इस भाग पर डोटी के राजवंशों की सत्ता रही है। अब भी अस्कोट के रजवाड़े, पाल, चन्द आदि के पारिवारिक सम्बन्ध डोटी (नेपाल) में होते हैं। अतः भाषा के साथ साहित्य -- लोक साहित्य पर भी नेपाली ..... प्रभाव होना स्वाभाविक है। सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक क्षेत्र में यह प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। प्रस्तुत लोक साहित्य में लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा तथा लोकोक्तियों की एक सुलभ संचिति मिलती है। लोक साहित्य की उक्त विधायें स्थानीय तत्वों से युक्त है और गहनता एवं ग्राह्यता का दोनों में समूह है।

0.६ लिपि

आलोच्य भाषा मराठी की भांति देवनागरी में ही लिखी जाती है। ध्वनि संबंधी विशेषताओं के कारण उच्चारण के अनुकूल लिप्यंतर नहीं हो पाता है और ठीक ठीक उच्चारण के लिए प्रत्यक्ष श्रवण और बोलने में अभ्यास की आवश्यकता रहती है।

0.७ अध्ययन की सीमा

प्रस्तुत अध्ययन पिठौरागढ़ संभाग की आर्य परिवार की बोलियों तक ही सीमित है। इस प्रकार का कथन इसलिए उल्लेख्य है कि आलोच्य क्षेत्र में आर्येतर परिवार की बोलियां भी व्यवहृत होती है। उदाहरणार्थ पिठौरागढ़ के उत्तरी सीमान्त पर स्थित व्यांस, चौदांस और दारमा प्रभागों में बोली जाने वाली भोटिया बोलियां आर्य परिवार की न होकर तिब्बत बर्मी परिवार से सम्बन्ध रखती है। ये बोलियां पृथक अध्ययन का विषय है। लोक साहित्य भी उक्त बोली का विवेच्य रहा है।

0.८ अध्ययन का आधार

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्रीय कार्य के फलस्वरूप प्राप्त सामग्री पर आधारित है।

प्रथम तो लेखक भी ही आलोच्य क्षेत्र का निवासी तथा उस क्षेत्र का भाषा-भाषी है। इस पर भी पूरे क्षेत्र का एकाधिक बार भ्रमण कर महत्वपूर्ण विशेषताओं तथा रूपान्तरों का अध्ययन लेखक ने स्वयं किया है। इसके लिए अध्येय क्षेत्र में दूर-दूर स्थित प्रमुख आवासों को केन्द्र बनाकर वहां के निवासियों के मुख से पूर्ण उच्चारों के लगभग पांच सौ नमूने एकत्र किये गये हैं। ऐसे केन्द्रों की संख्या बारह रखी गयी है। स्वतंत्र उच्चारों के अतिरिक्त प्रमुख लोकगीत, लोक गाथा-कथा, लोकोक्तियां एवं शब्दावली की राशि को भी विश्लेषण विवेचन के समय सामने रक्खा गया है। सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, धार्मिक आदि दृष्टि से निरखने परखने की चेष्टा की गयी है। लोक-साहित्य के संकलन में हस्तलिपियां भी प्रभूत रूप में उपलब्ध हुई हैं और अधिकांश को सुनकर लिप्यन्तर किया गया। ध्वनियों के संबंध में अन्नामलै विश्वविद्यालय एवं आगरा विश्वविद्यालय स्थित भाषा विज्ञान की प्रयोगशालाओं की सहायता भी एकाधिक बार ली गयी।

0.६ प्रस्तुत अध्ययन

0.६.१ प्रस्तुत अध्ययन पिठौरागढ़ संभाग की बोली और उसके लोक साहित्य से सम्बन्धित है। अध्ययन दो खण्डों में पूरा हुआ है। प्रथम खण्ड में उक्त क्षेत्र की बोली का भाषाशास्त्रीय विवरणात्मक अध्ययन है और दूसरे में विवेच्य बोली के लोक साहित्य का विश्लेषण एवं विवेचन किया गया है। यह विषय इतना महत्वपूर्ण और सुविस्तृत ज्ञात हुआ है कि वर्णनात्मक सीमा के अन्तर्गत ही प्रत्येक खण्ड तो क्या प्रत्येक प्रकरण, का अध्याय एक-एक शोध प्रबन्ध से कहीं अधिक क्षमता रखता है। यह बात भाषा की ध्वनि, रूप, रूपध्वनि, वाक्य, बोली विभेद, शब्दावली तथा लोक साहित्य की विधाओं -- लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकोक्ति आदि सभी के विषय में कथ्य है। ऐसी स्थिति में विश्लेषण एवं विवेचन के फलस्वरूप प्राप्त परिणामों को संक्षिप्त तथा सुस्पष्ट रूप में प्रस्तुत करने की चेष्टा की गयी है, अन्यथा प्रबन्ध का कलेवर असीमित रूप से बढ़ सकता था। सर्वत्र वैज्ञानिक दृष्टिकोण समक्ष रक्खा गया है। उदाहरण भी उतने दिये हैं जो परम आवश्यक हैं।

0.६.२ आलोच्य क्षेत्र की बोलियों और लोक साहित्य के अध्ययन का यह प्रथम एवं मौलिक प्रयास है। लोक साहित्य की अपेक्षा बोली के अध्ययन को स्वभावतः प्रधान महत्व दिया गया है। इसके मूल में लेखक की प्रवृत्ति एवं प्रवृत्ति भी रही है।

प्रस्तुत अध्ययन के पूर्व उक्त बोली के संबंध में कुमाऊंनी के नाम से छिट-पुट प्रयास हुए हैं किन्तु स्वतन्त्र अध्ययन इसका तो क्या कुमाऊंनी का भी विस्तृत विवरणात्मक अध्ययन अभी तक नहीं हो सका है। अतः विषय का महत्व एवं शोध-प्रबंध की मौलिकता तथा उपयोगिता स्वतः प्रकट है।

0.8.3 प्रस्तुत अध्ययन के प्रथम खण्ड में छः प्रकरण तथा द्वितीय खण्ड में पांच प्रकरण रक्खे गये हैं।

0.8.3.1 प्रथम खण्ड के प्रथम प्रकरण में पिठौरागढ़ की बोली का ध्वनितात्विक विवेचन है। ध्वनियों का विवरण, स्वनिमों का निर्धारण, संस्वन-विवेचन, खण्डेतर ध्वनियों का उल्लेख आदि पर विचार करके बोली की ध्वनि एवं स्वनिम विषयक स्थिति स्पष्ट करने की चेष्टा की गयी है।

0.8.3.2 ध्वनि एवं स्वनिमों के उपरान्त रूप स्वनिमिक [मौर्फोफोनेमिक] परिणाम अंकित किए गये हैं। इसमें लेखक का दृष्टिकोण नितान्त नवीन रहा है और कुछ नये प्रयोग और प्रविधियां स्पर्शित हैं। हिन्दी व की बोलियों के अध्ययन में इस पर प्रायः अत्यल्प विचार किया गया है। रूप स्वनिमिक अध्ययन को प्रायः सन्धि कह दिया जाता है, जबकि यह प्रसंग संधि से कहीं अधिक विस्तृत है और सन्धि प्रक्रिया उसका एक अंग मात्र है। तब भी इस प्रकरण को अत्यन्त संक्षिप्त रक्खा गया है।

0.8.3.3 तीसरे प्रकरण में रूप प्रक्रिया [मौर्फोलोजी] पर विचार किया गया है। वस्तुतः यही सबसे प्रमुख भाग है जिस पर विचार करने का सर्वाधिक अवसर मिला है। भाषा की इकाई यद्यपि वाक्य है तथापि शब्दों की स्थिति भी वाक्य में संघटनात्मक है। शब्दों का वाक्य में प्रयोग रूप प्रक्रिया का विषय है। अतः प्रयोग और प्राप्ति दोनों की दृष्टि से इस विषय का विवेचन-विश्लेषण किया गया है। सुविधा के लिए प्रकरण को तीन भागों में रक्खा है। पहले में व्युत्पादक प्रत्यय, दूसरे में रूपसाधक प्रत्यय तथा तीसरे में परसर्गादि वर्णित हैं।

0.8.3.4 रूप प्रक्रिया के उपरान्त आलोच्य बोली का वाक्य ले लिया गया है। वाक्य की दृष्टि से हिन्दी की बोलियों का अध्ययन अभी तक अछूता है।

यह अत्यन्त विस्तृत एवं स्वतंत्र अध्ययन का विषय है। यहां संक्षेप में वाक्य भेद, विश्लेषण, रचना, संघटन, अन्वय, अधिकार आदि पर विचार किया गया है। वाक्य में सुर लहरियाँ [इन्टोनेशन्स] का विशेष महत्व परिलक्षित होता है। यथास्थान उन पर भी दृष्टि रक्खी गयी है।

०.६.३.५ पर्वतीय प्रदेश होने से यहां बोलियों में थोड़े-थोड़े अन्तर से भेद मिलता है। एक ही स्थान पर विभिन्न जातियों में परस्पर बोलीगत वैभिन्य है। स्थानगत एवं जातिगत उक्त वैभिन्य को `बोली विभेद` शीर्षक से वर्णित किया गया है। प्रत्येक ~~प्रमुख~~ प्रमुख विभेद के विवेचन के साथ उपयुक्त उदाहरण उल्लिखित है।

०.६.३.६ प्रथम खण्ड के अन्तिम प्रकरण में शब्दावली का अवलोकन ~~किया~~ किया गया है। शब्दावली, उसका वर्गीकरण विविधता, विशेषतायें आदि पर विचार हुआ है। वर्गीकरण का आधार मौलिक एवं प्रकृति एवं प्रवृत्त्यानुसार है।

०.६.३.७ अध्ययन का दूसरा खण्ड लोक साहित्य विषयक है। कलेवर बढ़ जाने के भय से संक्षिप्तता ही ग्राह्य रही है। संक्षिप्त एवं उपयुक्त विवेचन के साथ अत्यावश्यक उदाहरण दिये गये हैं। इस खण्ड का प्रथम प्रकरण स्थानीय लोक साहित्य के ~~के~~ सामान्य विवेचन से सम्बन्धित है। इसमें उपलब्ध लोक साहित्य का महत्व, वर्गीकरण आदि परिदृष्ट हुआ है।

०.६.३.८ दूसरे प्रकरण में लोकगीत अध्ययन के विषय बने हैं। यहां लोकगीत, उनका वर्गीकरण और विश्लेषण एवं विवेचन उल्लिखित है। लोकगीतों की धारा अनादि और अनन्त की भांति ज्ञात होती है। इनका उद्गम कब हुआ और कहां तक प्रवाह रहेगा, यह कहना सम्भव नहीं है। प्रस्तुत प्रकरण दो भागों में विवेच्य रहा है। पहले में उन लोकगीतों पर विचार किया गया है जो परम्परागत रूप से लोक मानस में चले आ रहे हैं और उनके रचयिता का कोई पता नहीं लग सकता है दूसरे में उन गीतों और कविताओं को लिया गया है जिनके रचयिता के बारे में ज्ञात है। इन गीतों के साथ इनके रचयिताओं का उल्लेख भी कर दिया गया है।

०.६.३.९ लोक साहित्य के तीसरे प्रकरण में लोक गाथाओं पर विचार है। लोक गाथाओं का विषय अत्यन्त विस्तृत है। इनका प्रभाव लोक की रुचि, धर्म, जाति, आदि पर स्पष्ट परिलक्षित होता है। ये गाथायें हिन्दू पुराण कोटि की हैं। इनमें सत्य के अंश के साथ-साथ कल्पना का मिश्रण रहता है। कहीं कहीं कुछ अत्यन्त अतिरंजित और शुचिस्वीकर्षी मिलते हैं। लोकगाथाओं का वर्गीकरण

उनका विश्लेषण और विवेचन इसमें वर्णित है ।

०.६.३.१० लोकगाथा की भांति ही लोक कथाएं भी लोक जीवन में व्याप्त हैं । मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा, उपदेश आदि इनके उद्देश्य रहते हैं । उपलब्ध कथाओं का वर्गीकरण तथा विश्लेषण विवेचन ही लोक साहित्य के चौथे प्रकरण का विषय है ।

०.६.३.११ अन्तिम प्रकरण लोकोक्तियों से सम्बन्धित है । लोकोक्तियां लोक में संचितज्ञान राशि हैं । संक्षेप में प्रभावपूर्ण ढंग से अभिप्राय प्रकट कर देना इनके मूल में रहा है । कहावतें, मुहावरे और पहेलियां लोकोक्ति के ही अंग हैं । लोक-साहित्य के अध्ययन में इनका विशेष महत्व है । लोकगीत, लोक गाथा, लोक कथा, जो भी विधा हो लोकोक्तियों का रंग सब में परिलक्षित होता है । कहावतें तथा मुहावरे बाल, युवा, वृद्ध सभी प्रयोग करते हैं । पहेलियां अब केवल बच्चों के प्रति ही प्राय: कही जाती हैं । कहावत तथा मुहावरों में व्यंग्य की चुटकी, शिक्षा, उपदेश आदि रहते हैं और पहेलियों में मनोरंजन और बुद्धि कौशल की प्रधानता मिलत है ।

०.१० उक्त प्रकार से आलोच्य अध्ययन प्रस्तुत रूप में पूर्ण हुआ है । इस के बोली खण्ड के अध्ययन के लिए लेखक ने पिठौरागढ़ क्षेत्र का विस्तृत परिभ्रमण तो किया ही, साथ ही अध्ययन की तकनीकी प्रविधियों को समझने के लिए वह दो बार दक्खिन कालेज, पूना के तत्वावधान में आयोजित भाषाशास्त्र के ग्रीष्मकालीन विद्यालयों में भी गया । संयोग से ये विद्यालय दोनों बार दूरस्थ स्थानों — क्रमश: अन्नामलै विश्वविद्यालय तथा मदुरै विश्वविद्यालय में आयोजित हुए । भाषाशास्त्र के वैविध्य पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त अनेक उच्चतर पाठ्यक्रमों का अध्ययन एवं दक्खिन कालेज पूना की भाषाशास्त्र में डिप्लोमा परीक्षा और उसमें सफलता प्राप्ति, प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को यथासमय सोत्साह पूर्ण करने में अत्यन्त सहायक हुई ।

०.११ आभार

०.११.१ प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के प्रधान प्रेरक तत्वों में श्रद्धेय डा० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय जी, श्रद्धेय डा० उदयनारायण तिवारी जी, श्रद्धेय डा० सरयूप्रसाद अग्रवाल जी एवं श्री माताबदल जायसवाल जी की सस्नेह प्रेरणा एवं मार्ग-दर्शन अत्यन्त उल्लेखनीय है । डा० वार्ष्णेय जी तो प्रस्तुत शोध ग्रंथ के निर्देशक ही रहे हैं जिनके सुस्पष्ट

तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं कृपापूर्ण परामर्शों से लेखक निरन्तर प्रेरणा प्राप्त करता रहा है। लेखक को संतोष है कि टंकित होने से पूर्व आपने शोध प्रबन्ध के प्रत्येक प्रकरण का आद्यन्त अवलोकन द्वारा निरख-परख की है। डा० तिवारी जी की प्रेरणा से ही लेखक ने भाषाशास्त्र के आधारित सिद्धान्तों एवं उच्चतर पाठ्यक्रमों का अध्ययन कर आलोच्य बोली का भाषाशास्त्रीय विश्लेषण करने का साहस किया। भाषाशास्त्रीय प्रविधि-विषयक कोई भी कठिनाई आने पर समय-समय पर आपसे मार्ग मिलता रहा। डा० अग्रवाल साहब यदि विषय की उपयुक्तता पर ~~[illegible]~~ यथासमय मत न देते और एकाधिक बार कठिनाइयों का समाधान न करते तो प्रबन्ध के प्रस्तुत करने में विलम्ब हो सकता था। श्री जाय-सवाल जी ने टंकित होने से पूर्व बोली विश्लेषण विषयक प्रबन्ध खण्ड का आद्यन्त अवलोकन कर उपयोगी सुझाव देने की कृपा की। इन गुरुजनों के प्रति मात्र आभार प्रकट करके मुक्त होना लेखक के लिए सम्भव न होगा।

०.११.२ श्री महावीर प्रसाद लखेड़ा जी और डा० मुरारीलाल उप्रेती जी से भी लेखक समय-समय पर परामर्श प्राप्त करता रहा है, उनके सहर्ष सहयोग एवं सुझावों के प्रति कृतज्ञता प्रकाश न करना भूल होगी।

०.११.३ अन्य उन सभी विद्वानों, सज्जनों एवं विधा संस्थानों के प्रति लेखक हार्दिक आभार प्रकट करता है जिनका योग और सहयोग प्रस्तुत अध्ययन के प्रबंधन में अल्प या अधिक रहा।

०.११.४ लेखक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सचिव तथा संबद्ध अधिकारियों का ऋणी है जिनके योग से वरिष्ठ शोध फेलोशिप प्राप्त हो सकी जिसके बिना शोध ग्रंथ प्रस्तुत न हो सकता था।

[भवानीदत्त उप्रेती]

प्रथम खण्ड

पिठौरागढ़ सम्भाग की बोली

१. ध्वनितात्त्विक विवेचन

ध्वनितात्विक विवेचन

०-१- पिठौरगढ़ी[१] में जिन स्वर तथा व्यंजन ध्वनियों का व्यवहार होता है उनका स्वनिमिक [फोनेमिक] विवरण प्रस्तुत प्रकरण में अभिप्रेय है।

१- स्वनिम [फ़ोनीम]

स्वनिम सूची :

पिठौरगढ़ी में १४ स्वर, २८ व्यंजन, २ अर्द्धस्वर और ४ खण्डेतर स्वनिम हैं :

स्वर --

।ई, इ, ए̱, ऐ, ऍ, अ, आ,
आ̱, ऊ, उ, ओ, ओ̱, औ।

उक्त सभी स्वर मूल हैं; ।ए। और ।ओ। मूल उच्चारण के साथ-साथ स्वर संयुक्त्व रूप में भी परिलुत होते हैं और उनकी स्वनिमिक स्थिति मूल रूप में है।

व्यंजन --

।प्, फ्, ब्, भ्, त्, थ्, द्, ध्,
ट्, ठ्, ड्, ढ्, च्, छ्, ज्, झ्,
क्, ख्, ग्, घ्, ड़्, र्, ल्, म्,
न्, ण्, ह्।

अनुनासिक : । ँ ।

अर्द्ध स्वर --

। य, व ।

खण्डेतर स्वनिम --

दीर्घता ।_।, विवृत्ति । + ।, सुर । ↑↓→ ।

१- सुविधा की दृष्टि से `पिठौरागढ़ संभाग की बोली` न कह कर यहां संक्षेप में `पिठौरगढ़ी` कहा जा रहा है।

१.१ स्वर

१.१.१ प्रस्तुत बोली में स्वरों के तीन रूप मिलते हैं :

[क] मूल स्वर,
[ख] सानुनासिक,
[ग] संयुक्त स्वर
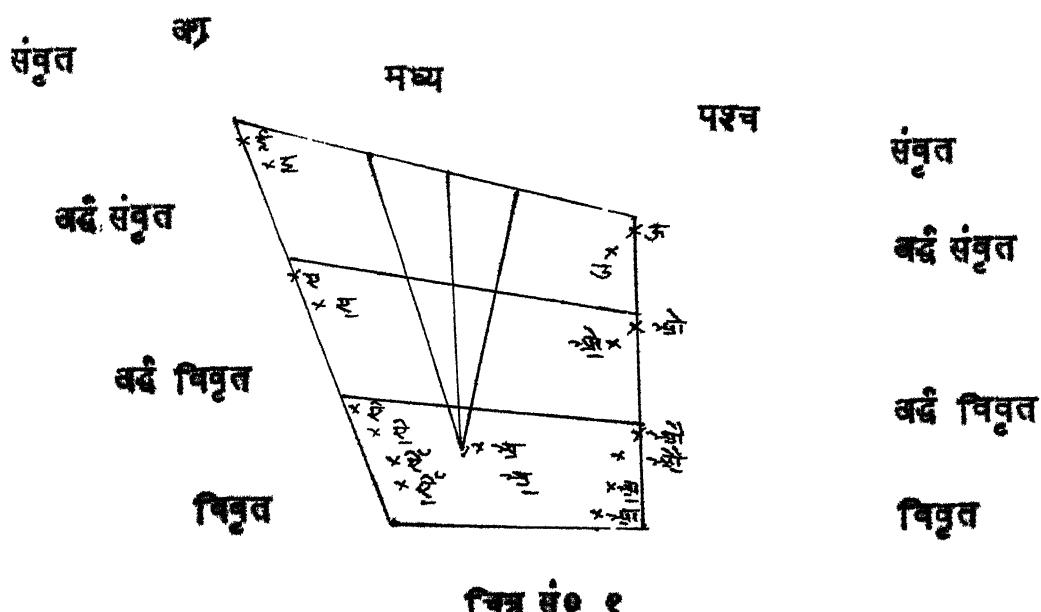
१.१.२ मानचित्र में दिखाने पर स्वरों की स्थिति निम्नलिखित प्रकार है :

चित्र सं० १

१.१.३ परिचित शब्दावली में अ, इ, उ ह्रस्व कहे जाते हैं किन्तु उच्चारण काल भेद के अनुसार विवेच्य बोली में इनके भी एकाधिक रूप हैं। ऐ, औ का स्वर संयुक्तत्व वाला रूप भी लुप्त होता है।

१.१.४ उच्चारण काल के अनुसार उपरोक्त स्वर ह्रस्व और दीर्घ दो प्रकार के हैं :

ह्रस्व			दीर्घ	
इ		उ	ई	ऊ
ए[२]	अ(ə)	ओ	ए	ओ
ऐ	अ	औ	ऐ	औ
ऐ॑	आ		ऐ॑	आ

२- स्वरों के नीचे (-) चिह्न अंकितांकृत ह्रस्वत्व को प्रकट करता है। उदाहरण,

१.१.५ उक्त स्वरों की स्वनिमिक स्थिति प्रकट करने के लिए लघुतम अन्तर वाले शब्द युग्म द्रष्टव्य हैं :

ई   तीन   'तीन-संख्यावाचक

इ   तिन्   'वे - सर्वनाम'

ए   देलि   'देहरी '

ए̱   दे̱लि   'देगी

ऐ   वैर्   'वैद'

   वैर्॒   'वैर् - तैरना '

ऐ̆   कैली̱   'श्यामल '

   कैॅली̱   'उत्साहहीन

अ अ   अर्॒   'हट - हटना '

आ̱   आ̱र्॒   'हटा

आ   आर्॒   'अभ्यास '

ऊ   लूट   'लूट - संज्ञा'

उ   लुट   'लूट - क्रिया'

औ   औड़   'कांधी घर'

औ̱   औ̱ड़   'औजार तेज करना'

औ   गौथ   'गौत्र '

   गौथ   'एक दाल का नाम '

१.१.६ ऐ̆, औ̱, अ̱ सम्बद्ध स्वनिमों के संस्वन हैं। संस्वनों का विवरण आगे लिया गया है।

१.१.७ ह्रस्व और दीर्घ स्वरों की ह्रस्वता एवं दीर्घता में ध्वन्यात्मक परिस्थिति-जन्य संस्वनात्मक वैभिन्य मिलता है। पिठौरगढ़ी के स्वरों की स्थान एवं मात्रा कालिक व्यतिरेकीय स्थिति द्रष्टव्य है जो अभी कतिपय निर्धारणार्थ लिए गए हैं।

१.२ स्वर स्वनिम, संस्वनात्मक विवरण सहित।

१.२.१ /ई/, /इ/

ये संवृत अग्रस्वर हैं। /ई/ उच्च तथा /इ/ निम्नतर उच्च स्वर हैं। इनके उच्चारण में ओष्ठ फैले रहते हैं। इ का स्थान ई की अपेक्षा कुछ नीचा होने के साथ-साथ कुछ अन्दर की ओर है :

१.२.१.१ /ई/ : इसका केवल एक संस्वन [ई] है। यह शब्द स के मध्य में ही प्राय: आता है।

१.२.१.२ /इ/ : इसके दो संस्वन हैं --

[इ], [इ]

[इ] यह शब्द के आदि, मध्य तथा अन्त तीनों स्थलों पर आता है।

[इ] विशेषत: संयुक्त व्यंजन से आरम्भ होने वाले उच्चारों में यदि पहला व्यंजन स् रहता है तो उच्चारादि में [इ] मिलता है।

उदाहरण :--

इस्कूल `स्कूल`

अन्त में भी इसकी श्रुति मिलती है। उदाहरण : डालि `डालना`।

इसे फुसफुसाहट से युक्त ध्वनि कहा जा सकता है।

१.२.१.३ आदि, मध्य तथा अन्त में /इ/ और /ई/ का वितरण इस प्रकार है :

आदि में -- [इ]

इजा `माता`

इसो `ऐसा`

इचौला `क्यारीबन्दी`

अन्त में -- [इ]

मलि `ऊपर`

पालि `बारी`

मारि `मारी`

मध्य में -- [ई] [इ]

नींन	`नींद`	कठिन	`कठिन`
पीड़	`पीड़ा`	पछिल	`पीछे`
तीर	`तीर, किनार`	मशिना	`मशीन`

१.२.१.४ आदि तथा अन्त में ।ई। का प्रयोग प्राय: नहीं मिलता है किन्तु अन्त में, विशेष भावावस्था या सम्बोधन की स्थिति में ।ई। आ सकता है --

मछुली ! `मछुली !`

बटी ! `तैयार हो`

१.२.१ ५ शब्द की मध्य की स्थिति में ही ।ई। और ।इ। दोनों मिलते हैं और यहीं पर व्यतिरेकी अवस्था मिलती है :

पीलो `पीला`

पिलो `फोड़ा`

१.२.२ ।ए। : यह अर्द्ध संवृत दीर्घ स्वर है। इसके उच्चारण में ।ई। की अपेक्षा मुख कुछ अधिक खुलता है। ओष्ठ अनुचाकार रहते हैं। शब्द के आदि, मध्य और अन्त में इसका वितरण इस प्रकार है। :

आदि में -- एक `एक`

मध्य में -- वेर `देर, समय`

वेद `बालिश्त`

भेद `भेद`

१.२.२.१ शब्द के अन्त में सामान्यत: ।ए। का प्रयोग नहीं मिलता है। इसका एक ही संस्वन ।ए। है।

१.२.३ ।ए़। : ।ए। और ।ए़। दो भिन्न स्वनिम हैं --

खेल् `खेल`

खेल `खेल - आज्ञार्थक क्रिया`

बेल `एक फल`

बेल `बेल - आज्ञार्थक क्रिया`

।ए़। की स्वनिमिक स्थिति ।ऐ। के संदर्भ में भी स्पष्ट है --

केलो `केला`

कालो `श्याम रंग का`

बैलो `बैल, खवा`

बांझो `बांझ`

प्रकट है कि विवेच्य बोली में ।ए। स्वतंत्र स्वनिम है ।

१.२.३.१ ।ए। का एक ही संस्वन [ए] है । [ए] का स्थान [ए] की अपेक्षा कुछ अधिक नीचा और बीच की ओर झुका हुआ है । शब्द के आदि, मध्य तथा अन्त में [ए] का व्यवहार होता है । आदि में [ए] केवल ।एक। में आता है, अन्यत्र आदि में भी तथा अन्त में केवल [ए] ही आता है, [ए] नहीं । [ए] मध्यग होकर ही आता है और मध्य में ही [ए] के साथ व्यतिरेकी स्थिति क ग्रहण करता है । ए का विवरण :

आदि में -- एकोली `अकेला`
एशो `ऐसा`

मध्य में -- वीले `उसने`
रून्दे `रहने दे`
कैले `किसने`

१.२.३.२ शब्द के आदि में ।ए। संख्यावाचक `एक` में सुनाई अवश्य पड़ता है किन्तु गिनती पढ़ते या पढ़ाते समय ही इसका प्रयोग होता है और सामान्यत: वक्तव्य में ए रूप में ही प्रयुक्त होता है । उदा० :

।एकादिमि आइ। `एक आदमी आया`

१.२.३.३ ।ए। की विद्यमानता शब्द के आदि में विशेषण या क्रिया विशेषण मध्य में संज्ञा तथा अन्त में सर्वनाम या विधियुक्त क्रियावाची शब्दों में प्राय: अवगत होती है ।

१.२.४ ।ऐ। : यह दो रूपों में मिलता है :

।क। बैलो `बांझ`
कैलो `श्याम रंग का`
ऐब `खोट`

।ख। जालै `जायेगा`
रवै `रहे`
कै `कभी`

१.२.५.२ ऍ ध्वनि प्रस्तुत बोली में बहुश: प्रयुक्त होती है, जो उल्लेख्य है --

खवॅ	`खवाई - संज्ञा`	हिटॅ	`चलाई - संज्ञा`
खॅलॅ	`खेलाई`	मरॅ	`मराई`
भलॅ	`भलाई`	बुरॅ	`बुराई`
कलूलॅ	`कहां पर`	कोकॅ	`अरबी नाम`
भॅर	`बाहर`	डॅलो	`मिर्च वाला साग की कडुवाहट`

उपर्युक्त उदाहरणों में ऍ का प्रयोग हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले प्रत्यय -- आई के समानान्तर हुआ है। प्रत्यय विषयक विवेचन आगे प्रकरणों विचार्य है। यहां केवल ध्वनि प्रयोग की ओर संकेत है।

१.२.६ |अ| :

यह ह्रस्व स्वर है। इसके उच्चारण में जिह्वा की स्थिति मध्य अवस्था में रहती है। अत: यह मध्य स्वर है। मुख कुछ खुला रहता है। मुख विवर के विस्तार की दृष्टि से अर्द्ध विवृत है। इसके दो संस्वन हैं जो परस्पर पूरक वितरण में मिलते हैं।

|अ| इसका व्यवहार शब्द के आदि और मध्य में होता है :

आदि में --

अटिनो	`एक जड़ या मूल`
अरकी	`दूसरा`
अकोरी	`मछंला`

मध्य में --

बखत्	`समय`
बरख्	`वर्ष`
कशिण्शि	`लोटा`

|अ| यह अ की अपेक्षा ह्रस्व ध्वनि है। यह अन्त में संयुक्त व्यंजन ड़, ण्, महाप्राण और सघोष व्यंजनों के पश्चात् आता है। उदा०

मुट्ट	`एक प्रकार की दाल`		
चट्ट	`बिलकुल`	भात	`भात`
झण्ड	`झुण्ड`	भग्त	`भक्त`
बड़	`बड़`	मण्त	`मित्र`

१.२.६.१ एक तीसरी संस्वनात्मक स्थिति उल्लेख्य है जो अ की अपेक्षा दीर्घ मात्रा-मालिक है। यह शब्द के अन्त में किसी भाव पर जोर देने की दृष्टि से आता है। यह अन्त्य अ का ही अति दीर्घ मात्रिक रूप है। उदा०

मर॒ `मरजा`

तर॒ `तरजा`

१.२.६.२ विवेच्य बोली में ।अ। के उच्चारण में होठ कुछ गोलाकार हो जाते हैं, विशेषत: नीचे का होठ गोलाकार स्थिति ग्रहण करता है। इसका कारण विवेच्य बोली की ओष्ठीकरण की प्रवृत्ति है। ।अ। का उच्चारण लगभग । ɔ । की भांति मिलता है।

१.२.६.३ जानबूझ कर या किसी भाव विशेष की स्थिति को छोड़ कर, शब्दों के अन्त में अ का प्रयोग संयुक्त व्यंजन, ड़, ण्, महाप्राण और सघोष व्यंजनों के पश्चात् ह्रस्व रूप में आने तक ही प्रतिबन्धित है। अकारान्त जान पड़ने वाले उच्चार वस्तुत: व्यंजनान्त होते हैं। उदा०

स्याप् `सर्प`

सब् `सब`

छिद् `कल`

मल् `मल`

१.२.६.४ अ को शब्द के मध्य में लिखने की परम्परा तो है किन्तु वस्तुत: सर्वत्र उच्चरित नहीं होता है। उदा०

लिखित रूप	भाषित रूप	
मैंलक्यो	मेलक्यो	`मैंने कहा`
बन खिन	बन्खिन्	`बन को`
तन कैदे	तन्कैदे	`काट दे`[१]

१- यह स्थिति हिन्दी की आदि बोलियों में मिलती है। हिन्दी में भी तो उपर्युक्त उदाहरणों का उच्चारण क्रमश: `मैंनकहा`, बन्को`, `काटदे` और `तन्काद` की तरह होता है।

१.२.७ ।आ। यह विवृत दीर्घ पश्च ध्वनि है जो शब्द के आदि, मध्य और अन्त में आती है। उदा०

आदि में --

आलु 'आलू'
आखर् 'अक्षर'

मध्य में --

खराप् 'बुरा'
पराल् 'पुआल'
मज्याल 'दोतल्ला'

अन्त में --

क्दुवा 'कद्दू'
कात्ता 'छोटे खेत'
राता 'लाल'

१.२.७.१ किन्तु आ का उच्चारण सर्वत्र समान रूप से नहीं होता है। आदि और मध्य में दीर्घ तथा ह्रस्व दोनों रूपों में मिलता है। ऊपर दिये हुए उदाहरणों में आ और आ ध्वनियां स्पष्टत: परस्पर पूरक नहीं है और अन्त में केवल आ की सत्ता विवेच्य बोली की ह्रस्वोन्मुखी प्रवृत्ति के कारण है। अत: शब्दान्त में केवल आ की सत्ता होते हुए भी, यह आलोच्य बोली की प्रवृत्ति[4] के कारण होने से आ के साथ कोई पूरक स्थिति नहीं रखती है। इसीलिए इनकी परस्पर व्यतिरेकी अवस्था की ओर ध्यान जाता है। आ ध्वनि अ से भिन्न है अ : आ --

तल् 'नीचे'   तल् 'तली'
ताल् 'कलटी'   नाल् 'छानी'
सर 'हटो'
सार् 'हटाओ'

४- सम्बोधन अथवा भावातिरेक जैसी असामान्य अवस्था को छोड़कर पिठौरागढ़ी में शब्दान्त में प्रायः दीर्घ स्वर नहीं मिलते हैं। यह बात सभी दीर्घ स्वरों के विषय में सत्य है।

आ : आ̱ --

ताल्	'तालाब'	चाल	'मन्थर गति'
ता̱ल्	'तलैटी'	चा̱ल	'छान'
सार	'आदत'		
सा̱र	'हटाओ'		

अत: आ और आ̱ दो भिन्न-भिन्न स्वनिम हैं

१.२.८ ।आ̱। :

इसके उच्चारण में जिह्वा के मध्य तथा पश्च के बीच का भाग क्रिया शील रहता है। अत: उच्चारणस्थान की दृष्टि से भी आ जो कि नितान्त पश्च स्वर है, आ̱ जिसका स्थान किंचित मध्य की ओर है, भिन्नता लिए हुए है। उदाहरण ऊपर १.२.७ में दिये जा चुके हैं।

१.२.९ ।ऊ।, ।उ। :

ये संवृत्त पश्च स्वर हैं। इनके उच्चारण में ओष्ठ न्यूनाधिक वर्तुलाकार रहते हैं। ऊ के उच्चारण में जिह्वा का पश्च भाग ऊपर रहता है और मुख बहुत थोड़ा खुला रहता है। ऊ दीर्घ ध्वनि है और उ ह्रस्व। उ के उच्चारण में जीभ का पश्च भाग ऊ की अपेक्षा मध्य और नीचे की ओर झुका रहता है। इस प्रकार ऊ ध्वनि उ की अपेक्षा अधिक पश्च भाग से उच्चरित होती है। ऊ और उ भिन्न-भिन्न स्वनिम हैं। उदाहरण :

आदि में --

ऊन	'ऊन'
उन	'वे'

मध्य में --

रूख	'पेड़'
रुख	'रुख'

१.२.९.१ ।ऊ। और ।उ। में से प्रत्येक का एक-एक संस्वन है [ऊ], [उ] शब्द के आदि और मध्य में आता है तथा उ आदि, मध्य एवं अन्त में आता है।

उदाहरण --

आदि में --

ऊ	उ
ऊन `ऊन`	उमर `आयु`
ऊङ `ऊंघ`	`उड्यार `गुफा`

मध्य में --

चूक `खट्टा रस`	कुमर `घास`
रूड़ `गर्मी`	कुरी `घास`
रूख `पेड़`	कतुक `कितना`
दूद `दूध`	पुन्थुरी `गठरी`

अन्त में --

	बुव तु `बह`
	बारु `बालू`
	गोरु `गाय`

१.२.६.२ शब्द के अन्त में [ऊ] का प्रयोग सम्बोधन अथवा भाव विशेष की अवस्था को छोड़कर सामान्यत: नहीं होता है।

१.२.१० [औ] : यह अर्द्ध संवृत उच्चतर मध्य [हायर मिड] पश्च गोली-कृत स्वर है। [ऊ] से कुछ अधिक दृढ़ [Tense] है। विवेच्य बोली में इसका उच्चारण त्रिभा मूलक है। एक अति ह्रस्व है जो [ए] के पूर्व आने पर सुनाई देता है। इसको सुविधा के लिए ऑ रूप में लिख सकते है। यह शब्द के मध्य में ही आता है।

उदाहरण :

कॉएला	क्वेला	`कोयला`
गॉएटा	ग्वेटा	`पशु-मार्ग`
जॉए	ज्वे	`जौ, जोंक`
शॉएर	श्वेर	`निकाल`
चॉएड़	चोड़	`छिद्र`

१.२.१०.१ उच्च कोटि का दूसरा स्वर [औ] है जिसका प्रयोग विवेच्य बोली में बहुत होता है। यह शब्द के आदि, मध्य तथा अन्त में आता है।

उदाहरण --

आदि में --

औड़ो 'सीमा'

औकालो 'चढ़ाई'

औच्छो 'ओछा'

मध्य में --

घोड़ो 'घोड़ा'

शोरी 'भाई बिरादर'

भोको 'एक बीमारी'

हथौड़ो 'हथौड़ा'

अन्त में --

च्यैलो 'लड़का'

तालो 'ताला'

स्यैतो 'सफ़ेद'

१.२.१०.२ उच्चारों के आदि, मध्य और अन्त में ।ओ। की व्यापकता बहुत मिलती है। फिर भी आदि की अपेक्षा यह मध्य तथा अन्त में अधिक आता है। अन्त में तो पुल्लिंग एकवचन अविकारी कारक में अन्त्य के रूप में यह अत्यधिक व्यापक है। प्रस्तुत बोली जो ओकार बहुला कही जाती है, वह इसी ध्वनि के अन्त्य होने के कारण है। यह ओ की अपेक्षा ह्रस्व है। ऊपर ओ ध्वनि युक्त उच्चारों के साथ निम्नलिखित उच्चारों को सुनने से दोनों का अन्तर प्रकट हो जाता है --

ओ : आदि में --

ओश 'ओस'

ओट 'परदा'

मध्य में --

रोज 'प्रतिदिन'

कोट 'कोट'

बोट 'बोट'

तोप 'एक तोप'

इन उदाहरणों में आगत ।ओ। से ऊपर १.२.१०.१ में उल्लिखित ओ̱ लगभग अर्द्ध मात्राकालिक है। प्रश्न या भाव विशेष की अवस्था को छोड़कर शब्द के अन्त में ओ नहीं आता है।

१.२.१०.३ ओ दीर्घ स्वर है और इसका प्रयोग हिन्दी के ओस, चोट, ओट आदि कोटि के शब्दों में आगत ओ की ही भांति होता है। ।ओ। और ।ओ̱। दो भिन्न-भिन्न स्वनिम हैं। इनका अन्तर उल्लेख्य है :

ओ : ओ̱

गोद `गोद`
गो̱द `छेदकर`
खोड़ `कांजीघर`
खो̱ड़ `औजार तेज कर`

१.२.१०.४ ओ̆ अपनी ह्रस्वमूलक प्रवृत्ति के कारण ।ओ। की अपेक्षा ।ओ̱। के अधिक निकट है। ओ̱ की स्थिति उच्चारण में ओ और ओ के बीच की है। ओ̱ के उच्चारण में ओ की अपेक्षा मुख कुछ अधिक खुलता है। ।ओ̱। का स्थान ।ओ। की अपेक्षा कुछ पीछे है और ओ̱ के उच्चारण में ओष्ठ अपेक्षाकृत कम गोलाकार रहते हैं।

१.२.१०.५ ।ओ̱। के दो संस्वन [ओ̱] तथा [ओ̆] हैं और ।ओ। का केवल एक संस्वन ।ओ। है --

[ओ̱] यह उच्चारों के आदि मध्य तथा अन्त में व्यापक रूप से आता है। यह सभी प्रकार के उच्चारों में आता है। उदाहरण --

संज्ञा एकवचन --- च्यो̱लो̱ `थोरी`।
सर्वनाम --- मेरो̱, तेरो̱, सो।
विशेषण --- कालो̱, ताओ̱, निको̱।
क्रिया --- ग्यो̱, म्यो̱।

[ओ̆] यह केवल मध्य में ।र। के पूर्व आता है। उदाहरण ऊपर १.२.१० में द्रष्टव्य है।

[औ] यह आदि तथा मध्य में आता है। उदाहरण ऊपर १ २ १० २ में ज्ञातव्य है।

१.२.११म [औ] : यह निम्नतर मध्य [लोवर मिड] अर्द्ध विवृत, पश्च, गोलीकृत स्वर है। यह स्वतन्त्र ध्वनिग्राम है --

[औ - औ - ओ] :

शौर 'मैदानी चौत्र'

शौर 'निकालने के अर्थ में'

शोर 'ससुर'

[औ - ओ] हौश 'होश'

होश 'शौक'

१.२.११.१ [औ] के दो संस्वन [औ] तथा [औ] हैं। इनकी प्रयोग सीमा इस प्रकार है :

[औ] यह दीर्घ स्वर है तथा आरम्भ और मध्य में आता है।

उदाहरण :

औड़ 'उंडेल'

औशर 'बारी'

तौलि 'तौली'

ठौर 'स्थान'

बौरी 'मजदूर'

[औ] यह ह्रस्व स्वर है तथा उच्चारों के अन्त में आता है।

उदाहरण :

क्वौ 'कह'

ह्वौ 'हो'

मुवौ 'शलभ'

मुवौ 'खिन्न हुवा'

ऊपर के उदाहरणों में [औ] तथा [औ] परस्पर पूरक वितरण में आते हैं अर्थात् [औ] केवल अन्त्य होकर आता है तथा [औ] अन्यत्र।

१.२.११.२ उल्लेख्य है कि ।औ। की प्रवृत्ति आदि तथा अन्त मध्य में दीर्घ तथा तथा अन्त में ह्रस्व होने की है। ऊपर के उदाहरणों में, अन्त्य औ वाले शब्दों मौ, रौ, मौ आदि में यदि कोई जोड़कर ।औ। को मध्यग कर दिया जाय तो वह दीर्घ रूप में परिणत हो जायेगा और उक्त शब्द क्रमशः मौन् या मौनी `शहद की मक्खी `, रौलो `रेशा `, मौत `बहुत ` आदि रूपों में दीर्घ स्वर औ युक्त होंगे। यही बात शब्द के आदि में मिलती है। जैसे, औ `आ `, कहने पर शब्दान्त प्रयोग की भांति ह्रस्व तथा औशर `बारी ` कहने पर दीर्घ स्वर और श्रुतात होता है।

१.२.११.३ उच्चारण अवस्था की दृष्टि से ।औ। के उच्चारण में जिह्वा का पिछला भाग ऊपर उठता है और ओष्ठ ।ओ। की अपेक्षा कम वर्तुलाकार तथा अधिक फैले होते हैं। ।औ। का स्थान ।ओ। की अपेक्षा कुछ नीचा और पीछे की ओर है। ।औ। का संयुक्त स्वरत्व भी मिलता है जिसका विवेचन आगे यथास्थान किया जायगा।

१.३ परिस्थिति जन्य कुछ अतिरिक्त स्वर संस्वन।

१.३.१ ऊपर स्वर ध्वनि तथा स्वर स्वनिमों का विवरण देते समय उनके प्रमुख संस्वनों का भी उल्लेख साथ-साथ किया गया है। कुछ ऐसे भी संस्वन मिलते हैं जो विशिष्ट परिस्थितियों में श्रुतात होते हैं। इस प्रकार के कुछ संस्वन ह्रस्वता-दीर्घता पर आधारित हैं, कुछ अनुनासिकता पर तथा कुछ केवल श्रुति पर आधारित हैं। संस्वनात्मक पूर्णता की दृष्टि से इनके उल्लेख का अपना महत्व है। ह्रस्वता-दीर्घता का सम्बन्ध उच्चारणकाल अर्थात् मात्रा से है। अतः इसका विवरण खण्डेतर ध्वनिग्रामों के साथ आगे दिया जायगा। अनुनासिकता भी खण्डेतर ध्वनिग्रामों के अन्तर्गत ही विवेच्य है।

१.३.१ श्रुति पर आधारित संस्वन।

१.३.१.१ ।ई। और ।ऊ। द्वारा अन्य दीर्घ स्वरों के पूर्व प्रयुक्त होने पर संस्वनात्मक ध्वनि खण्ड ।य। और ।व। उत्पन्न होते हैं। ये क्रमशः ।ई।, ।ऊ।, ।औ। के उच्चारण के उत्तरांश रूप में श्रुत होते हैं। इस प्रकार ई य:। ।ऊ व। , ।औ व। संस्वन प्राप्त होते हैं। उदाहरण :--

।द, ई य औ। `दीपक `
।इ ई य आ। `किया`
।ख ऊ व आ। `खोवा `

:।तकुऊ^न^आ। `तकली ` ।

१.३.२ ह्रस्व स्वरों का संरचनात्मक वैविध्य

१.३.२.१ विवेच्य बोली में इ, ए, अ, आ, उ, ओ ह्रस्व स्वर हैं। इ, ए, अ, आ, उ, ओ जिनको किसी चिह्न विशेष के साथ नहीं लिखा गया है, इनका प्रयोग हिन्दी के इन्हीं स्वरों के अनुसार होता है किन्तु जिन्हें ` - ` से युक्त दिखाया गया है, वे अपेक्षाकृत ह्रस्व हैं। ए, आ, ओ देवनागरी में दीर्घता सूचक हैं, अतएव उनके ह्रस्व रूप को प्रकट करने के लिए ह्रस्व चिह्नांकित किया गया है। ए, ओ, आ के उच्चारण में यहां उतना ही समय लगता है जितना अ, इ, उ के उच्चारण में। उच्चारणकाल के पुन: ह्रास को दिखाने के लिए, यदि कहीं है तो, इ, अ, उ को भी पुन: चिह्नांकित किया गया है। जैसे :--

।इ।, ।अ।, ।उ।

१.३.२.२ ह्रस्व स्वरों का संस्वनात्मक वैविध्य घोषत्व के आधार पर भी मिलता है। ह्रस्व स्वर सघोष और अघोष दोनों ही रूपों में प्राप्त होते हैं। अघोषता का आधार प्रयोग की व्यंजनात्मक परिस्थिति और बोलने की गति है। अब अघोष व्यंजनों के पश्चात् पदान्त प्रयुक्त ।इ।, ।उ। बहुधा अघोष ।इ॒। ।उ॒। के रूप में मिलते हैं। अन्त्य प्रयुक्त ।अ। तो बहुधा अघोष ।अ॒। ही रहता है। पद के मध्य में सघोष व्यंजनों से पूर्व प्रयुक्त ह्रस्व स्वर ह्रासित होकर भी सघोष बने रहते हैं। त्वरा से बोलने पर घोष का ह्रास होने लगता है। कभी तो घोष की मात्रा अल्पतर हो जाती है और कभी अ घोष शून्य भी हो जाता है।

१.४ अर्द्ध स्वर

१.४.१ अर्द्ध स्वरों के रूप में य और व मिलते हैं। इनके समानान्तर स्वर क्रमश: इ और उ हैं। ये दोनों ध्वनियां सघोष हैं। य के उच्चारण में जिह्वा का अग्र भाग कठोर तालु की ओर अग्रसर होता है और तुरन्त परवर्ती स्वर की ओर झुक जाता है जिससे परवर्ती स्वर संयोगों से इसमें उच्चारण भेद आ जाता है। यही बात व के उच्चारण में मिलती है, अन्तर केवल स्थान तथा विभिन्न स्वर-संयोगों का है क्योंकि व द्वयोष्ठ्य सुव होता है तथा इसके उच्चारण में जिह्वा

कण्ठच्छद का पश्च भाग संवृत अथवा पश्च अर्द्ध संवृत स्वर के उच्चारण स्थान की ओर बढ़ता है और तत्काल परवर्ती स्वर की ओर घूम जाता है।

१.४.२ अर्द्ध स्वर, स्वरों के पूर्व आने पर व्यंजन तथा स्वर मध्यवर्ती होकर आने पर व्यंजन तथा स्वर मध्यवर्ती होकर आने पर स्वर रूप में प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण --

स्वर के पूर्व --

यो `यह`
वु `वह`

स्वर मध्यवर्ती --

माया `भाई`
सवार `सवार`।

१.४.३ शब्दों में इनकी प्रयोग सीमा निम्नलिखित प्रकार है :

आदि में --

यो `यह` यां `यहां`
वु `वह` वां `वहां`

मध्य में --

क्यो `कहा` ज्वे `जो`
म्यो `हुवा` त्वे `तुम`
श्याल् `सियार` ग्वालो `ग्वाला`
व्याल् `शाम` ढुवाला `पत्थर`

दो स्वरों के मध्य --

जाया `जाना`
गंवार `ग्रामीण`
माया `माया`
मीवा `शत्रु`

१.४.४ शब्द युग्म ।य - व। :

यां `यहां`
वां `वहां`
दूयार `लकड़ी`

दुवार `दरवाजा`
म्याला `मेला`
म्वाला `मोल`

अत: ।य। तथा ।व। दोनों स्वतंत्र ध्वनिग्राम हैं।

१.४.५ ।य। और।व। दोनों में से प्रत्येक के दो दो संस्वन हैं।

१.४.५.१ ।य। : इसके दो संस्वन ।य'। तथा ।य। हैं --

।य'। यह स्वर के पूर्व आता है और इसका गुण व्यंजनात्मक रहता है। उदाहरण ऊपर दिये जा चुके हैं।

।य। स्वर मध्यवर्ती होकर आता है और यह स्वरात्मकता से युक्त होता है। उदाहरण ऊपर द्रष्टव्य है।

१.४.५.२ ।व। : इसके दो संस्वन ।व'। और ।व। हैं --

।व'। स्वर के पूर्व आता है और व्यंजनात्मक है। उदा० स्याल `शाम`

।व। स्वर मध्यवर्ती होकर आता है, स्वरात्मक है। उदाहरण --

माया `माया`

१.४.६ शब्द के अन्त में ।यु। ।वु। का व्यवहार सामान्यत: नहीं होता है।

१.४.७ व्यंजन के उपरान्त जब ।य। और ।व। आते हैं तो अपने पूर्व की व्यंजन ध्वनियों का क्रमश: तालव्यीकरण और ओष्ठीकरण करने की प्रवृत्ति रखते हैं। उदा०

।य। : च्याला `लड़के` ।व। : द्वाटा `छेद`
द्यार `देवदार` त्वे `एक`
स्याल् `सियार` स्वैर `निकाल`

१.४.८ विवेच्य बोली में द का ब के साथ अविकल्पात्मक सम्बन्ध है और इसीलिए इनके व्यतिरेकी युग्म मिलते हैं :

बारि `इस पार` वार `इस पार`
बारि `बारी` बार `दिन`

१.५ अनुनासिक स्वर।

१.५.१ देवनागरी में अनुनासिक स्वर ध्वनि के लिए ।ँ। चिह्न है। पिठौरागढ़ी में यह अनुनासिक स्वर ध्वनि उपरोक्त सभी स्वरों के साथ आकर प्रातिपदिक निर्माण में सहायक होती है। अनुनासिकता की स्थिति स्वनिमिक है। इसका प्रमाण अनुनासिकता द्वारा व्यतिरेकी स्थिति उत्पन्न होना है :

।ऐ। -- ।ऐँ।	:	तै `तह, फैसला`
		तैँ `तू`
		मै `पटिया`
		मैँ `मैं`
		कै `उल्टी`
		कैँ `को`
।आ। -- ।आँ।	:	चाल `गति`
		चाँल `चावल`
		खात `ढेर`
		खाँत `दया`
		ब्यालु `शाम`
		ब्याँल `विलम्ब`
।ऊ। -- ।ऊँ।	:	स्यूड़ो `सुई`
		स्यूँड़ो `एक कांटेदार पौधा`
।उ। -- ।उँ।	:	जुवा `जुआ`
		जुँवा `स्वेदज`
।औ। : ।औँ।	:	गौत ` एक दाल`
		गौँत `गोमूत्र`

अतः ।ँ। स्वतंत्र स्वनिम है।

१.५.२ दीर्घ अनुनासिक स्वर पद के आदि और मध्य में आता है। अन्त में केवल ह्रस्व अनुनासिक स्वर आता है। ।आँ।, ।आँ। प्रायः दन्त्य अथवा पार्श्व ध्वनि के पूर्व आते हैं। जैसे ।खात। : ।खाँत। ; ।ब्याल। : ब्याँल ।

१.६ संयुक्त स्वर और स्वर संयोग :

विवेच्य बोली में संयुक्त स्वर तथा स्वर का संयोग समानान्तर रूप में प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण :

अ आ : चुअआंल 'चावल'

अ इ : कलुअइ या कले 'कलई'

अ उ : ग् अ उ या गौ 'गाय'

अ ई : अइशान या ऐशान 'अहसान'

अ ऊ : अऊलाद या औलाद 'औलाद'

आ इ : भुआइ या भुऐ 'भाई'

आ उ : कमुआउ 'कमाऊ'

आ ए : बतुआए 'बताना'

इ ऊ : शुइऊडुओ 'सूई'

इ अ : दुइअ 'दो-देना'

इ ए : पुइए 'पीना'

इ ओ : 'दुइओ 'दीपक'

उ आ : शुउआ 'तोता'

१.६.१ संयुक्त स्वरों के रूप में स्मरणीय है कि एक ही प्रकार के स्वर समान परिस्थितियों में साथ आने पर भी कभी तो संयुक्त स्वर के रूप में उच्चारित होते हैं, कभी स्वर संयोग के रूप में। जैसे;

अ ए : म् अ ए ल् मएल् स्वर संयोग

म् अ ए ल् मैल संयुक्त स्वर

१.६.२ कुछ शब्दों में स्वर संयोग तथा स्वर संयुक्तत्व के उच्चारण की असावधानी होना अर्थ वैभिन्य का कारण बनता है :

ज् अ ए जए 'जाना' -- स्वर संयोग

ज् अ ए जैस 'जय' -- अर्थद्योतक - संयुक्त स्वर ।

१.६.३ दो से अधिक स्वरों का संयोग या संयुक्तत्व भी मिलता है। उदाहरण :

अ उ आ : ब् अ ट् अ उ आ बटौआ 'यात्री'

औ आ इ : न् औ आ इ नौआइ 'नौवाई'

इ ओ उ ई : इ ओ उ ई योई 'यही'

१.६.४ स्वर संयोग में प्रथम स्वर प्रायः ह्रस्व रहता है और द्वितीय स्वर ह्रस्व तथा दीर्घ दोनों ही हो सकता है। द्वितीय स्वर के दीर्घ होने का आधार भाव विशेष पर जोर देना या न देना रहता है। उदाहरण :

उदाहरण

इ अ : द् इ अ `दो - देना`

इ आ : त् इ आ र् इ `अनोखी`

इ औ̱ : ल् इ औ `ला`

इ ओ̱ : क् इ ओ `कहा`

इ ए : ल् इ ए `लेना`

आ̱ उ : धप् म् आ̱ उ `शिशु`

उ आ : ज उ आ र् इ `जुवारी`

१.६.५ उपर्युक्त उदाहरणों में समीपस्थ स्वर एक ध्वनि की भांति नहीं ज्ञात होते वरन् दो स्वरों की निकटता ज्ञात होती है। इसीलिए ये केवल स्वर संयोग हैं। पिठौरागढ़ी में स्वर संयोग की स्थिति निम्नांकित प्रकार से प्रकट की जा सकती है :

	ई	इ	ए	अ	आ	आ - आ	ऊ	उ	ओ	औ
ई	×									×
इ			×	×	×		×		×	×
ए	×		×							
अ	×		×				×			×
आ̱		×	×				×	×	×	
उ						×				
ओ̱	×		×			×				
औ̱										

चित्र संख्या - २

१.६.६ समीपस्थ स्वरों की स्वर संयोगत्व और स्वर संयुक्तत्वता की स्थिति निम्नलिखित तालिका में दर्शित है। यहाँ दो समीप आने वाले स्वर एक ध्वनि की भांति उच्चरित होते हैं और इसीलिए ये संयुक्त स्वर हैं।

समीपस्थ स्वर	स्वर संयोग	स्वर संयुक्तत्व
आ इ	म रा इ	मरैं `मराई`
	तलाइ	तलै `तलाई`
	का इ	कै `काई`
	मा इ	मै `माता`
आ उ	मा उ	मौ `शिशु`

१.७ व्यंजन स्वनिम।

पिठौरागढ़ी के व्यंजन स्वनिम एवं उनके संस्वनों का विवरण निम्नलिखित प्रकार है।

१.७.१ स्पर्श व्यंजन :

स्पर्श व्यंजन उच्चारण स्थान की दृष्टि से चार प्रकार के है : ओष्ठ्य, दन्त्य, कठोर तालव्य और कोमल तालव्य।

१.७.१.१ ओष्ठ्य स्पर्श :

। प - फ - ब - म। : पाली `बारी, कुणार`
फाली `फलक`
बाली `अनाज की बाल`
माली `माला`

। प - फ। : पाणी `ऊपरी मंजिल`
फाणी `एक साथ`

। प - ब। : पानि `पानी`
बानि `मवि`

। प - म। : पैसा `पैसे`
मैसा `भैंस`

। फ - म। : फाङी `शाखा`
माङ `माँग`

१.७.१.१.१ । प । : इसका एक संस्वन [प] है जो अल्पप्राण, अघोष, द्वयोष्ठ्य स्पर्श है । यह शब्द के आदि, मध्य और अन्त में आता है : उदा० --

आदि में --

पानि `पानी` ; पारि `बारी`

पाखो `छत`

मध्य में --

उप्यां `पिस्सू` ; रुपायां `रुपये`

उपाय `उपाय`

अन्त में --

ढप् `तरीका` ; स्याप् `सांप` ;

थाप् `स्थापना` ; खाप् `मुख` ।

१.७.१.१.२ ।फ्। : अघोष ।फ्। अघोष महाप्राण द्वयोष्ठ्य है । इस के दो संस्वन [फ] और [फ़] है । ये पूरक वितरण में आते है । इनका वितरण निम्नलिखित प्रकार है --

[फ] यह द्वयोष्ठ्य स्पर्श है । शब्द के आरम्भ और मध्य में आता है ।

उदाहरण --

आदि में --

फल `फल` ; फालो `फलक`,

फिरकी `मथनी`, फर्क `अन्तर`

मध्य में --

बांफर `लोहार की दुकान` ;

गुफील `एक पहाड़ी फूल`

काफल `एक पहाड़ी फूल`

[फ़] उच्चारण में द्वयोष्ठ्य संघर्षोन्मुखी है । यह शब्दों के अन्त में आता है । उदाहरण :-

साफ़ `साफ` ; रफ़ `रफ` ;

कफ़ `कफ` ; माफ़ `माफ`

[फ़] अरबी फारसी शब्दों के साथ आया है और इसका शब्दान्त तक ही सीमित है । मध्य आगत शब्दों में भी फ़, फ की भांति ही

उच्चरित होता है। जैसे ।आफ़त। शब्द की फ़ ध्वनि फ की भांति उच्चरित होकर आफत रूप में श्रुत होती है इस प्रकार यह ध्वनि, गुफ़ैल, काफल आदि की मध्यग फ ध्वनि की भांति मिलती है। फ़ में अन्त होने वाले सब शब्द विदेशी हैं किन्तु अब गृहीत हो गये हैं।

१.७.१.१.३ ।ब। : यह द्वयोष्ठ्य सघोष अल्पप्राण स्पर्श है। इसका एक संस्वन ।ब। है। [ब] शब्द के आदि, मध्य और अन्त में आता है। उदा०

आदि में --

बालो `अनाज की बाल`

बानो `मूली`

बतकों `बात`

मध्य में --

खबर `खबर` ; `कबाड़`, `कूड़ा`

बरोबर `बराबर`

अन्त में --

बाबू `पिता` ; कब `कब`

१.७.१.१.४ ।भ। : यह द्वयोष्ठ्य सघोष महाप्राण स्पर्श है। इसका एक संस्वन ।भ। है जो शब्द के आदि में ही प्रायः आता है। उदा०

भारि `बोझ, भारी` ; भालु `भालू`

भाङ `भांग` ; भट्ट `एक अनाज`

भलो `अच्छा`

मध्यम प्रतीत होने वाला भ्, व् की भांति उच्चरित होता है। जैसे ।भभको। इस उच्चार में मध्यम भ, व् रूप में ।भवको। श्रुत होता है। शब्दान्त में भ्, स्वर द्वारा अनुगमित होकर उपान्त्य हो जाता है अथवा व्यंजनान्त उच्चारण करने की चेष्टा होने पर व् शुद्ध होता है। जैसे :- गाभ या गाभा `कोंपल` अन्त में व्यंजन उच्चारण की चेष्टा होने पर ।गाव्। उच्चार मिलता है, गाभ नहीं।

जब भी ।भ। शब्दान्त में उच्चरित होता है तो उसका उच्चारण स्पर्श न होकर संघर्षी होता है। इस दृष्टि से ।ब भ। के दो संस्वन मिलते हैं --

।म। और ।मृ। । संघर्षी तत्व को प्रकट करने के लिए म के नीचे बिन्दु चिह्न का प्रयोग किया गया है ।

१.७.१.२ दन्त्य स्पर्श

ये ध्वनियां जिह्वानीक द्वारा दन्त के स्पर्श से उत्पाद्य हैं ।

।त - थ - द - ध । : तार् `लगन, तार`
थार् `मोटा ताजा`
दार् `लकड़ी`
धार् `जलधार, औजार की धार, पहाड़ का उन्नतोदर भाग`

।त - थ। : तालि `ताला`
थालि `थाली`

।द - ध। : दन् `कालीन`
धन् `धन`

।त - द। : ताना `फीते`
दाना `दाने`
कतुवा `तकली`
कदुवा `कद्दू`

।थ - द। : थाल् `बड़ी थाली`
दाल् `दाल`
बथुवा `बथुवा-साग`
बदुवा `मोटा`

।द - ध। : लदकीनो `सुस्त होना`
लधरीनो `सहारे से बैठना`

१.७.१.२.१ ।त। : इसका एक संस्वन ।त। है । यह दन्त्य, अघोष, अल्पप्राण स्पर्श व्यंजन है । शब्द के प्रायः आदि, मध्य और अन्त तीनों स्थानों पर आता है । उदा०

आदि में —

तामो `तांबा` ; ताल् `तालाब` ;
तामो `कौवा` ।

मध्य में -- 'सांतोड़ो 'पुराना कपड़ा'
इन्तोरो 'जला हुआ कपड़ा'
अन्त में -- बात् 'बात' ; घात् 'शिकायत'

१.७.१.२.२ /थ/ : इसका एक संस्वन है [थ] । यह अघोष महाप्राण दन्त्य स्पर्श है और आदि तथा मध्य में आता है । उदा० :

आदि में -- 'थौंनो 'थन' ; थान् 'स्थान' ;
थाक् 'रुक' ; थाम् 'पकड़' ।
मध्य में -- हथेलि 'हथेली'

शब्दों के अन्त में [थ] नहीं आता है । हाथ, साथ, पाथ आदि शब्द उच्चार स्वरान्त हैं, व्यंजनान्त नहीं । व्यंजनान्त उच्चारण की चेष्टा होने पर शब्द शब्दान्त में त् श्रुत होता है थ् नहीं ।

१.७.१.२.३ /द/ : /द/ का एक संस्वन [द] है । यह अल्पप्राण सघोष दन्त्य स्पर्श व्यंजन है और आदि में, मध्य में प्रायः आता है, अन्त में कम प्रयुक्त होता है । उदा०

आदि में --
दान् 'दालान', दान'
दाम् 'मूल्य'
दगाड़ा 'साथ'

मध्य में --
बदाला 'बदले'
मदेलि 'बिना कढ़ी की कढ़ाई'
नद्यूलो 'कीड़ा'

अन्त में -- बाद् 'बड़े नीबू का सफेद वल्कल'

[द] का उच्चारण अन्त में अल्प होते हुए भी अस्पष्ट मिलता है । यह या तो स्वरयुक्त रहता है अथवा इसका स्थान त् लेता हुआ ज्ञात होता है ।

१.७.१.२.४ /ध/ : इसका भी केवल एक संस्वन है -- [ध] । यह सघोष महाप्राण दन्त्य स्पर्श है और शब्द के आदि में ही प्रायः प्रयुक्त होता है । मध्य में अपेक्षाकृत कम और अन्त में इसकी श्रुति प्रायः नहीं मिलती है । उदा०

आदि में --
धाड़ु 'आवाज'

धारो `पानी की धारा`

धूप `आरवती `

मध्य में --

बाधा `पीड़ा

बन्धारि `ढालू, छत से गिरने वाली जलधार`

गुध्यारो `गहरा नाला `

पधान `प्रधान`

१.७.१.५ दन्त्य स्पर्श व्यंजनों की प्राणत्व की सीमा में विकल्पात्मक स्थिति मिलती है । उदाहरण :

ध द : धेखनों देखनों `देखना`

बाधा बादा `पीड़ा`

थ त : हन्थोरो हन्तोरो `जला हुवा कपड़ा`

१.७.१.२ कठोर तालव्य स्पर्श । इन ध्वनियों का उच्चारण स्थान वर्त्स से लेकर कठोर तालु के मध्य तक फैला हुवा है । ये ध्वनियां जिह्वानोक द्वारा उक्त स्थान के स्पर्श से उत्पाद्य हैं ।

।ट-ठ-ड-ढ। --

। ट - ठ । : टाड़ा `दूर `; टेक्को `सहारा`

ठाड़ा `खड़े`; ठेक्को `एक पात्र `

कोटरि `छप्पर `

कोठरि `कोठरी`

। ट - ड । : टुंण `अखाद्य अन्न `

डुण `कांड़े `

। ठ - ढ । : गठेरि `गठरी `

गढेरि `बण्ठा`

। ट - ढ । : टाड़ा `दूर `

ढाड़ा `पेट `

१.७.१.२.१ ।ट। : इसका एक संस्वन [ट] है । यह कठोर तालव्य अघोष अल्पप्राण स्पर्श व्यंजन है और आदि, मध्य तथा अन्त्य होकर आता है । उदाहरण --

आदि में -- टुक्को `सिरा, शिखर` ;

टोढ़ `चोड़ी` ; टेक्को `सहारा`

मध्य में -- `पिटार `सन्दूक` ; खट्टै `खटाई`

अन्त में -- `बाट् `बटना` ; खाट `खाट`

चाट् `चाटो`

१.७.१.३.२ |ठ| : |ठ| का एक संस्वन |ठ| है। यह कठोर तालव्य अघोष महाप्राण स्पर्श है। इसका आगमन आदि में और मध्य में होता है। उदाहरण --

आदि में -- ठार `जगह` ; ठेक्को `एक पात्र` ;

ठग्ग `झूठा`।

मध्य में -- पिठ्यां `रोली`; पाठी `बकरी का बच्चा`

१.७.१.३.३ |ड| : इसके दो संस्वन |ड| और |ड़| हैं। |ड| यह कठोर तालव्य सघोष अल्पप्राण स्पर्श है। यह शब्द के अक्ष आदि में आता है। मध्य स्थिति में संयुक्त व्यंजन के एक सदस्य के रूप में आता है। उदा० --

आदि में -- डालुली `टोकरी`

डुबुका `एक भोज्य पदार्थ`

डेड़ा `ढेले`

मध्य में -- `बण्डा` ; `मड्डू `एक बर्तन`

|ड़| अन्यत्र आता है। उदाहरण --

गड़ो `खेत`

रड़ `हट`

डाड़ `अन्तर`

ड् ड़् वैकल्पिक संबंध से भी प्रयुक्त होते हैं। यथा, गडेरि गड़ेरि `बण्डा`

१.७.१.३.४ |ढ| यह सघोष महाप्राण कठोर तालव्य स्पर्श है। शब्द के आदि और मध्य में आता है। उदाहरण --

आदि में -- ढक्कन `ढकना`

ढाड़ `पेट`

| ख - ग | : खण `खोद` गण `गिन - गिनना` शाख `हैसियत` शाग `साग`

| क - घ | : कर `करना` घर `घर`

१.७.१.४.१ |क| इसके तीन संस्वन मिलते हैं -- [क्], [क'], [क] तीनों जिह्वापश्च, कोमल तालव्य [डार्जविलर] स्पर्श ध्वनियां हैं। शब्द के आदि में प्रयुक्त होने पर अधिक आतत [फोर्टिस] और स्वर मध्यवर्ती होने पर तनाव कुछ कम रहता है। |क| के संस्वनों का वितरण इस प्रकार है :

[क्] यह प्राणत्व की सामान्य मात्रा युक्त स्फोट के साथ उच्चरित होता है और शब्द के आदि में आता है। उदाहरण --

कैलो `श्यामल` ; कालो `काला`

काट्टो `भैंस का बच्चा` ; काणो `कांटा`

[क'] यह विशिष्ट महाप्राण स्फोट युक्त रूप में मिलता है और शब्द के अन्त में अघोष स्वरों से पूर्व आता है। उदाहरण --

टुवाक्व[१] `एक स्थान`

मुकुव `बच्ची`

कुवाकु `चाचा - प्रिय संबोधन`

[क] उक्त दोनों संस्वनों की अपेक्षा यह शिथिल उच्चारणवाला है और स्वर मध्यवर्ती स्थिति में प्रयुक्त होता है। उदाहरण --

टाकुलो `नंगे सिर` ; शांकाड़ो `लड़ी`

मकार `बड़ा संदूक` ; बकोड़ो `वल्कल`

विदेशी ध्वनियों के प्रभाव से भी एक संस्वन [क़] मिलता है। यह कंठ्य ध्वनि है और आरम्भ में आती है। उदाहरण -

---

१- स्वर ध्वनि के नीचे चिह्न उसके अघोष रूप को प्रकट करता है।

क़ाफ़िर `डरपोक` ; क़ुफ़ `कफ` ;
क़ातिल `हत्यारा` ।

१.७.१.४.२ । ख । : इसके दो संस्वन हैं -- [ख़], [ख़] । ये जिह्वापश्च अघोष महाप्राण स्पर्श ध्वनियां हैं । इनका वितरण निम्नलिखित प्रकार है :

[ख़] यह कोमल तालव्य है और पद के आदि और मध्य में आता है ।
उदा० :
आदि में -- खात् `ढेर` ; खा `खाता`
खाड़ `गड्ढा`
मध्य में -- उखाड़ `उखाड़`
अखोड़ `अखरोट`
बाखलि `गृह पंक्ति`

अन्त में प्रयुक्त होता हुआ ज्ञात होता है किन्तु वस्तुतः स्वरानुगमित होकर उपान्त्य रूप में भी रह जाता है । उदा० :

तलाख़ुव `बादाम`, बाख़ `बख`
रुक़ख़ुव `पेड़`

[ख़] यह कंठ्य ध्वनि है और विदेशी शब्दों में आता है । उदाहरण--
बुख़ार `ज्वर`
सख़्त `सख्त`

[ख] के साथ [ख़] विकल्पात्मकता से ही प्रायः प्रयुक्त होता है ।

१.७.१.४.३ । ग । : इसके दो संस्वन हैं -- [ग़] और [ग़] । ये ध्वनियां भि जिह्वापश्च सघोष अल्पप्राण स्पर्श हैं । इनका वितरण इस प्रकार है --

[ग] : यह कोमल तालव्य है और पद के आदि तथा मध्य में आता है ।
उदाहरण :
आदि में -- गोठ `गोशाला` ; गोरु `गाय`
ग्यूं `गेहूं` ; गैली `गहरा`
मध्य में -- बगड़ `नदी का भाग ; बागोलो `चिटकन`

[ग़] पदान्त में स्वरानुगमित होकर आता है । उदाहरण --
न बा ग़ ब `बाग` ; लु बा ग़ ब `ईर्ष्या`

।ग़्। विदेशी शब्दों में आता है और ।ग। से विकल्पात्मक सम्बन्ध रखता है। उदा० :

गलत् ग़लत `अनुचित, त्रुटिपूर्ण`
गम् ग़म `दुःख`
गैर ग़ैर `ग़ैर`

१.७.१.४.४ । घ । : घ का केवल एक संस्वन है -- ।घ्। । यह जिह्वा-पश्च कोमल तालव्य सघोष महाप्राण स्पर्श व्यंजन है। यह शब्द के आदि तथा मध्य में आता है। उदा०

आदि में -- घाम् `धूप` ; घड़ि `घड़ी`
घर घौर `घर`
मध्य में -- बघिल `आगे`

अन्त में स्वरानुगमित होकर उपान्त्य रूप में आता है --

ब् बा घ् ब `व्याघ्र`

१.७.१.४.५ कवर्गीय स्पर्श ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा का पश्च भाग कोमल तालु को स्पर्श करता है। ।क़्।, ।ख़्।, ।ग़्। का उच्चारण कंठ बलिचिन्ह स्थानीय है। ।ख। तथा ।ग। विकल्पात्मक रूप से भी प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण --

अगाड़ि अगाड़ि `आगे`
बघिल बगिल `आगे`
ग्रुघ्ड़ ग्रुगड़ `ग्रुद` ।

१.७.२ स्पर्श संघर्षी --

च - छ - ज - झ --
च - छ : चार `चार` ; चानों `चना`
छार `राख` ; छानों `छानी`
ज - झ : जाल `मति`
जाल `जाल`
बबन `वाणी`
झझन `बोझ`

छ - ज : छालो `छाला`
जालो `खिड़की`

छ झ : छड़ि `छड़ी` ; छालो `छाला`
झड़ि `झड़ना, झड़ी ; झालो `कालिख`

१.७.२.१ । च । : यह जिह्वाग्र तालव्य स्पर्श संघर्षी अघोष अल्पप्राण व्यंजन है । इसके दो संस्वन [च्] और [च'] मिलते हैं । इनका वितरण इस प्रकार है --

[च] : यह च् अथवा छ् के पूर्व आता है और इसमें स्पर्श्य तत्व अधिक है । उदा० :

सांच्चो `सच्चा`
बाछ्छो `बछड़ा`
काच्चो `कच्चा`
चुच्चो `आश्चर्य`
कुच्चो `झाड़ू`
गुच्छो `गुच्छा`

[च'] अन्यत्र आता है --

आदि में --

चाल `छान - छानना`
चाकुनो `चली`
चीस `आंच`

मध्य में --

कचैनो `भेंट`
कंचीलो `भेड़`

अन्त में स्वतन्त्र रूप में यह नहीं आता है, अपितु अघोष स्वर के पूर्व आता है । उदाहरण --

च् आं च् अ `दोष`
च् आं च् अ `फड़`

१.७.२.२ । छ । यह जिह्वाग्र तालव्य अघोष महाप्राण स्पर्श संघर्षी है। इसके दो संस्वन [छ'] और [छ्] हैं।

[छ'] यह च् के बाद आता है और अधिक संघर्षी है। उदा० :

बाच्छो `बछड़ा`
दच्छिना `दक्षिणा`

[छ] यह अन्यत्र आता है। उदाहरण --

आदि में -- छिपोड़ो `छिपकली`
छकाला `दोपहर` ; छ `है`

मध्य में --
पछिल `पीछे`
गछिलो `गुच्छेदार`

शब्द के अन्त में [छ] का प्रयोग प्राय: नहीं होता है।

१.७.२.३ । ज । : यह जिह्वाग्र तालव्य सघोष अल्पप्राण स्पर्श संघर्षी व्यंजन है। इसके तीन संस्वन हैं -- [ज], [ज'] और [ज़] । इनका वितरण निम्नलिखित प्रकार है :

[ज] यह अपेक्षाकृत अधिक स्पर्श्य है और ज् अथवा झ् के पूर्व आता है। जैसे :--

बिज्यो `जागा हुवा` ; साज्झा `साझे`

[ज़] अजुब `सुविधा` वाले फारसी शब्दों में मिलता है और [ज्] से वैकल्पिक सम्बन्ध रखता है। उदा० :

गजब ∽ ग़ज़ब `आश्चर्यसूचक`
गजल ∽ ग़ज़ल `गेय छंद`
काज ∽ काज़ `काज़ - बटन काज़`

[ज्] अन्यत्र आता है। उदा० :

आदि में -- जालि `जाली , जायेगी`
जाम् `छोटी कढ़ाई`
जाड़ी `जाड़ा`

मध्य में --. जिमोड़ी `बीज` ; सजानी `सयाना`
बंजाणि `बांज का जंगल`

। ज । अपनी संस्वनों के साथ शब्द के आदि और मध्य में आता है और अन्त में इसका आगमन अघोष स्वर द्वारा अवरुद्ध हो जाता है --

माज्व `मागजा`

काज्व `काज - कामकाज`

१.७.२.४ । झ । : इसका केवल एक संस्वन झ है । यह जिव्हाग्र तालव्य महाप्राण स्पर्श संघर्षी व्यंजन है और शब्द के आदि में ही स्वतन्त्रत: आता है । उदाहरण--

झौल् `मिर्च का प्रभाव`

झाड़ `घास`

झस्को `भय, आशंका`

झोल्को `गुच्छा`

मध्य में व् के साथ विकल्पात्मक सम्बन्ध से आता है :

बज्वूनो ∽ बझ्यूनो `बंजर रखने योग्य`

झाखि ∽ झाकि `राख`

अन्य समवर्गी स्पर्श संघर्षी ध्वनियों की भांति पदान्त में झ का भी प्रयोग नहीं मिलता है । इस स्थान पर यह स्वरपूर्व आता है और मध्यग स्थिति की भांति व् के साथ वैकल्पिक संबंध रखता है । उदाहरण --

बांज्व ∽ बांझ्व `बांझपन`

झोज्वो ∽ झोजोबो `छोटी टोकरी`

व् के साथ वैकल्पिक रूप से यह आरम्भ में भी आता है --

वांछ ∽ झांछ `आता है ।`

यह प्रभाव स्थान भेद के कारण है । इस पर आगे बोली ~~भूगोल~~ विभेद के प्रकरण के अन्तर्गत अलग से विचार किया ~~जायगा~~ । गया है ।

१.७.२.५ स्पर्श संघर्षी ध्वनियों के विषय में विशेष उल्लेख्य है कि पिठौरागढ़ी में ये ध्वनियां हिन्दी की अपेक्षा अधिक संघर्षी हैं । [च] और [ज] जो क्रमश: त्, छ तथा द्, झ् के पूर्व आते हैं, इनमें अपेक्षाकृत स्पर्श तत्व अधिक है । यह बात ऊपर सोदाहरण कही जा चुकी है ।

च्, छ ध्वनियां वत्स्यतालव्य तालव्य संघर्षी ध्वनि श् से विकल्पात्मक संबंध रखती है । उदाहरण --

संघर्षी होता है । उदाहरण

छामि   शामि   `एक कृषि औजार `
चण्ट ~ शुण्ट   `चतुर `
छांकोड़ी ~ शांकोड़ी   `छड़ी `

उपर्युक्त तालव्य ध्वनियों की स्पर्श संघर्षी प्रवृत्ति समानान्तर प्रयोगों द्वारा स्पष्ट की जा सकती है --

थिगाला   `कपड़े `
त्सिगाला ~ त्छिगाला ~ छिगाला ~ थिगाला

यह भी विकल्पात्मक प्रयोग है । हिन्दी में वत्स वच्छ कुछ इसी प्रकार का उदाहरण हो सकता है ।

१.७.३ काकल्य [ग्लाटल] स्पर्श ध्वनि । ? ।

इसका प्रयोग विवेच्य बोली में अत्यन्त विरल होता है । इसका एक ही रूप होता है । इसका प्रयोग अं के पश्चात् और अ के पूर्व होता है । उदाहरण

न अं अ `नहीं ` ; हुं अं अ `नहीं `

१.७.४ नासिक्य स्पर्श

। म ।, । न ।, । ण ।, ।ङ्। --

। म - न । : मानो   `एक नाप `

नानो   `छोटा`
कामोली   `कम्बल `
काम्   `काम`
कान्   `कान `

। न - ण । : कानो   `एक बांस का बंधा `
काणो   `कांटा `
मान्   `मान - मानना `
माणा   `मसलना `

।ङ् - ण । : राण्   `विधवा `
राङ्   `बांस `

। न - ङ । : आनोड़ी `अन्तड़ी`

आडोड़ी `अंगरखा`

। म - ङ । : रम् `तल्लीन हो

रङ `रंग`

१.७.४.१ । म । : यह द्वयोष्ठ्य सघोष अल्पप्राण स्पर्श नासिक्य है । इसके तीन संस्वन् [मु], [म] तथा [म] हैं । जिनका वितरण इस प्रकार है --

[मु] सवर्गीय नासिक्य [होमोर्गैनिक नजल] होकर द्वयोष्ठ्य स्पर्श व्यंजनों के पूर्व आता है । उदाहरण --

लम्पु `लैम्प -- मिट्टी के तेल का लैम्प`

लम्बो `लम्बा`

[म] यह अन्तस्थ अथवा अर्द्धस्वर ध्वनियाँ एवं र्, ल् के पूर्व आता है । उदाहरण --

बम्यूरो `एक पहाड़ी पौधा`

कम्रो `कमरा`

गम्लो `गमला`

तम्लेट `जलपात्र`

[म] अन्यत्र आता है :

आदि में --

मडुवा `एक अनाज`

मध्य में -- मास `उड़द`

हमारे `हमारा`

तुमोड़ो `तुम्बी`

अन्त में -- ठुम `ठूंठा`

और [म्] काम् `सुचि`

[म] और [म] के उच्चारण में [म] की अपेक्षा अधिक तनाव होता है और ये केवल मध्यग होकर आते हैं ।

। म । का महाप्राण रूप म्ह भी मिलता है जो प्राणतत्व की सीमा में । म । का ही एक संस्वन कहा जा सकता है । [म्ह] महाप्राण युक्त है तथा शब्द के आदि में प्राय: आता है । उदाहरण --

म्हौर्‌‌ख्वाला `एक स्थान का नाम`

म्हैत्‌ `मायका`

म्हैना `महीने`

१.७.४.२ । न । : यह सघोष अल्पप्राण स्पर्श है । इसके तीन संस्वन हैं -- [न्‌] , [न[1]] , [ञ] , इनका वितरण इस प्रकार है --

[न्‌[1]] यह जिह्वानोकीय दन्त्य नासिक्य है और दन्त्य स्पर्श ध्वनियों के पूर्व सवर्गीय नासिक्य होकर आता है । उदाहरण --

कुन्तुरो `बच्चा` ; चन्दा `चन्दा` ;

बन्धारि `जलधार` ; पुन्तुरि `गठरी`

[ञ] इसका उच्चारण जिह्वाग्र द्वारा वर्त्स्य और कठोर तालु के सन्धिस्थल से होता है । यह तालव्य स्पर्श संघर्षी ध्वनियों के पूर्व आता है । उदाहरण --

पञ्च `पञ्चायत के सदस्य` ;

पञ्जा `पञ्जा`

मञ्जरि `मञ्जरी`

[न्‌] अन्यत्र आता है । यह जिह्वाग्रनोकीय वर्त्स्य नासिक्य है और इसका आगमन आदि, मध्य तथा अन्त में स्वतन्त्र एवं व्यापक रूप से होता है । उदाहरण --

आदि में --

नांनु `नाम`

नौलो `जलकुण्ड, नया`

नांह `नाश`

मध्य में -- बांनन्‌ `किन्नी रोग`

बानर `बन्दर`

किननों `एक कीड़ा`

चनुनां `माथे पर चन्द्रिका वाला`

कानुनो `कनिष्ठ`

मनुआ `इच्छा`

अन्त में --

कान्   `कान`

मान्   `सम्मान, एक पशु रोग`

मान   `मान - मानना`

दान्   `दालान`

। न ।   का महाप्राण रूप न्ह् भी मिलता है --

। न्ह् ।   यह वर्त्स्य और निम्नलिखित कोटि के शब्दों में मिलता है --

न्हानों   `स्नान`

न्हैवा   `चला जा`

१.७.४.३   । ण । : यह कठोर तालव्य सघोष अल्पप्राण जिह्वानोकीय नासिक्य है। इसके दो संस्वन । ण । तथा । ण् । हैं। ये निम्नलिखित वितरण में आते हैं --

। ण् । यह सवर्गीय नासिक्य ध्वनि के रूप में कठोर तालव्य स्पर्श व्यंजन ट् ठ, ड के पूर्व आता है। उदाहरण --

घण्टि   `घण्टी`

कण्ठमाला   `कण्ठमाला`

हुण्डी   `एक दैव स्थल`

। ण् । अन्यत्र शब्द के मध्य में आता है। इसके उच्चारण में जिह्वा का परिवेष्टन और उत्क्षेपण विद्यमान रहता है --

मध्य में --

कणियां   `कंजूस`

मण्यौली   `करवी`

घण्यालो   `घंटी वाला`

अन्त में अघोष स्वर के पूर्व आता है --

घांण्व   `फँटना`

पांण्व   `ऊपरी मंजिल`

जाण्व   `जान - जानना`

१.७.४.४ । ङ् । : यह जिह्वा पश्च सघोष अल्पप्राण नासिक्य स्पर्श ध्वनि है । इसका उच्चारण स्थान कोमल तालु से कण्ठ तक है । इसके दो संस्वन मिलते हैं -- । ङ् । और । ङ् । इनका वितरण निम्नलिखित है :

[ङ्] यह स्वस्थानीय स्पर्श ध्वनि क्, ख्, ग्, घ् के पूर्व आता है । उदा० --

अङ्क `अंक` ; पङ्ख `पंख` ;

गङ्गा `गंगा`; कङ्घि `कंघी`

[ङ्] अन्यत्र पद के मध्य और अन्त में आता है । उदाहरण --

मध्य में -- मंङिरो `मंगीरा -- एक तिलहन`

शाङगैलो `एक क्रीड़ा, शृंखला`

आङगैड़ो `अंगरखा`

पाङर `एक वृक्ष का नाम`

अन्त में --

आङ् `अंग` ; तङ् `तंग`

रङ् `रंग` ; सङ् `संग`

नारिङ् `सन्तरा` ; ऊङ् `ऊंघ`

सुङ् `सुंघ` ।

१.७.५ संघर्षी व्यंजन

। श । : । ष । : शार `अभ्यास`

षार `पंक्ति`

शिट `व्यंग्यपद कह - आज्ञार्थक`

षिट `चल - आज्ञार्थक`

मध्य और अन्त में इनके स्वल्पान्तर युग्म नहीं मिलते हैं ।

१.७.५.१ । स् । इसके दो संस्वन [स] और [स्] है । इनका वितरण इस प्रकार है --

[स्] यह अघोष अल्पप्राण स्पर्श है और दन्त्य स्पर्श ध्वनियों के पूर्व आता है । उदा० --

हस्तरयाखा `हस्तरेखा`

इस्तिरि `लोहा`

मस्त `खुश`

शस्ती `सस्ता`

।श्॥ पद के आदि, मध्य और अन्त में अन्यत्र आता है। उदाहरण --

आदि में --

शारो `सख्त`

शिवी `उबले चावल का दाना`

शैर `सैर, तमाशा`

मध्य में --

कशर `केसर`

बांशि `हंसिया`

अन्त में --

म्याश् `बुड्ढ`

माश `ग्रास`

।श्॥ और ।स्॥ परस्पर मुक्त परिवर्तन में भी प्रायः प्रयुक्त होते हैं।

१.७.५.२ ।ह। : इसके दो संस्वन हैं -- ।ह॒॥ और ।ह'॥ ।

इनका वितरण इस प्रकार है --

।ह॒॥ यह काकल्य अघोष संघर्षी ध्वनि है और शब्द के आदि में आता है --

हलो `हल` ; हाम `प्रसिद्धि`

हिट `चल` ; हक `हक`

।ह'॥ यह काकल्य घोष संघर्षी है और शब्द के मध्य में आता है।

उदाहरण --

बहार `बहार`

सहारो `सहारा`

बुहिर `बाहर`

शब्द के अन्त में ।ह। प्रायः नहीं मिलता है।

।ह। का ।ह॒। के साथ वैकल्पिक संबंध मिलता है :

क्याहिनु ~ क्याहिनु `किस लिए`

मैहिन ~ मैहिनु `मेरे लिए`

बांही ~ बांही `वहां की`

१.७.६ लुंठित एवं पार्श्विक व्यंजन --

।र - ल। : र्याला `रेला`

ल्याखा `हेतु`

बारी `बारी`

बाली `अनाज की बाल`

शार् `अभ्यास`

शाल् `शाल-वृक्ष`

१·७·६·१ । र । यह जिह्वानोकीय, लुंठित सघोष ~~अल्पप्राण~~ अल्पप्राण है। इसका स्थान वर्त्स से कठोर तालु के आरंभ तक है। इसके तीन संस्वन मिलते हैं -- ।र्, ।, । र्' ।, । ऱ । । इनका वितरण इस प्रकार है :

। र्' । : इसमें अपेक्षाकृत स्पन्दनशीलता अधिक रहती है और स्वजातीय ध्वनि र् के पूर्व आता है। यथा ;

पुरर `कपड़ा फटना`

छुर्रांनि `मूत्र की दुर्गन्ध`

च्यारर `टूटने की आवाज़`

इस प्रकार का प्रयोग र् का दीर्घ रूप भी ग्रहण करता है ~~अतः~~ अर्थात् रर् के उच्चारण में र् की अपेक्षा अधिक संयम लाता है।

। ऱ इसके उच्चारण में थपथपाहट रहती है और यह स्वजातीय ध्वनि अर्थात् र् को छोड़ अन्य व्यंजनों के पूर्व आता है :

कर्ष `एक पहाड़ी भाग का नाम`

थर्प ` " " " `

बर्फ `बर्फ`

इनमर्व `गर्व`

। र् । अन्यत्र आता है।

आदि में --

राती `लाल`

रेली `भीड़`

रेखो `रेखा`

मध्य में --

पराव `पुआल`

बराव `बुरा`

बराखौ `डाल`

अन्त में --

घर् `घर`

चर् `चर - चरना`

तर `तर - तैरना, संपृक्त `

। र । का महाप्राण रूप । र्ह । है जो शब्द के आदि में मिलता है । --

र्हौलि `र्हेली `

१.७.६.१ । ल् । यह अल्पप्राण सघोष व्यंजन है । इसका स्थान न् के उच्चारण स्थान से किंचित् पीछे और च के उच्चारण स्थान से किंचित आगे है । इसके तीन संस्वन हैं -- ।ल्।, ।ल। और `।ल^। ।

।ल। : यह किंचित अग्रस्थानीय है और दन्त्य ध्वनियों के पूर्व आता है । उदा०

वल्द `बैल ` ; हल्दो `हल्दी `

बल्दि `जेब ` ; चल्तो `चलता`

। ल^। यह किंचित् पश्चस्थानीय है और ट वर्गीय अननुनासिक ध्वनियों के पूर्व आता है --

पल्ट ` पलट - पलटना `

शल्ट `स्थान विशेष का नाम `

। ल् । अन्यत्र आता है :

आदि में --

ल्यौ `ला - लाना` ; लाग `ईर्ष्या`;

मध्य में --

जलन `जलन` ; मलम `मल्हम `;

मवामि `अर्थी वाहक` ।

अन्त में --

ताल् `पानी का कुण्ड, ताल`

स्याल् `सियार`

शाल् `शाल वृक्ष `

। ल्ह् । महाप्राण रूप है । यह आरम्भ और मध्य अवस्था में आता है :

ल्हैवा `लेवा, बलावा`

हुल्की `हुल्का `

पिठौरागढ़ की बोली में प्रयुक्त व्यंजन ध्वनियाँ

ध्वनि उत्पादक अंग		अधरोष्ठ				जिह्वानीक										जिह्वाग्र				जिह्वा का पश्च भाग				जिह्वामूल
उच्चारण स्थान		ओष्ठ्य				दन्त्य				वर्त्स्य		कठोर←				→तालव्य				कोमल तालव्य				अलिजिह्व
घोषत्व		अघोष		सघोष		अघोष		सघोष		सघोष		अघोष		सघोष		अघोष		सघोष		अघोष		सघोष		सघोष
प्राणत्व		अ०	म०	अ०	म०	अ०	म०	अ०	म०	अ०	म०	अ०	म०	अ०	म०	अ०	म०	अ०	म०	अ०	म०	अ०	म०	म०
उच्चारण प्रयत्न	स्पर्शी	प्	फ्	ब्	भ्	त्	थ्	द्	ध्			ट्	ठ्	ड्	ढ्					क्	ख्	ग्	घ्	
	स्पर्श संघर्षी															च्	छ्	ज्	झ्					
	संघर्षी		फ़्													श्		ज़्						ह
	लुण्ठित थप०													र्	र्ह्									
	लुण्ठित स्प०													ऱ्	ऱ्ह्									
	पार्श्विक													ल्	ल्ह्									
	उत्क्षिप्त													ड़्	ढ़्									
	अनुनासिक			म्	म्ह्					न्	न्ह्			ण्				ञ्				ङ्		
	अर्द्धस्वर			व														य						

सूचना—(१) अ० = अल्पप्राण, म० = महाप्राण, थप० = थपथपाहट (Tap), स्प० = स्पन्दन (Trill)।
(२) 'ट्ट्', ड्ड्—भी ध्वनिग्रामीय सत्ता रखते है।
(३) 'ह्य', 'ह्व' युक्त शब्दो का बहुशः प्रयोग होता है।

चित्र संख्या-३

१.७.७ उत्क्षिप्त व्यंजन : ड़्, ढ़् -- उल्लेख्य है कि उत्क्षिप्त स्पर्शों में से ड़् का ही अधिक प्रयोग होता है, ढ़् का बहुत कम । ड़् ढ़् के साथ ड़् ढ़् की व्यतिरेकी स्थिति नहीं मिलती है अपितु ड्, ढ् के साथ ड़् ढ़् परस्पर पूरक वितरण में आते हैं अथवा वैकल्पिक संबंध रखते हैं । ड़् का विवेच्य बोली में व्यापक प्रयोग मिलता है । यह प्रयोग मध्य स्थिति में मिलता है । --

खड़ि `खड़िया` ; बड़ि `बड़ी` ;

तड़ि `ताकत` ; गड़ो `खेत`

अन्तिम स्थिति में ड़् अपने उच्चारण प्रयत्न की प्रवृत्ति के परिणाम-स्वरूप स्वतंत्र अन्त्य के रूप में न आकर ह्रस्व स्वर के पूर्व आता है : खड़्उ `व्यर्थ`; पढ़ुव `सो, पढ़` । शेष इन पर ऊपर ।ड्।, ।ढ्। के साथ विचार किया जा चुका है ।

१.८ संयुक्त व्यंजन

१.८.१ द्वित्वीकरण ।जेमिनेशन।

पद के मध्य में सभी अघ अल्पप्राण व्यंजन द्वित्व रूप में मिलते हैं, पदारम्भ या अन्त में इनका प्रयोग नहीं होता है :

।प्। : शुप्पो `सूप` ; थप्पड़ `थप्पड़`
।ब्। : आब्बै `थोड़ी देर में ; --
।त्। : लात्ता `लात्` ; कात्ता `छोटे खत
।द्। : बद्द `बदमाश`
।ट्। : पट्ट `बिल्कुल` ; खट्टो `खट्टा`
।ड्। : मड्डु `मोटी पतीली`
।क्। : चक्कु `चाकू`; मुक्कि `चुम्बन`
।ग्। : घुग्गु `उल्लू` ; शग्गड़ `अंगीठी`
।च्। : कुच्चि `चाबी` ; कुच्चो `झाड़ू`
।ज्। : बज्जर `बज्र`
।झ्। : मुझ्झु `बेवकूफ`
।म्। : ठुम्मों `ठूंठा, ठूंठी`; ठुम्मा `मुक्का मारना`
।न्। : धन्न `धन्य` ; छिन्नो `छिन्ना बूटी`
।ड्। : हाड्डो `हड्डी` ; नाड्डो `नंगा`

द्वित्वीकरण (जेमिनेशन) -

चित्र संख्या - ४

ल्	:	शल्ला `चीड़`; कुल्लि `कुली`
र्	:	टर्रा `कसैला`; फर्रा `लकड़ी की पतली तीली`
व्	:	मव्वा `शिशु`
य्	:	गय्या `गाय`

१.८.२ निम्नलिखित अल्पप्राण द्वित्व व्यंजन अनिग्रामीय स्थिति में भी मिलते हैं :

त्त्	द्द्	:	कत्तु `तकली`; कद्दु - एक साग
ट्ट्	ड्ड्	:	खट्टो `खट्टा`
			खड्डो `गड्ढा`
च्च्	ज्ज्	:	शाच्चो `सच्चा`
			शाज्जो `साफ़दार`
म्म्	न्न्	:	बम्म `आवाज़`
			बन्न `वन्य`
न्न्	ड्ड्	:	बान्नी `क्यारी बन्दी`
			बाड्डो `टेढ़ा`
ल्ल्	र्र्	:	काल्लि `कली`
			कर्रि `सख्त`

१.८.३ जो अल्पप्राण द्वित्व व्यंजन अनिग्रामीय स्थिति में नहीं मिलते, वे मुक्त परिवर्तन की अवस्था में प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण --

प्प् ब्ब् :

शप्पीन शब्बीन `सबको`

क्क् ग्ग् : हुक्का हुग्गा `हुक्का`

१.८.४ असमान व्यंजन संयुक्तत्व अथवा व्यंजन गुच्छ (कन्सोनेंट क्लस्टर) -- सिऊँगढ़ी में व्यंजन संयुक्तत्व निम्नलिखित प्रकार मिलता है।

१.८.४.१ पार्श्विक सघोष अल्पप्राण + अन्य अघोष या सघोष अल्पप्राण। उदाहरण --

- ल् भ् - : पल्भीर्नी `झिलमिल जाना`
- ल् थ् - : चल्थि `स्थान विशेष का नाम`
- ल् प् - : झुल्पा `एक प्रकार का धूम्रपान`
- ल् द् - : बल्द `बैल`; खल्दि `जेब`
- ल् ट् - : पल्ट `पलट दे`; बाल्टि `बाल्टी`
- ल् न् - : हाल्नी `डालना`
- ल् श् - : खल्श `खटमल`
  फिल्शीनि `खट्टे डकार`

१.८.४.२ स्पर्श + नासिक्य । यथा ;

- त् म् - : आत्मा `आत्मा`
  खात्मा `समाप्ति`
- प् न् - : छाप्नी `छापना`

१.८.४.३ स्पर्श + संघर्षी :

- प् स् - : अप्सर `अफसर`
- क् श् - : नक्शा `नक्शा`

१.८.४.४ स्पर्श + लुण्ठित :

- त् र् - : पत्रा `पत्रा`

१.८.४.५ सघोष + अघोष :

- प् क् - : कप्कुनी `मारना`

१.८.४.६ महाप्राण + अल्पप्राण :

- फ् त् - : हफ्ता `हफ्ते`

१.८.४.७ अल्पप्राण सघोष संघर्षी + अन्य सघोष या अघोष अल्पप्राण :

- [illegible] - : [illegible] `[illegible]`
- स्त् - : वास्ते `चोरी`; मस्त `बहुत`
- ष्ट् - : कष्ट `कष्ट`
- [illegible] - : विस्नु `विष्णु`; [illegible] `जलाना`
- स्क् - : चस्को `लत - आदत`

१.८.४.८ सघोष अल्पप्राण नासिक्य + अन्य ;

- म्प् - : लम्पु `लैम्प`
- म्ब् - : जम्बु `जम्बू - छौंकने का मसाला`
- म्ट् - : टम्टो `ताम्रकार` ; चिम्टो `चिमटा`
- म्त् - : कम्ति `कम`
- म्ध् - : शम्धि `समधी`
- न्श् - : कान्शो `कनिष्ठ`

न + सवर्गीय

- न्त् - : पन्त `पन्त`; मन्थारा `मन्थरा`
- न्ख् - : बन्काटो `कुल्हाड़ी`; तन्खा `वेतन`
- ण्ट् - : टण्टो `झगड़ा`
- ण्ड् - : डण्ड `दण्ड`; बिण्डो `एक काठ पात्र`
- ङ्क् - ङ्ग् -- : लंङ्का `लंका`;

गङ्गा `गंगा`

१.८.४.६ सभी व्यंजन ।य। और ।व्। के संयुक्तत्व में मिलते हैं।[१]

यथा --

प वर्गीय + य्, व् :

कुप्प्या `कुप्पवाला`; फ्याश्शा `अन्तरे के अन्दर के भाग`

क्याल् `शाम`; ब्याश् `बुड्ढा`

ढेब्बा `पैसे`; मब्बा `एक नाम`

त् वर्गीय + य्, व् :

त्यार `त्यौहार`; द्यो `या`

ध्याल `लकड़ी` ध्यान `ध्यान`

कत्वा `लम्बी`; बद्वा `मोटा`

१- य् और व् के साथ संयुक्तत्व का विवरण अलग से देना इसलिए महत्वपूर्ण है कि प्रस्तुत बोली में य्, व् के साथ संयुक्तत्व द्वारा व्यंजनों में क्रमशः तालव्यीकरण तथा ओष्ठीकरण की प्रवृत्ति मिलती है।

ट् वर्गीय + य्, व् :

ट्याड़ा `टेढ़े` ; ड्यौड़ो `ड्योढ़ा`; उढ्यार `गुफा`

ट्वाला `बहरे` ; ढ्वाला `पत्थर - ढेले`

च वर्गीय + य्, व् :

च्याला `लड़के` ; छ्यौड़ि `स्त्री`

ज्यौड़ो `रस्सी` ; झ्याड़ा `लकड़ियां`

च्वेड़ `निकाल` ; छ्वारा `लड़के`; झ्वाला `झोले`

क वर्गीय + य्, व् :

क्याला `केले` ; ख्याला `खेल`

ग्यो `गया` ; घ्याच्वा `धक्का`

क्वाड़ा `कोना` ; ख्वाला `तलाश`

ग्वेलो `भीड़` ; घ्वाड़ा `घोड़े`

श् + य्, व् : श्याता `सफेद`; श्याम `सर्प` ; श्वाट्टा `छड़ी`

र् + य् व् : र्याल् `फैंटना` ; र्वाटा `रोटी`

ल् + य्, व् : ल्या `ला-लाना` ; ल्यै `एक`; ल्वार लोहार`

नासिक्य + य्, व् : म्यारा `मेरे ; न्यार `पशुओं का चारा`

कण्र्यै `खुजली` ; [illegible] म्वाला `एक कृषि उपकरण`;

ङ्यौ `एक सुगन्धित जड़`

१.८.४.१० र् के साथ प्रायः सभी वर्ग के व्यंजन संयुक्त हो सकते हैं। उदा० --

र् + प्, फ्, ब्, भ :

पर्वै `पर्वतीय भाग` ; बर्फ `बर्फ` ;

गर्विलो `घमण्डी` ; गर्भ `गर्भ`

र् + त्, थ्, द् :

तुर्वि `तम्बाकू`; अर्थ `अर्थ` ; सर्दि `सर्दी` .

र् + ट्, ड् : चार्ट `चार्ट`; कार्ड, `कार्ड`

र् + च्, छ्, ज् : पर्चा `प्रश्नपत्र`; `कर्छि `करछुली`

मर्जै `सरोकार`

~~र् + क्, ख्~~

र् + क्, ख्, ग्, घ् : दर्को `दूसरा` ; वर्गा `वर्गा`

स्वर्ग `स्वर्ग` ; वायमाप ; वर्ष `वर्षा`।

र्‌ + ल्‌ : शलि, हलि आदि स्त्रियों के नाम हैं।

र्‌ + नासिक्य : कर्म `कर्म ; तर्नों `तैरना`

शर्नों `सरकना, फैलना`

गोर्ड `एक स्थान का नाम`

र्‌+श्‌ : कुर्शि `कुर्सी `।

१.८.४.११ उत्क्षिप्त + अन्य :

पढ़्नो `पढ़ना` ; गड्वा `लोटा` ; शड्वा `सड़ने वाला`

१.८.४.१२ सवर्गीय गुच्छ : अल्पप्राण + महाप्राण :

- च्छ्‌ - : बाच्छो `बछड़ा `

- क्ख्‌ - : माक्खो `मक्खी `

- ट्ठ - : पाट्ठि `तख्ती `; लट्ठि `लाठी `

- त्थ्‌ - : हात्थि `हाथी `

१.८.४.१३ भिन्न वर्गीय

- त्क्‌ - : बत्की `बातचीत `

- त्ख्‌ - : तत्खे `उधर को `

- प्क्‌ - : भप्की `भाप`

- ट्क्‌ - : अट्की `रोक - रोकना `

१.८.४.१४ सघोष अल्पप्राण गुच्छ :

- प्र्‌ - : प्रेम `प्रेम `;

- ब्ल्‌ - : ब्लौज `ब्लाउज़ `

- ब्ज्‌ - : अब्जा `अधिकार ` ; बुज्बुजि `ऊधम`

१.८.४.१५ पिठौरगढ़ी में तीन व्यंजनों का संयुक्तत्व भी मिलता है। उदा० -

- ट्ठ्य्‌ - : कट्ठ्याड़ `काठ में रखने योग्य ; `दुर्वचन `

- र्त्र्‌ - : नौर्त्रा `नव रात्रियां `

- न्द्र्‌ - : मन्द्र `मन्दिर `

- क्ष्ण - : लक्ष्यन `लक्षण`

- क्ष्य - : कक्ष्ये `कब `

- ग्र्ह्‌ - : ग्रहो `ग्रह `

- [illegible] - : [illegible] `चीड़ के वृक्षों का वन`

- प्‌ श्‌ य्‌ - कपुश्या 'पानी वाला स्थान'

१.८.४.१६ द्वित्वावस्था को छोड़कर व्यंजनों की संयुक्तत्व की प्रवृत्ति नीचे दिये गये चित्र संख्या ५ के अनुसार चित्रांकित की जा सकती है।

संयुक्त व्यंजन (द्वित्व को छोड़कर) –

	प	फ	ब	भ	त	थ	द	ध	ट	ठ	ड	ढ	च	छ	ज	झ	क	ख	ग	घ	म	न	ण	ञ	ङ	र	ल	श	ह	य	व
प		×			×				×																	×	×	×		×	×
फ																												×		×	×
ब								×							×													×		×	×
भ																														×	×
त								×													×					×	×	×		×	×
थ																														×	×
द																						×								×	×
ध																														×	×
ट										×							×				×	×								×	×
ठ																														×	×
ड																														×	×
ढ																														×	×
च														×								×								×	×
छ																														×	×
ज			×																											×	×
झ																														×	×
क																		×								×	×	×		×	×
ख																													×	×	×
ग																														×	×
घ																														×	×
म	×	×	×	×	×				×				×				×										×	×	×	×	×
न			×		×	×	×	×													×									×	×
ण									×	×	×																				
ञ													×	×	×																
ङ																	×	×												×	×
र	×	×	×	×	×	×	×	×							×	×	×	×	×	×							×	×		×	×
ल	×		×		×	×	×	×	×													×			×			×		×	×
श					×				×	×							×				×	×						×		×	×
ह																														×	×
य																															
व																															

चित्र संख्या – ५

१.६ विवृति ।जङ्चर। एवं तत्सम्बन्धित सुर सरणियां

१.६.१ विवेच्य बोली में ऐसे उच्चार पर्याप्त व्यवहृत होते हैं जिनका उच्चारण दो प्रकार से हो सकता है और प्रकारान्तर से विवृति के कारण रहता है। पहले प्रकार के उच्चारण में बिना कहीं रुके पूरा पद उच्चरित होता है किंतु दूसरे उच्चारण में पद के मध्य कहीं पर क्षण मात्र के लिए रुककर उच्चारण पूर्ण होता है। इस क्षणिक प्रक्रिया अथवा आन्तरिक विवृति या अल्प विवृति के कारण अर्थ वैभिन्य मिलता है। विवृति को शब्द सन्धिक, शब्द संगम अथवा शब्दान्त विभाजक भी कह सकते हैं। विवृति से उच्चारों में व्यतिरेकी स्थिति उत्पन्न होने के कारण यह स्वनिम है और इसे । + । रूप में दिखाया गया है। उदाहरण ।१। और ।२। परस्पर व्यतिरेकी स्थिति में द्रष्टव्य है --

	।१।		।२।
।+। :	क्याला `कले`	:	क्या + ला `क्या है रे`
	तैयार `तैयार`	:	तै + यार `है उसको यार`
	हुन्को `काट दे`	:	हुन् + को `है कह दे`
	जाला `खिड़कियां`	:	जा + ला `जा रे`
	फकाइ `लौटाया`	:	फकै+ आइ `अन्दर आया`

१.६.२ विवृति के अन्तर्गत । + । के साथ-साथ बलवर्धक । E ।, मोड़ । T ।, प्लुति । S ।, अति बलवर्धक । L । भी विचार्य हैं । + । जहां आन्तरिक विवृति है, वहां शेष उक्त विवृतियां बाह्य स्थिति से सम्बन्ध रखते हैं। ।+। की भांति ही इनकी अनुपस्थिति तथा उपस्थिति में व्यतिरेक पाया जाता है जिसे सम्भवतः निम्नलिखित प्रकार से दिखाया जा सकता है :

≠	। + ।
≠	। E ।
≠	। T ।
≠	। S ।
≠	। L ।

इन पर पृथक्-पृथक् विचार किया गया है।

। । । ~ । ।। । ;

मैं ↓। तैं↓। वु↓। `मैं, तू, वह....
।अपूर्ण उच्चार ।

मैं ↓। तैं↓। वु ।। `मैं, तू, वह।`
।पूर्ण उच्चार ।

१६ २ २ आरोही अवरोही और सम । ↑,→,↓ अन्त्य सुर सरणियाँ ।टर्मिनलकन्टूर। को प्रकट करते हैं।

उदाहरण --

आरोही - अवरोही : । ↑ - ↓ । --

वु आलो ↑ ।। `वह आयेगा` ? ` ।प्रश्न।

वु आलो ↓ ।। `वह आयेगा` ।सामान्य कथन।

सम - आरोही : । → - ↑ । --

आँ → ।। `आ !` ।आज्ञा।

आँ ↑ ।। `आ !` `आज्ञा को सुनकर आश्चर्ययुक्त प्रश्न`

१.६.२.३ बलवर्द्धक -- । E । : यह बलवर्द्धक द्योतक है। E । की उपस्थिति उसकी अनुपस्थिति अथवा स्थान भेद से । E । की उपस्थिति व्यतिरेकी स्थिति में मिलती है। उदा० --

वु दै आलो ↓ ।। `वह दही आयेगा` ।सामान्य कथन ।

वु E दै आलो ↓ ।। `वह दही आयेगा` ।दै पर बल।

E वु याँ आलो ↓ ।। `वह यहाँ आयेगा` `वु पर बल`

वु E याँ आलो ↓ ।। `वह यहाँ आयेगा` `याँ पर बल`

१.६.२.४ मोड़ । T । : इसका प्रयोग सभी अन्त्य सुरसरणियों के साथ मिलता है। । ↑T । का उच्चारण आरोहण की समाप्ति पर अल्पकालिक ~~आरोहण~~ अवरोहण युक्त होता है। ।↘। ; । ↓T । का उच्चारण अवरोहण की समाप्ति पर अल्पकालिक आरोहण के साथ होता है। ।↗। ; । →T । का उच्चारण धीर सुर की समाप्ति पर अल्पकालिक आरोहण के साथ मिलता है। इनमें मोड़ । T । की उपस्थिति और अनुपस्थिति के कारण व्यतिरेक मिलता है। उदाहरण --

।१। म्वे ग्यो ↑ ।। `क्या गया ?` ।सामान्य प्रश्न।

।२। न्है ग्यौ ↑T ।। `चला गया ?` ।विवादयुक्त प्रश्न।

।१। वु जालो ↓ ।। `वह जायेगा` ।सामान्य कथन।

।२। वु जालो ↓T ।। `वह जायेगा` ।निश्चयार्थक कथन ।

।१। वु जवौ → ।। `वह जाय` ।सामान्य आज्ञा।

।२। वु जवौ →T ।। `वह जाय !` दृढ़ आज्ञा `

१.६.२.५ प्लुति ।ड्रावल। -- । ऽ । :

व्यव प्लुति के कारण भी व्यतिरेकी स्थिति परिलक्षित होती है : उदा--

वु जालो ↑ ।। `वह जायेगा ?` ।सामान्य प्रश्न ।

वु जालो` ↑S ।। `वह जायेगा ?` `निराश प्रश्न `

शैत वु जवौ ↓ ।।`शायद वह जाय` ।सामान्य सन्देह।

शैत वु जवौ ↓S ।। `शायद वह जाय` ।मात्रा में अधिक संदेह।

१.६.२.६ अतिरिक्त बलवर्द्धन ।एक्स्ट्रा लाउडनेस।

-- । ∟ । : अतिरिक्त बलवर्द्धन की उपस्थिति तथा अनुपस्थिति भी व्यतिरेक का कारण बनती है । उदा० --

वु जालो ↑ ।। `वह जायेगा` ।सामान्य प्रश्न ।

वु जालो ↑∟ ।। `वह जायेगा` ।साश्चर्य प्रश्न।

१.१० अक्षर वितरण और स्वनिम क्रम गठन-शब्दों में अक्षर वितरण, स्वनिम क्रम और उनका ढांचा निम्नलिखित प्रकार मिलता है । यहां अ = कोई स्वर तथा क् = कोई व्यंजन सूचक है ।

१.१०.१ स्वनिग्राम क्रम में एकाक्षरिक शब्द गठन इस प्रकार मिलता है --

अ ; अक् ; कअ ; कअक् ; कक्अ ; कक्अक् । उदा०

अ : आ `आ-आना` ; उ `वह`

अक् : इन् `ये` ; उन `वे`

कअ : इस क्रम में स्वर ह्रस्व रहता है और संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि सभी प्रकार के शब्दों में यह क्रम मिलता है । इस कोटि के शब्द इस बोली में पर्याप्त प्रयुक्त होते हैं --

जा `जा` ; दे `दे -देना` ; को `कौन`

शो `वह` ; गा `गाइये ; मैं `हुई `

दै `दही` ; के `क्या` ; मो `शब्द` ।

क् व क् : यह क्रम भी विवेच्य बोली में पर्याप्त मिलता है --

फाम् `याद` ; हिट `चल ` ;

मोल `कल` ; बन `जंगल`;

नुन `नमक` ; काट्टे ` काट - काटना` ।

क् क् व : इस क्रम के अधिकांश शब्दों की श्रुति य् अथवा व् से युक्त है --

क्या `क्या` ; क्यो `कुकुरमुत्ता `

ज्वे `जो, स्त्री ` ; त्वे `एक` ; क्वे `कोई ` ।

क् क् व क् : य् से प्राय: युक्त रहता है --

त्यार् `त्यौहार` ; न्यार `पशुओं का चारा`

स्यार `सियार`

संस्कृत अंग्रेजी आदि अन्य भाषाओं के तत्सम शब्दों के साथ भी उक्त क्रम प्राप्य है --

प्रेम `प्रेम ` ; क्रूर `क्रूर `

फ्राक `फ्राक` ।

१.१०.२ दो अक्षरों (सिलेबल्स) से गठित क्रम --

व - व : यह क्रम अति विरल मिलता है --

आबौ `आइए `

क व - व : इस क्रम में दोनों स्वर प्राय: ह्रस्व रहते हैं :

भाइ `भाई` ; गाइ `गाय ` ; माइ `जोगिन`

व - क् व : क् व व की अपेक्षा यह क्रम अधिक मिलता है --

आऊक `और अधिक ` ;

इसो `ऐसा` ;

इभा `गेहूं की भुनी बालें `; औरै `अनोखा`

व क् - व क् : [illegible] `अच्छा` ; [illegible] ` अन्त ` ;

क्व-क्क्क्व-क्व : क्उत्क्य्आ न्इ `गुदगुदी`

ट्अ ट्क्य्ऊ न्ओ `छटकना`

क्व क्-क् व-क्व : ब्उ ज्ब्उ ज्इ `ऊंघना`

श्इ त्म्इ त्ई `सहज ही`

कवक - कव - कवक : छ्अ न्छ्अ न्आ ट `अनुकरणमूलक शब्द`

म्अ न्म्अ न्आ ट // //

कव - क्क्व - क्क्व : म्अ श्य्आ र्न्ओ `मालिश करना`

म्आ न्म्इ न्ड्इ `अनुनय विनय`

१.१०.४ चार अक्षर वाले शब्द --

क् वक्क् व-क् अ-क्अ : त्अ प्त्अ प्आ न्ओ `तेज युक्`

क वमक् वक् क्वक्व : ल्अ ल्ब्अ ल्य्ऊ न्ओ `अनुचित रूप से पकड़ना`

१.१०.५ चार से अधिक अक्षरात्मक शब्द प्राय: नहीं मिलते हैं।

१.१०.६ विवेच्य बोली में एकाक्षरिक शब्द प्राय: कम मिलते हैं। इनमें से दो या तीन अक्षर वाले शब्द ही उक्त बोली की शब्दावली का प्रमुख भाग हैं। शेष भाग की पूर्ति एक या चार अक्षर वाले शब्दों द्वारा होती है।

१.१०.७ ह्रस्व तथा दीर्घत्व की दृष्टि से कथितव्य है कि शब्द के आदि और मध्य में आने वाला स्वर ह्रस्व और दीर्घ दोनों ही हो सकता है किन्तु अन्त्य रूप में प्राय: ह्रस्व स्वर ही आता है।

१.१०.८ अक्षरों में ध्वनि वितरण।

१.१०.८.१ स्वर मध्यवर्ती व्यंजन का उच्चारण परवर्ती स्वर के साथ होता है।

उदाहरण --

आ-क `और अधिक`

इ-ज्ओ `ऐसा`

हे-प्अ न् `सपना`।

१.१०.८.२ य्, व् के साथ संयुक्त स्थिति बनाने वाले आदि व्यंजन समीपस्थ स्वर के साथ उच्चरित होते हैं। यथा:

न्य्आ - र्ओ `अनोखा, अलग`

ल्य्आ - ल्आ `लेंड`

ह् व्आ - ह्आ `हवाई`

१.१०.८.३ मध्यगसंयुक्त व्यंजन अथवा व्यंजन गुच्छ में प्रथम व्यंजन पूर्ववर्ती और शेष परवर्ती स्वर के साथ सम्बद्ध रहते हैं :

क्‌ा च्‌ - च्‌ा `कच्चा` ; क्‌ अ प्‌ - श्‌ या `पानी वाली भूमि`

च्‌ अ श्‌ - क्‌ा `आदत`

१.१०.८.४ शब्द के आदि में ङ्‌, ‌ा, ण, ड़्‌, ढ़्‌ नहीं आते हैं

१.१०.८.५ शब्द के आदि में जिस क्रम से ध्वनियां प्रयुक्त होती हैं, अक्षर के आदि में जिस क्रम से ध्वनियां प्रयुक्त होती हैं, अक्षर के आदि में वही क्रम रहता है। उदाहरण --

प्रेम = प्‌र्‌ए म्‌ `प्रेम`

त्यार = त्‌य्‌आ र `त्यौहार`

१.१०.८.६ पदांश की सीमा के साथ अक्षर की सीमा समान और असमान दोनों ही हो सकती है :

समान -- हिट्‌ + लो `चलूंगा (पदांश सीमा)

हिट्‌ + लो `चलूंगा` (अक्षर सीमा)

असमान -- लट्‌कूना : लट्‌काऊना (पदांश सीमा)

: लट्‌कूना (अक्षर सीमा)

यहां ` + ` चिह्न विवृत्ति को प्रकट नहीं करता है।

१.१०.८.७ कोई भी स्वर ध्वनि ग्राम अक्षर रचना कर सकता है। यह बात ऊपर १.१० के अन्तर्गत सम्भवतः दिये गये उदाहरणों में देखी जा सकती है।

१.११ खंडेतर स्वनिम (सुप्रासेग्मेन्टल फ़ोनीम)

१.११.१ मात्रा अथवा ह्रस्वता

पिठौरागढ़ी में ह्रस्वता के कारण व्यतिरेक की स्थिति उत्पन्न होती है। अतः ह्रस्वता स्वनिमिक सिद्ध होती है। ह्रस्वता को यहां ध्वनि के नीचे `_` चिह्न द्वारा दिखाया गया है और यही स्वनिमिक चिह्न के रूप में ग्राह्य है। दीर्घ स्वरों में से आ, ए, ओ तीनों द्वारा ह्रस्वता से युक्त होने पर तीन भिन्न स्वनिम मिलते हैं। प्रस्तुत बोली में इन ह्रस्व दीर्घों की वही स्थिति है जो इ - ई तथा उ ऊ की है और उसी प्रकार ये स्वल्पान्तरयुग्मों में भी उपलब्ध है।

उदाहरण --

। - । --	श्_आ र्_	`आदत `
।।आ - आ। :	श्_आ र्_	`ढो - एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जा`
	च्_आ ल्_	`छलनी से छानना `
। ।ए - ए। । :	द्_ए ल इ	`देहरी` ; म्_ए ट्_`मेंट `।संज्ञा।
	द्_ए ल्_इ	`देगी` ; म्_ए ट्_ `मेंट कर` ।आज्ञार्थक क्रिया।
।।औ - औ। । :	स्_औ ह्	`कांजीघर ` ; त्_औ ल्_ `तौल `-संज्ञा
	स्_औ ह्	`औजार तेज कर ;
	त्_औ ल्_	`तोल` ।आज्ञार्थक क्रिया ।

१.११.२ अनुनासिकता ।नजलाइजेशन।

प्रस्तुत बोली में अनुनासिका स्वनिमिक है। निरनुनासिक स्वरों को सानुनासिक कर देने से व्यतिरेक उत्पन्न होता है। उदाहरण -

।ँ। : च्_आ ल् `गति` ; त्_ए `वह, फैसला`
च्_आँल्_ `चावल` ; त्_ए` `तू `
न्_औ त्_ `एक दाल `
न्_औं त्_ `नोंतन`

१.११.३ विवृत्ति

विवृत्ति स्वनिमात्मिक है। इस पर ऊपर १.६ के अन्तर्गत विस्तार से विचार किया जा चुका है।[१]

१.११.४ सुर ।पिच।

१.११.४.१ विवेच्य बोली में सुर, स्वराघात या संगीतात्मक स्वराघात की उपस्थिति द्रष्टव्य है। यहाँ यह स्वराघात घोष्य ध्वनियों में ऊंचा या नीचा अथवा समान रूप में मिलता है। उच्चारों में ध्वनि संबंधी किसी प्रकार का

१- देखिए ऊपर पृष्ठ ५८ ।

परिवर्तन किये बिना स्वराघात के प्रभाव के द्वारा अर्थ वैभिन्य उत्पन्न हो सकता है। स्वराघात का एक भेद रूपात्मक स्वराघात भी है। प्राय: देखा जाता है कि पिठौरागढ़ या कुमाऊं प्रखण्ड के किसी व्यक्ति को उसके विशेष गठन या स्वरूप के आधार पर कह दिया जाता है कि वह कुमाऊंनी या पहाड़ी है। इसी प्रकार पिठौरगढ़ी के मूल भाषियों को सुर या स्वर अन्य भाषा-भाषियों से स्वरूपात्मक भिन्नता रखता है। इसी लिए रूपगठन की भांति ही वहां के भाषा-भाषियों के स्वर स्वरूप के आधार पर भी अनुभवी व्यक्ति सहज ही जान सकते हैं कि कोई व्यक्ति पिठौरागढ़ का निवासी है। यह बात उनके विषय में नहीं कही जा सकती जो लम्बे समय से या पीढ़ियों से मूल भाषा भाषी स्थान से दूर रहते हैं। जिस अर्थ में यह कहा जाता है कि किसी के मुख में (चेहरे में) पानी -- एक प्रकार की तरलता है और उसके आधार पर विभिन्न स्थान के व्यक्तियों को पहचान लिया जाता है, उसी अर्थ में प्राय: पिठौरगढ़ी के भाषा-भाषियों को उनकी बोली में विद्यमान स्वरात्मक तरलता के कारण अनुभवी जन उनके निवासस्थान का अनुमान लगा लेते हैं। वैसे प्रत्येक व्यक्ति जिस प्रकार दूसरे से सूरत में भिन्न होता है, ब उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति की स्वरात्मक विशेषता होती है।

१.११.४.२ पिठौरगढ़ी में सुर का भी स्वनिमिक स्थिति से संबंध है। यहां सुर के विभिन्न धरातलों द्वारा उच्चारों में व्यतिरेक आ जाता है। बाहरी विवृत्तियां भी सुर धरातलों को चिह्नित करती हैं, इस ओर ऊपर विवृति के प्रसंग में संकेत किया जा चुका है।[१] उदाहरण --

(बु भोल इस्कूल जालो) `वह कल स्कूल जायेगा` -- यह एक उच्चार है

इसका उच्चारण निम्नलिखित रूपों में किया जा सकता है :

(१) बु भोल इस्कूल जालो (सामान्य कथन)

(२) बु भोल इस्कूल जालो (बु पर विशेष बल जिससे प्रकट हो कि वह ही स्कूल जायेगा)।

१- देखिये ऊपर पृष्ठ ६८।

[3] हु मौल इस्कूल जालो [मौल पर बल जिससे प्रकट होगा कि `कल ही` स्कूल जायेगा] ।

[4] हु मौल इस्कूल जालो [स्कूल पर बल जिससे प्रकट होगा कि वह कल स्कूल ही जायगा] ।

[5] हु मौल इस्कूल जालो [जालो पर बल जिससे प्रकट हो कि वह कल स्कूल अवश्य जायेगा] ।

अंकों के सहारे उपर्युक्त उच्चारों को इस प्रकार दिखाया जा सकता है --

१-- हु + मौल + इस्कूल + जालो ।

२-- हु + मौल + इस्कूल + जालो ।

३-- हु + मौल + इस्कूल + जालो ।

४-- हु + मौल + इस्कूल + जालो ।

५-- हु + मौल + इस्कूल + जालो ।

इन्हें रेखाओं द्वारा निम्नलिखित प्रकार दिखाया जा सकता है :

१-- हु मौल इस्कूल जालो ।

२-- हु मौल इस्कूल जालो ।

३-- हु मौल इस्कूल जालो ।

४-- हु मौल इस्कूल जालो ।

५-- हु मौल इस्कूल जालो ।

१.११.५ बलाघात [स्ट्रेस]

पिठौरागढ़ी में शब्द के विभिन्न अक्षरों पर बलाघात के कारण उच्चार में कहीं व्यतिरेक नहीं मिलता है । अत: इस बोली में बलाघात प्रायः शब्द के प्रथम अक्षर पर ही पड़ता है । उदाहरण --

मौछ ; बौमि ; पौंछि ; म्यौला

बैणाम ; कुणाकी ; मंस्यानी ।

१.१२ सह उच्चारण [कोआर्टिक्युलेशन]

सह उच्चारण का प्रभाव विवेच्य बोली में औष्ठीकरण तथा तालव्यीकरण के रूप में मिलता है।

१.१२.१ औष्ठीकरण [लैबियलाइजेशन]

औष्ठीकरण पिठौरगढ़ी की प्रमुख विशेषताओं में से है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण तो उसी समय मिल जाता है जब कोई पिठौरगढ़ी भाषी व्यक्ति [अ] का उच्चारण औ [ɔ] की भाँति करता है। जिसमें ओष्ठ किंचित गोलाकार स्थिति ग्रहण करते हैं। य् और व् को छोड़कर सभी व्यंजन ओष्ठीकृत हो सकते हैं। ओष्ठ्य व्यंजनों [प, फ, ब, भ, म] के साथ भी यह तत्व संलग्न रहता है। यथा --

ग्वाला `झुण्ड` ; फ्वाड़ा `फोड़े`
ब्वाका `बोझा` ; ट्वाटा `छेद, हानि`
त्वाड़ा `घाटा` ; द्वानों `दो बार वाला`
क्वाङा `फली` ; र्वाटा `रोटियां`।

१.१२.२ तालव्यीकरण [पैलटलाइजेशन]

तालव्य ध्वनियों को छोड़कर कोई भी ध्वनि तालव्यीकृत हो सकती है। औष्ठीकरण की भांति ही हिन्दी के अनेक शब्द केवल तालव्यीकृतकरण भी इस बोली की विशेषताओं में से है। हिन्दी के अनेक शब्द केवल तालव्यीकरण के अन्तर के साथ पिठौरगढ़ी में प्रयुक्त होते हैं। उदा० --

क्यो `कहा` ; ल्यो `ला` ; भ्यो `हुवा` ;
त्याङा `वैरे` ; ग्यो `गया` ; र्यो `रहा` ;
च्याला `लड़के` ; म्यारा `मेरे`।

१.१३ विमुक्ति [रिलीज़]

किसी स्वर या व्यंजन के उच्चारण के साथ विमुक्ति के बिना उच्चार संभव नहीं है। प्रस्तुत बोली में विमुक्ति निम्नलिखित प्रकार मिलती है।

१.१३.१ प्राणत्व

उच्चारण की स्पर्श ध्वनि विमुक्ति के साथ-साथ अपेक्षाकृत प्राणत्व से युक्त रहती है। उदाहरण --

प 'र् के 'उधर को' ; त 'श 'तैसा' ;
टै 'ट 'क्या हुवा' ; च 'इको 'आदत' ।

किन्तु इनमें प्राणत्व की मात्रा इतनी ही रहती है कि महाप्राण ध्वनियों [फ, थ, ठ, छ, ख आदि] से ये भिन्न ही रहती हैं । इसे इस प्रकार कह सकते हैं कि शब्द के आरम्भ की अल्पप्राण ध्वनियों का उच्चारण मध्यग उसी ध्वनि से अपेक्षाकृत अधिक प्राणत्व युक्त रहता है । इसके विपरीत शब्दान्त में प्राणत्व की ह्रासोन्मुखी प्रवृत्ति परिलक्षित होती है । इसीलिए शब्दान्त में महाप्राण व्यंजन बिना स्वरानुगमित हुए नहीं मिलते हैं ।

१.१३.२ स्पर्श संघर्षी तत्व

विवेच्य बोली की स्पर्श संघर्षी ध्वनियां हिन्दी की इन्हीं ध्वनियों की अपेक्षा अधिक संघर्षी तत्व से युक्त हैं और अन्य स्पर्श ध्वनियां भी स्थान एवं परिस्थितिगत वैभिन्य के साथ अल्पाल्प स्पर्श संघर्षी तत्व के साथ विमुक्त होती है । इसको क^{फ}ल ; थ^{स}न् ; क^{ख}ल ; र^{र} आदि रूप में लिखा सकते हैं ।[१]

१.१३.३ नासिक्य विमुक्ति

नासिक्य व्यंजन के पूर्व के सवर्गीय स्पर्श की विमुक्ति नासिक्य होती है । उदाहरणार्थ--

कप्में 'कप में' ; गाबूमें 'कोंपल में' ;
कातनी 'कातना' ; शाद्नी 'साधना' ।

१.१३.४ पार्श्विक विमुक्ति

पार्श्विक ध्वनि [ल्] के पूर्व के किसी ट् वर्गीय व्यंजन का उच्चारण पार्श्विक विमुक्ति से युक्त होता है । उदाहरण --

काट्लो 'काटूंगा' ; शांट्लो 'बकूंगा' ।

१-- क के ऊपर सिरे पर फ प्रकट करता है कि क का उच्चारण अल्पाल्प स्पर्श संघर्षी तत्व से युक्त है । इसी प्रकार अन्य ध्वनियों के बारे में समझना चाहिए ।

१.१४ बोलीगत ध्वनि वैभिन्य

पिठौरागढ़ी में स्थान भेद एवं जाति भेद के आधार पर अनेक विविधतायें मिलती हैं। इनमें से परस्पर दूरस्थ स्थानों में स्थानगत वैविध्य और उसी स्थान पर जातिगत विविधता परिलक्षित होती है। ये वैविध्य स्वनिमिक स्थितिपरक, संरचनात्मक और संयुक्त रूपात्मक तत्वों के कारण मिलते हैं।

१.१४.१ स्वनिमिक स्थितिपरक विविधता

१.१४.१.१ न - ण :

पूर्वी भाग में आरम्भिक स्थिति को छोड़कर शब्द के जिस स्थान पर । न । मिलता है। पश्चिमी भाग में । ण । और पश्चिमी भाग में जहां पर । न । मिलता है, पूर्वी भाग में उस स्थान पर । ण । मिलता है।

उदाहरण --

शब्द	पूर्वी भाग में	पश्चिमी भाग में
'काना'	कानो	काणो
'कांटा'	काणो	कानो
'छूटना'	छुणो	छुनो
'कंधुक'	कणियां	कनियां
'बनिया'	बनियां	बणियां

१.१४.१.२ पूर्वी भाग में मध्यम तथा अन्त्यज । ल । के स्थान पर पश्चिमी भाग में । व । , । व, वो । और कभी-कभी ` मिलता है।

उदाहरण —

शब्द	पूर्वी में	पश्चिमी में
'ढल'	'ढलो'	ढवो ढवो
पहाड़ का ढलान	ग्वाला	ग्वावा मैव मै

इनसे प्रकट होता है कि । ण । , । न । और । ल । की पूर्वी तथा पश्चिमी भाग में भिन्न-भिन्न स्वनिमिक स्थितियां हैं।

१.१४.२ संरचनात्मक विविधता

पश्चिमी भाग में ।ल्। का एक अतिरिक्त संस्वन ।ळ्। मिलता है जिसका प्रयोग शब्द के मध्य और अन्त में होता है । ।ळ्। का ।व। या ।व-वी। के साथ वैकल्पिक प्रयोग मिलता है । यह बात ऊपर १.१४.१.२ में प्रकट है ।

१.१४.३ स्वर एवं व्यंजनों के संयुक्त रूपों में अन्तर ।

विवेच्य बोली में वैविध्य का प्रमुख आधार यही है । पूर्वी क्षेत्र की बोलियों में उच्चारों में अपेक्षाकृत व्यंजन-गुच्छ अधिक मिलते हैं । पूर्वी में ओष्ठ्य और दन्त्य नासिक्य तत्व मिलता है किन्तु पश्चिमी में नासिक्य ध्वनि के साथ जिह्वा का परिवेष्टन भी रहता है और यह ण् रूप में उच्चरित होता है । उदाहरण--

पूर्वी	पश्चिमी	
जान्मर्‌यो	जाणौछ	`जा रहा हूं`
जान्मर्‌यूं	जाणयूं	`जा रहा हूं`

पूर्वी भाग में ध्वनियों में तालव्यीकरण अधिक विद्यमान है ।

उदाहरण --

पूर्वी	पश्चिमी	
ग्यो	गौ	`गया`
भ्यो	भौ	`हुवा`
क्यो	कौ	`कहा`

१.१४.४ जातिगत वैभिन्य

१.१४.४.१ ब्राह्मणों की बोली में दो भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियां मिलती हैं । एक पर संस्कृत उच्चारणों का प्रभूत प्रभाव और दूसरी स्थानीय तत्वों से युक्त है । संस्कृत से प्रभावित बोली में संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ उच्चारण में स्थिरता मिलती है । स्थानीय तत्वों से युक्त भाषा, जिसका व्यवहार सामान्य कोटि के अधिकांश ब्राह्मण करते हैं, प्रस्तुत बोली का प्रमुख रूप है ।

१.१४.४.२ क्षत्रिय जाति के लोग ब्राह्मणों से भिन्न उच्चारण करते हैं और शिल्पकार वर्ग की भाषा उक्त क्षत्रियों की बोली के अधिक निकट है ।

ब्राह्मण वर्ग की अपेक्षा रशिया या राजपूतों की केन्द्रीय बोली में स्वरोच्चारण अधिक केंद्रीय रहता है। उदा०

ब्राह्मणों की बोली	राजपूतों की बोली
औ `आओ`	अश `आओ`

किन्तु कहीं कहीं उच्चारण में राजपूत उच्च उच्च स्वर का प्रयोग करते हैं। उदाहरण --

ब्राह्मण	राजपूत
मैं	मी, मि `मैं`

१·१५ अन्त:स्फोटी (क्लिक) ध्वनियां

ऊपर जिन ध्वनियों पर विचार किया गया है, वे सभी नि:श्वास में कुछ विकार उत्पन्न करने से पैदा होती है। कुछ उच्चार ऐसे भी परिश्रुत होते हैं जिनमें अन्त:स्फोटी ध्वनियां (सक्शन साउण्ड्स) विद्यमान रहती हैं। इनके उच्चारण में जीभ ऊपर के दांत के ठीक ऊपर वर्त्स पर लगती हैं। शोक में सम्वेदना प्रकट करते समय । च... च... च... । इसी कोटि का उच्चार है। पशुओं को हांकते समय टिक्...टिक्....टिक् । की भांति के उच्चार भी उल्लेखनीय हैं जिसके उच्चारण में जिह्वा दांत के पृष्ठ भाग में से अथवा वर्त्स से न्यूनाधिक दबाव के साथ लगी रहती है और मूर्धा के पार्श्व से स्पर्श एवं अन्त: स्फोट द्वारा ध्वनि उत्पन्न होती है। ।ट..ट.. ट । उच्चार भी अन्त: स्फोटी उच्चरित होता है और जिह्वानोक वर्त्स से लगकर अन्त:स्फोट द्वारा यह परिश्रुत होता है। शीतल जलवायु होने के कारण उक्त प्रकार की ध्वनियां यथाप्रकरण व्यवहृत होती हैं।

---o---

२

सन्धि प्रक्रिया [मोर्फ़ोफ़ोनिमिक्स]

२.

सन्धि - प्रक्रिया

(मोर्फोफोनेमिक्स)

२.०. स्वनिमों पर विचार कर लेने के उपरान्त रूपिमों पर दृष्टि जाती है। इन दोनों के मध्य सन्धि एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका सम्बन्ध एक ओर ध्वन्यात्मक प्रभावों की दृष्टि से स्वनिमों से है और दूसरी ओर परिणामों की दृष्टि से रूपिमों से। इसलिए इस प्रक्रिया को स्वनिम और रूपिम प्रकरणों के मध्य रखना युक्ति युक्त है। सन्धि का सीधा अर्थ तो है ध्वनियों का जुड़ कर एक हो जाना, किन्तु यहां सन्धि को उस अर्थ में ग्रहण किया गया है जिसे भाषाशास्त्र में रूप-स्वनिमिक प्रक्रिया (मोर्फोफोनेमिक्स) कहा जाता है। वस्तुत: अपने सीधे अर्थ में सन्धि उस सम्पूर्ण प्रक्रिया का एक भेद मात्र है जो मूल अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिक और व्युत्पादक अथवा विभक्ति प्रत्ययों के परस्पर संयोग मूलक अथवा दो स्वतंत्र रूपों के संयोगजन्य प्रभावों के रूप में प्रतिफलित होती है। प्रस्तुत प्रकरण में सन्धि नाम इसी विस्तृत अर्थ में ग्राह्य है क्योंकि उक्त सम्पूर्ण प्रक्रिया में, सन्धि की ही मूलभूत आवश्यकता-- ध्वनियों अथवा रूपों का परस्पर समीप जाना, सर्वत्र विद्यमान रहती है।

२.१. पिठौरागढ़ी में उपर्युक्त प्रभावों के फलस्वरूप शब्दों अथवा प्रातिपादकों में ध्वन्यात्मक, स्वनिमिक अथवा रूपिमिक विकल्पनों, रूपान्तरों अथवा परिवर्तनों के विविध प्रकार मिलते हैं जो आगामी परिच्छेदों में उल्लेख्य हैं। स्मरणीय है कि प्रस्तुत अध्ययन शब्द अथवा रूपिमिक स्तर पर विवरणात्मक दृष्टि परक है और ऐतिहासिक अथवा तुलनात्मक विवेचन इसकी सीमा से परे है।

२.१.१. विकल्पन-

कुछ रूपिम एकाधिक आकृति वाले मिलते हैं जिनका प्रतिनिधित्व रूप स्वनिमिक प्रतीकों द्वारा होता है। ये प्रतीक परिभाषीय अवस्था में रूपान्तरित होते हैं। उदाहरणत:, निषेधार्थ सूचक रूपिम के निम्नलिखित विकल्पन दृष्टव्य हैं:

अ--	बैनो 'आवश्यक'	अबैनो 'अनावश्यक'
	श्यानो 'सयाना'	वश्यानो 'सयाना नहीं'
बन्	बन् 'बनना'	
*	होंछि, होनि 'होनो'	

पहले स्तम्भ में नसूचक रूपिम के विकल्पन हैं, दूसरे स्तम्भ में उस कोटि के प्राति-पादिक हैं जिनके साथ उक्त रूपिम जुड़ कर तीसरे स्तम्भ में उल्लिखित शब्द निर्माण करते हैं । उक्त उदाहरणों में ।अ। अवस्थाओं में विद्यमान है किन्तु ।न। कुछ शब्दों में है और कुछ में नहीं । ।न। जोकि रूपस्वनिम के रूप में ग्राह्य है , ह्रस्व स्वर से युक्त व्यंजन के पूर्व ।न्। तथा दीर्घ स्वर से युक्त व्यंजन के पूर्व ।0। रहता है :

।न। ह्रस्व स्वर से युक्त व्यंजन के पूर्व

।0। दीर्घ स्वर से युक्त व्यंजन के पूर्व

विवेच्य बोली में इस कोटि की प्रक्रिया विकारी बहुवचन कारक के संदर्भ में भी दृष्टव्य है :

-- आन	आंखा	आंखान
	बाटा	बाटान
-- ईन	चेलि	चेलीन
	तालि	तालीन
--ऊन	बात्	बातून
	बल्द	बल्दून
	गोरु	गोरून

।न। सब में विद्यमान है । अत: ।आ।, ।ई।,।ऊ। में से कोई एक रूप स्वनिम हो सकता है शेष दो परिस्थिति परक्त: परिभाषीय होंगे । यहां ।आ। को रूप स्वनिम माना जा सकता है :

।आ। → ।आ। - आकारान्त शब्दों के पश्चात
।आ। → ।ई। - ईकारान्त शब्दों के पश्चात
।आ। → ।ऊ। - उकारान्त, अकारान्त, व्यंजनान्त शब्दों के पश्चात।

प्रकट है कि भिन्न भिन्न परिस्थितियों में ।आ। के भिन्न भिन्न विकल्पन हैं । उक्त नियम संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तीनों में क्रियाशील मिलता है :

	संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण
--आन्	बाटान	हमारान्	कालान
--ईन्	चैलीन	मैरीन्	निकीन्
--ऊन	गोरून	हमून	सुन्दरून
	बल्दून		
	बातून		

२.१.२. समीकरण

२.१.२.१. इसके अन्तर्गत दो ध्वनियां समीप आने पर स्वरूप-भिन्न-ध्वनियां एक दूसरे को प्रभावित करती हैं और परिणाम स्वरूप भिन्न ध्वनियां समरूप हो जाती हैं। समीकरण की प्रक्रिया शब्दों की आन्तरिक योजना तथा शब्दों की प्रासंगिक योजनाओं को प्रभावित करती हैं। यह प्रभाव दो प्रकार से परिलक्षित होता है। पहला पुरोगामी प्रभाव और दूसरा पश्चगामी प्रभाव। यथा ;

पुरोगामी : ठिङ् - + - नो ठिङ्ङो

जग् - + - ति जग्गि

उन् - + - बीस उन्नीस

पश्चगामी : कल्- + - लैं कल्लैं

हत - + - लैं हल्लैं

उत् - + - लैं उल्लैं

तत् - + - लैं तल्लैं

सत् - + - जन सज्जन

आग् - + - हान्नो आघान्नो

(ग + ह घ, के लिए नीचे देखें २.१.२.१ में देखें)

बद् - + - नाम बन्नाम

२.१.३. प्रतिस्थापन (रिप्लैसिवनैस)

मूल प्रति पादकों के साथ व्युत्पादक अथवा विभक्ति प्रत्यय जुड़ने के परिणाम स्वरूप मूल प्रातिपादिक की अक्षर ध्वनि का प्रतिस्थापित हो जाना प्रस्तुत बोली

की सन्धि सम्बन्धी विशेषताओं में से एक है।

२.१.३.१. निम्नलिखित पुरुष वाचक संज्ञाओं के साथ व्युत्पादक पर प्रत्यय जुड़ने पर मूल प्रातिपादिक की आन्तरिक अक्षर ध्वनि प्रतिस्थापित हो जाती है:

आ - अ : क् आ क् आ - + - इया क् अ क् इया `चचेरा`

म् आ म् आ - + - इया म् अ म् इया `ममेरा`

गं आं ज् आ - + -आड़+इ गंजाड़ि `गांजा पीने वाला`

ब् आं ज् - + -आड़+इ बवंजाड़ि

अ - उ : दूद - + - आर् + इ दुद्यारि `दुधारु`

२.१.३.२. आज्ञार्थक क्रियाओं को प्रेरणार्थक में परिणत करने में प्रयोज्य पर प्रत्यय -- ० के संयोग से क अ क क्रम वाले क्रिया प्रातिपदिकों की अक्षर ध्वनि प्रतिस्थापित हो जाती है :

अ आ : क् अ ट् - + - ० क् आ ट् `काट`

म् अ र - + - ० म आ र - `मार`

उ ओ : क् उ ल् - + - ० क् ओ ल् - `कोल`

उ ओ : ट् उ ट - + - ० ट् ओ ड़ - `तोड़`

ट ड़ । यहां अन्त्य के स्थान पर भी प्रतिस्थापन है।

इ ए । ब् इ क् - + - ० ब् ए च् `बेच`

क च ।

२.१.३.३ विशेषण प्रातिपदिक के साथ क्रिया व्युत्पन्न प्रातिपदिक जुड़ने पर कोई एक या अधिक अक्षर ध्वनि विस्थाप्य है :

ओ अ : प् अ त् ओल् ओ - + - ओ प् अ त् अल् यो `पतलाकर`

आ अ : ग् आंठ् ओ - + - ओ गवंठ्यो

२.१.३.४ ओकारान्त पुलिंग एक वचन प्रातिपदिकों के पश्चात बहुवचन विभक्ति प्रत्यय - आ जुड़ने पर निम्नलिखित प्रतिस्थापन परिलक्षित होता है, जो मध्य तथा अन्त्य दोनों स्थितियों में मिलता है :

(क) ल् एड़् ओ - + - आ ल् य् आ ड् आ `लड़के`

म् ए र् ओ - + - आ म् य् आ र् आ `मेरे`

क् एल् ओ - + - आ क् य् आल् आ `केले`

(ख) घ् औ ड़् औ - + - आ घ् व् आ ड़् आ 'घोड़े'

ज् औ ड़् औ - + - आ ज् व् आ ड़् आ 'जोड़े'

(क) में प्रथम अक्षर ध्वनि ए या तथा (ख) में औ वा मिलती है। उक्त प्रक्रिया में प्रतिस्थापन के अन्तर्गत ही अन्त्य -आ के अनुसरण पर -औ - के स्थान पर -आ मिलता है :

ह् अ म् औ र् औ - + - आ ह् अ म् आ र् आ 'हमारे'

त् उ म् औ र् औ - + - आ त् उ म् आ र् आ 'तुम्हारे'

२.१.३.५ क अ कअ क्रम वाले प्रातिपदिकों में यदि मध्य स्वर - आ - हो तो बहुवचन विभक्ति पर प्रत्यय - आ जुड़ने पर केवल अन्त्य अवस्था में प्रति स्थापन मिलता है :

औ आ : ब् आ ट् औ - + - आ ब् आ ट् आ 'रास्ते'

क् आ ल् औ - + - आ क् आ ल् आ 'काले'

ख् आ ल् औ - + - आ ख् आल् आ 'खांयगे'

मध्य स्वर -उ- होने पर भी उक्त बहुवचन विभक्ति प्रत्यय - आ के संयोग से अन्त्य स्वर ही प्रतिस्थापित होता है :

ढु ङ् डौ - + - आ ढुङ्डा 'पत्थर'

२.१.३.६ मूल प्रातिपदिक अंशों के पश्चात स्त्रीलिंग व्युत्पादक पर प्रत्यय - इ जुड़ने पर प्रभाव । औ - अ । रूप में मिलता है :

हमौर् - + - इ हमरि 'हमारी'

तुमौर् - + - इ तुमरि 'तुम्हारी'

उनौर् - + - इ उनरि 'उनकी'

पतौल् - + - इ पतलि 'पतली'

यदि उक्त प्रातिपदिकों को व्यंजनान्त के स्थान पर ओकारान्त माने तथा अन्त्य ओ, इ द्वारा प्रतिस्थापित होगा । वस्तुत: मूल प्रातिपदिक अंश व्यंजनान्त तथा प्रातिपदिक रूप पुल्लिंग में ओकारान्त तथा स्त्रीलिंग में इकारान्त मिलते हैं। इस प्रकार का प्रभाव निम्नलिखित प्रातिपदिकों में भी मिलता है :

मेरो - + - इ मेरि

कालो- + - इ कालि

थाल - + - इ थालि

अत: मूल प्रातिपदिक अंशों की तुलना में ओकारान्त प्रातिपदिक ही प्रतिस्थापित होते हैं ।

२.१.३.७ दो स्वतंत्र रूपिमों का परस्पर संयोग होने की अवस्था में यदि दूसरे पद का अन्त व्यंजन संयुक्तत्व से हो तो संयुक्त होने पर अन्त्य स्वर प्रतिस्थापित होता है :

चीज - + - वस्तु चीजवस्त

यहां उ - अ रूप मिलता है ।

२.१. ३.८ इ, उ के पश्चात् असमान स्वर रूप अथवा असमान आद्य स्वर युक्त प्रत्यय जुड़ने पर इ के स्थान पर य् और उ के स्थान पर व् मिलता है :

इ - + - आं यां `यहां`

इ - + - ओ यो `यह` आश्चर्य सूचक`

इ - + - ए ये `इस`

इ - + - ओ यो `यह`

उ - + - आं वां `वहां`

उ - + - ई वो `उस`

न् इ - + - औंर - + - ओ न्यौंरो `बहाना`

तु उ - + - ए तु व् ए `तुम`

ल् उ - + - आर ल व् आर `लोहार`

क् वो ल् इ - + -आनि क्वोल्यानि `कोली का स्त्रीलिंग`

खल्ति - + - ऊनि खल्त् यूनि `जेब में`

गणनात्मक संख्याओं से सम्बन्धित उपर्युक्त प्रतिस्थाप्य अवस्था रूपिमिक

तथा शब्द कोषीय रूप से प्रतिपादित है ।

२.१.३.६ ।औ। के उपरान्त कोई असमान स्वर आता है तो औ के स्थान पर व मिलता है :

गाँ - + - आर गवाँर

गाँ - + - आड़ि गवाँड़ि

निक्कौ- + - ए निक्कुवे `बिलकुल`

अत्थौ - + - ए अत्थ्वे `पूरा`

मेरौ - + - ए मे र् वे `मेरा ही`

ते रौ - + - ए ते र् वे `तेरा ही`

वी कौ- + - ए वीक्वे `उसका ही`

कौ - + - ए क्वे `कोई`

जौ - + - ए ज्वे `जो भी`

सौ - + - ए स्वे `सो ही`

२.१.३.१० ।उन-। पूर्व प्रत्यय के संयोग से कुछ गणनात्मक संख्याओं की ध्वनियों में प्रतिस्थापन घटित होता है :

(क) आ - अ : उन् - + - साठ उन्सट

ठ - ट

यहाँ दीर्घ स्वर के उपरान्त ।ठ। तथा ह्रस्व स्वर के उपरान्त ।ट्। आया है । एक्सठ से अड़्सठ तक की गणनात्मक संख्यावाचक व्युत्पन्न प्रातिपदिकों में प्रस्तुत बोली में ठ - ट की स्थिति मिलती है ।

(ख) स - ह : उन् - + सत्तर उन्हत्तर

प्रतिस्थापन की उक्त प्रक्रिया एकहत्तर से अठहत्तर तक की गणनात्मक संख्यावाचक व्युत्पन्न प्रातिपदिकों में भी मिलती है :

एक - + - सत्तर एकहत्तर ।

(ग) चाल : एकतालीस से अड़तालीस तक की संख्याओं में यह स्थिति मिलती है :

एक - + - चालीस । एकतालीस ।

२.१.३.११ द्वित्वीकरण

द्वित्वीकरण भी प्रतिस्थापन के अन्तर्गत उल्लेख्य है क्योंकि इसमें व्यंजन ध्वनि का स्थान उसी व्यंजन का द्वित्व रूप ले लेता है और अनेक उदाहरणों में स्वरों के स्तर पर भी साथ-साथ प्रतिस्थापन परिलक्षित होता है। द्वित्वीकरण की प्रक्रिया रूपिमिक प्रक्रिया द्वारा प्रतिबन्धित मिलती है।

२.१.३.११.१. यदि मूल प्रतिपदिका की अन्तिम ध्वनि व्यंजन हो तथा संयोज्य पर प्रत्यय की आद्य ध्वनि स्वर हो तो जुड़ने पर निम्नलिखित उदाहरणों में व्यंजन का द्वित्वीकरण हो जाता है। उदाहरण :

(क) ळ । ळ्ळ् :

कळ् - + - आट । कल्लाट `शोर`

दळ् - + - ओ । दळ्ळो `पत्थर`

दळ् - + - आड़ि । दळ्ळाड़ि `पथरीली भूमि`

तळ् - + - ओ । तळ्ळो `निम्न`

मळ् - + - ओ । मळ्ळो `ऊपरी`

(ख) ब । ब् ब् :

बाब - + - ऐ । बाबबै `थोड़ी देर में`

(ग) प । प् प् :

सप् - + - ऐ । सपपै `सभी`

(घ) र । र् र् :

चुर् - + - ईनि । चुरैनि `मूत्र की दुर्गन्ध`

बेर् - + - ऐ । बेरै `शीघ्र`

र् का द्वित्व होना पूर्व स्वर के ह्रस्व होने पर निर्भर करता है। पूर्व स्वर ह्रस्व उच्चरित न हो तो द्वित्वीकरण नहीं होगा --

बेर् - + - ऐ । बेरै (र् के पूर्व की ध्वनि दीर्घ है।)

बेर् - + - ऐ । बेर्रै(र् के पूर्व की ए ध्वनि ह्रस्व है)

यहां द्वित्वीकरण स्वानिमिक रूप से भी प्रतिबन्धित है।

(ड) निक् - + - ऐ । निक्कै `अच्छी तरह`

यद्यपि पद रूप निकि है, तथापि मूल प्रातिपदिक व्यंजनान्त है और उसी के साथ प्रत्यय-संयोग होता है।

इसी भांति निम्नलिखित व्युत्पत्ति प्रक्रिया में पूर्व प्रातिपदिक मूल प्रातिपदिक के रूप हैं :-

स । स्स :

(१) इस् - + - ए । इस्स्यै `इस प्रकार`

(२) उस् - + - ए । उस्स्यै `उस प्रकार`

(३) तस् - + - ए । तस्स्यै `तिस प्रकार`

(४) कस् - + - ए । कस्स्यै `किस प्रकार`

(५) जस् - + - ए । जस्स्यै `जिस प्रकार`

(६) दस - + - ऐ । दस्सै `दसवी`

उक्त (१) से (५) तक के उदाहरणों में प्रत्ययस ए के जुड़ने से द्विमुखी ~~प्रतिक्रिया~~ प्रतिक्रिया होती है। एक तो स् द्वित्व होता है और दूसरे ए, यै द्वारा प्रति-स्थापित होता है और इस प्रकार द्वित्वीकृत । स्स् । तालव्यीकृत हो जाता है।

(च) त । त्त : रात् - + - ऐ । रात्तै `प्रातः ही`

(छ) क अ क क्रम वाले एकदारोय उच्चार में यदि स्वर । आ । होता है तो नि - पूर्व प्रत्यय की यौगिक प्रक्रिया में दूसरा व्यंजन द्वित्व मूल प्रतिपदिक का स्वर ह्रस्व हो जाता है :

म । म्म । : नि - + - काम । निकम्मो ।
आ । अ ।

२.१.४. द्विरावृत्ति (रिडुप्लिकेशन)

कुछ मूल प्रातिपदिक के साथ प्रत्यय जोड़ने से पूर्व उनके समग्र अथवा एक अंश की द्विरावृत्ति अनिवार्य होती है। द्विरावृत्ति की अनुपस्थिति में अभीष्ट व्युत्पन्न प्रातिपदिक प्राप्त नहीं होता है।

२.१.४.१. । पिढ़ । क्रिया मूल प्रातिपदिक है और इससे विशेषण व्युत्पन्न प्राप्त करने के लिए पुल्लिंग एक वचन सूचक प्रत्यय- ओ जोड़ने के साथ-साथ द्विरावृत्ति मिलती है :

चिढ़ । चिढ़चिढ़ौ

इसी प्रकार की प्रक्रिया के अन्तर्गत निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य हैं :

दिय । दिदिय 'देदो'

फट । फटफटिया 'शीघ्रगामी'

लिह । लिहलिय 'लेलो'

२.१.४.२. यद्यपि द्विरावृत्ति का सम्बन्ध प्रस्तुत बोली में प्रातिपदिक रचना से अधिक है तथापि जैसा कि ऊपर के उदाहरणों से प्रकट है, रूप स्वानिमिक प्रक्रिया के अन्तर्गत भी उपस्थिति उल्लेखनीय है ।

२.१.५. विपर्यय (मैटाथिसिस)

प्रस्तुत बोली में इसके अन्तर्गत शब्दों के भीतर दो व्यंजन ध्वनियों का पारस्परिक स्थानान्तरण द्रष्टव्य है :

मतलब । मतबल 'मतलब'

पचको । चपको 'खूब खाने के अर्थ में'

लखनउ । नखलउ 'लखनउ'

अल्म्वाड़ा । अम्ल्वाड़ा 'अल्मोड़ा'

घड़्याड़ा । घमृड़याड़ा 'एक स्थान'

पारिबटि । पाटिबरि 'पल्ली तरफ'

थैगाला । थैलागा 'वस्त्र'

२.१.६. सन्धि

सन्धि से यहां तात्पर्य उसके संकुचित अर्थ -- दो ध्वनियों का जुड़कर एक हो जाना, से है । पिठौरगढ़ी में सन्धि के दो भेद - स्वर सन्धि और व्यंजन सन्धि मिलते हैं ।

२.१.६.१. स्वर सन्धि

२.१.६.१.१ ऊपर २.१.१. के अन्तर्गत विभक्ति पर प्रत्यय - आन , ईन, - ऊन का उल्लेख किया गया है । उक्त रूप आकारान्त, इकारान्त तथा उकारान्त प्रातिपदिकों के साथ स्वर सन्धि की प्रक्रिया द्वारा जुड़ते हैं :-

आ + आ ,आ : ग्वाला - + - आन । ग्वालान

काला - + - आन । कालान्

बाटा - + - आन । बाटान

इ + ई , ई :

चैलि - + - ईन । चैलीन

तालि - + - ईन । तालीन

मालि - + - ईन । मालीन

उ + ऊ , ऊ :

गौरु - + - ऊन । गौरून

आरु - + - ऊन । आरून

२.१.६.१.२. औ + औ , औ :

तलौ - + - औट + औ । तलौटौ

डलौ - + - औट् + औ । डलौटौ

२.१.६.२. व्यंजन सन्धि

२.१.६.२.१ यदि पहले पद का अन्त्य ग हो और दूसरे पद का आद्य ह् हो तो जुड़ने पर ग् और ह् मिलकर घ् हो जाते हैं :

ग् + ह्, घ् :

बाग - + - हाल्नौ । बाघान्नौ । बघानौ

२. १. ७ लघुरूपता

इसके अन्तर्गत दो रूपिमों के परस्पर समीप आने पर लोपीकरण प्रक्रिया के फल स्वरूप संयुक्त रूप आकृति में लघु हो जाता है ।

२.१.७.१ रूपिमिक अवस्था से प्रतिबन्धित निम्नलिखित कोटि के पूर्णांक गणनात्मक संख्यावाचक रूपिमों के परस्पर जुड़ने पर उपलब्ध लघुरूपता में होती है :-

तीन - + - बीस । तेईस

चार - + - बीस । चौबीस

तीन - + - तीस । तैंतीस

चार - + - तीस । चौंतीस

पांच - + - तीस । पैंतीस

२.१. ७.२. महाप्राण ध्वनि ढ के बाद ह आता है तो जुड़ने पर ह् का लोप हो जाता है :-

कांढ् - + - हाल्नौ । कांढाल्नौ । कंढान्नौ

२.१.७.३. पहले पद का अन्त्य द्वित्व व्यंजन दूसरे पद के आद्य व्यंजन से संयोग होने पर निम्नलिखित कोटि के शब्दों में द्वित्वत्व खो देता है :

अन्न - + जल । अन्‍जल

.१.७.४. नासिक्य स्पर्श युक्त संख्या वाचक विशेषणों में विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय अथवा स्वतंत्र रूप जुड़ने पर नासिक्य का लोप हो जाता है अथवा वह अनुनासिक स्वर में परिणित हो जाता है :

प् एँ ल् - + - वान । पउँल्वान

तीन - + - बीस । तेईस

तीन - + - तीस । तैंतीस

२.१.७.५. पूर्णांक गणनात्मक संख्या के साथ - गुन पर प्रत्यय के जुड़ने पर ध्वनि लोप मिलता है । इस प्रक्रिया में ह्रस्वीकरण में कहीं-कहीं क्रियाशील रहता है :

तीन । तिगुनों

चार + गुनों । चौगुनों

द्वि - + - गुनों । दुगुनों

तीन - + -गुनों । तिगुनों

चार - + - गुनों चौगुनों ।

ह्रस्वता एवं लोप के साथ-साथ उक्त प्रक्रिया में प्रतिस्थापन भी मिलता है :

सात - + - गुनों । सत्गुनों

आठ - + - गुनों । अठ्गुनों

२.१.७.६. यों स्वतंत्र रूपिम समीप आयें तो जुड़ने पर पहले के अन्त्य स्वर का लोप मिलता है :

गाड़ा - + - ख्याता । गाड़्ख्याता

गोरु - + - बकारा । गोर्बकारा

नाना - + - तिना । नान्तिना

ठुला - + - नाना । ठुल्नाना

२.१.७.७. पहले पद का अन्त्य और दूसरे पद का आद्य यदि समान व्यंजन हों तो रूपिमिक अवस्था से प्रतिबन्धित सीमा में उनमें से एक का लोप मिलता है ।

नाक - + - कटो । नकटो

२.१.७.८. ह्रस्वीकरण की प्रक्रिया भी लघुरूपता के अन्तर्गत उल्लेख्य है । ह्रस्वीकरण के फल स्वरूप शब्द या पद स्तर पर समग्र आकृति में लघुरूपता-परक अन्तर आता है । उदा०

सात - + - ऊँ । सतूं
आठ - + - ऊँ । अठूं
नौ - + - ऊँ । नवूं
ग्यारह + - ऊँ ग्यहूं
बार - + - ऊँ। बहूं
तेर - + - ऊँ । तेहूं
चौद- + - ऊँ । चौदूं

२.१.७.९. व्यंजनान्त प्रातिपदिक के उपरान्त आद्य व्यंजन युक्त प्रत्यय हो तो जुड़ने पर प्रातिपदिक का स्वर ह्रस्व मिलता है :

दूम - + - नि । दुम्नि
बात् - + - कीवा । बत्कीवा

२.१.८. ध्वन्यात्मक समानता

रूपिमिक अवस्था से प्रतिबन्धित सीमा में गणनात्मक संख्यावाचक प्रातिपदिक । चालीस-। के पूर्व ।उन-। पूर्व प्रत्यय जुड़ने पर परवर्ती ध्वनि सवर्गीय हो जाती है:

उन् - + - चालीस । उन्तालीस

२.१.९. विस्तार

यौगिक प्रक्रिया में लोप के साथ-साथ विस्तार की प्रक्रिया भी स्थान लेती है । निम्नलिखित कोटि के क्रम सूचक गणनात्मक संख्यावाचक प्रातिपदिकों में गणनात्मक संख्या की ध्वनियों में लोप तथा प्रत्यय का विस्तार द्रष्टव्य है :

द्वि - + - सर + औ । दुसौरो
तीन - + - सर + औ । तिसौरो

२.१.१०. वस्तुत: प्रस्तुत बोली में सन्धि प्रक्रिया प्रातिपदिकों अथवा प्रत्ययों के प्रकारों पर निर्भर न होकर अपनी प्रकृत प्रवृत्ति के अनुसार क्रियाशील मिलती है जिसका सूत्रात्मक विवरण देने की ऊपर चेष्टा की गयी है । यही नहीं, किसी भी जीवित बोली के सम्बन्ध में सभी सन्धि नियम निरपवाद नहीं कहे जा सकते + हैं ।

२

रूप प्रक्रिया

१- व्युत्पादक प्रत्यय और व्युत्पन्न
प्रातिपदिक रचना ।

२- रूप साधक प्रत्यय और रूप सारिणी

3.

रूप प्रक्रिया [मौर्फोलौजी]

३.० पिठौरागढ़ी के मूल अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिक और प्रत्यय रूप प्रक्रिया विचार के केन्द्र बिंदु हैं। इन्हीं के आधार पर व्युत्पत्ति [डिराइवेशन] तथा रूपसारिणी का निर्धारण होता है। यहां प्रातिपदिक मूल और व्युत्पन्न, दोनों रूपों में मिलते हैं। प्रातिपदिकों की विशेषता यह है कि उनके साथ प्रत्ययों का योग होता है। अतः प्रातिपदिकों पर, प्रत्ययों के सन्दर्भ में ही विचार करना सुविधाजनक है। इससे प्रातिपदिक और प्रत्यय दोनों की स्थिति साथ-साथ स्पष्ट होती जायगी। प्रयोग स्थिति [आद्य, मध्य और अन्त्य] की दृष्टि से प्रत्यय तीन प्रकार के ~~होते हैं~~ मिलते हैं -- पूर्व प्रत्यय, अन्तःप्रत्यय और पर प्रत्यय। इनके अतिरिक्त अधि प्रत्यय [सुप्राफिक्सेज] भी मिलते हैं जो खण्डीय रूपिमों [सेग्मेन्टल मौर्फीम्स] के साथ जुड़ते हैं। कार्य के आधार पर उक्त प्रत्यय दो प्रकार के हैं -- [क] व्युत्पादक प्रत्यय [डिराइवेटिव अफिक्सेज़] तथा [ख] रूप साधक प्रत्यय [इन्फ्लेक्शनल]। पूर्व प्रत्यय या उपसर्ग व्युत्पादक प्रत्यय होते हैं। पर प्रत्यय व्युत्पादक भी होते हैं और रूप साधक भी। व्युत्पादक प्रत्यय किसी धातु, मूल अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिक के पूर्व अथवा पश्चात् जुड़ कर दूसरे प्रकार के प्रातिपदिक व्युत्पन्न करते हैं, जबकि रूपसाधक प्रत्यय व्याकरणिक रूपों की रचना करते हैं। अतः रूपसाधक प्रत्यय सदा अन्त्य रहते हैं।

३.१ व्युत्पादक प्रत्यय और व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना

व्युत्पादक प्रत्यय पूर्व प्रत्यय, अन्तः प्रत्यय और पर प्रत्ययों के रूप में आद्य, मध्य तथा अन्त्य तीनों स्थितियों में प्रयुक्त होकर व्युत्पन्न प्रातिपदिक संरचना में सहायक होते हैं। व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना रूपिमिक अध्ययन का एक अंग है। रूपिमों का संबंध शब्द संघटना [स्ट्रक्चर आफ़ वर्ड्स] से है। व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना का विषय कई भागों में विभाज्य है। जैसे, संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना, सर्वनाम व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना, विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना और क्रिया विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना।

३.१.१ संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना

३.१.१.१ संज्ञा व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय

पूर्व प्रत्यय सदा व्युत्पादक प्रत्यय होते हैं। इनका योग धातु, मूल प्रातिपदिक अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के पूर्व होता है और अर्थ अपरिवर्तित।मौडिफाई। होता है। अर्थ व्यंजना की दृष्टि से इनके अनेक प्रकार हो सकते हैं। जैसे; हीनार्थक, अभावार्थक, श्लाघार्थक, निषेधार्थक आदि।

३.१.१.१.१ हीनार्थक पूर्व प्रत्यय

।अ-। :। अ -+ - धर्म अधर्म। `अधर्म`
।अ -+- न्यौ अन्यौ। `अन्याय`
।औ-। :। औ - + - गुण औगुण। `अवगुण`
।अप-। :। अप - + - जश अपजश। `अपयश`
।कु-। :। कु - + - बखत कुबखत। `बुरा समय`
।कु - + - मति कुमति। `बुद्धि`कुमति`
।कु - + - ठौर कुठौर। `बुरी जगह`
।बद्-। :। बद्- + चलन बदचलन। `बुरा आचरण`
।दुर्-। :। दुर - + - गति दुरगति। `दुर्गति`
।दुर्- +-- दशा दर्दशा। `दुर्दशा`

३.१.१.१.२ अभावार्थक पूर्व प्रत्यय

।अ-। :। अ - + - ज्ञान अज्ञान। `अज्ञान`
।अ - + - काल अकाल। `अकाल`
।अन्-। :। अन्- + - बन अनबन। `अनबन`
।नि-। :। नि - + - और + ओ निओरो। `नजदीक`

३.१.१.१.३ श्लाघार्थक पूर्व प्रत्यय

।स-। :। स - + - पूत। सपूत। `सुपुत्र`
।सत्-।:। सत् - + - जन सज्जन। `सज्जन`

३.१.१.१.४ स्वार्थक पूर्व प्रत्यय

।अप-। :। अप् - + - घात अपघात। `आत्महत्या`

३. १. १. १. ५ परार्थक पूर्व प्रत्यय

। पर - । : । पर - + - देश परदेश । `परदेश `

। पर - + - घर परघर । `दूसरे का घर `

३. १. १. १. ६ निषेधार्थक पूर्व प्रत्यय

। न - । : । न - + - खानि नखानि । `न खाने की स्थिति `

३. १. १. १. ७ उपर्युक्त पूर्व प्रत्ययों के अतिरिक्त कतिपय विदेशी उपसर्ग भी विदेशी शब्दों के साथ मिलते हैं। नीचे दिये गये विदेशी पूर्व प्रत्यय यद्यपि स्वतंत्र रूप हैं तथापि पूर्व प्रत्ययवत व्यवहृत होने से उनका उल्लेख किया जा रहा है।

३. १. १. १. ७. १ `सु ` अर्थ द्योतक विदेशी पूर्व प्रत्यय

। खुश - । : । खुश - + - बू खुशबू । `सुगंध `

३. १. १. १. ७. २ `अध्यक्ष ` अर्थ द्योतक विदेशी पूर्व प्रत्यय

। हेड् - । : । हेड् - + - मास्टर हेडमास्टर । `प्रधानाध्यापक `

। हेड् - + - क्लर्क हेडक्लर्क । `प्रधान लिपिक `

३. १. १. २ संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय

स्त्रोत की दृष्टि से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय दो प्रकार के हैं :

।क। स्वदेशी ।ख। विदेशी

स्वदेशी के अन्तर्गत तत्सम, तद्भव अथवा देशज पर प्रत्ययों का समावेश है। विदेशी पर प्रत्ययों का स्रोत विदेशी भाषाओं में है।

३. १. १. २. १ स्वदेशी संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय

।१। । - ϕ । : धातु के साथ जोड़कर संज्ञा की रचना होती है --

।लटक् - + - ϕ लटक । `रीति, ढंग`

।खड़ - + - ϕ खड़ । `व्यर्थ `

।२। । - ब । : विशेषण मूल के साथ इसके संयोग से भाववाचक संज्ञा बनती है :

। वाड् - + - ब वाध । `नयी `

।३। । - बा । : इसको क्रिया प्रातिपदिक के साथ जोड़कर संज्ञा की रचना की जाती है। इस पर प्रत्यय से युक्त रूप बहुवचन में मिलते हैं --

।तान् - + - बा ताना । `फीते `

। हाण् - + - बा हाणा । `एक रोग `

।- आ। का संयोग संज्ञा के साथ भी होता है --

। स्यार - + - आ स्यारा। `नदी वाली जगह`

।४। । - इ। : क- विशेषण के साथ जोड़कर तिथिवाचक संज्ञा बनती है --

।चौथ् - + - इ चौथि । `चतुर्थी`

। एकादश - + - इ एकादशि । `एकादशी`

इसीप्रकार । नौमि। , ।दशामि। आदि उदाहरण है।

ख- विशेषण के साथ जोड़कर भाववाचक संज्ञा बनती है --

। लाल् - + - इ लालि। `लालिमा`

। गरीब - + - इ गरीबि । `गरीबी`

। ज्वान - + - ज्वानि । `ज्वानी`

। हुस्यार - + - इ हुस्यारि । `चतुराई`

। गरम - + - इ गर्मि । `गर्मी`

। सफेद - + - इ सफेदि । `सफेदी`

ग- विशेषण के साथ जुड़कर संज्ञा बनाता है --

। बीश - + - इ बिशि । `बीस वस्तुओं का समूह`

। बतीस - + - इ बतिसि । `बतीस दांतों का समूह`

घ- धातु के साथ जोड़ कर संज्ञा की रचना की जाती है --

। हंस - - + - इ हांसी । `हंसी`

। खांस - + - इ खांसि । `खांसी`

। रुच् - + - इ रुचि । `रुचि`

। छुट् - + - इ छुट्टि । `छुट्टी`

। रेत - + - इ रेति । `रेती`

। बोल - + - इ बोलि । `बोली`

ङ- संज्ञा मूल प्रातिपदिक के साथ जुड़कर दूसरे प्रकार के संज्ञा प्रातिपदिक बनते हैं --

।अंगुठ् - + - इ अंगुठि । `अंगूठी`

। पौंच - + - पौंचि । `कलाई का आभूषण`

।बांश - + - इ बांशि । `इमारती लकड़ी`

।चोर - + - इ चोइ । `चोरी`

। तड़ - + - इ ताड़ी । `ताकत`

। नाल् - + - इ नालि । `नाली`

।५। ।-उ। : ।क। - + - उ = संज्ञा --

।झाड़ - + - उ झाड़ू = । `झाड़ू`

।ख। व्यक्तिवाचक संज्ञा मूल प्रातिपदिक + उ = व्यक्तिवाचक संज्ञा ।

।तार् - + - उ तारु । `व्यक्ति का नाम`

। हर - + - उ हरु । //

। पर - + - उ परु । //

।६। । - ए। : संज्ञा मूल प्रातिपदिकों में इस प्रत्यय का संयोग करके पुल्लिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की रचना होती है --

। दुब - + - ए दुबे । `दुबे`

। चौब - + - ए चौबे । `चौबे`

।७। ।ई। ।क। - + - ई = भाववाचक संज्ञा --

। हिट् - + - ई हिटी । `चलने की स्थिति`

। चर् - + - ई चरी । `चरने की स्थिति`

। पढ़ - + - ई पढ़ी । `पढ़ाई`

। लड़् - + - ई लड़ी । `लड़ लड़ाई`

। लेख - + - ई लेखी । `लिखाई`

। चोर - + - ई चोरी । `चोरी`

। चिण - + - ई चिणी । `चिनाई`

। मिल - + - ई मिली । `मिलने की स्थिति`

। खोद् - + - ई खोदी । `खुदाई`

।ख। विशेषण मूल प्रातिपदिक + ई = संज्ञा

। मिठ - + - ई मिठी । `मिठाई`

। निच - + - ई निची । `नीचाई`

। ऊंच् - + - ई ऊंची । `ऊंचाई`

। छोट - + - ई छोटी । `छोटाई`

। बड़ - + - ई बड़ी । `बड़ाई`

।बुर्‌ - + - ऐ बुरै । `बुराई`

।साफ्‌ - + - ऐ सफै । `सफाई`

।ग। संज्ञा + ऐ पण्डितै । `पण्डिताई`

।ढुङ्‌ - + - ऐ ढङै । `पत्थरबाजी`

।घ। संज्ञा + ऐ = स्त्री लिंग संज्ञा । अर्थ की दृष्टि से इससे सम्बद्ध वस्तु में निहित गुण के देने वाले पदार्थ का बोध होता है --

।ठण्ड - + - ऐ ठण्डै । `ठण्डा पेय`

।ङ.। संज्ञा + ऐ = संज्ञा --

।घ्यू - + - ऐ घ्युऐ । `घी की गंध`

संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना में उक्त परप्रत्यय का प्रयोग प्रस्तुत बोली में पर्याप्त होता है । इससे युक्त संज्ञा में प्राय: भाववाचक संज्ञार्थ होती है ।

।८। ।- औ । :

।क। क्रिया प्रातिपदिक + औ = संज्ञा --

।जाल्‌ - + - औ जालो । `खिड़की`

।उखाल्‌ - + - औ उखालो । `उल्टी, कै`

।ख। विशेषण + औ = संज्ञा ।

।ताल - + - औ तालो । `ताला`

।ग। स्थानवाचक + औ = संज्ञा --

।पार - + - औ पारो । `काठ पात्र`

।घ। संज्ञामूल प्रातिपदिक + औ = संज्ञा --

।मुल्‌ - + - औ मुलो । `मूली`

।कुर्‌ - + - औ कुरो । `घास`

।गड़ - + - औ गड़ो । `खेत`

। - औ । से युक्त रचनाएं एकवचन में मिलती हैं । क्रियार्थक संज्ञा भी । - औ। के संयोग से बनाई जाती है --

।ङ.। ।लेख + न - + - औ लेखनो । `लिखना`

।हिट्‌ + न - + - औ हिट्नो । `चलना`

।-औ। के संयोग से बनने वाली संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचनाएं भी विवेच्य बोली में पर्याप्त उपलब्ध है -

।९। ।-औ ।

।क। - + । औ - संज्ञा

।पढ़ -+ - औ पढ़ौ `पढ़ाव`

। कट् - + - औ कटौ `कटाव`

।ख। विशेषण + औ - संज्ञा -

। तल् - + औ तलौ । `तलाव`

।१०। ।-अक । :

।क। संज्ञा + - अक - संज्ञा

लघ्ववर्धक -

।ढोल -+ - अक + इ ढोल्कि । ` छोटा ढोल `

।ख। विशेषण -+ - अक - संज्ञा-

भाववाचकता द्योतक :

।ठण्ड - + - अक ठण्डक । ` ठण्डक`

।ग। क्रिया - + - अक - संज्ञा । इसका अर्थ उस क्रिया का स्थान होता है -

।बैठ - + - अक बैठक । ` बैठने का स्थान `

।सर् - + - अक सरक सड़क।

वह स्थान जहां चला जाता है ।

।११। ।-अम ।

- + - अम - संज्ञा

कर् - + अम करम् `कर्म `

।१२। ।-जा। : किसी संबंधी के पुत्र या उसकी पुत्री अर्थद्योतक है । इस कोटि की व्युत्पन्न संज्ञाएं हैं :

।मतिजो । , । मतिजि । , । मान्जो । , मान्जि । आदि ।

।१३। ।-टा। : इसके साथ लिङ् वचन द्योतक प्रत्यय संयुक्त होते हैं -

। रौल्टा । `छोटे बाल `

। रम्टा । `कुल्हाड़ी `

।१४। ।- अत् ।

।क। - + अत् - संज्ञा -

। खप् - + अत् खपत् । `खपत की क्रिया`

। बचत - + - अत् बचत् । `बचत`

।ख। संज्ञा - + अत् - संज्ञा -

। रङ् - + अत रंगत । `रागरंग`

।१५। । - अन् ।

।क। - + अन् - संज्ञा -

। चल् - + - अन् चलन । `प्रचलन`

। लग् - + - अन् लगन । `लगन`

। जल - + - अन् जलन । `जलन`

।ख। संज्ञा प्रातिपदिकों के पश्चात - अन प्रत्यय जोड़ने से संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिक बनते हैं -

। सुहाग - + - अन् सुहागन । `सौभाग्यवती`

।१६। । - अड़ । : संज्ञा - + - अड़ - संज्ञा

इसके साथ - इ या औ आता है -

। आंत् - + - अड़ + इ आतड़ि आनड़ि । `अन्तड़ी`

। आङ् - + - अड़ + इ आंडड़ि । `अंखरखा`

या

।आङ् - + - अड़ + औ आंड़ोड़ी । `अखरखा`

।चाम - + - अड़ + औ चामोड़ी ।`चमड़ा`

(१७) ।- आट। : संज्ञा - + - आट = संज्ञा -

कलकल - + - आट = कलकलाट `ध्वन्यात्मक`

(१८) नौर - + - आट = नौराट `कराह`

।१९। ।-आड़ । : संज्ञा मूल प्रातिपदिक के पश्चात जुड़कर दूसरे के संज्ञा प्रातिपदिक बनाता है -

।श ल्ला - + - आड़ + इ शल्ल्याड़ि । `चीड़ की वृक्षस्थली `

। खेल - + - आड़ + इ खेलाड़ि । ` खिलाड़ी `

।२०। ।- आत् ।: संज्ञा - + - आत् - संज्ञा -

। बर् - + - आत बरात बर्‌यात । ` बारात `

।२१। । - आन । : - + - आन् - संज्ञा

। कह् - + - आन् + इ कहानि । `कहानी`

।२२। ।- आर ।:

।क। संज्ञा मूल प्रातिपदिकों के साथ जोड़कर दूसरे प्रकार के पुल्लिंग संज्ञा प्रातिपदिकों का निर्माण होता है जिनसे `कार्य करने वाला ` अथवा उस स्थानका ` अर्थ द्योतित होता है । यह प्रत्यय प्राय: व्यवसायार्थक है -

।- कुम कुम्ह - + - आर कुमार कुम्हार । `कुम्हार`

। सुन् - + - आर सुनार ।`सुनार`

। लु - + - आर ल्वार । `लोहार `

।ख। - आर् के साथ पुल्लिंग प्रत्यय - औ, या स्त्री लिंग प्रत्यय - इ जोड़कर भी संज्ञा प्रातिपदिक मिलते हैं -

।घास - + - आर् + औ घस्यारो । `घस्यारा`

। घास - + - आर् + इ घस्यारि । ` घसियारी `

। भीख - + - आर् + इ भिकारि । ` भिखारी `

।ग। क्रिया प्रातिपदिक - + - आर् + औ - संज्ञा -

। निबट - + - आर + औ निबटारो । ` निबटारा `

।२३। ।- आल । : संज्ञा - + - आल् - संज्ञा -

। ससुर - + - आल ससुराल । ` ससुराल `

। पर् - + - आल पराल । ` पुआल `

। मह् - + - आल महाल । `व्यर्थता के अर्थ में `

। सौर् - + - आल सौर्‌याल । `सौरवाली `

।२४। ।- आव । : - + - आव - संज्ञा । यह प्रत्यय अकेला नहीं आता है । इसके पश्चात - आ प्रत्यय जुड़ता है -

।बोल - + - आव + आ बोलावा । ` बुलावा`

।२५। । - आस। : - + - आस - संज्ञा -

। सौर - + - आस सौरास । ` ससुराल `

। पि - + - आस प्यास । ` प्यास `

।मिठ - + - आस मिठास ।` मिठास`

।२६। ।-इरा । : - + - इरा + इ - संज्ञा

इस प्रत्यय के पश्चात स्त्री लिंग परप्रत्यय - इ आता है -

। कश्र - + - इरा + इ कशिरिा । `लोटा `

।२७। ।- इया । :

।क। - + - इया - संज्ञा -

।लुट् - + - इया लुटिया । ` लोटा`

।ख। संज्ञा - + - इया - संज्ञा -

।अल्मोड़ - + - इया अल्मोड़िया ।` अल्मोड़ा वासी`

।मोट - + - इया मोटिया ।` मोटवासी`

। हल् - + - इया हालिया । `हरवाहा`

। आढ़त - + - इया आढ़तिया । ` आढ़त का मालिक`

।ग। संज्ञा - + - इया लघ्वर्थक संज्ञा -

।बंदर - + - इया बंदरिया ।` बन्दरिया`

।कुत - + - इया कुतिया ।` कुतिया`

।घ। विशेषण - + - इया - संज्ञा -

।पील - + - इया पीलिया । ` पीलिया रोग `

।ङ। क्रिया विशेषण - + - इया - संज्ञा -

।भीतेर - + - इया भितरिया । ` भीतर वाली स्त्री `

।च। उक्त प्रत्यय से युक्त रचनाओं से लाड़ प्यार सूचक संज्ञायें भी मिलती हैं -

।मोती । नाम से । मोतिया ।,

।हरि हरी। से ।हरिया ।,

। भाइ । से । भइया । आदि ।

।२८।　　।-उवा ।

　।क। संज्ञा - + - उवा - संज्ञा

　　टहल् - + - उवा　टहलुवा। ` सेवक `

　।ख।　　- + - उवा - संज्ञा -

　　।कट्टे - + - उवा　कट्टवा । ` कपटी `

　　। गड़ - + - उवा　गडुवा । ` लोटा `

।२९।　　।-एठ। :　　- + - एठ - संज्ञा -

　　।कट् - + - एठ + ओ　करेठो । ` झाडू `

।३०।　　।- एड़ । :

　।क।　।बज् - + - एड़　बजेड़ । ` एक स्थान `

　।ख।　विशेषण - + - एड़ - संज्ञा -

　　।कमु - + - एड़　कमेड़ । ` सफेद मिट्टी `

　　।अध - + - एड़　अधेड़ । ` प्रौढ़ `

।३१।　　।-एत। :　विशेषण मूल प्रातिपदिक के पश्चात इसे जोड़कर संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिक बनाये जाते हैं --

　　।बढ़ - + - एत　बढ़ेत । ` स्थानवाचक संज्ञा `

।३२।　　—

।३३।　　।-अर। :　संज्ञा - + - अर - संज्ञा　। इसके साथ - इ प्रत्यय संलग्न रहता है -

　　।कोठ्- + - अर् + इ कोठरि । ` कोठरी `

।३४।　　।- आप। :

　।क।　विशेषण - + - आप - संज्ञा

　　।मोट - + - आप + ओ　मोटापो । ` मोटापन `

　　।बुढ - + - आप + ओ　बुढापो । ` बुढापा `

　।ख।　　- + - आप　संज्ञा -

　　।मिल - + - आप　मिलाप । ` मिलने की स्थिति या व्यक्ति वाचक नाम `

।३५। ।-आन ।

।क। क्रिया - + - आन् - संज्ञा-

।भर् - + - आन + औ भरानौ । ` इमारती लकड़ी`

।ख। संज्ञा - + - आन् = संज्ञा -

।जेठ - + - आन + इ जेठानी । ` जेठानी`

। जेठ - + - आन् + औ जेठानो । ` जेठ`

। द्यौर - + - आन द्यौरान । ` देवेरानी `

।ग। उक्त प्रत्यय `प्रत्येक ` अर्थ द्योतनार्थ भी आता है :

। साल - + - आन + आ । ` प्रतिवर्ष `

।३६। ।-एल ।: । घंरा - + - एल घंराल ।` सांस्कृतिक समारोह

।३७। ।- ऐत । : संज्ञा - + - ऐत - संज्ञा

।पंच - + - ऐत पंचैत `पंचायत

।३८। ।-ऐन ।:

।क। धातु के साथ जोड़कर संज्ञा बनती है । इसके साथ जोड़कर स्त्री लिंग प्रत्यय - इ आता है -

।छिट् - + - ऐन + - छिटैनि। `चाल `

।ख। विशेषण - + - ऐन - संज्ञा -

।चुकिल् - + - ऐन + - चुकिलैनि। ` खटास`

।तित् - + - ऐन् + - तितैनि । ` तीतापन`

।३९। ।-ऐल।: - + ऐल = संज्ञा

। रख - + - ऐल रखैल । `रक्खी हुई स्त्री `

।४०। ।-वाल ।:

।क। - + - वाल = संज्ञा -

।खी - +।- वाल + आ ख्वाला ।` तलाश`

।ख। संज्ञा - + - वाल = संज्ञा

। गौ - + - वाल + औ ग्वालौ । ` ग्वाला `

।४१। ।- उल । संज्ञा - + - उल् = संज्ञा -

।दांत - + - उल + इ दाथुलि । `हंसुली `

।बाट - + - उल + इ बाटुलि ।`हिचकी `

।४२। ।-औड़।

।क। संज्ञा - + - औड़ = संज्ञा । इस पर प्रत्यय के पश्चात -ओ या -आ पर प्रत्यय जुड़ते हैं --

।खांत - + - औड़ + ओ खांतोड़ो । ` कपड़ा `

।खांत - + - औड़ + आ खांताड़ा । ` कपड़े `

इसी प्रकार । दाम् । से । दामोड़ो। और । दामाड़ा।

।दुख। से । दुखोड़ो । आदि संज्ञाएं बनती हैं र।

।ख। विशेषण मूल प्रातिपदिक + औड़ = संज्ञा

।तिन् - + - औड़ + ओ तिनोड़ो । ` तिनका `

।४३। ।-औड़। संज्ञा - + - औड़ = संज्ञा-

। डूम - + - औड़ डुमौड़। `जाति विशेष का निवासस्थान `

।हाथ - + - औड़ + ओ हथौड़ो । `हथौड़ा`

क्रिया + औड़ = संज्ञा -

।भाज - + - औड़ + ओ भगौड़ो । ` भगोड़ा `

।४४। ।-औरा । : संज्ञा - + - औरा = संज्ञा

।शिर - + - औरा। औरा + ओ शिरौरा। । ` सिर की गद्दी `

।४५। ।- औत।

।क। संज्ञा - -+ - औत = संज्ञा -

समझ - + - औत् + ओ समझौतो । ` समझौता`

।ख। उक्त प्रत्यय -इ पर प्रत्यय के साथ आकर भी संज्ञाप्रातिपदिक संरचक बनता है --

।बाप - + - औत् + इ बपौत्ति ।` बपौती`

।काठ - + - औत + इ कठौति।` कठौती`

।ग। क्रिया - + - औत् = संज्ञा

। काट - + - औत् + इ कटौति । `कटौती `

।४६। ।- औना। : - + - औड़ = संज्ञा । इस प्रत्यय के साथ -ओ का संयोग होता है --

।बिछ - + - औन् + औ बिछौनो । ` बिछौना`

।खेल - + - औन् + औ खेलौनो । ` खिलौना `

।४७। ।-औल ।

।क। संज्ञा मूल प्रातिपदिक के पश्चात जोड़कर दूसरे प्रकार के संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिक बनाये जाते हैं -

। आदिमि - + - औल + इ आदमियौलि ।`मनुष्यता`

।ख। विशेषण - + - औल = संज्ञा -

।धीठ - + - औल + इ धिठ्यौलि ।`उत्पात`

।ग। - + - औल् = संज्ञा -

।मेंट - + - औल् + इ मेंटौलि । ` मेंट`

या । मेंटोला । अथवा । मेंटौला । भी ।- औल् ।

पर प्रत्यय पर आधारित है ।

।४८। ।- अप्पन।: विशेषण - + - अप्पन = संज्ञा

। बड़ - + - अप्पन बड़प्पन । ` श्रेष्ठता `

।४९। ।- आवट।: धातु के पश्चात जोड़कर संज्ञा की रचना होती है --

।लेख - + - आवट लेखावट । ` लिखावट`

।बन् - + - आवट बनावट । ` बनावट `

।मिल - + - आवट मिलावट। ` मिलावट`

।रुक - + - आवट रुकावट। ` रुकावट`

।५०। ।- आवत।: - + आवत = संज्ञा-

।कह - + - आवत कहावत ` कहावत `

।५१। ।- आहट । : विशेषण के साथ जुड़कर भाववाचक संज्ञा संरचना बनता है --

।गरम - + - आहट गरमाहट । ` गर्मी `

।नरम - + - आहट नरमाहट । ` नर्मी `

।५२। ।- कड़।: ।सौ - + - कड़ + औ सैकोड़ो।

` सौ का समूह `

।।५३।   ।-ठ।:   संज्ञा - + - ठ = संज्ञा-

। गो - + - ठ गोठ । ` गौशाला `

।५४।   ।-ति।:   - + - ति = संज्ञा

।बस् - + - ति बस्ति । ` बस्ती `

।बढ़ - + - ति बढ़ति । ` बढ़ती `

।घट् - + - ति घटति । ` अवनति `

।५५।   ।-न ।:

।क।   संज्ञा - + - न = संज्ञा इसके साथ स्त्री लिंग द्योतक प्रत्यय

।-इ। संलग्न रहता है --

हुम - + - नि हुम्नि । ` हुम्नी `

बामन - + - नि बाम्नि । `ब्राह्मणी `

।खश्या - +।- नि खश्यानि । ` खसियानी `

।मुत - + - नि मुतनि ।` मुतनि `

।ख।   क्रिया - + - न - क्रियार्थक संज्ञा

यहां पुल्लिंग एकवचन द्योतक प्रत्यय - ओ साथ आता है -

।चाल् - + - न् + ओ चाल्नो । `छानना`

।शाड़ - + - न् + ओ शाड़नो । `मिलाना`

।हारा - + - न् + ओ हारानो । ` मोड़ना `

।छिट - + - न् + ओ छिट्नो । ` चलना `

।५६।   ।-पन। : विशेषण - + - पन = भाववाचक संज्ञा -

। कालो - + - पन काल्पन । ` कालापन `

इसीप्रकार ।ठुटपन।, ।बचपन। आदि संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिक

।-पन । पर प्रत्यय के संयोग से बनते हैं ।

।५७।   ।-ला।:   संज्ञा - + - ला = संज्ञा -

। शत् - + - ला शत्ला । ` समझौता `

।५८।   ।- लेत ।: विशेषण - + - लेत = संज्ञा

।बड़ - + - लेत बड़लेत । ` स्थान का नाम `

।५९।   ।-बाड़ ।:

।क। स्थानवाचक - + - वाड़ = संज्ञा-

।पिछ - + - वाड़ + वो पिछवाड़ो । ` घर के पीछे का स्थान`

।ख। - + - वाड़ = संज्ञा ---

।खेल - + - वाड़ खिलवाड़ । ` खेल `

।ग। प्रश्नवाचक - + - वाड़ = संज्ञा

।कि - + - वाड़ किवाड़ । ` दरवाजा `

३:१.१.२.२ उपर्युक्त कोटि के पर प्रत्ययों के अतिरिक्त कुछ ऐसे संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय भी हैं जिनका स्रोत विदेशी भाषा में है और इनका व्यवहार विवेच्य बोली में सामान्यत: होता है । इनमें से परिचित रूप इस प्रकार हैं --

।क। ।-इचा । : । बाग - + - इचा बगिचा ।

। गलु - + - इचा गलिचा ।` गलीचा`

।ख। ।-कार ।:

।जान - + - कार जानकार ।`जानकार`

।पेश - + - कार पेशकार ।` पेशकार`

।ग। ।- खोर ।:

।सुद - + -खोर सुदखोर । `सुदखोर `

।हराम- + - खोर हरामखोर । ` हरामखोर`

।गम - + - खोर । गमखोर । ` गमखोर `

।घ। ।-गिरि ।:

।।कुल्लि - + - गिरि कुल्लिगिरि ।` कुली का काम

।ङ। ।-चि :

।खजान् - + - चि खजान्चि । `खजान्ची`

।अफीम - + - चि अफीमचि ।`अफीमची`

।तबल - + - चि तबलचि ।` तबलची `

।च। ।-आन्द ।: [illegible] वचन प्रत्यय के साथ आता है -

।हराम् - + - आद + वो हरामआदो । ` हरामजादा ` ।

।हराम - + -जाद् + इ हरामजादि ।

।हराम - + - जाद् + आ हरामजादा ।

।छ। ।-दार । :

।लेन - + - दार लेनदार । `लेनदार`

।देन - + - दार देनदार । `देनदार`

।ज। ।- नवीस ।:

। अर्ज - + - नवीस अर्जनवीस । `अर्ज़नवीस`

।नक्शा - + - नवीस नक्शानवीस । `नक्शानवीस`

।झ । ।-पोश।:

।मेज - + - पोश मेजपोश । `मेजपोश`

निम्नलिखित रूप स्वतंत्र रूपवत् भी परिश्रुत होते हैं और परप्रत्ययवत प्रयोग के कारण ही इनका उल्लेख यहां किया जा रहा है --

।-खान । : लिंग वचन प्रत्यय में संलग्न रहता है -

।-छाप् - + - खान् + औ छापखानौ । `छापाखाना`

।- कैद - + - खान् + औ कैदखानौ । `कैदखाना`

।ट। ।-बन्द ।

।बिस्तर - + - बन्द बिस्तरबन्द । `बिस्तरबन्द`

।कमर - + - बन्द कमरबन्द । `कमरबन्द`

-इ के योग से :

। चक - + - बन्द + इ चकबन्दि । `चकबन्दी`

। नाका - + - बन्द + इ नाकाबन्दि । `नाकाबन्दी`

। हद - + - बन्द + इ हदबन्दि । `हदबन्दि`

।ठ। ।- बाज ।:

।नक्ल - + - बाज नक्लबाज

। चिढ़ि - + - बाज चिढ़िबाज ।

। बुलबुलि - + - बाज बुलबुलिबाज ।

।ड। ।-वार ।:

।उम्मीद - + - वार उम्मीदवार ।

।ढ।   ।-शाज ।

।रड़ - + - शाज रड़शाज ।

।रड - + - शाज् रडशाजि ।

।ण।   ।- सवार । : । घोड़ - + - सवार   घुड़सवार

३·१·१·३ कुछ स्वदेशी स्वतंत्र रूप पर प्रत्ययवत् प्रयुक्त होते हैं । उन्हें भी प्रस्तुत प्रसंग में देना अनावश्यक न होगा ।

३.१.१.३.१   ।- काल । :   विशेषण - + - काल भाववाचक संज्ञा

।बुड़ - + - काल बुड्यांकाल । `वृद्धावस्था`

यहां ।-काल । के साथ ।-यां-। संलग्न है । -काल स्वतंत्र रूप में `मृत्यु` अर्थ घोतक है और प्रत्यय रूप में `अवस्था घोतक` ।

३·१·१·३·२   ।- कोट। :   विशेषण - + - कोट = संज्ञा -

।- मल् - + - कोट   मल्कोट । `मामा का घर`

इसके अतिरिक्त । गरा कोट् ।, । बलकोट।, । उच्चकोट ।, ।थरकोट।, आदि । ,किला` अर्थ घोतक स्थानवाची नाम यहां पर्याप्त मिलते हैं ।

३.१.१ ३.३ ।- तिन् । : विशेषण - + - तिन् = संज्ञा

इसके साथ बहुवचन घोतक ।-आ । संलग्न रहता है --

।नान् - + - तिन् + आ   नानतिना र `बच्चे`

३·१·१·३·४   ।-दान। : इसके साथ लिंगवचन प्रत्ययों का संयोग भी रहता है। इसका किसी जीव या वस्तु के स्थान का बोध होता है ।

संज्ञा - + - दान् = संज्ञा

।चू - + - दान् + इ चूदानि । `चूहेदानी`

। सुरमा - + - दान् + इ सुरमादानि ।`सुरमेदानी

३·१·१·३·५   ।-देलि । :

क्रिया - + - देलि = संज्ञा -

।खोल - + - देलि खोल्देलि ।`मध्यमद्वार`

३.१.१.३.६   ।- फाट। : विशेषण - + - फाट = संज्ञा -

।तैल - + - फाट तैलफाट । `धूपवाली भूमि`

अर्थ की दृष्टि से यह `समतल भूमि` या ` - भू का भाग अर्थ रखता है ।

३.१.१.३.७ ।- वाट । : इसके साथ लिंगद्योतक प्रत्यय संलग्न रहते हैं

। माह - + - वाट + इ माहवारी । `मासिक धर्म`

।पाख - + - वार + ओ पखवारो ।`पन्द्रह दिन का समूह`

३.१.१.३.८ ।- शार ।:

।क। संज्ञा - + - शार = संज्ञा -

। उखल - + - शार + इ उखलशारि । `ऊखल का स्थान`

।ख। स्थानवाचक - + - शार = संज्ञा-

। तलि - + - शारि तलिशारि।

। मलि - + - शारि मलिशारि ।

इन प्रयोगों में ।-शार । `वारी` अर्थ द्योतक है ।

३ १ १ ३ ६ ।- वाल ।: संज्ञा - + - वाल = संज्ञा -

यह लिंग द्योतक प्रत्यय युक्त रहता है -

।- घर - + - वाल + इ घरवालि । `घरवाली`

।- घर - + - वाल + ओ घरवालो ।`घरवाला`

३.१.१.३.१० ।- शाल।: संज्ञा - + - शाल = संज्ञा

इसके साथ पुल्लिंग एक या बहुवचन द्योतक प्रत्यय रहता है -

। गौ - + - शाल + आ गौशाला ।`गौशाला`

। पाठ - + - शाल + आ पाठशाला । `पाठशाला`

।धरम - + - शाल + ओ धरमशालो । `धर्मशाला`

+ ओ धरमशाला ।`धर्मशाला`
`बहुवचन`

३.१.१.३.१.१ ।-हर।: इसके प्रयोग से गृहवाचक संज्ञा बनती है -

। पी - + - हर पीहर । `पिता का घर`

३.१.१.३.१.२ ।- हार ।

।क। क्रियार्थक संज्ञा - + - हार = संज्ञा । इससे `दैवी विधान से ऐसा होना था` ऐसा अर्थ द्योतित है ।

।होइ - + - हार होनहार । `होनहार`

३.१.१.४ आवृति पर आधारित संज्ञा प्रातिपदिक रचना

आवृति के आधार पर भी संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं। इस दृष्टि से आवृत्ति की स्थिति रूपिमिक है।

३.१.१.४.१ संज्ञा पदों की आवृत्ति

।क। पहली प्रक्रिया में पहला पद विशेषण बनकर दूसरे को संज्ञा रूप में छोड़ देता है :

। जाग जाग । `प्रत्येक जगह`

। रूख रूख । `प्रत्येक पेड़`

। ग्यूं ग्यूं । `केवल गेहूं`

।ख। + आ + + इ के क्रम में भी व्युत्पत्ति मिलती है -

। पिटा-पिटी । `पिटाई`

३.१.१.४.२ ध्वन्यात्मक शब्दों की आवृत्ति-

। कौं - कौं । `कायं कायं`

। चौं - चौं । `चीं चीं`

३.१.१.४.३ सानुरूपता

। घिच पिच । `भीड़`

। खुसर- पुसर । `कानाफूसी`

। सटर-पटर । `इधर उधर करना`

। सट-पट । `चालाकी`

३.१.१.४.४ सर्वनामों की आवृत्ति से संज्ञा की व्युत्पत्ति। इस कोटि में एक उदाहरण मिलता है -

। तू तू - मैं मैं । `झगड़ा`

३.१.१.४.५ विशेषणों की आवृत्ति।

।क। विशेषण द्वित्व संज्ञा रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं -

।निक निका।, ।भलभला।,

।ठुलठुला।, ।नान्नाना। - ये रूप बहुवचन में मिलते हैं। विशेष्य के प्रतिनिधि के रूप में द्वितीय पद रहता है।

।ख। विशेषणों से - + आ + + इ रूप में भी संज्ञा की व्युत्पत्ति होती है -

। गमगिमी । `क्रोध का` `झगड़ा`

३·१·१·४·६ क्रियाओं की आवृत्ति -

।क। दो सम्बन्धित क्रियार्थक संज्ञाओं की आवृत्ति

। पिनु- पानो । ` पीना पाना `

। खानु - पिनो । ` खाना पीना `

। हंसनो- बोल्नो । ` हंसना बोलना`

। लिनु - दिनो । ` लेनदेन `

। चल्नो- फिरनो । ` चलना फिरना `

।ख। क्रिया धातुओं की आवृत्ति । इनकी रूप रचना का क्रम + - अ - + + - अ क्रम में मिलती है --

। उछल- कूद । ` उछलकूद `

। काट- छांट। ` काटछांट`

। उठ- बैठ `। ` उठना बैठना`

+ - ऐ - + + - क्रम में भी उक्त प्रातिपदिक रचना मिलती है -

।लेखै - पढै । ` लिखाई पढ़ाई `

। खवै - पिवै । ` खाना पीना `

एक ही धातु की आवृत्ति --

। गिरनी - गिराणी । ` गिनती`

।उड़ा उड़ी । ` उड़ना `

।ग। वर्तमान कृदन्त की आवृत्ति - इसका क्रम + तु + इ + + तु + इ रूप में प्राप्य है -

घटुति- बढ़ुति । ` अवनति- उन्नति `

।आवतु - जावतु । ` आना जाना `

।घ। भूतकृदन्त की आवृत्ति-

। पालीन तालीन । `पाला पोषा व्यक्ति`

।ङ। कुछ आवृत्ति क्रमों में धातु भी कुछ परिवर्तित हो जाती है -

। खींच खांच । ` खींच खांच `

३·१·३·४·७ संज्ञा संयुक्ति -- संयुक्त रूप में भी संज्ञाओं की रचना मिलती है ।

संज्ञा के रूप में ऐसी रचनाओं का प्रयोग पर्याप्त मिलता है ।

।क। पहले प्रकार के अन्तर्गत वे संज्ञासंयुक्तियां आती हैं जिनमें संयोजक `और`
अन्तर्हित रहता है । ये रूप बहुवचन संज्ञाओं के स्थानापन्न हैं और
स्वतंत्र रूप संयुक्त सामासिक पदों के निकट हैं -

सहचर शब्द :-

।इजा - बावा । , । मतारि बाबा । `मां बाप`

।घर बमर । `घरबर`, । घरगौं ।

। गोरु - बाच्छा । `गाय बछड़े`

। दान् - पानि । `दाना पानी`

समानार्थी :-

बाल-बच्चा । `बाल बच्चे`

चीज बस्त । `चीज वस्तु`

।ख। कुछ संज्ञा संयुक्तियों में पहला पद विशेषणवत् प्रयुक्त होता है :

। रसगुल्ला । `रस का गोला`

। गुरु भै । `गुरु भाई`

। रेल गाड़ि । `रेल पर चलने वाली गाड़ी`

।ग। कहीं कहीं दोनों रूप किसी अव्यक्त विशेष्य के विशेषण के समान प्रयुक्त
होते हैं और व्यंजित अर्थ संज्ञा होती है -

। राम राज । `सुख`

। दही बाड़ा । `एक प्रकार की चाट`

। गुड़- पापड़ि । `एक भोज्य पदार्थ`

पूरी संयुक्ति संज्ञाओं का स्थानापन्न भी होती है ---

। महाजन । `ब्याज पर रुपया देने वाला व्यक्ति`

। भलमैंस । `भला आदमी`

। कमिया और ।

विशेष्य और संज्ञा से भी ऐसे गुच्छ बनते हैं --

। अधसेरी । `आधा सेर का बाट`

। बार सिंघा । `बारहसींघ वाला हरिण`

इसी प्रकार । तिपाई । । चारपाइ।, ।अठन्नि। `आठ आने का

` सिक्का `

उक्त प्रकार की संयुक्तियाँ के साथ परप्रत्यय के योग से भी संज्ञा संरचना होती है --

।भलमनुशाहृत । ` भलाई `

।घ। कुछ संयुक्तियां ` संज्ञा + क्रिया ` की भांति मिलते हैं --

। जेबकट्वा । ` जेब काटने वाला व्यक्ति `

क्रिया + संज्ञा --

। फुलफड़ि । ` आतिशबाजी `

३.१.२ विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना

३.१.२.१ विशेषण व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय

उल्लेख्य है कि कुछ पूर्व प्रत्यय संज्ञा तथा विशेषण दोनों में संरचक का काम करते हैं --

।१। ।अ-। :

।क। अ- + - संज्ञा + लिंग वचन प्रत्यय = विशेषण

।अ - + - माग + आगि । ` अभागी `

।अ- + - माग + औ अभागौ । ` अभागा `

।अ - + - बोध - अबोध । ` अबोध `

। अ - + - धर्म + इ अधर्मि । ` अधर्मी `

।अ - + - थाह अथा । ` अथाह `

।ख ।अ - + - / विशेषण --

।अ - + - पढ़ अपढ़ । ` अनपढ़ `

।ग। ।अ- + - विशेषण = विशेषण -

।अ - + - स्यानो अस्यानो । ` अबोध `

।२। । अद्-।: अद - +- क्रिया= विशेषण

। अद् - + - पाकी अदपाकी । ` अधपका `

।३। । अन् -।:

।क। । अन् - + - संज्ञा = विशेषण

। अन् - + - जान ; अनुजान । ``अज्ञान `

।अन् - + - मोल अन्मोल । ` अमोल `

।अन् - + - गिन्ति अन्गिइन्ति । `अगिनत`

।ख। ।अन् - + - क्रिया = विशेषण -

।अन् - + - पढ़ अनपढ़ । `अनपढ़`

।अन् - + - सुनि अन्सुनि । `अनसुनी`

।४। ज ।अप्-।

।क। ।अप् - + - संज्ञा = विशेषण

इसके साथ लिंग वचन मौलिक प्रत्यय रहता है --

।अप् - + - जश + इ अएजशि । `अपयशी`

।अप - + - काज + इ अपकाजि । `स्वार्थी`

।ख। ।अप - + - कारि अपकारि । `अपकारी`

।५। ।क। ।-औ-। औ - ++ गुन = विशेषण -

यहां लिंग वचन प्रत्यय भी रहता है --

।औ - + - गुरा + ई औगुरिा । `अवगुरिा`

।६। ।क-। : क - + - संज्ञा = विशेषण-

।क - + - पूत कपूत । `कपूत`

।७। ।कु-। : कु - + - संज्ञा = विशेषण

।कु - + - रूप कुरूप । `कुरूप`

लिंगवचन प्रत्यय मैं संलग्न रहते हैं --

।कु - + - कर्म + इ कुकर्मि । `बुरे कर्म करने वाला`

।८। ।बर-। : बर- + - संज्ञा = विशेषण -

।बर - + - विभाग बरविभाग ।

यह प्रत्यय कुत्सार्थक है ।

।९। ।न-। : यह प्रत्यय निषेधार्थक है । न - + - क्रिया = विशेषण

।न - + - हुनी नहुनी । `नटखट, न होने वाला`

।न - + - खानी नखानी । `न खाने वाला`

।१०। ।नि-। : नि - + - संज्ञा = विशेषण ।

यह प्रत्यय भी निषेधार्थक है और इसके साथ लिंग वचन प्रत्यय रहते हैं --

।नि - + - हात् + ओ निहत्तो । ` निहत्थो `

।नि - + - हात + इ निहत्ति । ` निहत्थी `

।नि - + - काम + ओ निकम्मो। ` निकम्मा `

।नि - + - रोग + इ निरोगि । ` निरोगी `

।११। ।दु-। : दु - + - संज्ञा + विशेषण । यह निषेधार्थक है और लिंग वचन प्रत्ययों से युक्त रहता है -

।दु - + - बल + ओ दुब्लो । ` दुबला `

।दु - + - बल + इ दुब्लि । ` दुबली `

।१२। ।ना-। :

।क। ना - + संज्ञा = विशेषण ।

यह प्रत्यय कुत्सार्थक है --

।ना- + - चीज नाचीज । ` तुच्छ `

।ना - + - समझ नासमझ । ` मूर्ख `

।ख। ना - + - विशेषण = विशेषण --

।ना- + - लैक नालैक । ` नालायक `

।१३। ।बे-। : बे- + - संज्ञा = विशेषण

यह प्रत्यय निषेधार्थक है -

। बे - + - शरम बेशरम । ` लज्जाहीन `

। बे - + - मान बेमान । ` बेईमान `

। बे - + - घर बेघर । ` गृहहीन `

। बे - + - चैन बेचैन । ` बेचैन `

। बे - + - होश बेहोश । ` बेहोश `

।१४। ।बद्-। : बद - + - संज्ञा = विशेषण

यह कुत्सार्थक है और दोनों लिंग एवं वचनों में एक ही रूप मिलता है -

।बद - + - नाम बदनाम बन्नाम । ` बदनाम `

।बद - + - नसीब बदनसीब बन्नसीब ।` भाग्यहीन `

।१५। ।ला-। : ला - + - संज्ञा = विशेषण

।ला - + - जबाव लाजवाब । ` अद्वितीय `

।ला - + - पता लापता । ` लापता `

।१६। बिला -। : बिला - + - संज्ञा = विशेषण

।बिला - + - कसूर बिलाकसूर । ` निरपराध `

।१७। ।खुश -। : खुश - + - संज्ञा = विशेषण-

।खुश - + - किस्मत खुशकिस्मत । ` भाग्यवान`

।१८। ।गैर-। : गैर - + - विशेषण = विशेषण -

।गैर- + - सरकारि गैरसरकारि । ` गैरसरकारी `

।१९। ।स-। : स - + - संज्ञा = विशेषण -

।स - + - ज्ञान + औ सयानौ । `सयाना `

।२०। संख्यावाचक विशेषणों के साथ भी पूर्व प्रत्ययों का योग रहता है-

।क। ।ला-। : यह विदेशी प्रौतज है -

।ला - + - चार लाचार । ` विवश `

।ख। । पौन -। : इसके साथ - ए- संलग्न रहता है --

।पौने - + - दो पौनेदो । $1\frac{3}{4}$ `

।पौने - + - दोसौ पौनेदा सौ । ` १७५`

।ग। । सवा-। :

।सवा-+- दौ सवा दौ । ` $2\frac{1}{4}$

।सवा - + - सौ सवासौ । ` १२५ `

।घ। ।-आढ़-। : इसके साथ पूर्व में ।श-। और पश्चात ।-ए-। संलग्न रहते हैं ---

।शाढ़े - + - तीन शाढ़ेतीन ।` $3\frac{1}{2}$

। शाढ़ - + - तीन सौ शाढ़ेतीनिसौ । ` ३५० `

।ङ। ।उन-। : यह प्रत्यय ` एक कम `अर्थद्योतक है -

। उन् - + - वीस उन्वीस । ` उन्नीस`

। उन - + - चालीस उन्चालीस । ` उन्तालीस `

३.१.२.२ विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

विशेषण व्युत्पादक परप्रत्यय विशेषण संज्ञा तथा क्रियाकूल एवं व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के पश्चात जुड़कर विशेषण प्रातिपदिक संरचक बनते हैं । कुछ

विशेषण पर प्रत्ययों के साथ लिंगवचन प्रत्यय भी रहते हैं जो यथास्थान उल्लेख्य है --

।क। ।-अ।- विशेषण - + - अ = विशेषण -

।सक्त् - + - अ सक्त । ` कठोर `

।२। ।आं ।: संज्ञा - + - आं = विशेषण-

।ऊनि - + - आं ऊन्यां । ` आगन्तुक `

।कर्नि - + - आं कर्न्यां । ` करनेवाला`

।मरनि - + - आं मर्न्यां । ` मरनेवाला`

यहां -नि युक्त प्रातिपदिक ` करनी`, मरना `, आदि कोटि के हैं ।

।शिकान् - + - आ शिकांना । ` नाक बहाने वाला `

। कुलच्छ्यन - + - आं कुलच्छ्यनां । ` बुरे लक्षण युक्त`

।३। ।-इ। : संज्ञा - + - इ = विशेषण -

। परदेश - + - इ परदेशि । ` परदेशी`

। रेशम - + - इ रेशमि । ` रेशमी`

। बदाम - + - इ बदामि । ` बादामी`

। गुराण - + - इ गुराणि । ` गुराणी`

।दुख - + - इ दुखि । ` दुखी`

।सुख - + - इ सुखि । ` सुखी `

। बजार- + - इ बजारि । ` बाजार` वाला

कभी कभी स्त्री लिंग द्योतक ।-इ। भी लगता है -

। काल - + - इ कालि । ` काली `

।निक् - + - इ निकि । ` अच्छी `

। खोट - + - इ खोटि । ` खोटी `

।घिन् - + - इ घिनि । ` घृणित `

।४। ।-उ। : इस प्रत्यय को संज्ञा के पश्चात जोड़कर `वाला ` अर्थ वाले विशेषणों की व्युत्पत्ति होती है जो दोनों लिंगों के विशेषणों के साथ प्रयुक्त हो सकते हैं --

चाल - + - उ चालु । ` चालवाला `

। ।पेट - + - उ पेटु । ` अधिक खाने वाला`

।ढाल् - + - उ ढाल ।` ढाल वाला `

क्रिया के साथ जोड़कर भी ` वाला अर्थ द्योतक विशेषणव्युत्पन्न होता है --

।उतार् - + - उ उतारु । ` उतारु `

। खा - + - उ खाउ । ` खाऊ `

।५। ।-ऐं । : मन - + - ऐं मनैं । ` थोड़ा `

।६। ।-ऐ।: संख्यावाचक - + - ऐ समेतार्थक विशेषण । उदा०

दस - + - ऐ - दसै ` दसूं `

।७। ।-औ।: यह प्रत्यय पुल्लिंग एक वचन द्योतक भी है और नामपदों में प्राय: जुड़ा रहता है --

। काल - + - औ कालौ । ` काला`

। शितुल - + - औ शितुलौ । ` सरल `

विशेषणों क साथ ।-औ । प्रत्यय - औ -आ -इ रूप में प्रयुक्त होता है -

निक् - + - औ निकौ ।` अच्छा `

। निक् - + - आ निका । ` अच्छे `

। निक् - + - इ निकि । ` अच्छी `

।८। ।-औ। : क्रिया - + - औ = विशेषण ।

।बिक् - + - औ बिकौ । ` बिकाऊ `

। या

। बेच - + - औ बेचौ ।` बिकाऊ`

। कट - + - औ कटौ । ` कटने वाला `

।९। ।-अंग। : क्रिया - + - अंग = विशेषण

। दब - + - अंग दबंग । ` दबंग `

।१०। ।-वाउ ।: क्रिया धातु - + - वाउ = विशेषण

। टिक् - + - वाउ टिकाउ । ` टिकाऊ `

। उड़ - + - वाउ उड़ाउ । ` उड़ाने वाला `

।।११। ।-आक।: क्रिया - + - आक = विशेषण

। तैर् - + - आक तैराक । ` तैरने वाला`

कभी कभी इसके साथ ।-उ। संलग्न रहता है -

लड़ - + - आक + उ लड़ाकु ।` लड़ाकू `

।१२। ।आड़।: संज्ञा - + - आड़ = विशेषण,

इसके पश्चात ।-इ। रहता है -

।ग्यूं - + - आड़ + इ ग्युंवाड़ि । ` गेहूं की वालें`

। जौं-+ - आड़ + इ जौंवाड़ि । ` जौं वाले`

।१३। ।- आर।

।क। क्रिया - + - आर = विशेषण -

ध्यान - + - आर - धिनार ।` ग्यामन `

।ख। संज्ञा - + - आर = विशेषण

।गीत - + - आर + इ गितारि ।` गीत गाने वाली

।१४। ।- आल् । : संज्ञा - + - आल = विशेषण

यह प्रत्यय ।-उ। , ।-औ।, ।आ। या ।-इ। के साथ रहता है ।

।शीप - + - आल् + उ सिपाल ।` कुशल`

। दया - + - आल + उ दयालु । ` दयालु`

। दूद - + - आल + औ दुदयालौ । ` दुध देने वाला`

। दूद - + - आल + आ दुदयाला।` दूध देने वाले`

।दूद - + - आल + इ दुदयालि ।` दूध देने वाली `

।कांरा् - + - आल् -। औ कंरायालौ । `कांटे वाला`

।१५। ।-इया । :

।क। संज्ञा - + - इया = विशेषण -

। लाकड़ - + - इया लकड़िया । ` लकड़ी वाला `

दुख - + - इया दुखिया ।` दुखी `

।रंगत - + - इया रंगतिया ।` तमाशे वाला`

। बवर - + - इया बवरिया ।` बवर पीने वाला `

।ख। क्रिया - + - इया = विशेषण

।घट् - + - इया घटिया। ` निम्न कोटि का `

।सड़ - + - इया सड़िया । ` सड़ा हुआ`

।बढ़ - + - इया बढ़िया । ` अच्छा`

।ग। विशेषण - + - इया = विशेषण

।हर् - + - इया हरिया । ` हरे रंग वाला`

।गुलु - + - इया गुलिया । ` मीठा`

।२६। ।-इल। :

।क। पहली कोटि के व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के साथ।-इल । प्रत्यय ।-आ। से संलग्न रहता है और दोनों लिंगों तथा दोनों वचनों में से एक रूप रहता है --

।पाज् - + - इल् + आ पजिल । ` झगड़ालू`

। राग - + - इल् + आ रगिला । ` ईर्ष्यालु `

। आग - + - इल् + आ अगिला । ` डाह रखने वाला `

।नाठ - + - इल् + आ नठिला। ` नष्ट होने वाला`

।ख। इस कोटि के प्रातिपदिकों की रचना में।-इल। के पश्चात - औ आ - इ रहते हैं -

।रङ्ः- + - इल् + औ रङि लौ । ` रंगीलो `

। रङ - + - इल् + आ रङिला । ` रंगीले `

।रङ - + - इल + इ रङिलि । ` रंगीली `

।२७। ।-या। : विशेषण मूल प्रातिपदिकों के साथ जोड़कर अन्य प्रकार के विशेषण प्रातिपदिक बनते हैं -

। टेढ़ - + - या टेढ़या । ` टेढापन लिए हुए `

। भैड़ - + - या भैड़्या। ` तिरछी आंख वाला`

।२८। ।-इयल। : धातु और संज्ञा मूल प्रातिपदिकों के साथ इस प्रत्यय के संयोग से विशेषण व्युत्पन्न होते हैं -

।क। धातु - + - इयल = विशेषण :

।मर् - + - इयल् मरियल ।` कमजोर `

।अड़् ` - + - इयल् अड़ियल। ` जिद्दी `

।ख। संज्ञा - + - इयल = विशेषण

।दाड़् - + - इयल दड़ियल । ` दाड़वाला `या`दाढ़ीवाला`

।१९। ।- ईन।: - + - ईन - विशेषण । यह प्रत्यय इस बोली में पर्याप्त प्रयुक्त होता है -

।मिल - + - ईन + आ मिलीना । ` मिले हुए `

। खित् - + - ईत् + औ लितीनौ ।` गिरा हुवा `

।क। ।खा - + - ईन + आ खाईना । ` खाये हुए `

।२०। ।-एर्।: संज्ञा-+ - एर् = विशेषण-

।दिल् - + - एर् दिलेर् ।` साहसी `

संज्ञा - + - एर् = विशेषण

। काम - + - एर् + औ कमेरौ ।` परिश्रमी`

।२१। ।-ऐत।: संज्ञा - + - ऐत = विशेषण

।लठ् - + - ऐत लठैत । ` लट्ठ वाला`

।२२। ।-ऐल।: क्रिया - + - ऐल = विशेषण

।दब् - + - ऐल दबैल ` दबने वाला`

। जुड़ - + - ऐल जुड़ैल। ` जुड़ैल `स्त्री `

।२३। ।- अड़ । : संज्ञा - + - अड़ = विशेषण

इसके साथ -इ रहता है -

।गांज् - + - अड़ + इ गांजड़ि । ` गांजा पीने वाला`

।२४। ।-आड़।: - + - आड़ + इ = विशेषण

।खेल् - + - आड़ + इ खेलाड़ी। ` खिलाड़ी `

।लेख् - + - आड़ + इ लेखाड़ि। ` लिखने वाला `

।२५। ।-औड़ ।: यह मौ- धातु के साथ जुड़ता है -

।खं - + - औड़ खंसौड़ ।` खंसौड़ `

।२६। ।- औड़ ।

।क। क्रमात्मक निश्चित संख्या प्रातिपदिकों के पश्चात जोड़कर विशेषण प्रातिपदिक बनता है । इसके साथ लिंग वचन घोतक प्रत्यय

रहते हैं -

।एक - + - औड़ + ओ एकौड़ो । `इकहरा`

।द्वि - + - औड़ + ओ दौड़ो । `दुहरा`

इसी प्रकार। त्यौड़ो, चौड़ो, त्यौड़ा । जैसी रचनाएं मिलती हैं।

।ख। क्रिया - + - औड़ = विशेषण

।भग - + - औड़ + ओ भगौड़ो । `भगौड़ा`

।२७। ।-आन। : यह द्विरावृत्त प्रातिपदिकों के पश्चात जुड़ता है -

।टलटल - + - आन + ओ टलटलानो । `साफ`

।टकटक - + - आन + ओ टकटकानो ।

।२८। ।-एर। क्रियार्थक संज्ञा मूल - + - एर = विशेषण
यह वाला अर्थ द्योतक है --

।जानू - + - एर जानेर । `जाने वाला`

।खान - + - एर खानेर । `खाने वाला`

।२९। पूर्णांक संख्यावाचक विशेषणों के पश्चात। क्रम द्योतक पर प्रत्यय। जुड़ते हैं, जिनसे विभिन्न विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं :

।क। ।-ल। : एक के पश्चात जुड़ता है -

।एक- + - लू पैल् + ओ पैलो । `पहला`

।ख। ।-सर। : दो, तीन के उपरान्त जुड़ता है -

।द्वि - + - सर + ओ दुसोरो । `दूसरा`

।तीन - + - सर + ओ तिसोरो । `तीसरा`

।ग। ।-थ। : ।चार। के उपरान्त जुड़ता है -

।चार- + व थ + ओ चौथो । `चौथा`

।घ। । -ऊं। : । पांच । तथा ।सात । और उसके उपरान्त की संख्याओं के पश्चात जुड़ता है :

।पांच - + - ऊं पञ्चूं । `पांचवां`

।सात - + - ऊं सतूं । `सातवां`

।ङ। । -ओ। : ।छै। के पश्चात जुड़ता है -

।छै - + - ट् - ओ छट्टो । `छठा`

।३०।　।-ल।: संज्ञा - + - ल = विशेषण

यह लिंग वचन प्रत्यय युक्त रहता है -

। धुंध- + - ल + औ धंधलौ ।` धुंधला`

।३१।　।-अल।:

। बीच - +। - अल + औ बिचल्लौ । ` मध्यवाला`

।३२।　।-इल।:

।क।　संज्ञा - + - इल + औ = विशेषण -

।लाड़ - + - इल + औ लाड़िलौ ।` लाड़ला `

।रश - + - इल + औ रशिलौ । ` रसीला `

इसीप्रकार। रसीले, रसीली । कोटि के विशेषण बनते हैं।

।ख।　क्रिया विशेषण - + - इल + औ = स्थान वाचक विशेषण

। आघ - + - इल् + औ अघिलौ अघिल्लौ । ` आगेवाला`

।पाछ - + - इल + औ पछिलौ पछिल्लौ ।` पीछेवाला `

- औ के स्थान पर बहुवचन में- आ तथा स्त्री लिंग मे - इ जुड़कर संबद्ध विशेषण प्रातिपदिक बनते हैं। इस प्रकार के प्रातिपदिक हैं-

।अघिल्ला।, । अघिल्लि), पछिल्ला ।, पछिल्लि), आदि,

।३३।　।-उल् ।:　संज्ञा - + - उल + लिंग वचन प्रत्यय = विशेषण

। खाज - + - उल + इ खजुलि । ` खाज वाली, खाज रोग से पीड़ित `

।३४।　।-एल।:　संज्ञा - + - एल = विशेषण

इसके साथ -उ संलग्न रहता है -

।घर - + - एल + उ घरेलु । ` घरेलू `

।३५।　।-ऐलु ।:　क्रिया - + - ऐलु = विशेषण

यह लिंग वचन प्रत्यय युक्त रहता है -

।[illegible] - + - ऐल + औ रैलौ । ` अधिक दिन तक उपभोग्य `

।३६।　।-ऐलु । :　संज्ञा - + - ऐल = विशेषण

लिंग वचन बोधक प्रत्यय भी साथ आते हैं -

।रिश् - + - ऐलु + औ ; रिशैलौ । `क्रोधी`

। गांठ - + - ऐल + औ गंठैलौ । `गांठ वाला`

। ढुङ् - + - ऐल + औ ढुङ्ैलौ । `पत्थरवाला`

।३७। ।-ऐन।: संज्ञा - + - ऐन + इ = विशेषण

। चुर - + - ऐन + इ चुरैनि । `पेशाव की गन्ध वाली`

।३८। ।-वा।: क्रिया - + - वा = विशेषणों -

।किडोर - + - वा किडोरवा ।

इसीप्रकार ।छिट्वा, खद्वा , आदि रचनाएं उल्लेख्य हैं ।

।३६। ।-वान ।

।क। विशेषण - + - वान = विशेषण

-। पैल - +- वान पैलवान । `हलवान`

।ख। संज्ञा - + - वान = विशेषण-

।विद्या - + - वान विद्वान । `विद्वान`

।दया - + - वान दयावान। `दयावान`

।धन - + - वान धनवान ।` धनी`

।भाग - + - वान भागवान।` भाग्यवान`

३·१·१·३ आबद्ध रूपों के अतिरिक्त स्वतंत्र रूप के परस्पर संयोग द्वारा भी विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं । इस स्थिति में स्वतंत्र रूप प्रत्ययवत् संयुक्त होकर प्रातिपदिक संरचना बनते हैं । इनमें कुछ स्वदेशी हैं तथा कुछ विदेशी । इस प्रकार के प्रमुख रूप निम्नलिखित हैं :

।१। ।-गुन।: विशेषण - + - गुन = विशेषण

।द्वि - + - गुन + औ द्गुनौ । `दुगुना`

। तीन - + - गुन + औ तिगुनौ ।` तिगुना`

इसी प्रकार - औ के स्थान पर ।-आ। या ।-इ। जोड़कर द्गुना। `दुगुने। द्गुनि ।` दुगुनी` आदि रचनाएं मिलती हैं

।२। ।- अक्कड़ ।: क्रिया - + - अक्कड़ = विशेषण

।पी - + - अक्कड़ पियक्कड़ । `पीने वाला`

।घुम - + - अक्कड़ घुमक्कड़ । `घूमने वाला`

।३। ।- खोर। : संज्ञा + - खोर = विशेषण-

।घूस - + - खोर घूसखोर । ` घूसखोर`

।हराम् - + - खोर हराम्खोर ।` हराम्खोर `

।४। ।-जोर ।: विशेषण - + - जोर = विशेषण

।कम - + - जोर कमजोर ।` कमजोर `

।जबर्- + - जोर जबरजोर ।` बलिष्ठ`

।५। ।-हार।: क्रिया - + - हार = विशेषण-

। हुन - + - हार हुनहार । `जैसे ।हुन्हार केलने ।
`होनहार लड़का `

।६। ।-दार।: संज्ञा - + - दार = विशेषण

।दान् - + - दार - दान्दार ।` दानेदार`

।शान् - + - दार शान्दार । ` शानदार `

।इज्जत - + - दार इज्जतदार ।` माननीय`

।७। शार।: संज्ञा - + - शार = विशेषण

।मिलन - + - शार - मिलनशार ।` मिलनसार `

।८। ।-हल ।: संज्ञा - + - हल = विशेषण -

।इसके साथ लिंगवचन द्योतक प्रत्यय रहते हैं --

। सुन् - + - हल + औ सुन्हलो ।`सुनहरा `

इसीप्रकार - औ `सुनहरा ` के स्थान पर -आ, -इ के
संयोग से क्रमशः सुन्हला, सुन्हलि रूप मिलते हैं ।

।९। ।-मान।: संज्ञा - + - मान = विशेषण-

।बुद्धि - + - मान बुद्धिमान । ` बुद्धिमान `

।१०। ।- बाज।: संज्ञा - + - बाज = विशेषण

।ध्वाक् - + - बाज ध्वाक्बाज । `धोखेबाज `

।बिड़ि - + - बाज बिड़िबाज । ` बीड़ी पीने वाला`

।घड़ि - + - बाज घड़ीबाज । घड़ी का शौकीन `

।११। ।-वार ।: संज्ञा - + - वार = विशेषण

।- माह - + - वार माह्वार ।` माह्वार `

।मैन् - + - वार मैन्वार ।`माह्वार`

।१२। ।- वाल।

।क। संज्ञा - + - वाल - विशेषण । यह अधिकारार्थक रूप में पर्याप्त प्रयुक्त होता है । यह लिंग वचन द्योतक प्रत्ययों के साथ आता है -

।घर - + - वाल् + ओ घरवालो । `पति`

।घर - + - वाल् + आ घरवाला । `पति`

।घर - + - वाल् + इ घरवालि ।`पत्नी`

इसी प्रकार । मितरवालो ।, लाकाड़वालो ।, दूदवालो।, वावालो । आदि रचनाएं मिलती हैं ।

।ख। स्थानवाचक - + - वाल = विशेषण-

। मलि - + - वाल् + ओ मलिवालो । `ऊपरवाला`

। तलि - + - वाल + ओ तलिवालो। `नीचेवाला`

।१३। ।- गार।: संज्ञा - + - गार = विशेषण -

।खिदमत - + - गार खिदमतगार । `सेवा करने वाला`

।१४। ।- कौन।: संज्ञा - + - कौन् -। ओ = विशेषण

।बात - + - कौन + ओ बक्कौनो । `बहुत बात करने वाला`

।१५। ।-ख़ुन।: क्रिया - + - ख़ुन = विशेषण

।निम् - + - ख़ुन + ओ निम्ख़ुनो । `पर्याप्त`

।-ओ के स्थान पर -आ, और -इ जोड़ने से । निम्ख़ुना । तथा ।निम्ख़ुनि। जैसे रूप मिलते हैं ।

३.१.१.४ प्रत्यय अथवा प्रत्ययवत् व्यवहार्य रूपों के अतिरिक्त स्वतंत्र रूप संयुक्त होकर विशेषण प्रातिपदिक बनाने में सहायक होते हैं । यह प्रक्रिया निम्नलिखित प्रकार से घटित होती है ।

३.१.१.४.१ आवृत्ति :

।क। ध्वन्यात्मक आवृत्ति-

।गुदगुदी । `कोमल`

।चिड़चिड़ो। `चिड़चिड़ा`

।ख। संज्ञापदों की आवृत्ति-

।च्याला च्याला । `केवल लड़के`

।ग। विशेषणों की आवृत्ति-

।नान्नाना । ` छोटे छोटे`

।ठूलठूला । ` बड़े बड़े`

।निक्निका ।` अच्छे अच्छे `

।काल् काला । ` कुछ कुछ काले `

संख्यावाचक विशेषणों की आवृत्ति -

। चार चार ।, पांच पांच । आदि ।

३·१·१·४·२ स्वतंत्र रूपों का योग-

।क। वर्तमान कालिक कृदन्त:

।चलति फिरति । ` चलती फिरती`

इसी प्रकार । चल्ता फिरता ।, और । चल्तो फिरतो ।
रूप द्रष्टव्य है ।

।ख। विशेषण + सहचर -विशेषण = विशेषार्थक विशेषण-

। लाल च्योह् । , लाल चिट्टो ।, ` बहुत लाल `

। काल ढूट । ` बहुत काला `

। निलो च्योह । ` बहुत नीला`

।सफेद चिट्ट । ` बिल्कुल सफेद `

।ग। विशेषण + संज्ञा - विशेषण । इनके साथ लिंग वचन
बोधक प्रत्यय रहते हैं --

।कलमुहो । , । कलमुहूं । , कलमुहि । `कालामुख वाला`

। दुहत्तो । ` दोहाथ वाला`

। दुहत्थ्या । ` दो हाथ वाला या दो हाथ से काम करने वाला`

।तिहत्तो । ` तीन हाथ वाला। मोष्ठा `

।तिकोनो । ` तीन कोने वाला`

।घ। विशेषण + क्रिया -

।खबोल्या । ` खकर बोलने वाला `

।ङ। । विशेषण + भूतकालिक कृदन्त :

। अद्मरो अद्मरा अद्मरि । ` आधा मरा हुआ`

। अद्पाको अद्पाका अद्पाकि । ` आधा पका हुआ `

।च। संज्ञा + विशेषण = विशेषण

।करम फूट । ` जिसका भाग्य फूटा हो `,

।घरघुग्गु । ` घर में रहने वाला `

।मुफट । ` जो मुहं में ` आय सो कहने वाला `

।बतकौवा । ` बात बनाने वाला `

।छ। विशेषण + विशेषण = विशेषण

।बड़भागि । ` बड़ा भाग्यवान `

।भल -चंगो । ` स्वस्थ `

।ज। क्रिया + विशेषण = विशेषण

।खुल + मुकतो खुलमुको । ` ढीला `

।झ। संज्ञा + क्रिया = विशेषण-

।आग + हाल्नो हान्नो अघाल्नो अघान्नो । ` आग लगाने योग्य `

इसी प्रकार । कांठ + हाल्नो कंठाल्नो । ।बांज- + ऊनो बज्यूनो । आदि रचनाएं मिलती हैं।

३.१.२ सर्वनाम व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना सर्वनाम

सर्वनाम व्युत्पादिक प्रत्यय केवल पर प्रत्यय के रूप में मिलते हैं।

३.१.२.१ सर्वनाम व्युत्पादक पर प्रत्यय

।१। ।- ।: सार्वनामिक अंग।उ-। के पश्चात इस प्रत्यय को जोड़ने से निश्चय वाचक सर्वनाम बनता है -

। उ - + - उ। ` वह `

।२। ।- आ ।: सर्वनाम मूल प्रातिपदिक आपुन- के पश्चात जुड़कर निजवाचक सर्वनाम बनाता है :

।आपुन् - + - आ आपुना । ` अपने `

एकवचन में - औ और स्त्रीलिंग में -इ जुड़ता है-

आपुन् - + - औ आपुनौ । ` अपना `

। आपुन - + - आपुनि । ` अपनी `

।३। ।-स।: इसके संयोग से उत्तम पुरुष सर्वनाम की रचना होती है —

।मु - + - इ मि । `मैं`

इस सर्वनाम का दूसरा व्युत्पादक पर प्रत्यय।-ऍं । है -

।मु - + - ऍं मैं । `मैं`

।४। ।-ई।: इस प्रत्यय के संयोग से निश्चयवाचक सर्वनाम बनता है-

।उ - + - ई वी । `उस`

।५। ।-उ।: -उ प्रत्यय के योग से मध्यम पुरुष सर्वनाम बनता है-

।तु - + - उ तु । `तू`

इस सर्वनाम का दूसरा व्युत्पादक प्रत्यय ।-ऍं । है -

।तु - + - ऍं तैं । `तू`

।६। ।-ए। : प्रश्नवाचक सर्वनामिक मूल अंग के पश्चात -ए जोड़कर अप्राणिद्योतक प्रश्नवाचक सर्वनाम व्युत्पन्न होता है -

।कु - + - ए के। `क्या`

इस सर्वनाम का दूसरा व्युत्पादक प्रत्यय ।-इवा । है -

।क - + - इआ क्या । `क्या`

।७। ।-ए।:

।क। निकटता द्योतक निश्चय-वाचक सर्वनाम व्युत्पनन होता है -

।इ- +-ए ये ।`इस`

।ख। मध्यम पुरुष सर्वनाम व्युत्पनन होता है -

।तु - + - ए त्वे । तुम`

इसीप्रकार अन्य सार्वनामिक रचनाएं मिलती हैं, उदा० क्वे , ज्वे, स्वे ।

।८। ।-ऍं। : यह मु , तु के पश्चात जुड़ता है । उदाहरण ऊपर ।३। और ।५। के अन्तर्गत दिये जा सकते हैं चुके हैं ।

।९। ।-ऐ।: इस प्रत्यय के संयोग से सम्बन्ध। नित्य सम्बन्धी, प्राणिद्योतक प्रश्नवाचक सर्वनामों की रचना होती है -

।जु - + - ऐ जै । `जिस`

।तु - + - ऐ तै । `तिस`

।कु - + - ऐ कै । `किस`

।१०। ।- ओ।: निम्नलिखित सार्वनामिक अंगों के पश्चात
जुड़ता है --

निश्चयवाचक निकटवर्ती -

।ह - + - ओ यो । `यह`

सम्बन्धवाचक:

।ज् - + - ओ जो । `जो`

नित्य सम्बन्धी:

।त् - + - ओ तो । `वह`

।स् - + - ओ सो । `सो`

प्रश्नवाचक:

।क् - + - ओ को । `कौन`

।११। ।-न्।: अन्य पुरुष । निश्चयवाचक। सम्बन्ध एवं प्रश्नवाचक बहुवचन या आदर सूचक सर्वनाम की रचना ।-न। जोड़कर होती है। स्वर के पश्चात् ।-न। तथा व्यंजन के पश्चात ।-अन्। जुड़ता है -

अन्य पुरुष :

।त् - + - अन् तन । `तिन/वे।

सम्बन्ध वाचक:

।ज् - + - अन् जन् । `जो जिन`

प्रश्नवाचक :

।क् - + - अन् कन् । `कौन। किन/

निश्चयवाचक:

।उ - + - न उन । `वे/ उन`

।इ - + - न इन । `ये/ इन`

।१२। ।-अम् ।: उत्तम पुरुष बहुवचन सार्वनामिक अंग के साथ जुड़कर बहुवचन पुरुषवाचक सर्वनाम बनाता है :

।ह - + - अम् हम। `हम`

इस सर्वनाम का एक रूप ।हमि । भी मिलता है,

।१३। ।-उम् ।: मध्यम पुरुष

सार्वनामिक अंग के साथ जुड़कर मध्यमपुरुष बहुवचन सर्वनाम संरचक बनता है -

। तु - + -उम् तुम ।' तुम'

इस सर्वनाम के दो अन्य अन्य रूप मिलते हैं -

। तुम तमि तम ।

।१४। ।-छ।: इसके संयोग से अनिश्चय परिणामवाचक सर्वनाम की रचना होती है --

।कु- + - छ कुछ ।' कुछ '

।१५। ।-अब।: सम्पूर्णपरिणामवाचक सार्वनामिक अंग।स-। के उपरान्त जोड़ा जाता है

।स् - + - अब सब । ' सब '

।१६। ।-अस।: आदरवाचक या निजवाचक सर्वनाम के पश्चात जोड़कर परस्परबोधक सर्वनाम बनता है -

। आप - + - अस आपस ।' परस्पर '

।१७। ।-र।: यह सम्बन्धद्योतक प्रत्यय है। इसकेसाथ -ओ, -आ, -इ, प्रत्यय रहते हैं। यह व्युत्पन्न सर्वनाम प्रातिपदिकों के साथ ।-अर ।, ।-आर ।, ।-और । रूप से ही जुड़ता है। उदाहरण-

।हम् - + - अर् + इ हमरि । ' हमारी '

।हम् - + - और + ओ हमौरो । ' हमारा '

।हम - + - आर + आ हमारा ।' हमारे '

इसीप्रकार । तुम। से । तुमरि।, तुमौरो, तुम्मारा ।, ।उन । से ।उनरि, उनौरो, उनारा ।, ।तिन । से ।तिनरि, तिनौरो, तिनारा ।, ।कन् । से कनरि । कनौरो, कनारा । रचनाएं मिलती हैं।

।-र।का एक संरूप -क, है जो उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष को छोड़कर अन्य सर्वनामों के साथ संबंध द्योतनार्थ जुड़ता है -

उदाहरण

ये - + - क + ओ येको ' इसका '

वी - + - कृ + ओ वीको ` उसका `

इसीप्रकार । येका , येकि । , ।वीका ,वीकि । ।तैको, तैका, तैकि ।, कैको, कैका, कैकि ।, । जैको, जैका। जैकि ।, ।सबोको, सबाका, सबकि । आदि से -कृ संरचक बनता है ।

३·१·१·२ संयुक्त सर्वनाम रचना :

सर्वनामों की यौगिक संरचना भी उल्लेखनीय है ।

३.१.१.२.१ सम्बन्धवाचक सर्वनाम + अनिश्चयप्राणि वाचक सर्वनाम -

। जो - + - क्वै जोक्वै । `जो कोई `

। ज्वे - + - क्वै ज्वे क्वै ।` `जो कोई `

३·१·१·२·२ संबन्धवाचक + नित्य सम्बन्धी -

। जै + तै जैतै । ` जो सो `

३·१·१·२·३ सबन्धवाचक + अनिश्चय परिमाण वाचक -

। जो + कुछ जो कुछ । ` जो कुछ `

३·१·१·२·४ अनिश्चयवाचक सर्वनाम सब + अनिश्चय प्राणिवाचक सर्वनाम

। सब + क्वै सबक्वै । ` सब कोई `

३·१·१·२·५ सम्बन्धवाचक + नित्य संबंधी

। ज्वे + स्वे ज्वे स्वे । ` जो सो `

३·१·४ क्रिया व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना

३·१·४·० मूल धातु , संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया विशेषण के साथ क्रिया व्युत्पादक प्रत्ययों के संयोग से क्रिया व्युत्पन्न प्रातिपदिकों की रचना होती है ।

३·२·४·१ क्रिया व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय पूर्व प्रत्ययों के संयोग से क्रिया व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के उदाहरण विवेच्य बोली में बहुत कम मिलते हैं :

।१। ।अ-।: विशेषण मूल प्रातिपदिक = क्रिया

। अ- + - सर ` शुद्ध ` असर । ` सुख , सूखना`

।२। ।उ-।: उ+ स्थानवाचक मूल प्रातिपदिक = क्रिया

।उ- + - मल् उमल् । ` उबल `

३.१.४.२ क्रिया व्युत्पादक पर प्रत्यय

अधिकांश क्रिया व्युत्पन्न प्रातिपदिक, परप्रत्यय संयोग से बनते हैं-

।१। ।- ।: - के संयोग से मूल धातुओं की ध्वनियों में परिवर्तन

हो जाता है और रचना प्रेरणार्थक होती है।

स्वरपरिवर्तन -

।क।   ।अ आ।: कट - ।- - काट, ` काट `

।ख।   ।इ- ई।:   सिंच - ।- -   सींच ` सींच `

।ग।   ।उ- ओ।:   घुल - ।- -   घोल् ` घोल `

।घ।   ।अ- ऐ।:   तर- ।- -   तैर ` तैर -तैरना `

व्यंजन परिवर्तन -

व्यंजन परिवर्तन के साथ स्वर परिवर्तन भी घटित होता है :

।ङ।   ।उ- ओ और - ड़ ।:

टुट - ।- -   टोड़ ` तोड़ `

फुट - ।- -   फोड़ ` तोड़ `

।इ ए और क - च ।:

बिक - ।- -   बेच ` बेच`

।२   ।-औ ।

।क।   मूल धातुओं के साथ यह प्रत्यय जोड़कर एक वचन प्रेरणार्थक क्रिया व्युत्पन्न होती है। यह प्रत्यय अकर्मक से सकर्मक बनाने के लिए भी प्रयुक्त होता है -

छिट् ` चलना ` - ।- औ छिटौ ` चलाना `

पढ़ ` पढ़ना ` - ।- औ पढ़ौ ` पढ़ाना `

हंस ` हंसना` - ।- औ हंसौ ` हंसाना `

।ख।   संज्ञा एवं विशेषण के साथ - औ का संयोग करके क्रिया प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं -

।खनुखनु - ।- औ खनखनौ । ` खनखनानाने

। मोट् - ।- औ मोटौ । ` मोटा हो`

।खटखट - ।- औ खटखटौ । ` खटखटाना `

।३।   ।-वा।

।क।   मूल धातुओं के साथ - वा जोड़कर बहुवचन या आदरसूचक प्रेरणार्थक क्रिया बनती है। अकर्मक क्रिया को सकर्मक बनाने के लिए भी यह प्रत्यय प्रयुक्त होता है :

हट् ` हटना ` - ।- वा हटा ` हटाओ, हटाइये `

पढ़ ` पढ़ना ` - + - आ पढ़ा पढ़ाओ, पढ़ाइये`

कर ` करना ` - + - आ करा ` कराओ , कराइये `

।ख। संज्ञा तथा विशेषण के साथ -आ जोड़कर बहुवचन या आदरसूचक प्रेरणार्थक क्रिया बनती है :

खटखट - + - आ खटखटा ` खटखटाओ , खटखटाइये`

मोट - + - आ मोटा ` मोटे होओ , मोटे होइये,

।४। ।-ओ। : ओ के संयोग से अर्थ भेद भी प्रातिपदिक रचना के साथ साथ आता है ।

बोल - + - उ ओ + औ बुलौ ` बुलाओ `

।५। ।-वौ।

।क। मूल धातुओं में - वौ के संयोग से द्विगुणित प्रेरणार्थक रूप व्युत्पन्न होते हैं :

पढ़ - + - वौ पढ़वौ ` पढ़वा `

छिट् - + - वौ छिट्वौ ` चलना `

लेख - + - वौ लेखवौ ` लिखवा `

।ख। अर्थभेद भी मिलता है :

बोल् - + - उ ओ + वौ बुलवा ` बुलवा `

।ग। कुछ एकाक्षरात्मक धातुओं के पश्चात केवल - वौ जुड़ता है औउ आदेशात्मक अर्थ होता है -

रौ ` रह ` - + - वौ रौवौ ` रहे `

गौ `गा ` + अ - वौ + वौ गवौ ` गाय `गाना`

।गवौ । में ` गाना गाने की प्रेरणा दे ` अर्थ भी संलग्न रहता है ।

।६। ।-यौ । : संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया विशेषण के साथ -यौ जोड़कर प्रेरणार्थक क्रिया व्युत्पन्न होती है :

संज्ञा के साथ संयोग से -

लट्ठ - + - यौ लट्ठयौ ` लट्ठ से मार`

डण्ड - + - यौ डण्ड्यौ ` डाडे से मार `

[illegible] - + - यौ [illegible] ` [illegible] से [illegible] `

विशेषण मूलप्रातिपदिक के साथ संयोग से -

।निच्च्- + - यौं निच्च्यौं `नीचा कर`

लम्ब - + - यौं लम्ब्यौं `लम्बा कर`

पतल् - + - यौं पतल्यौं `पतला कर`

क्रिया विशेषण के साथ जोड़ने से -

भितर -+- यौं भितर्यौं `भीतर कर`

।७। ।-ई।: संज्ञा तथा विशेषण के साथ -ई जोड़ने से दशार्थक क्रिया प्रातिपदिक बनते हैं :

संज्ञा के साथ संयोग से -

दुख - + - ई दुखी `दुख को प्राप्त`

उदाहरण -। दुखी ग्योछ ।` दुख को प्राप्त हो गया`

विशेषण के साथ जोड़कर-

बुड़ `बूढ़ा` - + - बुड़ी `बुढ़ापे को प्राप्त`

उदा० । बुढ़ि बुड़ीग्योछ ।` बढ़ापे को प्राप्त हो गया`

क्रिया रूप के साथ संयोग से --

शक् `सकना` - + - ई शकी `समाप्त हो गया`

उदा० । शकी ग्यो ।` समाप्त हो गया`

।८। कुछ धातुओं से चार भिन्न भिन्न प्रातिपदिक बनते हैं -

लद् `लदना`

लद् - + - लाद `लादना`

लद- + - औ लदौ `लदाना`

लद - + - वौ लद्वौ `लदवाना`

इस प्रकार प्रेरणार्थक व्युत्पन्न क्रिया प्रातिपदिक प्रस्तुत बोली में -औ प्रत्यययुक्त तथा - वौ प्रत्यय युक्त होते हैं। इनमें से -औ प्रत्यय युक्त प्रातिपदिक साधारण प्रेरणार्थक तथा - वौ प्रत्यय युक्त विशेष प्रेरणार्थक हैं जिन्हें ऊपर द्विगुणित प्रेरणार्थक कहा गया है। इन्हें क्रमशः प्रथम प्रेरणार्थक प्रातिपदिक तथा द्वितीय प्रेरणार्थक प्रातिपदिक भी कह सकते हैं क्योंकि प्रायः प्रथम प्रेरणार्थक में क्रिया प्रथम व्यक्ति जिससे

कहा जाता है द्वारा की जाती है और द्वितीय प्रेरणार्थक में क्रिया दूसरे व्यक्ति द्वारा जिससे प्रथम व्यक्ति । द्वारा क्रियान्वित होती है ।

।६। ।-न-। :

।क। यह प्रत्यय क्रियार्थक अकेला संज्ञा बनाने के लिए प्रयुक्त होता है । यह प्रत्यय अकेला न आकर -औ द्वारा अनुमानित होता है । प्रस्तुत बोली में संज्ञायें प्राय: ओकारान्त होती हैं । अत: यहां भी - औ उसी प्रवृत्ति के अनुसार आता है । यद्यपि इस प्रकार की रचना संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना के प्रकरण में संकेतित है। तथापि प्रकरण में तदुल्लेख प्रसंगानुकूल है --

खा - + - न् + औ खानौ ` खाना `

छिट - + - न् औं छिट्नौं ` चलना `

बस - + - न् + औं बसंनौं ` बैठना `

खानि , पिनि , छिटनि आदि प्रकार के रूप भी समानान्तरत प्रयुक्त होते हैं ।

।ख। ।-न-। का प्रयोग वर्तमान कालिककृदन्त निर्माण के लिए भी होता है । क्रियार्थक संज्ञा से इसका यह अन्तर है कि क्रियार्थक संज्ञा में -न के बाद - औं या - इ प्रत्यय आता है किन्तु वर्तमान कालिक कृदन्त में -औं के स्थान पर -यां प्रत्यय जुड़ता है -

बग ` बह् ` - + - न् + यां बगन्यां ` बहता `

उदाहरण ।बगन्यांपानि । `बहता पानी `

हंस - + - न् + यां हंसन्यां `हंसता, हंसते, हंसती `

उदाहरण - ।हंसन्यां स्यैनि । ` हंसती स्त्री `

खा - + - न् यां खान्यां `खाता `

उदाहरण ।खान्यां च्याला । ` खाते लड़के `

दोनों वचनों तथा दोनों लिंगों में समान प्रयोग मिलते हैं ।

।ग। संज्ञा की भांति भी इसका प्रयोग मिलता है और तब भी दोनों वचन एवं दोनों लिंगों में समान प्रयोग होता है :

। डुबन्याक्ष । ` डूबते को `

।घ। क्रिया धातु के उपरान्त - न - जोड़कर संभावनार्थक प्रातिपदिक

बनते हैं । उदा०

जा - + - नृ + ऊं   जानूं : मैं जानूं परे-- `मैं जाता पर `

जा - + - नृ + ऐ   जानैं : तू जाता पर-- ` तू जाता, पर

जा - + - न + इ   जानि : वु जानि, पर-- ` वह जाती, पर

।१०।   ।-ल-। :   मूल धातु के उपरान्त ।-ल। जोड़ने से भविष्यबोधक क्रिया प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं । यह प्रत्यय पुरूष, लिंग, वचन बोधक प्रत्ययों के साथ आता है -

जा - + - लृ + ओ   जालो   जायेगा`

जा - + - लृ + आ   जाला   जायंगे । वे।

जा - + - लृ + आ   जाला   `जावोगे `

जा - + - लृ + इ   जालि   ` जायेगी `

जा - + - ।ऊं -आ   - + लृ + ओ   जूंलो ` जाऊंगा `

जा - + - ऊं -आ   - + लृ + आ   जूंला ` जायंगे` ।हम।

।११।   ।- बेर। :   यह स्वतंत्र रूप है और प्रत्ययवत् भी प्रयुक्त होता है । स्वतंत्र रूपों की संयुक्ति की दृष्टि से ही सही, - बेर, के संयोग से पूर्वकालिक क्रिया व्युत्पन्न होती है ।

उदा० जा - + - ऐं -आ   - + बेर = जैबेर ` जाकर `

खा - + - ऐं -आ   - + बेर खैबेर ` खाकर `

इस प्रक्रिया में ध्वनि परिवर्तन भी साथ साथ मिलता है ।

२.१.४.३   संयुक्त क्रिया

ऊपर मूल धातु अथवा दूसरे शब्द भेदों के साथ प्रत्यय जोड़ने से बनने वाले क्रिया व्युत्पन्न प्रातिपदिकों पर विचार किया गया है । उक्त सभी क्रिया व्युत्पन्न प्रातिपदिक यौगिक धातु भी कहे जा सकते हैं । प्रत्यय संयोग के अतिरिक्त धातुएं परस्पर भी संयुक्त होती हैं जो संयुक्त क्रिया प्रातिपदिक के रूप में मिलती हैं । संयुक्त क्रिया सामान्य आज्ञार्थक रूप अथवा धातु कृदन्तों के साथ क्रियाएं जोड़ने से बनती हैं । संयुक्त क्रिया का निश्चय प्रायः वाक्य स्तर पर होता है, फिर भी

कतिपय संयुक्त रूप प्रस्तुत प्रकरण में उल्लेख्य हैं । उदा०

।जलभुन । `क्रोधित होना `, ।क्ल फिर । `हिलडुल `,

।घोघपढ़ । `अध्ययन करना `

। जान् बशनो । ` `लाने लगना`

। ऐ शकनो । `आ सकना `

।उठिबैठनो । `उठना `

।चलिबशनो । `मर जाना `

। ह्वेग्यो । `हो गया `

३.१.४.४ पूर्वकालिक कृदन्त

पूर्वकालिक क्रिया कृदन्त की रचना दो संरचकों के योग से बनती है । इनमें पहला ।-इ-। या ।-ऐ-। तथा दूसरा।-बोर। है । उदा०

सामान्य रूप	पूर्वकालिक रूप
कर `कर `	कर - + - इ + बेर करिबेर ` करके`
पढ़ `पढ़सो`	पढ़ - + - इ + बेर पढ़िबेर ` पढ़कर, सोकर
जा `जा `	जा - + - ऐ + बेर जैबेर `जाकर`
खा `खो `	खा - + - ऐ + बेर खैबेर खाकर `

३.१.५ क्रियाविशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिक रचना

३.१.५.० संज्ञा, विशेषण, अव्यय, आदि के साथ प्रत्ययों के संयोग से क्रिया विशेषण व्युत्पन्न होते हैं ।

३.१.५.१ क्रिया विशेषण व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय पूर्व प्रत्ययों के साथ बहुत थोड़े प्रातिपदिक जुड़कर क्रिया विशेषण बनाते हैं । इनकी रचना प्राय: `पूर्व प्रत्यय + संज्ञा ` रूप में मिलती है । उनमें से निम्नलिखित प्रमुख हैं :

।१। ।नि-।:

।नि - + - धड़क निधड़क । ` निधड़क `

उदा० । वुनिधड़क काम कर्छ । ` वह निधड़क काम करता है `

।नि - + - डर निडर ।` निडर `

उदा० ।बु निडर जान्चे रूंछ । ` वह चला जाता है`

।२। ।बि-।:

।बि - + - अर्थ बिर्था । ` व्यर्थ `

।३। । हर-। : हर-+ - संज्ञा = क्रिया विशेषण -

। हर - + - साल हरसाल । ` प्रतिवर्ष `

। हर - + - मैन हर्मैन । ` प्रतिमाह `

। हर - + - घड़ि हर्घड़ि । ` हर घड़ी `

।४। ।दर्-।:

।दर् - + - असल दरअसल ।` वास्तवमें

।५। ।ब-।:

।ब - + - दस्तुर बदस्तुर । ` उचित

।६। ।बे-।:

।बे - + - कार `बेकार । ` व्यर्थ `

।७। । फिल-।:

फिल - + - हाल फिलहाल ` सम्प्रति `

३.१.५.२ क्रिया विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

३.१.५.२.० यहां पर प्रत्ययों में परसर्ग भी सम्मिलित हैं।

।१। ि- नि।: संज्ञा के साथ जुड़कर क्रिया विशेषण संरचक बनता है-

राति - + - नि रातिनि `प्रात: ही

।२। ।-ले। : संज्ञा - + - लै - क्रिया विशेषण-

धरम - + - लै धर्मले धर्मसे `

उदा० । मैं धर्मले कुंछु । ` मैं धर्म से कहता हूं `

।३। ।-बटे।: क्रिया विशेषण + बटे = क्रिया विशेषण-

यां ` यहां ` - + - बटे यांबटे ` यहां से `

वां ` वहां `- + - बटे वांबटे ` वहां से `

इथि - + - बटे इथिबटे = ` यहां से `

-बटे के साथ वैकल्पिक रूप में - बै आता है और दोनों का समान स्थितियों में विकल्पात्मक प्रयोग मिलता है -

वां - + - बटे बै वांबटे वांबै `वहां से`

।4। ।-कनैं कैं।: क्रिया विशेषण के साथ ।- कर्मै, -कैं। जोड़कर क्रिया विशेषण बनता है -

इति `यहां` - + - कनैं कैं इतिकनैं इतिकैं `यहां पर`

इसीप्रकार उतिकर्मै उतिकैं, कतिकनैं कतिकैं आदि रचनायें द्रष्टव्य हैं।

।5। ।-तक। : संज्ञा - + - तक = क्रिया विशेषण

। ब्याल `शाम` - + - तक ब्याल तक `शाम तक`

आ बा `थोड़ी देर` - + - तक बा बा, तक `थोड़ी देर तक`

।6। ।-ऐ।:

।क। संज्ञा के साथ इसके संयोग से कुछ क्रिया विशेषण बनते हैं -

बेर `समय` - + - ऐ बेरैं बेरैं `शीघ्र ही`

आज - + - ऐ आजै `आज ही`

रोज - + - ऐ रोजै `रोजही`

रात - + - ऐ रातै रात ही`

और - + - ऐ औरै `दूसरा ही`

।ख। क्रिया विशेषण + - ऐ = क्रिया विशेषण

ऐलु `अब` - + - ऐ ऐलै `अभी`

।7। ।-लै।: क्रिया विशेषण + लै = क्रिया विशेषण

कति - + - लै कल्लै `कहां पर`

इति - + - लै इल्लै `यहां पर`

तति - + - लै तल्लै `तहां पर`

उति - + - लै उल्लै `वहां पर`

।8। ।- ई । व्युत्पन्न क्रिया विशेषण प्रातिपदिकों तथा संज्ञा साथ -ई जोड़कर बलार्थक क्रिया विशेषण बनते हैं -

इलुलैं - + - इं इलुलैं यहीं पर `
उलुलैं + - इं पांइं `यहीं `

।९। ।-कि।:
क्रिया विशेषण + कि क्रिया विशेषण -
किलै - + - कि पिलैकि ` क्योंकि `

।१०। ।-हा।: क्रिया - + - हा = अव्यय -
अ आ + हा अहा आहा `हर्ष सूचक `

।११। ।-हो ।: सम्बोधन सूचक + हो =अव्यय
ओ - + - हो ओहो `आश्चर्यसूचक`

।१२। ।-पाड़ि ।: क्रिया विशेषण - + - पाड़ि = क्रिया विशेषण
।सुलुक - + - पाड़ि सुलुक पाड़ि । ` चुपके से `

।१३। ।-ब।: स्वर के पश्चात -ब और व्यंजन के पश्चात -अब रूप जुड़ता है -
अ - + - ब अब ` अब `
ज् - + - अब जब ` जब `
त् - + - अब तब ` तब `
क् - + - अब कब ` कब `

।१४। ।-वां।: सार्वनामिक अंशों के साथ जुड़कर क्रिया विशेषण सूचक बनता है —
इ - + - वां यां `यहां `
उ - + - वां वां ` वहां `
ज् - + - वां जां `जहां `
त् - + - वां तां `तहां `
क् - + - वां कां `कहां `

।१५। ।-थ।, ।अथ ।: सार्वनामिक अंश + - थ, अथ = क्रिया विशेषण`
इ - + - थ इथ ` इधर `
उ - + - थ उथ ` उधर `
क् - + - अथ कथ ` किधर`
ज् - + - अथ जथ ` जिधर `

।९६। ।-श।: सार्वनामिक अंग + स = क्रिया विशेषण । यह प्रत्यय, -औ के साथ आता है -

इ - + - श् + औ इशौ `ऐसा`

उ - + - श् + औ उशौ ` वैसा`

क - + - श् + औ कशौ ` कैसा`

यथा, ।इशौकर । ` ऐसाकर `, । उशौकर । ` वैसाकर `

।कशौकर । ` कैसा कर ` आदि ।

-र प्रत्यय जोड़कर निम्नलिखित कोटि के प्रातिपदिक बनते हैं -

इस्थे , उस्थे , कस्थे , जस्थे, तस्थे, आदि र

ये क्रमश: `ऐसे ` ` वैसे `, ` कैसे `, ` जैसे `, `तैसे `, अर्थबोधक है । क्रिया के पूर्व रहने पर ये क्रिया विशेषण वत् व्यवहृत होते हैं ।

।९७। ।- तुक।:सार्वनामिक अंग + तुक = क्रिया विशेषण इसके पश्चात - मैं जोड़ने से कालवाचक क्रिया विशेषण बनता है -

इ- + - तुम + मैं इतुम मैं ` इतने मैं `

उदा० । इतुकमैं मैं पुजि गयूं ।` इतने मैं मैं पहुंच गया`

।९८। ।- औं -।: सार्वनामिक अंग - + - औं = आश्चर्यसूचक -

इ - + - औं यौं ` आश्चर्यसूचक `

३.१.५.३ प्रत्ययों के अतिरिक्त स्वतंत्र रूपों की संयुक्ति से भी क्रिया विशेषण बनते हैं -

।क। यां - + - तक यांतक ` यहां तक `

।ख। जैं + तैं जैं तैं ` जहां तहां `। इसीप्रकार ।आमनिसामनि । ` आमने सामने `, । जेते । ` अनापसनाप `, । जब तब । ` जब तब ` आदि रचनाएं मिलती हैं ।

।ग। पदों की त्रिरुक्ति -

संज्ञाओं की त्रिरुक्ति:

:घड़ि घड़ि ` बार बार `

: राम राम ` घृणा सूचक `

+ औं + + च : बीचों बीच ` ठीक बीच मैं `

: हाथों हाथ ` हाथो हाथ `

विशेषणों की द्विरुक्ति -

+ : मनैमनै ` थोड़ा थोड़ा `

+ आ + + ब : एकाएक ` अचानक `

क्रिया विशेषणों की द्विरुक्ति-

सैंज़ सैंज़ ` धीरे धीरे `

जां जां ` जहां जहां `

कांकां ` कहां कहां `

जस्ये जस्ये ` जैसे जैसे

विशेषणों छि + छि छिच्छी ` छी: छी: `

अनुकरणात्मक शब्दों की द्विरुक्ति -

+ आ + ा क:

।सटासट ।, । चटाचट ।, ।पटापट ।, आदि

।घ। क्रियाविशेषणों की द्विरुक्ति में सम्मिलित पदों के मध्य ।-न-।
रखकर क्रिया विशेषण बनता है -

।कबै न कबै । ` कभी न कभी `

। कै न कै । ` कहीं न कहीं `

।ङ। संज्ञा पदों की द्विरुक्ति में सम्मिलित पदों के मध्य -का- रखने से
क्रिया विशेषण बनता है -

मैना का मैना ` महीने की महीने `

३.१.६ ऊपर अभी तक व्युत्पादक पूर्वप्रत्यय तथा पर प्रत्ययों पर ही विचार किया है। अन्त: प्रत्यय विवेच्य बोली में महत्व नहीं रखते है। वस्तुत: अन्त: प्रत्यय रचना में क्रम रहित ।दिस्कण्टिन्युअस । संरूप ।मौर्फ। रहते हैं जो प्रस्तुत बोली में नहीं मिलते हैं। अत: प्रस्तुत प्रकरण में अन्त: प्रत्यय विचार के विषय में नहीं हो सके हैं।

३.१.७ समास रचना

प्रस्तुत बोली में स्वतंत्र रूपों की संयुक्ति द्वारा भी प्रातिपदिक रचना मिलती है। इन प्रातिपदिकों पर ऊपर संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम क्रिया, क्रिया विशेषण प्रातिपदिक रचना के साथ संकेत किया जा

चुका है। शब्द स्तर पर समास रचना के कुछ उदाहरण इस प्रकार है :

संज्ञा -

।होनअर।` होनहार`   ।नान्तिना। `बच्चे`

।सागपात। ` सागपात`   ।मल्कोट। ` मामा का घर `

। गुड़पापड़ि। ` एक भोज्य पदार्थ ` । बोलचाल। ` ` बोलचाल`

। लिन्दिनो। ` लेनदेन ` । भूत प्रेत। ` भूत प्रेत `

।दान्यानि। ` दाना पानी `   ।महाजन।   ` महाजन `

।बुति धाति। ` काम काज ` ।` भारान्पान।  ` चौका बर्तन `

।स्वर्गवास। ` मृत्यु `   । गाड़गध्यारा। ` नदी नाले`

।कमरज्यौड़ि। ` करधनी `

सर्वनाम -

।ज्वै क्वै। ` जो कोई `

।सब क्वै। ` सब कोई`

विशेषण-

।कमजोर। ` कमजोर `   । मनमौजि। ` मनमौजी `

।दान्दार। ` दानेदार`

।घरवालो। `पति `

।घरघुस्घू । ` घर में ही रहने वाला `

क्रिया -

।घुसपैठ। ` घुसना ` । चलफिर। `हिलडुल ` । जलभुन। `क्रोधित हो

घोघ्पढ़। ` अध्ययन कर `

क्रिया विशेषण -

।सैब सैब। ` धीरे धीरे     । दिन भर र ` दिनभर `

।बीचो बीच। ` ठीक बीच में   । घरघर। ` प्रतिघर `

।रातौ रात। ` रात ही में   ।

।घड़ि घड़ि। ` हर घड़ी `   । जाग जागा। ` प्रत्येक जगह `

।यथाशक्ति। ` यथाशक्ति `   । आजन्म। ` आजन्म`

३.१.८ आवृत्ति

प्रत्ययों के प्रकरण में उल्लेख किया जा चुका है किन्तु क्योंकि शब्द रचना स्तर पर आवृत्ति भी महत्वपूर्ण अंश ग्रहण करती है, अत: वह पृथक से यथाविस्तार उल्लेख्य है। आवृत्ति तीन प्रकार से परिश्रुत है :

।क। एक ही शब्द की पूर्ण आवृत्ति, इस प्रकार की आवृत्ति को यहां द्विरावृत्ति ।रिपटीशन। नाम दिया जा रहा है।

।ख। शब्द के केवल एक अंश की आवृत्ति, जिसे यहां अंशावृत्ति ।रिडुप्लिकेशन। नाम से अभिहित किया जा रहा है।

।ग। तीसरे प्रकार की आवृत्ति अनुकरण मूलक ध्वनियों की आवृति है।

३.१.८.१ द्विरावृत्ति

।टुक्काटुक्का। `कोमलभाग`

।आदिमिआदिमि। `अलग अलग आदमी`

।आठै आठ। `आठ के आठ`

।देश देश। `सब जगह`

।ठुलठुला। `बड़े बड़े`

।ग्यो ग्यो। `गया तो गया`

३.१.८.२ अंशावृत्ति ।रिडुप्लिकेशन।

-दि- : ।दिदिय। `दे दो`

-लि- : ।लिलिय। `ले लो`

-स्त- : ।अस्तव्यस्त। `अस्तव्यस्त`

-लट- : ।उलट पुलट। `परिवर्तन`

-थक- : ।इथकै उथकै।

-का- : ।काम काच। `विशेष कार्य की अवस्था`

-ना- : ।नानातिना। `बाल बच्चे`

३.१.८.३ अनुकरणमूलकता

।तड़तड़। ``तड़तड़`, ।खटखट। `खटखट`,

।पटपट। `पटपट`, ।फनफन। `फनफन`

दूसरे प्रकार के अनुकरणमूलक शब्द ।-आट ।प्रत्यय युक्त मिलते हैं -

।झनमनाट। `झनझन` ध्वनि पर आधारित`

।कड़कड़ाट। `कड़कड़` ,, ,,

।मड़मड़ाट। `मड़मड़ ,, ,,

३.१.६ संलग्न संरचक ।इमिडियेट कन्स्ट्र्युयेन्ट। और शब्द भेद

कभी कभी तीन रूपियों द्वारा निर्मित शब्द भी परिश्रुत होता है। तथा उसके संरचकों की संलग्नता की ओर ध्यान जाता है। उदा०

।मलमनशाहत। एक शब्द है जिसमें तीन रूपिम सम्मिलित हैं। विशेषण की दृष्टि से इसको दो संलग्न संरचकों में विभाजित करना आवश्यक है तभी शब्द की रूपिमिक, संघटना प्रकट हो सकती है। उक्त कोटि के शब्दों का विश्लेषण आवश्यक है ताकि उनमें से एक का या दोनों का और आगे विश्लेषण किया जा सके। प्राय: प्रस्तुत बोली में इस प्रकार के शब्द विश्लेषण का आधार पूर्वपद तथा उत्तर पद रूपों में विभाजन है। पूर्वपद मूल स्वतंत्र रूप तथा उत्तर पद व्युत्पन्न रूप होता है। उदा०

मलमन्शाहत मल-मनशाहत मल-मनशा -हत्

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्द द्रष्टव्य है :

भितर्क्वाड़ा भितर क्वाड़ा भितर क्वाड़ -आ

अधान्नो आग-हान्नो आग- हान -ओ

विश्लेषण में प्राप्त दो संरचकों में से पूर्व पद के साथ कोई प्रत्यय या आबद्ध रूप नहीं है किन्तु उत्तर पद के साथ प्रत्यय जुड़ा है। अत: उत्तरपद और उसके बाद सम्पूर्ण शब्द यौगिक शब्द है। इसके विपरीत विश्लेषण द्वारा उक्त शब्दों को सामासिक कोटि में रखना बोली की प्रवृत्ति के विपरीत होगा।

३.२ रूप साधक प्रत्यय और रूप सारिणी

३.२.० रूप साधक प्रत्यय केवल परप्रत्यय होते हैं जिनके पश्चात और कोई प्रत्यय नहीं जुड़ते हैं। सामान्यतः इन्हें विभक्ति प्रत्यय कहा जाता है।

३.२.१ संज्ञा रूप साधक प्रत्यय

संज्ञा से तात्पर्य संज्ञा तथा संज्ञावत् प्रयुक्त होने वाले कृदन्त रूपों से है। संज्ञा रूप सारिणी में संज्ञा मूल अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के पश्चात वचन तथा कारक के अनुसार रूपसाधक प्रत्यय जुड़ते हैं। विवेच्य बोली में अन्त्यानुसार दो प्रकार के संज्ञा प्रातिपदिक मिलते हैं।क। व्यंजनान्त और।ख। स्वरान्त। सभी संज्ञा प्रातिपदिक दो लिंगों - पुल्लिंगों और स्त्रीलिंगों में मिलते हैं। लिंग भेद प्राकृतिक तथा व्याकरणिक दोनों आधारों पर निर्धार्य है।

३.२.१.१ अधिकांश पुल्लिंग संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिक ओकारान्त और स्त्रीलिंग संज्ञाव्युत्पन्न प्रातिपदिक इकारान्त है। ओकारान्त संज्ञायें सभी पुल्लिंग है। ओकारान्त के साथ साथ औकारान्त, उकारान्त, तथा एकारान्त संज्ञायें भी प्रायः पुल्लिंग होती हैं। कुछ इकारान्त भी पुल्लिंग हैं किन्तु उनकी संख्या अत्यल्प है। व्यंजनान्त, आकारान्त, ईकारान्त और ऐकारान्त संज्ञायें पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग दोनों प्रकार की हैं। उदा०

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
।१। व्यंजनान्त		
	बन् 'वन'	बात 'बात'
	घाम् 'धूप'	ठार 'जगह'
	पात 'पत्ता'	खाट 'खाट'
।२। स्वरान्त		
आकारान्त	प्याला 'कटोरा'	माला 'माला'
	कबुवा 'तकली'	इला 'माता'
इकारान्त	आदमि 'आदमी'	छाति 'छाती'
	पानि 'पानी'	बानि 'बाणी'

उकारान्त	गोरु `गाय`	
	आरु `आडू`	
एकारान्त	दुबे `दुबे`	
	चौबे `चौबे`	
ऐकारान्त	थैं `दही`	
	मै `कृषि उपकरण`	
ईकारान्त	मै `भाई`	शै `दीवार`
ओकारान्त	चेलो `लड़का`	
	घोड़ो `घोड़ा`	
	बाटो `रास्ता`	
औकारान्त	घौ `बादल`	
	मौ `शब्द`	
	उगौ `कृषि उपकरण`	

संयुक्त व्यंजनान्त और उत्क्षिप्त व्यंजनान्त प्रातिपदिक वस्तुत: व्यंजनान्त नहीं है। अपितु अन्त्य ध्वनि विमुक्त ।रिलीज्ड। रहती है, अत: यह भी स्वरान्त कोटि की संज्ञाओं में गिने जा सकते हैं। उदा-

बल्द `बैल`, घट्ट `पनचक्की`

सज्ज `सुविधा`, गुड़ `गुड़`

उपर्युक्त सभी उदाहरणार्थ संज्ञा एक वचन अविकारी कारक के हैं।

२.२.१.२ पिठौरागढ़ी में अधिकांश पुल्लिंग एक वचन संज्ञाएं ओकारान्त हैं और सभी एकवचन ओकारान्त संज्ञाएं पुल्लिंग कोटि की हैं। अधिकांश स्त्रीलिंग संज्ञाएं इकारान्त हैं और बहुत थोड़ी इकारान्त संज्ञाएं पुल्लिंग कोटि की हैं। प्रकृति तत्व अथवा प्रातिपदिक मूल समान होते हुए भी अन्त्य वर्णों -ओ तथा -इ के कारण ही व्यतिरेक मिलता है -

।१। चेल - + - ओ चेलो `लड़का`

चेल - + - इ चेलि `लड़की`

।२। घोड़ - + - ओ घोड़ो `घोड़ा`

घोड़ - + - इ घोड़ि `घोड़ी`

।३। पार - + - ओ पारो `काठपात्र`

पार - + - इ पारि `काठपात्रिका`

।४। बाच्छ - + - ओ   बाच्छो ` बछड़ा `

बाच्छ् - + - इ   बाच्छि ` बछिया `

उक्त उदाहरणों में - ओ पुनरावृत्त अंश ।रिकरिंड पार्शियल। है जिसका अर्थ चारों उदाहरणों में ` एक वचन पुल्लिंग बोधक ` है । इसी प्रकार चारों उदाहरणों में -इ ` एक वचन स्त्री लिंग बोधक है --

	१	२	३	४
।क।	चेल् -	ओ	चेल्	- इ
।ख।	घोड़ -	ओ	घोड़	- इ
।ग।	पार -	ओ	पार	-इ
।घ।	बाच्छ-	ओ	बाच्छ	- इ

यहां ।१। के अन्तर्गत उल्लिखित कोई भी एक आबद्ध रूप ।क,।ख।, ।ग।, ।घ।, के ।२। के नीचे दिये गये किसी भी प्रातिपदिक मूल के साथ जुड़ सकता है । इस प्रकार प्रातिपदिक मूल एवं प्रत्यय का निकटस्थता के आधार पर एक सांचा ।फ्रेम। परिलक्षित होता है :

| | -ओ | | | -इ |

जिसमें दिए हुए रूप परस्पर प्रतिस्थापित ।सबस्टिट्यूटेड। होते हैं अर्थात -

चेल्- घोड़- पार- बाच्छ-	- ओ	,	चेल घोड़ पार बाच्छ	-इ
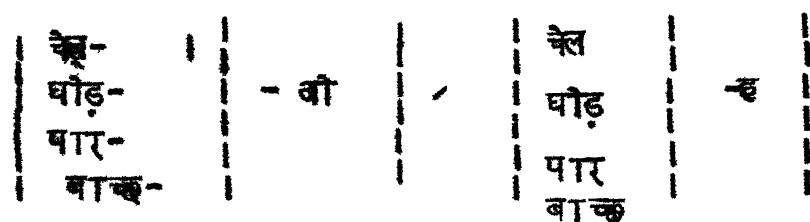
अतः यह प्रकट है कि -ओ और -इ पर प्रत्यय हैं जो ऊपर के उदाहरणों में सभी स्थलों पर एक ही अर्थ क्रमशः पुल्लिंग एकवचन तथा स्त्रीलिंग एकवचन के द्योतक हैं । इसी प्रकार ऊपर ३.२.१.१ में उल्लिखित उदाहरणों के आधार पर कथ्य है कि -उ , -ए - औकारान्त भी , ओकारान्त की भांति एकवचन पुल्लिंग बोधक है । किन्तु -उ, -ए,

तथा ओकारान्त प्रातिपदिक संज्ञा मूल प्रातिपदिक हैं औउ व्युत्पत्तिमूलक घरातल ।डिराइवेशनल लेबुल। पर केवल संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का ही लिंग निर्णय हो सकता है। संज्ञा मूल प्रातिपदिकों का लिंगबोध वाक्य घरातल या सन्दर्भ से होता है।

३.२.१.३ संज्ञा व्युत्पन्न प्रातिपदिकों का लिंग निर्णय

३.२.१.३.१ रूपिम ।-ओ। पुल्लिंग बोधक है औउ रूपिमिक सीमा से प्रतिबन्धित इसके निम्नलिखित संरूप हैं -

।- ओ ~ - औं ~ -उ ~ -ए ।

संरूपात्म विवरण :

।क। ।-ओ। : व्यंजनों के पश्चात निम्नलिखित कोटिकी संज्ञावों में मिलता है।--

चेल, - ओ ` लड़का `

बात - ओ ` बत्ती `

घोड़े- ओ ` घोड़ा `

गल् -ओ ` गला `

पार् - ओ ` काच पात्र `

बाछ्-ओ ` बछड़ा `

।ख। ।-औं। : निम्नलिखित प्रकार की संज्ञावों में आता है -

म् - औं ` शब्द `

ब् - औं ` बादल `

उग् - औं ` एक कृषि उपकरण `

।ग। ।-उ। : निम्नलिखित कोटि की संज्ञावों में आता है :

गोर् - उ ` गाय `

बार् - उ ` बालू `

लड्ड् -उ ` लड्डू `

डाक् - उ ` डाकू `

चक्क् - उ ` चाकू `

।घ। ।-ए। निम्नलिखित संज्ञावों में आता है :

डुब - ए ` डुबे `

चौब -ए ` चौबे `

३.२.१.३.२ स्त्री लिंग के सम्बन्ध में यद्यपि कोई निश्चित स्थिति नहीं मिलती है तथापि अधिकांश स्त्री लिंग संज्ञायें । -इ। प्रत्यय युक्त रहती हैं किन्तु कुछ पुल्लिंग संज्ञायें भी । -इ। प्रत्यय ग्रहण करती हैं । स्त्री लिंग संज्ञाएं । -व्यंजन , -आ , -ए , -ई । से युक्त भी मिलती हैं । किन्तु ये रूप कुछ पुल्लिंग संज्ञाओं में भी प्राप्य हैं । स्त्री लिंग के विषयमें निरपवादत्व की स्थिति के अभाव में भी प्रयोग बाहुल्य के आधार पर । -इ। को स्त्री लिंग बोधक रूपिम स्वीकार किया जा सकता है --

। -इ। स्त्री लिंगबोधक रूपिम है और इसके निम्नलिखित संरूप हैं-

।१। । -नि ` -आनि ।

।२। । -इ ~ -आ ` -ए ` -ई ।

इनका वितरण इस प्रकार है :

।क। । -इ। निम्नलिखित कोटि की संज्ञाओं में आता है -

लेड़्- इ ` लड़की ` बान् - इ ` वाणी `

रान्- इ ` रानी ` नाड़् - इ ` नाड़ी `

।ख। । -नि। : संज्ञा प्रातिपदिकों में र् के पश्चात मिलता है, उदा०

मास्टेर्-नि ` मास्टनी ` गाड़-इ `गाड़ी `

सुबेदार्-नि `सूबेदारनी ` घोड़-इ ` घोड़ी`

इन्स्पेक्टर्-नि ` इन्सपिटरनि `

थोर -इ ` थोरी `

मोर्- नि ` मोरनि `

सुनार्-नि `सुनारनी`

ध्वनि परिवर्तन के साथ अन्य ध्वनियों के बाद में आ सकता है -

हुम हुइ -नि हुम्नि ` हुम्नी `

। उ <- अ ।

।ग। । -आनि। : अघोषस्पर्शी के बाद आता है ।

उदा०

पाण्डत - आनि पण्डितानी`

जेठ - अनि `जेठानी`

ध्वनि परिवर्तन के साथ प्रत्यय के साथ भी आ सकता है --

कौलि कौल्यू - आनि ` कौल्यानी `

।य इ।

धोबि धोब्य -आनि ` धोबिन `

विकल्पात्मक रूप से आनि आन भी मिलता है-

द्यौर : धौर्यानि धौरान ` देवरानी `

।घ। ।-आ। : निम्नलिखिति संज्ञाओं में आता है -

माल् - आ ` माला `

इज् - आ ` माता `

।च। ।-ऐ। : निम्नलिखिति संज्ञाओं में आता है,

उदा०

म - ऐ ` कृषि उपकरण `

क - ऐ `उल्टी `

।छ। ।-ई। : निम्नलिखिति संज्ञाओं में आता है, उदा०

ख्‌ - ई ` दीवार `

मू - ई ` मां `

त् - ई `पकवान के लिए कढ़ाई में रक्खा तेल `

३.२.१.३.३ व्यंजनान्त तथा शेष स्वरान्त संज्ञा प्रातिपदिकों का लिंग निर्णय सन्दर्भ अथवा वाक्य धरातल पर होता है। यथा :

।क। घाम् मन्दो छ ` घाम मन्दा है ।पुल्लिंग।

।ख। बात् निकि छ ` बात अच्छी है `।स्त्रीलिंग।

।ग। हाथ मैलो छ `हाथ मैला है` ।पुल्लिंग।

।घ। नाक टेढ़ो छ `नाक टेढ़ी है` ।पुल्लिंग।[1]

।ङ। गाड़ में बाड़ हुनो ` खेत में नमी होती होगी ।स्त्रीलिंग।

३.२.१.४ ऊपर एकवचन अविकारी संज्ञा प्रातिपदिकों की लिंग विषयक स्थिति वर्णित है। बहुवचन में केवल ओकारान्त तथा औकारान्त ही विकारी रूप

१- विवेच्य बोली में नाक पुल्लिंग है।

को प्राप्त होते हैं । उदा०

एकवचन	बहुवचन
चेल् - औ	चेलो -आ च्याला ` लड़के `
केल् - औ	केलो -आ क्याला ` केले `
घोड़-औ	घोड़ो-आ घ्वाड़ा ` घोड़े `
बाच्छ- औ	बाच्छो-आ बाच्छा ` बछड़े `

इस कोटि की विकारी संज्ञाओं का लिंग निर्णय भी सन्दर्भ अथवा धरातल पर किया जाता है, उदा०

च्याला ऐ ग्यान	`लड़के आ गये `
क्याला पाकाला	` केले पकेंगे `
घ्वाड़ा दौड़ाला	` घोड़े दौड़ेंगे `
बाच्छो पानि खालो `	बछड़ा पानी पीयेगा `

कुछ संज्ञाओं के पुल्लिंग और स्त्रीलिंग में पृथक पृथक शब्द हैं --

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
बाबा ` पिता	इजा ` माता `
बल्द ` बैल	गोरु ` गाय `
मैंस ` पुरुष `	स्यैनि ` स्त्री `

कुछ संज्ञायें पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों में आती हैं -

मैंस ` स्त्री या पुरुष `

उदा० - `उकसि मैंस छ ` वह कैसी मैंस है `

उकसो मैंस छ ` वह कैसा आदमी है `।

१.२.१.५ विकारी रूपों के सम्बन्ध में विचार करते समय वचन एवं कारक स्थितियां उल्लेखनीय हैं। संज्ञायें दो लिंगों, दो वचनों तथा तीन कारकों में मिलती हैं । रूपसाधक प्रत्यय प्राय: लिंग, वचन तथा कारक तीनों स्थितियों को एक साथ प्रकट करते हैं। अत: लिंग निर्णय पर वचन एवं कारक के साथ ही विचार करना युक्ति युक्त है । वस्तुत: लिंग निर्णय की स्थिति वचन एवं कारक रूपों पर विचार करने के बाद ही पूर्णत: स्पष्ट होती है।

३.२.१.६ पिठौरगढ़ी संज्ञायें एकवचन तथा बहुवचन में मिलती हैं। इनमें से ओकारान्त संज्ञाओं में -ओ के स्थान पर बहुवचन में -आ हो जाता है। इसे इस प्रकार कह सकते हैं कि ओकारान्त एकवचन संज्ञायें बहुवचन में आकारान्त हो जाती हैं। इकारान्त में बहुवचन में दो प्रयोग मिलते हैं। इनमें से एक में बहुवचन में भी संज्ञायें इकारान्त ही रहती हैं और दूसरे में अन्त्य -इ के स्थान पर -इन रहता है। ये दोनों विकल्पात्मक स्थितियां हैं। इकारान्त अप्राणिवाचक संज्ञाओं के बहुवचन में अन्त्य केवल -इ रहता है। अन्यत्र एकवचन तथा बहुवचन के रूपसमान हैं। ओकारान्त एकवचन तथा औकारान्त एकवचन संज्ञाओं, जिनका बहुवचन रूपसाधक प्रत्यय -आ है, के अतिरिक्त अन्य संज्ञाओं का वचन निर्णय वाक्य स्तर पर ही सम्भव है। उदाहरण-

		एकवचन	बहुवचन	लिंग
(क)		चेल्-ओ `लड़का`	च्याल -आ `लड़के`	पु०
		घोड़् -ओ `घोड़े`	घ्वाड़ -आ `घोड़े`	पु०
		बाट् -ओ `रास्ता`	बाट् -आ `रास्ते`	पु०
		ताल़ -ओ `ताला`	ताल -आ `ताले`	पु०
(ख)	i	चेल-इ `लड़की`	चेल-इ / चेलीन	लड़कियां स्त्री०
		रान् - इ `रानी`	रान् - इ / रानीन	रानियां स्त्री०
		बैन -इ `बहिन`	बैन-इ / बैन-इन	`बहिनें`
		स्यैन-इ `स्त्री`	स्यैन-इ / स्यैन-इना	`स्त्रियां`
	ii	छात्-इ `छाती`	छात -इ	`छातियां`
		ताल्-इ `ताली`	ताल-इ	`तालियां`
		छान-इ मात्रा बोधक	धान्-इ	`मात्राबोधक`
(ग)	iii	बन् `बन`	बन् `बन`	पु०
		घाम् `धूप`	घाम `धूप`	पु०

पात् `पत्ता`   पात् `पत्तियों` पु०

हाथ `हाथ`   हाथ `हाथ` पु०

बात् `बात`   बात् `बात` स्त्री०

।।। घट्ट `पनचक्की`   घट्ट `पनचक्की` पु०

बल्द `बैल`   बल्द् `बैल` पु०

लट्ठ `लट्ठ`   लट्ठ `लट्ठ` पु०

अन्त में संयुक्त व्यंजन युक्त संज्ञायें वस्तुतः व्यंजनान्त नहीं होती है, वे अन्त में स्वर ध्वनियुक्त ।रलीज्ड। रहती है।

।घ। व्याल -आ `कटोरा`   व्याल्-आ `कटोरे` पु०

राज् - आ `राजा`   राज-आ `राजा` पु०

माल्-आ `माला`   माल् -आ `माला` स्त्री०

इज् -आ `माता`   इज्-आ `मातायें` स्त्री०

।ङ.। गोर्-उ `गाय`   गोर्-उ `गाय` पु०

बार्-उ `बाडू`   बार्-उ `बाडू` पु०

डाक -उ `डाकू`   डाक-उ `डाकू` पु०

।च। दुब-ए `दुबे`   दुब-ए `दुबे` पु०

चौब -ए `चौबे`   चौब्-ए `चौबे` पु०

।छ। क-ऐ `कै`, वमन   क्-ए `कै`, वमन स्त्री०

।ज। म्-ई `माई`   म्-ई `माई` पु०

भ्-ई `दीवार`   भ्-ई `दीवार` स्त्री०

।झ। । उग-औ `कृषि उपकरण   उग् -औ `कृषि उपकरण` पु०

बल्थ्-औ `ईंधन की लकड़ी का ढेर   बल्थ् -औ `ईंधन की लकड़ी का ढेर

औकारान्त और कुछ औकारान्त एकवचन प्रातिपदिकों को छोड़कर जिनका बहुवचन रूप - आ के संयोग से बनता है, शेष संज्ञा प्राति-पदिकों के रूप एक वचन तथा बहुवचन में एक समान प्रतीत होते हैं। यद्यपि इस प्रकार के प्रातिपदिकों का वचन निर्णय वाक्य स्तर पर होता है, तथापि रूपस्तर पर भी कुछ आपरिवर्तन ।जीरोमैडिफिकेशन। के माध्यम से समझा जा सकता है। इसके अन्तर्गत बहुवचन पसाधक प्रत्यय के

३.२.१.६.१ उपर्युक्त उदाहरण संज्ञाओं के अन्त्यों के अनुसार हैं। ये रूप अविकारी अथवा प्रत्यक्ष के हैं। तिर्यक अथवा विकारी कारक में बहुवचन के रूप तो बदलते ही हैं, एकवचन तिर्यक में भी ओकारान्त तथा कुछ औकारान्त संज्ञायें कारकीय स्थिति ग्रहण करने के लिए परिवर्तित हो जाती हैं और परिवर्तित रूप सम्बद्ध एकवचन संज्ञाओं के बहुवचन अविकारी के समान होते हैं। ओकारान्त तथा औकारान्त के अतिरिक्त शेष संज्ञाओं का वचन वाक्य धरातल पर ज्ञात होता है। वचन सम्बन्धी गठन तालिका इस प्रकार मिलती है -

संज्ञा वचन	अविकारी कारक	विकारी कारक	बहुवचन रूपसाधक पर प्रत्यय
-ओ तथा औकारान्त संज्ञायें	--	-आ	-आ
अन्य संज्ञायें	--	--	--

संज्ञा एकवचन विकारी कारक रूप --

संज्ञा एकवचन	अविकारी रूप	विकारी कारक
चेल्-ओ	चेलो खांछ 'लड़का खाता है'	च्यालम्बा : च्याला ले खाछ 'लड़के ने खाया' च्यालाशदिय 'लड़के को दो'
सल्य-औ	सल्यौनान्छ 'सल्यौ छोटा है'	सल्या बढे ल्या यूं 'सल्या से लाया हूं'
चेल-इ	चेलि खांछि 'लड़की खाती है'	'चेलि ले खाछ' लड़की ने खाया'
पात	पातहरियाछ 'पत्ता हरा है'	पात में खा' पत्ते में खाओ'
बल्द	बल्द बालो 'बैल जोतेगा'	बल्दले बाछ' बैल ने जोता'
राज्-आ	राजा जांछ 'राजा जाता है'	राजा ले खाछ' राजा ने खाया'
इज्-आ	इजा खांछि' मां खाती है'	इजाले खाछ' मां खाती है

गोर-उ	गोरु चरुँ `गाय चरती है	गोरुले चरुंय `गाय ने चरा`
दुब-ए	दुबे पिछं ` दुबे पीता है	दुबे ले पानि पीछ`
कृ-ऐ	कै मछ ` उल्टी हुई `	कै मैं खून क्यो ` वमन में खून था `
श्-ई	शै सफेदछ ` दीवार सफेद है	शै बटे खितीछ `दीवार से गिरा `

एकवचन में सभी कारकीय स्थितियों में विकारी कारक रूप समान होते हैं ।

३.२.१.६.२ ओकारान्त और कुछ औकारान्त एकवचन संज्ञाएं बहुवचन में कारकीय स्थिति ग्रहण करने से पूर्व पुन: विकार को प्राप्त होती है । यह विकार बहुवचन अथवा बहुवचन अविकारी कारक रूपों के अन्त्यानुसार होता है । आकारान्त में -आ के स्थान पर - आन , -इ , -ए ऐ अन्त्य युक्त ब हुवचन संज्ञाओं में प्रत्यय के स्थान पर -इन आता है । व्यंजनान्त के पश्चात बहुवचन विकारी कारक में -अन जुड़ता है । उकारान्त और कुछ ओकारान्त बहुवचन संज्ञाओं में -उ तथा -ओ के स्थान पर ` -अन जुड़ता है । यह स्थिति लिंग निरपेक्ष है । इस स्थिति की गठन तालिका निम्नलिखित प्रकार मिलती है ।

अन्त्यानुसार रूपसाधक प्रत्यय :

उल्लेख्य है कि पिठौरगढ़ी में प्रातिपदिकों के अन्त्यों के अनुसार ही विकारी कारक का रूप बनता है । अन्त्यानुसार रूपसाधक प्रत्यय तालिका-गठन इस प्रकार है :

प्रातिपदिक अन्त्य (एकवचन अविकारी कारक)	बहुवचन		
	अविकारी कारक	विकारी कारक	सम्बोधन कारक
-ओ , -आ	-आ	-आन्	-औ
-इ	--ईन प्राणिवाचक।	-ईन	-औ

-ए	-	-ईन	-औ
-ऐ	-	-ईन	-
ऐ	-	-ईन	-
-व्यंजन, -उ, -औ	-	ऊन	-औ

औकारान्त एकवचन का विकारी कारक प्रत्यय -आ है और एकवचन सम्बोधन कारक में ओकारान्त में - आ तथा अन्यत्र एकवचन अविकारी अन्त्य ही रहता है, अन्तर केवल उच्चारण काल का रहता है अर्थात सम्बोधन कारक में अन्त्य ध्वनि अपेक्षाकृत अधिक समय तक उच्चरित होती है।

उदाहरण -

संज्ञा प्रातिपदिक	बहुवचन	
	विकारी कारक	सम्बोधन कारक
चेलो	`लड़को `कौ च्याल-आन	च्याल्-औ `लड़को`
माया	माय्-आन ` माइयाँ `	माय -औ `माइयौ
इजा	इज्-आन `माताओ`	इज्-औ ` माओ !
चेलि	चेल-ईन ` लड़कियाँ `	चेलि-यौ` लड़कियौ !
दुबे	दुबे-ईन ` दुबेवों	दुबे-औ ` दुबेयौ !
मै	मै-ईन`कृषि औजार` ।अप्राणिवाचक।	-
शै शै	शै-ईन `कृषि औजार `दीवारों ` ।अप्राणिवाचक।	-
गोरु	गोरु-ऊन ` गायों	गोरुवौ गोरुवौ`गायो`
उमी	उमी -ऊन ` उमीओं` ।अप्राणिवाचक।	

बैग   बैग् - ऊन `पुरुषों`   बैग-औ `पुरुषो।
बात   बात् -ऊन
।अप्राणिवाचक।

ज्ञातव्य है कि - आन , - ईन , ऊन ये रूपसाधक प्रत्यय विकारी कारक के पश्चात आने वाले परसर्ग श स कै करि ।कर्मकारक का परसर्ग। सम्बोधन कारक केवल प्राणिवाचक संज्ञाओं के विषय में विचार्य है ।

३.२.१.७ बहुवचन बोधक रूपिम

३.२.१.७.१ {-आ} संज्ञा बहुवचन

अविकारी कारक बोधक इसके निम्नलिखित संरूप है :

/∅ ~ -आ ~ -ईन / इनका वितरण इस प्रकार है--

।क। ।-आ। : पुल्लिंग ओकारान्त संज्ञा प्रातिपदिकों ।एकवचन। के -ओ के स्थान पर बहुवचन में आता है ।

उदा०	एकवचन	बहुवचन
	च्येल्-ओ `लड़का`	च्याल्-आ `लड़के`
	बाट्-ओ `रास्ता`	बाट्-आ `रास्ते`
	चल्लु-ओ `चिड़िया`	मल्लु-आ `चिड़ियाँ ।बहुवचन।`
	घोड़-ओ `घोड़ा`	घ्वाड़-आ `घोड़े`

।ख। ।-ईन। पुरुषवाचक इकारान्त स्त्री लिंग संज्ञाप्रातिपदिकों के -इ के साथ विकल्पात्मक सम्बन्ध से आता है । उदा०

एकवचन	बहुवचन	
चेल -इ	चेलु-इ	चेल-ईन
स्यैन -इ	स्यैन-इ	स्यैन -ईन
रान -इ	रानु-इ	रान-ईन

।ग। ।∅।: अन्यत्र आता है। यह अन्त्य ध्वनियों द्वारा प्रतिबन्धित है। उदाहरण ऊपर ३·२·१·६ के अन्तर्गत द्रष्टव्य है।

३.२.१.७.२ /-ऑ/ : संज्ञा बहुवचन संबोधनकारक बोधक। जो प्राणिवाचक संज्ञाओं के अन्त में आता है। -ऑ।: उदा-

च्याल्-ऑ	`लड़कों`
स्यैनि-ऑ	`स्त्रियों`
बैग्-ऑ	`पुरुषों`

३.२.१.८ इस प्रकार उपर्युक्त विवरण से संज्ञा प्रातिपदिकों की लिंग, वचन तथा कारकों में रूपात्मक स्थिति स्पष्ट हो जाती है। ऊपर के उदाहरणों से प्रकट है कि एक ही पर प्रत्यय लिंग, वचन तथा कारक तीनों का बोधक होता है। यह बात परप्रत्यय तथा वाक्य स्तर दोनों स्तरों पर प्रकट होती है। जहां कहीं लिंग वचन कारक प्रत्यय प्रकट नहीं होता है, वहां भी उक्त स्थिति समान रूप से शून्य रूप साधक प्रत्यय ।-∅। के माध्यम से विद्यमान रहती है। इस सम्बन्ध में कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं।

उदा-

ब्लेल-ओ `लता`	:	-ओ, पुल्लिंग, एकवचन अविकारी कारक तीनों का बोधक है।
बाट् - आ	:	- आ `पुल्लिंग, बहुवचन तथा एकवचन तिर्यक अथवा बहुवचन अविकारी कारक सूचक है।

३.२.२ विशेषण रूप साधक प्रत्यय

३.२.२.० संज्ञा की भांति पिठौरगढ़ी में दो लिंग तथा दो वचन रहते हैं । विशेषण का प्रयोग संज्ञा के पूर्व वाक्य स्तर पर होता है । अतः इसकी रूप सारिणी पर वाक्य स्तर पर ही विचार हो सकता है ।

३.२.२.१ रूपान्तरण की दृष्टि से विशेषण दो वर्गों में मिलते हैं :

।क। रूपान्तर मुक्त,

।ख। रूपान्तर युक्त ,

३.२.२.१.१ रूपान्तर मुक्त

इस अवस्था में विशेषण प्रातिपदिक ही विभक्तिमय रहता है । ये विशेष्य के लिंग वचन से अप्रभावित रहते हैं । विशेषण व्युत्पन्न प्रातिपदिकों पर ऊपर विस्तार में विचार किया जा चुका है ।[१] यहां उनका प्रयोग तथा कार्य विचार्य है । प्रयोग एवं कार्य के आधार पर रूपान्तर मुक्त विशेषणों के चार प्रमुख भेद हैं -

३.२.२.१.१.१ गुणवाचक विशेषण

मूल प्रातिपदिक : ये प्रातिपदिक प्रायः व्यंजनान्त हैं और दोनों वचनों तथा दोनों लिंगों में मूल प्रातिपदिक रूप में ही प्रयुक्त होते हैं ।

उदाहरण-

सुन्दर `सुन्दर` , गरीब `गरीब`

चतुर `चतुर` , `क` `कुशल-दक्ष`

व्युत्पन्न प्रातिपदिक:

गुड़ - + - इया गुडिया `मीठा`

मर - + - इयल मरियल ` निर्बल `

बल - + - वान बलवान ` बलवान `

इकारान्त स्त्रीलिंग वाचक विशेषण जो दोनों वचनों एवं कारकों में समरूप रहते हैं , इसके अन्तर्गत आते हैं । उदा-

---

१- देखिये, ऊपर पृष्ठ

एकवचन	बहुवचन
निक् -इ चेल-इ 'अच्छी लड़की'	निक-इ चेल्-इंम 'अच्छी लड़कियाँ'

ओकारान्त विशेषण भी एकवचन अविकारक में रूपान्तर मुक्त वर्ग में आते हैं :

निक्-ओ 'अच्छा'
घिन्-ओ 'बुरा'
तिन्-ओ 'भीगा हुआ'
शाड़्-ओ 'सख्त'

३.२.२.१.१.२ प्रणाली वाचक विशेषण : इसके अन्तर्गत इकारान्त स्त्रीलिंग वाचक विशेषण आते हैं जो दोनों वचनों और कारकों में अपरिवर्तित रहते हैं -

इ - + - स - + - इ इसि 'ऐसी'
उ - + - स - + - इ उसि 'वैसी'
क - + - स - + - इ कसि 'कैसी'
ज - + - स - + - इ जसि 'जैसी'

३.२.२.१.१.३ परिमाणवाचक विशेषण -

अन्त्यानुसार इसकी निम्नलिखित कोटियां हैं --

इकारान्त इ - + - तन् - + - इ इतनि 'इतनी'
उ- + - तन् - + - इ उतनि 'उतनी'
ज - + -तन् - + - इ जतनि 'जितनी'
क - + - तन् - + - इ कतनि 'कितनी'
त - + - तन् - + - इ ततुनि 'तितनी'

उक्त - तन - के स्थान पर विकल्पात्मक रूप से - तुन- भी मिलता है और इसके परिणामतः इतुनि ,उतुनि, जतुनि, ततुनि, व्युत्पन्न प्रातिपदिक मिलते हैं ।

व्यंजनान्त :

मूल प्रातिपदिक -

और् `और् ` अन्यार्थी   औरै आदिमि
`दूसरे ` आदिमि `

सब् ` सब `   सब पानि ` सारा पानी`

कम् `कम `   कम दूध `थोड़ा दूध `

भौत् ` बहुत `   भौत माटो` बहुत मिट्टी `

व्युत्पन्न प्रातिपदिक :

निक्खो - + - ए   निक्खवे ` बिल्कुल`

अत्थो - + - ए   अत्थवे ` पूरे का पूरा`

ऐकारान्त-

व्युत्पन्न प्रातिपदिक:

सब - + - ऐ - सपूपै ` सब के सब `

सानुनासिक ऐकारान्त:

मूल प्रातिपदिक -

मनै ` थोड़ा`   मनै दूध ` थोड़ा दूध`

पश्चिमी बोली इसके स्थान पर : ` मरिा ` थोड़ा `

३.२.२.१.१.४ संख्यावाचक विशेषण

इसके दो भेद हैं ।क। निश्चित संख्यावाचक विशेषण ।ख। अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

३.२.२.१.१.४.१ निश्चित संख्या वाचक विशेषण - निश्चित संख्या वाचक विशेषण के उपभेद हैं :

।१। गणनावाचक

।२। स्त्री लिंग बोधक

।३। गुणात्मकताबोधक

।४। समूहवाचक

।५। प्रत्येक बोधक

।६। क्रमात्मकताबोधक

।१। गणनावाचक - गणनावाचक के पुन: दो प्रकार हैं -पूर्णांक : .

मूल प्रातिपदिक-

एक	सात	तेर	
द्वि	आठ	चौद	
तीन	नौ	पन्द्र	
चार	दस	सोल	
पांच	ग्यार	सत्र	
छ:	बार	अठार	आदि

व्युत्पन्न प्रातिपदिक-

उन् - + - बीस	उन्नीस	
उन् - + - तीस	उन्तीस	
दस - + - हजार	दस हजार	
दस - + - लाख	दस लाख	आदि

अपूर्णांक-

पौ	'पाव'	आधा	'आधा'
पौन	'पौना'	सवा	'सवा'
डेढ़	'ड्योढ़ा'	ढाइ	'ढाई'

व्युत्पन्न प्रातिपदिक-

सवा - + - दौ	सवाद्दौ	'सवा दो'
साढ़े - + तीन	साढ़ेतीन	'साढ़े तीन'

।२। स्त्रीलिंग क्रमवाचक - पूर्णांक गणनात्मक संख्या वाचक विशेषणों द्वारा क्रमवाचकों की रचना दो प्रकार से होती है। पहले में एक साथ दो विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्ययों के योग से स्त्रीलिंग क्रम वाचक विशेषण बनता है। इनमें पहला व्युत्पादक परप्रत्यय क्रम बोधक परप्रत्यय रूपिम का कोई संरूप तथा दूसरा परप्रत्यय ।-इ। रहता है -

एक - + - ल - + - इ	पहिल	'पहली'
द्वि - + - सर् - + - इ	दुसरि	'दूसरी'

तीन - + - सर - + इ तिसरि `तीसरी`

चार - + - थ् - + - इ चौथि `चौथी` आदि

पांच के उपरान्त की क्रमद्योतक संख्याओं के गठन में ऊपर की भांति पहला व्युत्पादक पर प्रत्यय नहीं रहता है, केवल क्रम द्योतक पर प्रत्यय के रूप में ।-ऊं। रहता है जो सानुनासिक है और, और यहां इसका अर्थ विशेष्य के लिंग के अनुसार `वां` या `वीं` दोनों होता है। उदा-

पांच - + - ऊं पंच्चूं `पांचवां या पांचवीं`

इसी प्रकार-

छै - + - ऊं	छठूं	छठा`
सात- + - ऊं	सतूं	सातवां
आठ - + - ऊं	अठूं	आठवां
नौ - + - ऊं	नवूं	नवां
दस - + - ऊ	दसूं	दसवां`
बीस - +- ऊ	बीसूं	बीसवां
सौ - + - ऊ	सोउं	`सौवां`

।3। स्त्री लिंग गुणात्मकता बोधक निश्चय वाचक विशेषण

पूर्णांक गणनात्मक संख्या वाचक विशेषणों में गुणात्मकताद्योतक परप्रत्यय तथा दूसरा व्युत्पादक परप्रत्यय -इ रहता है। इस प्रक्रिया में तीन प्रकार के रूपिम सम्बद्ध रहते हैं -

।क। पूर्णांक गणनात्मक संख्यावाचक विभिन्न रूपिम

।ख। ।-गन-। गुणात्मकता बोधक रूपिम का कोई संरूप। यह पूर्णांक गणनात्मक संख्या के बाद और स्त्री लिंग परप्रत्यय रूपिम ।-इ। के पूर्व आता है।

।ग। -इ स्त्री लिंग बोधक

उदाहरण -

दि - + - गुन् - + - इ दुगुनि `दुगुनी`

तीन - + - गुन - + - इ तिगुनि `तिगुनी`

चार - + - गुन - + - इ चौगुनि `चौगुनी`

पांच - + - गुन - + - इ पंचगुनि `पंचगुनि`

छै - + - गुन - + - इ   छैगुनि `छ:गुनी`

सात- + - गुन - + - इ   सतगुनि `सतगुनी`

आठ - + - गुन - + - इ   अठगुनि `अठगुनी`

नौ - + - गुन - + - इ   नौगुनि `नौगुनी`

दस - + - गुन - + - इ   दसगुनि `दसगुनी`

सौ - + - गुन - + - इ   सौगुनि `सौगुनि`

हजार - + - गुन - + - इ   हजारगुनि `हजारगुनि`

।४।   समूहवाचक

पूर्णांक गणनावाचक संख्यावाचक विशेषणों के साथ परप्रत्यय ।-ओं। जोड़कर समूहबोधक निश्चयवाचक विशेषण बनता है। यहां पूर्णांक गणनात्मक संख्यावाचक प्रातिपदिक विभिन्न रूपिमों का स्थान लेते हैं और पर प्रत्यय -ओं समूह बोधक होता है जो समूह बोधक रूपिम का एक संरूप है। उदा-

दस - + - ओं   दसों   `दसों`

बीस - + - ओं   बीसों `बीसों`

पचास - + - ओं   `पचासों`

हजार - + - ओं   `हजारों`

समूहबोधक रूपिम का एक अन्य संरूप -ए विवेच्य बोली में मिलता है। इससे समूहात्मक स्थिति के साथ साथ केवलात्मक स्थिति का भी बोध होता है। उदा-

दस - + - ए   दसे   `दसों का केवल दस`

पचास - + - ए   पचासे `पचासों या केवल पचास या पचास ही

।५।   प्रत्येक बोधक

मूल प्रातिपदिक-

हर `प्रत्येक`

उदा- हर मैस   `प्रत्येक व्यक्ति`

व्युत्पन्न प्रातिपदिक -।अ। पूर्णांक गणनावाचक विशेषणों की द्विरुक्ति से इनका निर्माण होता है -

एक - + - एक एकैक   `एक एक`

इसीप्रकार-

।हम्बै दस दस रुपायां कुन । `हमारे पास दस दस रुपये हैं ।`

।ख। अपूर्णांक गणनावाचक संख्याओं की द्विरुक्ति से भी प्रत्येक बोधक विशेषण बनता है । उदा-

आढा + आढा आढाढा ` आधा आधा `

।द। ऋणात्मक निश्चयवाचक -

ये विशेषण दो गणनात्मक संख्यावाचक विशेषणों के मध्य।-कम-। रखने से बनते हैं । उदाहरण-

।पांच कम सौ । ` ९५`

।द्वि कम पचास । `४८ `

३·२·२·१·१·४·२ अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

इनका निर्माण गणनात्मक संख्यावाचक विशेषण केसाथ विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय के योग से होता है । उदा-

सैकड़ा - + - ओं सैकड़ों

पूर्णांक गणनात्मक विशेषणों के साथ अपूर्णांक संख्यावाचक ।-आध-। के योग से भी अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण बनता है । उदा-

एक- + - आधा एकाध

इसीप्रकार संज्ञा या विशेषण के साथ ।-एक। लगाकर भी अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण बनता है । उदा-

दस - + - एक दसेक

सौ- + - एक सौएक

सेर - + - एक सेरेक

वर्ष - + - एक वर्षेक

दिन - + - एक दिनेक

३·२·२·१·२ रूपान्तर युक्त विशेषण

इस वर्ग के अन्तर्गत मूलप्रातिपदिकों में विशेषण, लिंग तथा वचन प्रत्यय जुड़ते हैं । इस वर्ग में केवल पुल्लिंग वाचक विशेषण प्रातिपदिक आते हैं, स्त्रीलिंग व्युत्पन्न प्रातिपदिकों में कोई रूपान्तर नहीं मिलता है ।

किन्तु मूलप्रातिपदिक तथा प्रत्यय विश्लेषण की दृष्टि से प्रस्तुत विवेचन में , सुविधा के लिए सम्बद्ध स्त्रीलिंग रूपों को भी साथ रक्खा गया है ।

३.२.२.१.२.१ प्रयोग एवं कार्य के आधार पर रूपान्तर युक्त विशेषणों के निम्नलिखित भेद प्राप्त हैं ।

।१। ओकारान्त गुणवाचक विशेषण

।२। पुल्लिंग प्रणाली वाचक

।३। पुल्लिंग परिमाणवाचक

।४। निश्चित संख्यावाचक विशेषण

।१। गुणवाचक विशेषण - इसके अन्तर्गत अविकारी कारक एकवचन अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिक में ।-ओ । रहता है तथा अविकारी कारक बहुवचन, विकारी कारक , एकवचन औउ विकारी कारक बहुवचन में ।-वा। संयुक्त रहता है । उदा-

निकु - ↑ - ओ निको `अच्छा`

निकु - ↑ - वा निका `अच्छे`

गुणवाचक विशेषणों की तीन अवस्थायें भी द्रष्टव्य हैं । ये अवस्था हैं - ।क। सामान्य ।ख। आधिक्यबोधक ।ग। अतिशय बोधक । ये अवस्थायें वाक्य स्तर पर विचार्य हैं । विशेषण प्रातिपदिक सामान्य अवस्थाद्योतक हैं । आधिक्य तथा अतिशय अवस्था प्रकट करने के लिए सामान्य रूप के पूर्व क्रमशः ।है-। ओउ ।सबहै-। संरूप जोड़ते हैं । उदा-

निको `अच्छा`

वीहै निको `उससे अच्छा`

सब है निको `सबसे अच्छा`

।२। पुल्लिंग प्रणालीवाचक विशेषण

सार्वनामिक अंगों के संयोग और विशेषण पुल्लिंगवाचक परप्रत्यय -ओ वा के जुड़ने से इस कोटि के विशेषण बनते हैं । उदा-

इ - ↑ - स - ↑ - ओ इसो `ऐसा`

उ - ↑ - स - ↑ - ओ उसो `वैसा`

क - + - स - + - ओ कसो `कैसा`

बहुवचन में -ओ के स्थान पर -आ, जुड़ता है और इसा `ऐसे`, उसा `वैसे` कसा `कैसे`, आदि रूप बनते हैं।

।3। पुल्लिंग परिमाणवाचक विशेषण

इस कोटि के विशेषण भी सार्वनामिक अंगों के साथ परिमाणवाचक रूपिम तथा विशेषण पुल्लिंग पर प्रत्यय ।-ओ। तथा ।-आ। के संयोग से बनते हैं। उदा -

इ - + - तुन् - + - ओ इतुनो `इतना`

उ - + - तुन् - + - ओ उतुनो `उतना`

क - + - तुन् - + - ओ कतुनो `कितना`

-ओ के स्थान पर बहुवचन में -आ जोड़कर इतुना, उतुना, कतुना, ये रूप मिलते हैं।

।4। निश्चित संख्या वाचक विशेषण

।क। पुल्लिंग क्रमबोधक निश्चित संख्या वाचक विशेषण-

पूर्णांक गणनात्मक संख्यावाचक विशेषणों के साथ क्रम द्योतक पर प्रत्यय तथा विशेषण पुल्लिंग सूचक पर प्रत्यय के संयोग से इस प्रकार के विशेषण बनते हैं। उदा-

द्वि - + - सर - + - ओ दुसोरो `दूसरा`

बहुवचन में के स्थान पर -आ जोड़ने से ।दुसारा। की भांति के रूप बनते हैं।

।ख। पुल्लिंग गुणात्मक निश्चित संख्या वाचक विशेषण-

पूर्णांक गणनात्मक निश्चित संख्यावाचक विशेषण के साथ गुणात्मकता बोधक रूपिम तथा विशेषण पुल्लिंग शब्द रूपों के जोड़ने से इनका निर्माण होता है। उदा-

द्वि - + - गुन् - + - ओ दुगुनो `दुगुना`

चार - + - गुन् - + - ओ चौगुनो `चौगुना`

-ओ के स्थान पर बहुवचन में -आ जोड़कर ।दुगुना।, चौगुना।. आदि रूप मिलते हैं।

।ग। केवलात्मक निश्चयवाचक विशेषण :

एक - + - ल - + - ओ एकोलो `अकेला`

एक - + - ल - + - आ एकाला `अकेले`

।घ। अनिश्चयवाचक केवलात्मक विशेषण:

।एकोलो दुकोलो। `अकेला दुकेला`

।एकाला दुकाला । `अकेले दुकेले`

३.२.२.१.२.२ विशेषण रूपों का विशेष विवेचन

३.२.२.१.२.२.१ विशेषण के लिंग वचन बोधक प्रत्यय विशेष्य के लिंग वचनबोधक पर प्रत्ययों के अनुसार रूपान्तरित होते हैं । अतः इन रूपान्तरणों पर वाक्य स्तर पर ही विचार हो सकता है ।

३.२.२.१.२.२.२ ओकारान्त संज्ञाओं की भांति ही वाक्यान्तर्गत ओकारान्त विशेषण सर्वत्र पुल्लिंग बोधक रहते हैं और इकारान्त, स्त्रीलिंग बोधक व्यंजनान्त पुल्लिंग संज्ञायें एक वचन में - ओ तथा बहुवचन में -आ पर प्रत्यय युक्त विशेषण रूपों द्वारा पूर्वागमित होती है। आकारान्त ऐकारान्त तथा ऐकारान्त संज्ञाओं, जो दोनों लिंगों में मिलता है, के विशेषण के अन्त्य के रूप पुल्लिंग में -ओ तथा -आ और स्त्रीलिंग में -इ रहता है। बहुत थोड़ी पुल्लिंग संज्ञाएं इकारान्त हैं, इनके विशेषण रूपों में भी एक वचन में -ओ और बहुवचन में -आ मिलता है। -उ, -ए, तथा - औ अन्त्ययुक्त संज्ञाएं जो केवल पुल्लिंग वाचक हैं, इनके पूर्व आगत विशेषण के साथ भी एक वचन में - ओ और बहुवचन में - आ रहता है ।

३.२.२.१.२.२.३ इस भांति विवेच्य बोली में विशेषणों के पुल्लिंग और स्त्रीलिंग रूपों के साथ रूपान्तरणशील आबद्ध रूपों का योग रहता है जो पद विश्लेषण का विषय है। उदा-

प्रातिपदिक मूल	एकवचन पु०	बहुवचन पु०	स्त्रीलिंग एकवचन और बहु०
काल्-	काल्-ओ	काल्-आ	काल्-इ
पील् -	पील्-ओ	पील्-आ	पील्-इ

नान् -	नान्-ओ	नान् आ	नान-इ
निक् -	निक्-ओ	निक्-आ	निक-इ

-ओ ,-आ, -इ, स्पष्टत: लिंगबोधक पर प्रत्यय हैं । इनमें से प्रत्येक परस्पर प्रतिस्थाप्य ।सबस्टिट्यूटेबुल। है । इनके वर्गबन्धन के पूर्व निम्नलिखित उदाहरण भी द्रष्टव्य है :

निकन्द बात	` अच्छी बात `
निक् -ओ घर	`अच्छा घर `
ठल-इ माल्-आ	`बड़ी माला `
ठुल्-ओ च्याल्-आ	`बड़ा कटोरा `
नान्-इ चैल-इ	`छोटी लड़की `
नान्-ओ आदिम्-इ	`छोटा आदमी `
काचुच्-ओ वाट्-उ	` कच्चा वादू `
उच्च्-ओ वोव्-र	`उच्च चौबे `
नान-इ म्-रै	`छोटी मैं`
निक्-ओ द्-रै	`अच्छा दही `
ठुल्-इ श्-रै	`बड़ी दीवार `
बी केल्-ओ	`पका केला `
मन्द -ओ ब्-ओ	`धीमी वर्षा ` ।पुल्लिंग।

२.२.२.१.२.२.१ विशेषण पुल्लिंग बोधक रूपिम

{-ओ} : विशेषण पुल्लिंग बोधक । इसके दो संरूप हैं -

।-ओ ∞ - आ । ।

।अ। ।-ओ । ` विशेषण पुल्लिंग बोधक । एक वचन ओकारान्त विशेषण के अन्त्य के रूप में आता है ।

उदा-

काल्-ओ	`काला`
नान्-ओ	`छोटा `
सिद्ध्-ओ	`सीधा `
झाड्- ओ	` बड़ा `

।ब। ।-आ। विशेषण पुल्लिंग बोधक अन्त्य रूप में अन्यत्र

आता है । उदा-

स्याट् -आ `सफेद`
ठुल् -आ `बड़े`
चुकित्- आ `खट्टे`
च्यार -आ `तिरछे`

२.२.२.१.२.२.५ -इ : विशेषण स्त्री लिंग बोधक । इसका केवल एक संरूप ।-इ। है जो स्त्री लिंग वाचक विशेषणों के अन्त्य रूप में आता है । उदा-

ठुल्-इ `बड़ी` निक्-इ `अच्छी`
काल्-इ `काली` शार्-इ `सख्त`

२.२.२.१.२.२.६ वचन एवं कारक रूप

यहां वचन प्रत्ययों का लिंग वाचक प्रत्ययों से बहुत कुछ सम्बन्ध है । अविकारी कारक में -ओ और -आ प्रत्यय युक्त विशेषण क्रमशः एकवचन तथा बहुवचन का बोध कराते हैं । -इ प्रत्यय प्रधानतः लिंग निर्णय से सम्बद्ध है और एक वचन तथा बहुवचन दोनों में समरूप प्रयुक्त होता है । वस्तुतः ।-ओ। , पुल्लिंग बोधक रूपिक का वह संरूप है जो पुल्लिंग के साथ-साथ एकवचन अविकारी कारक बोधक भी है और ।-आ। वह संरूप है जो पुल्लिंग के साथ साथ विशेषण एक वचन विकारी तथा बहुवचन अविकारी कारक के साथ आता है । इस स्थिति को इस प्रकार दिखाया जा सकता है :

विशेषण प्रातिपदिक	एकवचन		बहुवचन
	अविकारी	विकारी	अविकारी
विशेषण पुल्लिंग बोधक प्रत्यय	-ओ	आ	-आ
उदाहरण:	निक्-ओ	निक्-आ	निक्-आ

स्त्री लिंग विशेषण प्रातिपदिक दोनों अवस्थाओं में समरूप रहते हैं ।

३.२.२.१.२.२.७ विशेषणों का विशेष्य जब लुप्त रहता है तब विशेषण संज्ञावत् प्रयुक्त होते हैं और उस अवस्था में उनका बहुवचन विकारी रूप भी मिलता है। संज्ञावत व्यवहार्य विशेषणों की गठन तालिका निम्नलिखित प्रकार मिलती है :

विशेषण प्रातिपदिक	एकवचन		बहुवचन	
	अविकारी	विकारी	अविकारी	विकारी
व्यंजनान्त पुल्लिंग प्रातिपदिक	-	-	-	।-ऊन।
ओकारान्त प्रातिपदिक	।-ओ।	।-आ।	।-आ।	।-आन।
इकारान्त स्त्री लिंग प्रातिपदिक	।-इ।	।-इ।	।-इ।	।-ईन।

उदाहरण:

एकवचन		बहुवचन	
अविकारी	विकारी	अविकारी	विकारी
काल्-ओ `काला`	काल्-आ `काले`	काल-आ `काले`	काल्-आन
निक् -ओ `अच्छा`	निक्-आ	निक्-आ	निक्-आन
मौत `बहुत`	मौत्	मौत्	मौत्-ऊन
सात् `सात`	सात	सात्	सात्-ऊन
नान्-इ `छोटी`	नान्-इ	नान्-इ	नान्-ईन
ठुल-इ `बड़ी`	ठुल-इ	ठुल-इ	ठुल-ईन

बढ़-कया `बढ़िया`, गुल्-कया `मीठा` आदि -कया पर प्रत्यय युक्त संज्ञावत विशेषणों के बहुवचन विकारी रूप आकारान्त की

भांति रहते हैं।

३.२.२.१.२.२.८ विकारी रूप कारक चिह्नों के पूर्व आते हैं । बहु वचन कर्म कारक में कारक चिह्न या परसर्ग नहीं रहता है और - आन्- ईन, -उन द्वारा ही अभीष्ट प्रयोजन संपादित होता है। परसर्ग युक्त विशेषण विकारी कारक रूप इस प्रकार मिलते हैं :

प्रातिपदिक	विकारी कारक एकवचन	 बहुवचन
निक्-औ `अच्छा`	निक्-आ-ले `अच्छे ने`	निक्-आन -ले `अच्छों ने`
	निक्-आ-स `अच्छे को`	निक्-आन् `अच्छों को`
	निक्-आ-का-थिति `अच्छे के द्वारा`	निक्-आन -का-थिति `अच्छों के द्वारा`
	निक्-आ-खिन `अच्छे के लिए`	निक -आन् -खिन `अच्छों के लिए`
	निक्- आ बटे `अच्छे से`	निक-आन-बटे `अच्छों से`
	निक्-आ-को `अच्छे का`	निक्-आ-का `अच्छों का`
	निक्-आ मैं `अच्छे में`	निक्-आन मैं `अच्छों में`
	निक्-आ `अच्छे`!	निक-औ `अच्छो! ` अच्छे !

इसीप्रकार व्यंजनान्त विकारी बहुवचन में । -उन । के पश्चात कारक परसर्ग जुड़ते हैं । संज्ञावत प्रयुक्त होने पर संबोधन कारक भी आ जाता है। संज्ञावत् प्रयोग की कठन तालिका एवं सम्बद्ध उदाहरण पिठौरागढ़ी के विशेषणों को और निकट से समझने में सहायक हैं ।

३.२.३ सर्वनाम रूप साधक प्रत्यय

सर्वनामों में दो लिंग, दो वचन औउ विकारी अथवा अविकारी कारक संलग्न रहते हैं । सम्बोधन कारक यहां नहीं रहता है । लिंग वचन तथा कारक तत्व परस्पर अविभाज्य हैं । अतः तीनों को एक ही प्रकरण में रखना समीचीन है ।

३.२.३.१ सर्वनाम का लिंग निर्णय दो आधारों पर किया जाता है ।१। लिंग व्युत्पादक पर प्रत्ययों द्वारा और ।२। वाक्य स्तर पर ।

३.२.३.१.१ लिंग बोधक पर प्रत्यय

सर्वनाम के दो लिंग बोधक पर प्रत्यय मिलते हैं । इनमें से एक के आधार पर सर्वनाम पुल्लिंग तथा दूसरे के आधार पर स्त्रीलिंग निर्णीत होता है । दोनों क्रमशः संज्ञा ओकारान्त एकवचन पुल्लिंग तथा इकारान्त स्त्रीलिंग के समान हैं -

।क। {-ओ} : पुल्लिंग बोधक यह निजवाचक सर्वनाम में -न्, के बाद और सम्बन्ध वाचक सर्वनाम में र या क्- के उपरान्त जुड़ता है । इसके दो संरूप हैं --

-ओ ∽ -आ ।:

-ओ ।: यह एक वचन पुल्लिंग में निजवाचक या सम्बन्धवाचक सर्वनाम के ओकारान्त रूपों में रहता है । उदा-

आपुन्-ओ `अपना`

वीक्-ओ `तेरा`

हम्- + - ओर + ओ हमारो ओ `हमारा`

।-आ।: ओकारान्त सर्वनामों के बहुवचन रूपों में रहता है ।उदा-

आपुन्-आ `अपने`

वीक्-आ `उसके`

तेर्-आ त्यारा `तेरे`

हम्- + - आर् + आ हमार -आ `हमारे`

।ख। {-इ} : स्त्रीलिंग बोधक है । इसका दोनों वचनों में एक ही संरूप ।-इ। है । उदा-

आपड़् आपुन्-इ आपनि आपुनि `अपनी`

वीकृ-इ `उसकी `

तेर् -इ `तेरी`

हम्- + - अर् + इ हमर् -इ `हमारी`

३.२.३.१.२ अन्यत्र वाक्य स्तर पर लिंग बो होता है जो विशेषण एवं क्रियापर आधारति है। उदा-

विशेषण के आधार पर -

यहां विशेषण के साथ जुड़ा हुआ पुल्लिंग बोधक पर प्रत्यय -ओ और स्त्री लिंग बोधक -इ ही लिंग निर्णय के आधार बनते हैं, पह यह केवल वाक्य स्तर पर ही विचार्य है --

मैं कालो छूं ` मैं काला हूं `

मैं कालि छूं `मैं काली हूं `

तैं बड़ो निको छै ` तू बड़ा अच्छा है`

तैं बड़ि निकि छै ` तू बड़ी अच्छी है`

इन उदाहरणों में । मैं । और ।तैं। का लिंग विशेषण के आधार पर ज्ञात होता है।

क्रिया के आधार पर-

क्रिया के पश्चात जुड़े हुए पुल्लिंग और स्त्री लिंग बोधक परप्रत्ययों के आधार पर वाक्य स्तर पर सर्वनाम का लिंग निर्णय होता है -

तैं खांछै ` तू खाता है`

तैं खांछी ` तू खाती है`

वु खांछ `वह खाता है`

वु खांछि `वह खाती है`

उत्तम पुरुष सर्वनाम का लिंग निर्धारण वाक्य स्तर पर केवल विशेषण द्वारा सम्भव है। उत्तम पुरुष में क्रिया रूप दोनों लिंगों में समान रहते हैं। अतः यहां क्रिया द्वारा लिंग निर्णय नहीं हो सकता है ।

३.२.३.२ सर्वनाम वचन एवं कारक पर प्रत्यय

३.२.३.२.१ उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम

दो वचन तथा दो कारकों में उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम की गठन

तालिका सोदाहरण इसप्रकार है :

गठन तालिका	एकवचन अविकारी	विकारी	बहुवचन अविकारी	विकारी
उत्तमपुरुष वाचक सर्वनाम	-	-एँ -ह	-	-उ -ऊन
उदाहरण	मैं मि	मैं मी	हम्	हम- हम्-उ हम्-ऊन

३.२.३.२.२ मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम

गठन तालिका	एकवचन अविकारी	विकारी	बहुवचन अविकारी	विकारी
मध्यम पुरुष वाचक	-	-एँ -ह	-	-उ -ह -ऊन
मध्यम पुरुष आदरवाचक	-	-ए -या -ला	-लोग	-लोगून -लोगन
उदाहरण	तैं तु	तैं - त्वी- तै- त्या- त्वे-	तुम तिमि तम	तुम तुम्-उ तिम्-ह तुम्-ऊन
	आपुं	आपूं	आपुं लोग	आपुंलोगून आपूं लोगन

३.२.३.२.३ अन्य पुरुष निश्चयवाचक

अन्य पुरुष निश्चयवाचक	एकवचन		बहुवचन	
	अविकारी	विकारी	अविकारी	विकारी
दूरवर्ती धोतक	-	-ई	-	-उ -ऊन
दूरवर्ती धोतक उदाहरण	उ	वी-	उन्	उन्- उन्-उ उन्-ऊन
निकटवर्ती धोतक	-	-ए	-	-उ -ऊन
निकटवर्ती धोतक उदाहरण	यो	ये	इन्	इन्- इन्-उ इन्,ऊन

३.२.३.२.३.१ निश्चय वाचक सर्वनाम रूपों के अवधारण के लिए एक वचन में -ई, और बहुवचन में -ई, जुड़ता है :

या-ई यौई 'यही'

उ-ई उई 'वही'

इन्-ई इनी 'इन्हीं'

उन्-ई उनी 'उन्हीं'

३.२.३.२.३.२ अन्य पुरुष में ।वाफु। या ।वाफ। आदरसूचक सर्वनाम इसके रूप इस प्रकार रहते हैं --

	एकवचन		बहुवचन	
	अविकारी	विकारी	अविकारी	विकारी
गठन तालिका	-	-	-	-ऊन
उदाहरण	वाफु वाफ	वाफु वाफ	वाफु वाफ	वाफु- वाफ् -ऊन

३.२.३.२.४ प्रश्नवाचक सर्वनाम रूप

प्रश्नवाचक सर्वनाम	एकवचन		बहुवचन	
	अविकारी	विकारी	अविकारी	विकारी
प्राणि बोधक। गठन तालिका।	-	-ऐ	-	-उ -ऊ न्
प्राणिबोधक ।उदाहरण।	क्-ओ	क्-ऐ	क-न्	कन्- कन-उ कन्-ऊ न
अप्राणि बोधक ।गठनतालिका।	-	-	-	-उ -ऊ न
अप्राणिबोधक उदाहरण	क्-या क्-ए	क्-या क्-ऐ	क्-न	कन - कन्-उ कन्-ऊ न

३.२.३.२.५ अनिश्चय वाचक सर्वनाम रूप

अनिश्चय वाचक सर्व०	एकवचन		बहुवचन	
	अविकारी	विकारी	अविकारी	विकारी
प्राणिबोधक गठनतालिका	ई	-	-	-उ -ऊ न
प्राणिबोधक ।उदाहरण।	कवै कोइ	कु-ऐ	कवै	कन कन्-उ कन्-ऊ न
परिमाणबोधक गठनतालिका।	-	-	-	-ऊ न
परिमाणबोधक ।उदाहरण।	कुछ	कुछ	कुछ	कुछ कुछ - ऊ न
परिमाणवाचक ।सम्पूर्णताबोधक	-	-	-	-ऊ न -ऐन
।उदाहरण।	सब् सप्	सब् सब्	सब	सब्-ऊ न सपप् -ऐन

३.२.३.२.६ सम्बन्धवाचक सर्वनाम

सम्बन्ध वाचक	एकवचन अविकारी	एकवचन विकारी	बहुवचन अविकारी	बहुवचन विकारी
सम्बन्ध वाचक	-	-ऍ	-	-उ -ऊन
उदाहरण	ज्-ओ	ज्-ऍ ज्-ए	ज्-न ज्-ए	जन्-उ जन्-ऊन
नित्यसंबंधी	-	-ऍ	-	तन्- तिन्-उ तिन्-ऊन
।उदाहरण।	श्-ओ त्-ओ	त्-ऍ	श-ओ तन् तिन्	तन्- तन्-उ तिन्-उ तन्-ऊन तिन्-ऊन

सम्बन्ध और नित्य सम्बन्धी सर्वनाम का ऊपर प्राणिवाचक का रूप है। अप्राणिवाचक रूप भी मिलता है :

। जे चांहै तेकर ।
`जो चाहता है सो कर`

३.२.३.२.७ परस्परताबोधक सर्वनाम

परस्परकताबोधक सर्वनाम केवल बहुवचन में प्रयुक्त होता है और इसके साथ बहुवचन विकारी में कभी कभी -ऊन प्रत्यय मिलता है -

परस्परता बोधक	बहुवचन अविकारी	बहुवचन विकारी
आपस	आपस	आपस आपसून्

३.२.३.२.८ निजवाचक सर्वनाम

	एकवचन		बहुवचन	
	अविकारी	विकारी	अविकारी	विकारी
निजवाचक सर्वनाम	-	-आ	-आ	-आ -आन
उदाहरण	आपुन्	आपुन्-आ	आपुन्-आ	आपुन्-आ आपुन्-आन्

३.२.३.३ एकवचन तथा बहुवचन सर्वनाम रूप

३.२.३.३.१ विवेच्य बोली में एकवचन और बहुवचन रूपों की दृष्टि से दो प्रकार मिलते हैं। पहले के अन्तर्गत सर्वनाम का एक वचन का रूप बहुवचन में परिवर्तित हो जाता है और दूसरे के अन्तर्गत एकवचन तथा बहुवचन के के रूप वही रहते हैं।

३.२.३.३.२ बहुवचन में परिवर्तित होने वाले सर्वनाम

इस कोटि के सर्वनाम एकवचन में स्वरान्त मिलते हैं और बहुवचन में व्यंजनान्त हो जाते हैं। इनका गठन क्रम या ढांचा एक वचन में ।कव। और ।व। , तथा बहुवचन में क्रमशः ।कव क्। और ।क्। रूप में रहता है। उदा-

	एकवचन	बहुवचन
।क।	।क् व ।	।क् व क् ।
	मुम्ई	ह् व म्
	त-ई	त् उ म्
।स।	।व।	।क ।
	उ	उन्
	इ	इ-न्

३.२.३.३.२.१ हम का एक रूप हमि भी मिलता है जो मुक्त परिवर्तन में व्यवहार्य है। इसी प्रकार तुम का एक रूप तिमि भी मिलता है। हमि। तथा ।तिमि। का व्यवहार जाति भेद पर निर्भर है।

२.२.३.३.२.२ बहुवचन में व्यंजनान्त होने की प्रवृत्ति बहुवचन की प्रक्रिया पर विचार करने के लिए महत्वपूर्ण है। इससे यह तो ज्ञात हो ही जाता है कि स्वरान्त्य के स्थान पर व्यंजनान्त्य होना प्रस्तुत बोली में बहुवचन का लक्षण है। बहुवचन में ।क अ क। ढांचे में प्रथम व्यंजन ।ह्-। तथा ।त्-। हैं। ।ह्-। के साथ ।-अ-। तथा ।-त। के साथ ।-उ-। संयुक्त होते हैं। अन्तिम व्यंजन ।-म। दोनों में समान है। रूपिमिक विश्लेषण ।मौर्फॉलाजिकल सेग्मेन्टेशन। से ज्ञात होता है कि दोनों में समान तत्व बहुवचन द्योतक का है और यह तत्व यहां ।-म्। के रूप में मिलता है। अन्तर उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष प्रयोगों का है और यह अन्तर ।ह्अ-। तथा ।तु। रूप में विद्यमान है :

हअम् `उत्तम पुरुष बहुवचन द्योतक सर्वनाम`

तुउम् `मध्यम पुरुष बहुवचन द्योतक सर्वनाम`

रूपिमिक विश्लेषण प्रक्रिया पर आगे कुछ कहने के पूर्व अन्य सार्वनामिक बहुवचन रूप विश्लेष्य है :

।क। उ `वह` उन् `वे`

।ख। यो `यह` इन् `ये`

।ग। तो `सो` तिन् `सो का बहुवचन
तन् रूप`

।क। ।ख। ,।ग। में वचन द्योतक तत्व समान है और यह समानता पुनरावृत्त ।रिकरिंग। तत्व ।-न। के रूप में स्पष्ट है। ।क।, ।ख। का रूपिमिक विश्लेषण तो स्वयं प्रकट है, अर्थात -

उ एक वचन दूरत्व बोधक निश्चयवाचक सर्वनाम

इ एक वचन निकटता द्योतक निश्चय वाचक सर्वनाम

-न् बहुवचन द्योतक।

निश्चयवाचक सर्वनाम में ।इ-। और ।उ-। के बाद आता है।

अन्य रूप द्रष्टव्य है -

कुवो `कौन` कुवन् `कौन का बहुवचन रूप`

जु- वो `जो` जु अन् `जो का बहुवचन रूप`

।त् अन्। य ।तुइन् , ।क् अन्।, ज् अन् में भी ।-न्। की स्थिति स्पष्ट है । यह बहुवचन द्योतक तत्व ठहरता है । त्-, क्-, ज्- व्यतिरेक की स्थिति में है जो इनके भिन्नार्थकत्व से प्रकट है । शेष ।-अ। या ।-इ-।, ।-अ-।, इन रूपों की स्थिति विचार्य है ।
ऊपर ह् अ म् और त् उ म् में भी ।-अ-। तथा ।-उ। इसीप्रकार के रूप हैं । यह भी स्पष्ट है कि इनका अलग से कोई महत्व नहीं है । अतः इन्हें प्रथम अथवा अन्तिम व्यंजन के साथ होना चाहिए । इस दृष्टि से ये अक्षर निर्माण हेतु अन्तिम व्यंजन के साथ परिलक्षित होते हैं । इसके साथ ही ।-अम्।, ।-उम् । , ।-न ।, ।-अन् ।, ।-इन। ये रूप मिलते हैं जो बहुवचन द्योतक हैं । स्वर के उपरान्त आने पर ।-न्। और व्यंजन के उपरान्त आने पर ।-न्।, ।-अन् । रूप में रहता है । इसी प्रकार ।-म्। व्यंजन के पश्चात आगत होने से ।-अम् । और ।-उम्। रूप ग्रह करता है ।

३.२.३.३.२.३ बहुवचन द्योतक रूपिम

ऊपर के विश्लेषण के आधार पर अविकारी कारक का बहुवचन द्योतक रूपिम निम्नलिखित प्रकार निरूप्य है :

{-म्} 'बहुवचन सर्वनाम द्योतक' । इसके निम्नलिखित संरूप हैं --

।म्म ~ - न । संरूपों का वितरण इस प्रकार है :

।क। ।-म्। 'उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम में बहुवचन के द्योतनार्थ क्रमशः ।-अ-। और ।-उ-। के साथ आता है । उदा-

ह्- अम् 'हम'

त्- उम् 'तुम'

।ख। ।-न्। : बहुवचन द्योतनार्थ अन्यत्र आता है । पूर्व में स्वर होने ।-न् । तथा व्यंजन होने पर ।-अन् ।या ।-इन्। रूप में प्रयुक्त होता है । उदा-

उ-न् 'उन'

इ-न् `इन`

क्-अन् `कौन`

त्- अन् `सो या तो का बहुवचन`

त्-इन् `तिन`

ज्-अन् `जौन`

३.२.३.२.२.४ बहुवचन में अपरिवर्तित रहने वाले सर्वनाम भी द्रष्टव्य हैं -

क्- उछ `कुछ`

स-प् ⌒ ब् सप्⌒सब् `सब`

आफ्-उ `स्वयं`

आप-अस `आपस`

इस कोटि के सर्वनामों के बहुवचन द्योतक के रूप में {-म} के संरूप के रूप में ।-∅। को ग्रहण किया जा सकता है। शून्य आपरिवर्तित ।जीरो मॉडिफिकेशन। के अन्तर्गत यह ग्राह्यता युक्ति है। इस रूप में इस का सुरूपिमिक विवरण सुस्पष्ट है।

उपर्युक्त स्थिति बहुवचन अविकारी कारक के सम्बन्ध में उल्लिखित है।

३.२.३.४ विकारी कारक

विकारी कारक दो प्रकार के हैं। प्रथम एकवचन विकारी कारक तथा द्वितीय बहुवचन विकारी कारक र यद्यपि इन पर ऊपर पर्याप्त प्रकाश पड़ चुका है तथापि विकारी बहुवचन सर्वनाम रूपों का रूपिमिक विश्लेषण निरूप्य है।

३.२.३.४.१ विभिन्न कारकीय स्थितियों ग्रहण करने से पूर्व सर्वनाम रूपों में जो परिवर्तन होता है, उसका कारण उनमें लगने वाले विभिन्न आबद्ध रूप हैं। इन्हें बहुवचन प्रातिपदिकों से सहज ही पहचाना जा सकता है :

।क।	।ख।	
१ २	१ २	चारों की यह स्थिति
हम् - उ	हम् -अन्	कारक परसर्ग के सम्पर्क में
तुम्-उ	तुम्- उन्	आने की अवस्था में मिलती
उम्- उ	उम्- अन्	है।

।क। और ।ख। के अन्तर्गत ।१। तथा ।२। के नीचे उल्लिखित रूप परस्पर प्रतिस्थाप्य हैं । अर्थात्

।क। हम्
तुम् -उ
उन्
इन्

।ख। हम्
तुम् -उन
उन्
इन्

अतः ।-उ। और ।-उन। रूप ।मौफ। हैं । इसीप्रकार ।-आन्। भी रूप है जो अन्यत्र आता है । उदा-

आधुना - आन् यहां भी आन् कारक परसर्ग के सम्पर्क में आने की अवस्था के द्योतक है ।

२.२.३.४.२ रूपिमिक निरूपण

प्रयोग व्याप्ति के आधार पर ।-उन। रूपिम के रूप में ग्राह्य है --

{-उन} 'विकारी कारक में बहुवचन अविकारी सर्वनाम प्रातिपदिक के पश्चात कारक परसर्ग सम्पर्कजन्य स्थिति द्योतक' । इसके निम्नलिखित संरूप हैं -

।-उन ∞ -उ ∞ -आन् ∞ -ईन

संरूपों का वितरण:

।-उन। : म्- न्- , इ-, ब्, के पश्चात, -ले, -श, -पिति ,-खिन् , -बटे, -को का कि, -में परसर्ग प्रयोगों के पूर्व आता है ।

बहुवचन अविकारी कारक में जो कार्य कारक परसर्ग ।-श। 'को' द्वारा

संपादित होता है, वही कार्य बहुवचन विकारी कारक में ।-ऊन। के संयोग से द्योतित होता है । उदा-

हम्- उन् - ले `हममें`

हम्- ऊन्-को `हमको`

हम्-ऊन -कार्पिति ` हमारे द्वारा`
या
हम्- आर-पिति

हम्+।आर+पिति।

हम् -ऊन-खिन `हमारे लिए`

हम्ऊन बटे ` हमसे `

हम्-ऊन-को का कि `हमारा,हमारे, हमारी`

हम्- ऊन-में ` हम में `

इसीप्रकार तुम- , इन् -उन् - , कन्- , तन् -, जन् -, कुछ -, सब-, के उपरान्त जुड़कर संबद्ध रूप बनते हैं ।

।ख। ।-उ। : यह, सर्वनाम बहुवचन प्रातिपदिक के पश्चात ।-ले । और ।-श। के पूर्व आता है । उदा०

हम्-उ-ले ` हमने`

हम्-उ-श `हमको`

इसीप्रकार तुमुले , तुमुश , उनुले , उनुश, इनुले , इनुश आदि रूप बनते हैं ।

।ग। ।-आन ।: ।-आ। में अन्त होने वाले केवल निज वाचक सर्वनाम के बहुवचन रूप के पश्चात आता है । यह `निजवाचक सर्वनाम की सीमा में उपवर्णित ।-ऊन। संरूप के समान प्रयोग द्योतक है । उदा-

।आपुन - आन आपुनान ।

३.२.३.५ सर्वनाम विषयक निम्नलिखित प्रत्ययात्मक स्थिति भी उल्लेख्य है ।

।सब् -आ-।

।सब्-आ-का । ` सबके :यहां ।-आ-। का वही अर्थ है जो ।हम-उ-। में ।-उ-। का है ।

३.२.३.६ बहुवचन द्योतनार्थ कुछ स्वतंत्र रूप भी प्रयुक्त होते हैं । इनमें, लिंगगत भेद नहीं है । उदा-

लोग	हम लोग	इसके साथ रूपसाधक प्रत्यय। हम-। के पश्चात प्रत्यय संयोग के अनुसार लगते हैं। जैसे -
		।हम्लोगूव ।
-सब	हम सब	।हम सब्नू ।
-जन	सबजन	।सबजनून ।

३.२:३.७ बलात्मक निपात `ही`- सर्वनामों के साथ बलात्मक निपात का स्वरूप इस प्रकार रहता है :

मेर्वै	`मेरा ही `
तेर्वै	`तेरा ही`
तुमी	`तुम ही `
मैई	` मैं ही`

आदि ।

३.२.४ क्रिया रूप साधक प्रत्यय और क्रिया रूप सारिणी

३.२.४.० पिठौरागढ़ी में क्रिया धातु अथवा क्रिया व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के पश्चात क्रिया रूप साधक प्रत्ययों के योग से विभिन्न क्रिया रूप बनते हैं। ये रूप साधक प्रत्यय काल, अर्थ, पुरुष, लिंग तथा वचन बोधक होते हैं। काल तथा अर्थ के कारण ही क्रिया रूप अन्य व्याकरणिक प्रातिपदिकों से भिन्नता रखते हैं । वाच्य ।कर्तृ ,कर्म और भाववाच्य। तथा प्रयोग ।कर्तरि और कर्मणि प्रयोग । के आधार पर भी क्रिया प्रातिपदिक वर्ण्य है किन्तु यह वर्णन वाक्य स्तरीय है, इस पर रूपिमिक स्तर पर विचार सम्भव नहीं है ।

३.२.४.१ धातु और क्रिया व्युत्पन्न प्रातिपदिक

धातु से तात्पर्य मूल क्रिया धातु से है । विवेच्य बोली में मूल क्रिया धातुएं गठन के अनुसार एकाक्षरात्मक अथवा अनेकाक्षरात्मक होती हैं । गठन क्रम की दृष्टि से एकाक्षरात्मक धातुएं - ।आ।, ।अक।, ।अख।,

।कअ क। गठन युक्त मिलती है । द्व्यक्षरात्मक धातुएं ।क अ अ। ।अ अ अ क। , ।क अ क अ क। गठन युक्तप्राप्य हैं। उदा-

एकाक्षरात्मक

√औ 'आ'
√उठ 'उठ'
√जा 'जा'
√पढ़ 'पढ़ , सी'
√हिट 'चल'

द्व्यक्षरात्मक:

√तुछ 'पशुओं का समय स पूर्व प्रसूता होना'
√अखर 'सूखना'
√परोस 'परोसना'
√खरोंड 'खुरचना'
√कठोर 'कटोरना'

क्रिया व्युत्पन्न प्रातिपदिक धातुओं तथा अन्य प्रकार के मूल एवं व्युत्पन्न प्रातिपदिकों के साथ क्रिया व्युत्पादक प्रत्ययों के संयोग से निर्मित होते हैं। इन पर पीछे ३·१·४ के अन्तर्गत विचार किया जा चुका है।

३·२·४·२ क्रिया रूप साधक प्रत्ययों की सभी कोटियां काल रचना द्वारा प्रभावित होती है । अत: विभिन्न कालों के अन्तर्गत क्रिया रूपों का पूर्ण विवरण प्रस्तुत किया जा सकता है। मूल क्रिया धातु अथवा व्युत्पन्न क्रिया प्रातिपदिकों के साथ संयोज्य क्रिया रूप साधक प्रत्यय निम्नलिखित प्रकार विवेच्य है।

३.२.४.२.१ वर्तमान निश्चयार्थ काल द्योतक प्रत्यय

वर्तमान निश्चयार्थ लिंग, पुरुष , तथा वचन के अनुसार रूपसाधक जुड़ते हैं । इसकी गठन तालिका इस प्रकार है :

	एकवचन		बहुवचन	
	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
उत्तम पुरुष	-उ	-उ	ऊं	ऊं
मध्यम पुरुष	-ऐ	-ई	-आ	-आ इऔ
अन्य पुरुष	-अ	-इ	-अन् -आन	-अन् -इन

एकवचन और बहुवचन तथा मध्यम पुरुष बहुवचन उत्तम पुरुष में लिंग भेद नहीं रहता है । अन्यत्र लिंग भेद मिलता है । उदाहरण:

३.२.४.२.१.१ उत्तम पुरुष पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग एक वचन

√ हु - + - ऊं हुं 'हूं'

√ जा - + -कु - + -उ जाकुं ' जाता हूं '

√ कर् - + - कु - + - उ करकु ' करता हूं '

√ औ - + - कु - + - उ ऊंकु ' आता हूं '

३.२.४.२.१.२ उत्तम पुरुष पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग बहुवचन

√ हु - + - ऊं हुं 'हैं'

√ जा - + - न - + - ऊं ' जाते हैं '

√ कर् - + - न - + - ऊं ' करते हैं '

३.२.४.२.१.३ मध्यम पुरुष पुल्लिंग एकवचन

√ हु - + - ऐ है 'है'

√ जा - + - कु - + - जाके ' जाता है'

√ कर् - + - कु - + - ऐ करके ' करता है'

३.२.४.२.१.४ मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन

√ हु - + - ऐ है ' है '

√ जा - + - कु - + - ए~ई जाके जांकी 'जाती है'

√ कर् - + - कु - + - ए~ई · करके ' करकी ' करती है '

३.२.४.२.१.५ मध्यम पुल्लिंग तथा स्त्री लिंग बहुवचन

`छ - + - औ छौ `हो`

`जा - + - छ - + - औ जांछा ` जाते हो, जाती हो `

`कर - + - छ - + - आ करछा ` करते हो, करती हो `

स्त्री लिंग में, -इयौ भी , - औ के विकल्प स्वरूप प्रयुक्त होता है :

√जा - + - छ - + - आ इयौ जांछ जांपछयौ `जाती हो`

३.२.४.२.१.६ अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन

`छ् - + - व छ `है`

√जा - + -छ् - + - व जांछ ` जाता है`

√कर् - + - छ - + - व करछ ` करता है `

३.२.४.२.१.७ अन्य पुरुष पुल्लिंग बहुवचन

√छ् - + - वन् छन् `हैं`

√जा- + - न् - + - वान जांनान ` जाते हैं `

√कर् - + - न् - + - वान करनान ` करते हैं`

३.२.४.२.१.८ अन्य पुरुष स्त्री लिंग बहुवचन

√छ् - + - वन् छन `हैं `

√जां - + - छं - + - इन ` जांछिन `जाती हैं`

√कर् - + - छ् - + - इन `करछिन ` `करती हैं`

३.२.४.२.२ भूत निश्चयार्थ काल बोधक प्रत्यय । इन प्रत्ययों में उत्तम पुरुष में लिंग भेद नहीं मिलता है । अन्यत्र लिंगभेद केवल अकर्मक में मिलता है । गठन तालिका :

	एक वचन		बहुवचन	
	पुल्लिंग	स्त्री लिंग	पुल्लिंग	स्त्री लिंग
उत्तम पुरुष	-ऊं	-ऊं	-आं	-आं
मध्यम पुरुष	-ऐ	-ई	-आ	-इऔ
अन्य पुरुष	-व -औ	-व -इ -ई	-आ -आन	-इन -अन -ऐन

उदाहरण :

३.२.४.२.२.१ उत्तम पुरुष एक वचन -

हु - t - इ - t - ऊं हयूं `था`

जा- t - इ - t - ऊं गयूं `गया`

।ग - जा ।

३.२.४.२.२.२ उत्तम पुरुष बहुवचन -

हु - t - इ - t - आं हयां `थे`

जा - t - इ - t - आं गयां `गये`

कर- t - हु - t - इ - t - उ करहय `किया`

३.२.४.२.२.३ मध्यम पुरुष पुल्लिंग एकवचन । मध्यम पुरुष एकवचन में लिंग भेद केवल अकर्मक रूपों में मिलता है ।

हु - t - ए हे `था`

आ - t - हु - t - ऐ आहै `आया`

आ - t - हु - t - ए आहे `आया`

३.२.४.२.२.४ मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एक वचन

हु - t - ए~ई हे~ही `थी`

आ - t - ।ई ~आ।- हु - t - ई ईही `आयी`

३.२.४.२.२.५ अन्य पुरुष पुल्लिंग एक वचन

हु - t - इ - t - ओ हयो `था`

आ - t - हु - t - अ आहु `आया`

इसीप्रकार ।ग्योहु। , ।हिट्हय। , पढ़िहय आदि रूप मिलते हैं ।

३.२.४.२.२.६ अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन

हु- t - इ छि `थी`

आ - t - हु - t - इ आछि `

आ गृ - t - ऐ गै `गई` आयी ,आयी थी `

गृ - t - ऐ - t - हु - t - इ `गैछि` गयी थी `

३.२.४'२.२.७ अन्य पुरुष पुल्लिंग बहुवचन

हु - t - इ - t - आ हिया `थे`

आ - t - इ - t - आन आयान `आये`

आ - + - छ् - + - इ - + - आ आछिया `आये`

३.२.४.२.२.८ अन्य पुरुष स्त्रीलिंग

बहुवचन-

जा ग् - + - ऐन गन `गयी`

छ् - + - इन छिन `थीं`

`आ`- + - छ् - + - इन आछिन `आयीं`

पड् - + - छ् - + - इन पड़छिन `सोयी`

३.२.४.२.३ भविष्य निश्चयार्थ

कालद्योतक परप्रत्यय इस वर्ग में भी उत्तम पुरुष में लिंगभेद नहीं मिलता है। उत्तम पुरुष भविष्य निश्चयार्थ क्रिया धातु के साथ तीन रूप साधक प्रत्यय जुड़ते हैं। पहला प्रत्यय ।-ऊं-। पुरुष द्योतक है।

दूसरा प्रत्यय ।-ल-। काल द्योतक तथा तीसरा प्रत्यय वचन सूचक है जो एक वचन पुल्लिंग में ।-ओ।, बहुवचन पुल्लिंग में ।-आ। और स्त्रीलिंग में ।-इ। है। मध्यम तथा अन्य पुरुष में दो दो रूपसाधक प्रत्यय हैं जिनमें से पहला प्रत्यय ।-ल-। काल द्योतक और दूसरा लिंगवचन द्योतक है जो लिंग तथा वचन के अनुसार भिन्न भिन्न है। ।-ल-। सर्वत्र भविष्य काल द्योतक रूपिम रहता है। ।-ल-। के पश्चात निम्नलिखित तालिका के अनुसार प्रत्यय जुड़ते हैं :-

	एकवचन		बहुवचन	
	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
उत्तम पुरुष	-ओ	-ओ	-आ	
मध्यम पुरुष	-ऐ	-ई	-आ	-आ -इओ
अन्य पुरुष	-ओ	-इ	-आ	-इन्

भविष्यकाल निश्चयार्थ सम्बद्ध रूपिम --

{-ल-} 'भविष्य काल सूचक'। भविष्य काल में आता है।

{-ऊं-} 'उत्तम पुरुष सूचक'। दोनों लिंग तथा दोनों वचनों में आता है।

{-ओ} पुल्लिंग सूचक। इसके तीन संरूप हैं --
/-ओ ~ -आ ~ -ए /: इनका वितरण इस प्रकार है --

।-ए।: 'पुल्लिंग सूचक'। मध्यम पुरुष एक वचन में आता है।

।-ओ।: 'पुल्लिंग सूचक'। एकवचन में अन्य पुरुषों में आता है।

।-आ।: 'पुल्लिंग सूचक'। बहुवचन में आता है।

{-इ} : 'स्त्री लिंग सूचक'। इसके चार संरूप हैं -
।-इ ~ -ई ~ -इयौ ~ -इन।:

।-ई।: स्त्री लिंग सूचन', मध्यम पुरुष एकवचन में आता है।

।-इ। : 'स्त्री लिंग सूचक'। एक वचन में अन्यत्र आता है।

।-इयौ।: 'स्त्री लिंग सूचक' मध्यम पुरुष बहुवचन में आता है।

।-इन।: 'स्त्री लिंग सूचक'। अन्य पुरुष बहुवचन में आता है।

उदाहरण :

३.२.४.२.३.१ उत्तम पुरुष एकवचन-

हु - + - ऊं - + - लु - + - ओ हुंलो 'होऊंगा' या 'होऊंगी'

जा - + - ऊं - + - लु - + - ओ जुंलो 'जाऊंगा' या 'जाऊंगी'

कर - + - लु - + - ओ करलो 'करूंगा' या करूंगी'

३.२.४.२.३.२ उत्तम पुरुष बहुवचन-

हु - + - ऊं - + - लु - + - आ हुंला 'होंगे'

जा - + - ऊं - + - लु - + - आ जुंला 'जायंगे'

कर - + - ल - + - आ करला 'करेंगे'

३.२.८.२.३.३ मध्यम पुरुष पुल्लिंग एक वचन

हो - + - ल् - + - ऐ होलै `होयेगा`

जा - + - ल - + - ऐ जालै `जायेगा`

कर् - + - ल् - + - ऐ कर्लै `करेगा`

३.२.४.२.३.४ मध्यम पुरुष स्त्री लिंग एकवचन -

हो - + - ल् - + - ई होली `होगी`

जा - + - ल् - + - ई जाली `जायेगी`

कर - + - ल् - + - ई कर्ली `करेगी`

३.२.४.२.३.५ मध्यम पुरुष बहुवचन

हो - + - ल् - + - आ होला `होओगे` या होओगी`

जा - + - ल्- + - आ जाला `जाओगे, जाओगी`

कर् - + - ल् - + - आ करला `करोगे`, करोगी`

उक्त वर्ग के अन्तर्गत लिंग भेद नहीं मिलता है। कभी कभी विकल्प से स्त्रीलिंग में -इयाँ परिश्रुत होता है। उदा-

।होलियाँ।, ।आलियाँ।, ।सालियाँ। आदि

३.२.४.२.३.६ अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन

हो - + - ल् - + - ओ होलो `होयेगा`

जा - + - ल् - + - ओ जायेगा `जायेगा`

कर् - + - ओल् - + - ओ करोलो `करेगा`

३.२.४.२.३.७ अन्य पुरुष पुल्लिंग बहुवचन

हो - + -आ - + - ल् - + - आ ह्वाला `होंगे`

जा - + - ल् - + -आ जाला `जायेंगे`

कर् - आल् - + - आ कराला `करेंगे`

३.२.८.२.३.८ अन्य पुरुष स्त्री लिंग बहुवचन

हो - + - ल् - + - इन होलिन् `होंगी`

जा - + - ल् - + - इन जालिन `जायेंगी`

कर - + - ल् - + - इन कर्लिन `करेंगी`

वस्तुत: -इन भी विश्लेष्य है,

इ+न , इनमें से ।-इ-। एकवचन स्त्रीलिंग बोधक है । ।-न। बहुवचन द्योतक है । अत: -न बहुवचन द्योतक है और व्यंजन ध्वनि ल् के बाद आने के कारण ।-इन। रूप में जुड़ती है --

जा - + - ल् - + - इन जालिन

३.२.४.३ वर्तमान आज्ञार्थक काल द्योतक रूप साधक प्रत्यय

इस वर्ग के प्रत्यय केवल मध्यम पुरुष में मिलते हैं । लिंग भेद नहीं रहता , केवल काल तथा वचन भेद रहता है । एक वचन में क्रिया धातु का सामान्य रूप ही रहता है और बहुवचन में रूप साधक प्रत्ययों द्वारा रूपान्तरण रहता है । एकवचन में क्रिया धातु के रूप के पूर्वांश पर बल रहता है और बहुवचन में अन्तिमांश पर बलाघात मिलता है । आदर सूचनार्थ भी दोनों वचनों में बहुवचन रूप प्रयुक्त होता है ।

गठन तालिका --

एकवचन	बहुवचन
-	-आ

उदा०

एकवचन	बहुवचन
जा 'जा'	ज्आ ' 'जाओ 'जाइये '
कर् ' कर'	कर् अ ' 'करो, करिये',

३.२.४.४ भविष्य आज्ञार्थक काल द्योतक रूप साधक प्रत्यय

यहां भी मध्यम पुरुष में ही प्रत्यय जुड़ते हैं । लिंग भेद नहीं मिलता है , केवल वचन भेद रहता है --

एकवचन	बहुवचन
- इ	-या

उदा०

३.२.४.४.१ मध्यम पुरुष एक वचन -

जा - + - ए जाए `जाना`

आ - + - ए आए `आना`

हो - + - ए होए `होना`

कर - + - ऐ करै `करना`

३.२.४.४.२ मध्यम पुरुष बहुवचन

जा - + - या जाया `जाना`

आ - + - या आया `आना`

कर - + - या कर्या `करना`

३.२.४.५ भूत सम्भावनार्थ काल द्योतक प्रत्यय -

इस वर्ग में क्रिया धातु के पश्चात दो रूप साधक प्रत्यय लगते हैं। पहला प्रत्यय ।-न-। तथा दूसरा लिंग वचन के अनुसार भूत सम्भावनार्थ काल द्योतक प्रत्यय जुड़ता है :

	एकवचन		बहुवचन	
	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
उत्तम पुरुष	ऊं	ऊं	वां	वा
मध्यम पुरुष	-ऐ	-ईं	-वा	-वा -य्यौ
अन्य पुरुष	-वो	-ई		-वा

उदा०

३.२.४.५.१ पुल्लिंग एकवचन -

जान् - + - ऐ जानै `जाता`

करन् - + - ऐ करनै `करता`

पढ़न् - + - ऐ पढ़नै `पढ़ता`

३.२.४.५.२ स्त्रीलिंग एकवचन

जान् - + - ईं जानी `जाती`

खान् - t - ई खानी `खाती`

करन् - t - ई करनी `करती`

३.२.४.५.३ पुल्लिंग बहुवचन तथा स्त्रीलिंग बहुवचन । इस वर्ग के अन्तर्गत लिंगभेद नहीं मिलता है किन्तु कभी कभी विकल्प से स्त्रीलिंग बहुवचन में । -इयाँ । परिश्रुत होता है ।

जान् - t - आ `जाते, जाती`

खान् - t - आ `खाते, खाती`

करन् - t - आ `करते`, करती`

३.२.४.५४ उत्तम पुरुष एकवचन -

जान् - t - ऊं जानूं `जाती, जाता`

करन् - t - ऊं करनूं `करती, करता`

३.२.४.५.५ उत्तम पुरुष पुल्लिंग -

जान् - t - आं जाना `जाते`

करन् - t - आं करना `करते`

३.२.४.५.६ अन्य पुरुष एकवचन पुल्लिंग

जान - t - औ जानौ `जाता`

करन् - t औ करनौ `करता`

३.२.४.५.७ अन्य पुरुष एकवचन स्त्रीलिंग -

जान्- t - इ जानि `जाती`

करन् - t - इ करनि `करती`

३.२.४.५.८ अन्य पुरुष बहुवचन

जान् - t - आ जाना `जाते`

करन् - t - आ करना `करते`

३.२.४.६ प्रेरणार्थक क्रिया वर्तमान काल द्योतक प्रत्यय । मध्यम पुरुष में वचन भेद के अनुसार प्रत्यय जुड़ते हैं --

पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग	एकवचन	बहुवचन
मध्यम पुरुष	-औ	-आं

उदाहरण-

	एकवचन	बहुवचन
हिट् 'कल'	हिट्-औं	हिट -आ
कर 'कर'	कर- औं	कर- आ

३.२.४.७ अभिप्राय द्योतक पर प्रत्यय

अभिप्रायद्योतक प्रत्ययों से निर्मित रूप उत्तमपुरुष और अन्य पुरुष मेंही मिलते हैं --

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	-ऊं	-नूं
अन्य पुरुष	-औं	-ऊंन

उदाहरण-

३.२.४.७.१ उत्तम पुरुष एकवचन-

जा - + - ऊं जूं 'जाऊं' ।दोनों लिंगों।

हिट्- + - ऊं हिटूं 'कलूं'

लै - + - ऊं ल्यूं 'लूं'

३.२.४.७.२ उत्तम पुरुष बहुवचन -

जा - + न् - + - ऊं जानूं 'जायें'

हिट् - + - न - + - ऊं हिटनूं 'कलें'

यहां ।-न-। बहुवचन द्योतक है और ।-ऊं। अभिप्राय द्योतक ।

३.२.४.७.३ अन्य पुरुष एकवचन

जा - + - औ जवौं 'जाय'

हिट - + - औ हिटौ 'कलै'

३.२.४.७.४ अन्य पुरुष बहुवचन

जा - + - ऊंन जऊंन 'जायं'

हिट- + - ऊंन हिटूंन 'कलें'

३.२.४.८ विभिन्न कालों में कृदन्तीय रूप

धातु

धातु	कृदन्त भेद	प्रत्यय	उदा०
हो	कर्तृवाचक संज्ञा	-नर	हुनेर `होने वाला`
	वर्तमानकालिक कृदन्त	-ए	हुन्दे `होता हुआ`
	भूतकालिककृदन्त	-औ	भ्यो `हुआ`
	पूर्वकालिक कृदन्त	-ए	ह्वे `हो`
		-बैर	`ह्वेबेर` `होकर`
	तात्कालिक कृदन्त	-ऐं	हुनैं `होते ही`
	पूर्णक्रियाद्योतक कृदन्त	-इंना	होइंना `हुए`
	अन्य उदा०		हिटीना `चले हुए`
	अपूर्णक्रिया द्योतक कृदन्त	-ऐं	`हुनैं `होते हुए`

३.२.४.६ संदिग्ध भूतकाल

प्रत्यय	उदाहरण
।-नौं।	हुनो `होती होगी`
	खानि हुनो `खाती होगी`
	खानो हुनो `खाता होगा`
।-अन।	खाना हुनन `खाते होंगे`

३.२.४.१० असम्बद्ध रूप ।सप्लीशन।

कुछ क्रियाओं के रूप विभिन्न कालों में असम्बद्ध रूप में मिलते हैं। प्रत्यय संयोग की दृष्टि से इनके साथ वे ही प्रत्यय जुड़ते हैं जो सम्बद्ध कालों में अन्य क्रियाओं के साथ लगते हैं। उदाहरण-

	वर्तमान काल	भविष्यकाल	भूतकाल ।असम्बद्ध।
उत्तम पु०	जांछु `जाता हूँ`	जूंलो `जाऊंगा`	गयूं `गया`
मध्यमपु०	जांछै `।तू। जाता है`	जालै।तू। जायेगा	गैछयूं `गया था`
अन्य पु०	जांछ ।वह। जाता है	जालो ।वह। जायेगा`	ग्यौछ `गया था` ग्योछ `गया था`

उत्तम पु०	हुंछु `होता हूँ`	हुंलो `होऊंगा`	भयूं `हुआ`
मध्यमपु०	हुंछै `होता है`	होलै `होगा`	भये `हुआ`
अन्य पु०	हुंछ `होता है`	होलो `होगा`	भयो `हुआ`

इसीप्रकार पूर्वी भाग में वर्तमान कालिक क्रिया में हुं, छौ, छ, के लिए भूत काल में थ्युं, थ्या, थ्यो प्रयुक्त होता है।

३.२.४.११ अपूर्ण काल ।कन्टिन्युअस टैन्स।

विवेच्य बोली में अपूर्ण काल सूरचकों के रूप में अनेक प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं। यद्यपि इन प्रत्ययों का सम्बन्ध व्युत्पादन से प्रतीत होगा तथापि काल से सम्बद्ध होने से प्रस्तुत प्रकरण में इन का उल्लेख अयुक्तियुक्त नहीं है। अपूर्ण कालिक रूप प्रमुख क्रिया तथा सहायक क्रिया के बीच में आता है। स्थान वैभिन्य के आधार पर अपूर्णकाल द्योतनार्थ चार प्रमुख रूप प्रयुक्त होते हैं। स्थान भेद से उक्त रूप इस प्रकार है --

	क्षेत्र	प्रयुक्त रूप
।१।	पूर्वी और उत्तरमध्यवर्ती भाग	।-मर-।
।२।	मध्य भाग	।-म्यूं-। या ।-मय-।
।३।	दक्षिणी भाग	।-न्-।
।४।	पश्चिमी भाग	।-रा-।

उदाहरण :

।१। जान्मर्छ्य
।२। जान्मयोछ
।३। जान्नोछ
।४। जारओछ या जाराराओछ

} `जा रहा है`

इस सम्बन्ध में विशेष उल्लेख आगे बोली भूगोल के प्रकरण में विचार्य है।

३.२.४.१२ क्रिया रूपसाधक प्रत्ययों का वर्गीकरण

तीनों कालों की एक स्थानिक गठन तालिका निम्नलिखित प्रकार है --

काल	पुरुष	एकवचन पुल्लिंग	एकवचन स्त्रीलिंग	बहुवचन पुल्लिंग	बहुवचन स्त्रीलिंग
वर्तमान	उत्तम	-उ	-उ	ऊं	ऊं
[illegible]	मध्यम	-ऐ	-ईं	-वा	-वा इवी
	अन्य	-व	-इ	-अन -वान	-अन् -इन्
भूत	उत्तम	-ऊं	-ऊं	-वां	-वां
	मध्यम	-ऐ	-ईं	-वा	-इवी
	अन्य	-व -वी	-व -इ -ऐ	-वा -वान	-इन -अन -न
भविष्य	उत्तम	-वी -वी	-वी -वा	-वा	-वा
।-ल-। भविष्य कालयोतक	मध्यम	-ऐ	-ईं	-वा	-वा -इवी
	अन्य	-वी	-इ	-वा	-इन्

उदाहरण -

काल	पुरुष	एकवचन पु० लि०	एकवचन स्त्री लिं०	बहुवचन पु० लिं०	बहुवचन स्त्री लिं०
वर्तमान	उत्तम	जांह्-उ	जांह्-उ	जान्-ऊं	जान्-ऊं
	मध्यम	जांह्-ऐ	जांह्-ईं	जांह्-वा	जांह्-वा जांह्-इयी
	अन्य	जांह्-व	जांह्-इ	हु-अन् जान्-आम	हु-अन् जांह -इंन

भूत	उत्तम	छ्य्-ऊं गय्-ऊं	छ्य्-ऊं गय्-उं	छ्य-आं गय्-आं	छ्य्-आं गय्-आं
	मध्यम	छ-रे ग्योछ-रे	छ-ईं गैछ्-ईं	छ्य्-आ गैछ्य-आ	गैछ्य्-इवी
	अन्य	छ्-व गैछ्य्-वो	गैछ्-अ् गैछ-इ गैछ-रे	गै्य्-आ ग्य्-वान	छ्-इन गैछ-अन ग्-रेन
भविष्य	उत्तम	ज्ञूंल्-वो	जूल्-वो	जूंल्-वा	जूंल्-आ
	मध्यम	जाल्-रे	जाल-ईं	जाल्-वा	जाल्-इवी
	अन्य	जाल्-वो	जाल्-इ	जाल्-वा	जाल-इन

३.२.४.१२ तीनों कालों में क्रिया रूपों के साथ क्रियाधातु के अतिरिक्त दो संरचक रहते हैं। इनमें से पहला संरचक काल द्योतक तथा दूसरा पुरुष लिंग तथा वचन द्योतक रहता है। वर्तमान काल में काल द्योतक संरचक {-छ-} है जिसका बहुवचन रूप ।-न-। मिलता है। इनका वितरण इस प्रकार है --

।-न-।: वर्तमान कालसूचक उत्तम पुरुष, बहुवचन दोनों लिंगों में और अन्य पुरुष बहुवचन दोनों लिंगों में आता है। उदाहरण-

खा-न्-ऊं `खाते हैं`

जा-न्-ऊं `जाते हैं`

कर्-न्-ऊं `करते हैं`

।-छ्-।: वर्तमान काल सूचक, अन्यत्र आता है।

उदा०- जां-छ्-उ `जाता हूं, जाती हूं,

जां -छ्-रे `जाता है।(पु)

जां-छ्-ईं `जाती है ।(स्त्री)

जां-छ्-व `जाता है ।(बस)

जां -छ्-वा ` जाते हो `

दूसरा प्रत्यय : पुरुष, लिंग, वचन सूचक है
इसके निम्नलिखित रूप हैं -

।-उ। : `उत्तम पुरुष, एकवचन सूचक` यह दोनों लिंगों में समान रहता है। बहुवचन में इसका रूप ।-उं। हो जाता है। उदाहरण-

जां-हु-उ `जाता हूं, जाती हूं`
जां-नु-उं `जाते हैं, जाती हैं ।हम।`

।-ऐ। : मध्यम पुरुष, एक वचन, पुल्लिंग द्योतक, उदाहरण-

जांहु-ऐ `।तू। जाता है`

।-ई। : `मध्यम पुरुष, एक वचन स्त्रीलिंग द्योतक`। उदाहरण-

जां - हु-ई `।तू। जाती है`

।-आ। : मध्यम पुरुष पुल्लिंग बहुवचन द्योतक`। उदाहरण-

जां -ह -आ `जाते हो`

मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन में भी।-आ।प्रयुक्त होता है तथा इस स्थिति में।-आ। का एक रूप।-इयो। भी प्रयुक्त होता है। उदाहरण-

जां-हु-इ औ जांहियो `जाती हो`

।-आ : अन्य पुरुष एक वचन पुल्लिंग द्योतक
उदा०

जां -हु-अ `जाता है`

।-इ। अन्य पुरुष एक वचन स्त्रीलिंग द्योतक। उदा०

जां -हु-इ `जाती है`

।-आनु। : अन्य पुरुष बहुवचन पुल्लिंग द्योतक। इसका एक रूप।-अन। भी मिलता है। उदा०

जा-नु-आनु `जाते हैं`
हु-अनु " है "

।-इन। : अन्य पुरुष बहुवचन स्त्रीलिंग द्योतक। उदा०

जां - हु -इन `जाती है`

भूतकाल द्योतक प्रत्यय : भूतकाल द्योतक प्रत्यय प्रमुख ।-क्य्-। है ।-
।-योइ्-। ।-ऐइ-।, ।-ऐइ्-। इस प्रकार के रूप भी ।-क्य्-।
के मिलते हैं । उदाहरण-

कर-क्य्-व `किया`
आक्य्वो `आया ।वह।
आक्य् -ऊं `आया ।मैं।
ग्-ऐइ्-व `गयी ।वह।
ऐइ्-व `आयी` ।वह।`

कहीं कहीं क्य्- में से कोई भी एक ध्वनि अर्थात -क्- या -य्- शून्य संलग्नता के साथ प्रयुक्त होती है । उदाहरण-

।-क्ø -।: आक् `आया`
।ø य्।: आयूं `आया ।मैं।

भूतकाल में पुरुष लिंग वचन द्योतक प्रत्यय
इसका विवरण इस प्रकार है --

।-ऊं।: उत्तम पुरुष एकवचन । दोनों लिंगों में आता है । उदा-
आय्-ऊं -आया ,आयी ।मैं।

।आं ः उत्तम पुरुष बहुवचन दोनों लिंगों में आता है ।उदा-
आय्-आं `आये`, आयीं` ।हम।

।-ऐ। : मध्यम पुरुष एकवचन पुल्लिंग में रहता है । उदा-
आक्-ऐ ।तू। आया`

।-ई ।: मध्यम पुरुष एकवचन स्त्रीलिंग द्योतक । उदा-
आक्-ई ।तू। आयी`

।-आ । मध्यम पुरुष बहुवचन दोनों लिंगों में रहता है, उदा-
आक् -आ ` आये या आयीं` `

स्त्रीलिंग में विकल्प से ।-इयौ। भी प्रयुक्त होता है । उदा-
आक् इयौ आकियौ ` आयी`

।-औ। अन्य पुरुष एकवचन पुल्लिंग द्योतक ` उदा-
गय्-औं `गया`

अन्य पुरुष एक वचन पुल्लिंग और स्त्रीलिंग में।-आ। भी

आता है । उदा-

आछ्-अ `आया`

ऐछ्-अ `आई` । इस स्थिति में -छ्- के पूर्व की ध्वनि लिंग निर्णय में सहायक होती है ।

अर्थात - ।आछ्।

।ऐछ । दोनों में ।आ। तथा ।ऐ। में व्यतिरेक है । तथा यह व्यतिरेक पृथक पृथक लिंग होने के कारण है ।

।-इ। : अन्य पुरुष एकवचन स्त्रीलिंग द्योतक । उदा-

आछ्-इ `आयी`

इसका एक रूप ।-ई। भी मिलता है । उदा-

ग्-ई `गयी`

ऐग्-ई `आ गई`

।छ। क्रिया रूप के साथ स्त्रीलिंग में भी पुल्लिंग की भांति ।-अ। संलग्न रहता है । उदा-

छ्-अ `है` ।

।-आन् ।: अन्य पुरुष बहुवचन पुल्लिंग द्योतक । उदा-

आयु -आन `आये` । इसका एक रूप ।-आ। भी है । उदा-

आया `आये`

ग्या `गये`

।-इन। अन्य पुरुष बहुवचन स्त्रीलिंग द्योतक । उदा-

गैछ्-इन `गई`

कालद्योतक ।-छ-। के पूर्व ऐ रहने पर ।-इन। का एक रूप ।-अन। विकल्प से प्रयुक्त होता है । उदा-

ऐछ्-अन `आयी`

स्वर के उपरान्त आने पर ।-इन।, ।-न। रूप से जुड़ता है,

ग् ई - न `गयीं`

३.२.५ क्रिया विशेषण रूप साधक प्रत्यय और रूप सारिणी

३.२.५.० क्रिया विशेषण रूप, वाक्य में विशेषण एवं क्रियाओं के पूर्व आते हैं। यद्यपि क्रिया विशेषण बिना रूपसाधक प्रत्ययों के प्रयुक्त होते हैं तथापि व्युत्पन्न प्रातिपदिक क्रिया विशेषणों के साथ रूपसाधक प्रत्यय आ सकते हैं और कुछ क्रिया विशेषण प्रातिपदिकों में लिंग बोधक प्रत्यय भी मिलते हैं। अर्थ एवं कार्य के अनुसार क्रिया-विशेषण निम्नलिखित भागों में बंट सकते हैं।

३.२.५.१ स्थानवाचक क्रिया विशेषण

इनकी रचना सार्वनामिक अंशों के साथ प्रत्यय संयोग द्वारा होती है। उदा-

इ-+ - वां यां `यहां`
उ-+- वां वां `वहां`
ज-+- वां जां `जहां`
त -+-वां तां `तहां`
क -+-वां कां `कहां`

इसी प्रकार अग्गि `आगे`, पछिल `पीछे, पछा `पीछे `, अघा `आगे `, पास `निकट ` दूर दूर आदि क्रिया विशेषण प्राप्य हैं।

३.२.५.१.१ स्त्रीलिंग परप्रत्यय ।-इ। के संयोग से स्थानवाचक क्रिया विशेषण मिलते हैं --

मल- + - मलि `ऊपर`
तल - + - तलि `नीचे `

३.२.५.१.२ स्त्री लिंग प्रत्यय ।-आ। से संयुक्त रूप भी ।माला। `माला ` की भांति उपलब्ध हैं।

उदा-

पछ - + - आ पछा पीछे`
आग - + - आ अगा आगे `

३.२.५.२ दिशा अर्थ बोधक स्थानवाचक क्रिया विशेषण

इस कोटि के क्रिया विशेषणों के साथ ।-के। जुड़ता है :

इथ्- + - कै इथकै `इधर को`

उथ् - + - कै उथकै `उधर को`

कथ् - + - कै कथकै `किधर को`

३.२.५.३ कालवाचक क्रिया विशेषण

आज `आज`, भोल `कल` ।आगामी। बेलि` कल ।विगत।
पोरखी `परसों` ।आगामी।, पोर्बोलि `परसों ।विगत।`,
अब `अब`, आब `थोड़ी देर में`, तक `तक`, कब `कब`
बाद `बाद` आदि ।

३.२.५.४ रीतिवाचक क्रिया विशेषण

सार्वनामिक विशेषणों से इनका निर्माण होता है । उदा-

इसी `इसतरह`

उसी `उसतरह`

कसी `किसतरह`

सार्वनामिक विशेषणों से निर्मित होने वाले इस कोटि के विशेषणों के अतिरिक्त अन्य निम्नलिखित द्रष्टव्य है :

माठ् माठ `धीरे धीरे`,

तेजिले `तेजी से`,

३.२.५.६ परिमाणवाचक क्रिया विशेषण परिमाणवाचक सार्वनामिक विशेषणों द्वारा, परिमाणवाचक क्रियाविशेषणों की भांति प्रयोग होता है । इनकी पहचान वाक्य स्तर पर सम्भव रहती है । उदा-

।इतुक हिट्‌छ्य । `इतना चला`

इनके अतिरिक्त इस कोटि के अन्य क्रिया विशेषण है -

भौत `बहुत`, `खूब` `बहुत

थ्वाड़ा `थोड़ा`, `कुछ` `कुछ`

सब `सब`, कम `कम` मनै `थोड़ा`

कुल `कुल` जम्मै `कुलही`

बांकि `बाकी` बाकिक `शेष`

उक्त क्रिया विशेषण भी सन्दर्भ से या वाक्य स्तर पर

पहचाने जाते हैं क्योंकि इनमें से अनेक शब्द विशेषण रूप में जाने जाते हैं । शब्दों की व्याकरणिक कोटि वस्तुत: उनके प्रयोग और कार्य पर निर्भर है ।

३.२.५.७ निषेधात्मक क्रिया विशेषण

उदा- ।नँ । `।जन। ।मत्। ।अ।

३.२.५.८ सम्मुच्चयबोधक

इसके निम्नलिखित प्रकार हैं

।क। संयोजक

उदा- । और ।

।ख। प्रतिरोधबोधक

।पर। `लेकिन` ।लेकिन।, ।परन्तु।,

।किन्तु।, ।मगर।,

।ग। आश्रयबोधक

उदा- ।कि की। `कि`

।घ। विभाजक

रूपिमिक दृष्टि से ये क्रमसहित रूप हैं । इसके दो भेद हैं ।

खंडित क्रम -

।जो ---- तो। , ।ऐसे --- जैसे।,

पुनर्घटित क्रम-

।चाहे --- चाहे ।

।या ----- या।

३.२.५.९ विस्मयबोधक

उदा-

।ओहो ! । , ।अहा! ।

३.२.५.१० दशासूचक

।हाय!। , ।राम राम! । ` ।छि ! छि ! ।

३.२.५.११ अनुमोदक अबोधक

।शाबाश।`, छोय `हां`, ।हो हो या।` हां हां`

३.२.५.१२ तिरस्कारबोधक

।छि:। , ।छुप। ।,

।धिक्कार ! ।, ।हत्! ।, ।बपू!।.

३.२.५.१३ सम्बोधनबोधक

।ओ ! । , ।रे! ।, ।ला! ।, ।ली! ,

।ऐ! ।,

३.३ परसर्ग

परसर्ग किसी पद या समुच्चय के पश्चात आते हैं और वाक्य के किसी दूसरे पद या पद समुच्चय से व्याकरणिक या वाक्यात्मक सम्बन्ध प्रकट करते हैं। यहां परसर्ग दो प्रकार के हैं ।१। रूपान्तर मुक्त ।२। रूपान्तर युक्त

३.३.१ रूपान्तर मुक्त परसर्ग

३.३.१.१ ।ले। :

।क। यह सकर्मक भूतकालिक कृदन्तों के कर्ताओं के साथ प्रयुक्त होता है।

उदाहरण-

।मैले भ्योछ। `मैंने कहा`

।हरिले खाछ। `हरी ने खाया`

।ख। अप्राणिवाचकों के साथ आकर करण कारक बोधक भी है।

उदाहरण-

।कलमले लेख्युय। `कलम से लिखा`

हाथ ले हारि।ख्य। `हाथ से मारा`

३.३.१.२ ।श। : कर्म कारक के लिए प्रयुक्त होता है। इसका प्रयोग ।स। के साथ विकल्प से होता है। इसके निम्नलिखित क्षेत्रगत भेद हैं --

।श। पूर्वी भाग के निवासियों द्वारा व्यवहृत होता है ।उदा-

मैश मैस `मुझको`,

रामश रामस `रामको`

।कै। : यह पश्चिमी भाग के निवासियों द्वारा प्रयुक्त होता है उदा-

मैकै मैकाणि `मुझको`

रामकै   राककराा ` राम को `

३.३.१.३ ।पिति।: यह करण कारक में ` द्वारा अर्थद्योतक है । इसके साथ विकल्प से ।क्यां। परसर्ग भी प्रयुक्त होता है ।

उदाहरण-

।म्याइ पिति ~ म्यार क्यां । ` मुझसे , मेरे द्वारा`

।वीकुपिति ~ वीकुक्यां । `उसके द्वारा`

३.३.१.४ ।खिन।: सम्प्रदान कारक में `लिए` `के लिए` अर्थसूचक है । इसके स्थानगत भेद निम्नलिखित हैं -

।खिन ~ खीं ~ ह्नि ~ हीं ।: पूर्वी क्षेत्र में प्रयुक्त होता है ।

उदाहरण-

।मैं खिन । ` मेरे लिए`

।राम खिन। `राम के लिए`

हुराा ~ हूं ~ लिज्या ।: पश्चिमी क्षेत्र में व्यवहृत होता है ।

उदाहरण-

।मैं हुराा ~ मैं हूं ~ म्यार लिज्या । `मेरे लिए`

।राम हुराा ~ राम हूं ~ रामकु लिज्या ।

`राम के लिए`

।वास्ता।: विकल्प से सम्पर्कशील व्यक्तियों द्वारा सम्पूर्ण संभाग में परिश्रुत होता है । उदा-

म्यार वास्ता ` मेरे लिए`

रामकु वास्ता `राम के लिए`

३.३.१.५ ।बटे ।: अपादान में `से` अर्थसूचक । स्थानभेद तथा विकल्प से इसके निम्नलिखित रूप हैं --

।बटे ~ बै ~ है । उदा-

।घर बटे ~ घरबै ~ घर है । ` घर से`

३.३.१.६ ।ऊमि।, ।मुं। : अधिकरण कारक में `में` अर्थसूचक तथा ।लै। `पर अर्थसूचक है । संज्ञा के पश्चात आने पर `।लै। का प्रयोग `के पास` अर्थ में होता है ।

उदा-

।बक्स मैं । बक्सुनि । `बक्स मैं`

।उतिलै । `वहां पर`

।बक्स लै । `बक्स के पास`

।मैं।, ।मलि।, ।मलि मैं ।, : पर, के ऊपर अर्थबोधक ।

उदा-

।पाख मैं । `छत पर`

।मेजाक्मलि मेजाक्मलि मैं । `मेज के ऊपर`

३.३.१.७ ।पर। : बोलना पर । `बोलने पर`, । जानपर। `जाने पर`

३.३.२ रूपान्तरयुक्त परसर्ग

३.३.२.१ ।-र-। , ।-क-। : सम्बन्ध कारक में सम्बन्धबोधक हैं, लिंगवचन के अनुसार रूपान्तरण होता है । उदा-

।मेरो। `मेरा`

।मेरि। `मेरी`

।म्यारा। `मेरे`

।वीको। `उसका`

।वीकि। `उसकी`

।वीका। `उसके`

प्रयोग वितरण की दृष्टि से सम्बन्ध बोधक परसर्ग के दो संरूप हैं -

-क- अल्प विवृत्ति के पश्चात आता है । उदा- मेरो , तेरो, हमोरो,

-र- अन्यत्र आता है । उदा- वीको ,रामोको ।

३.३.२.२ ।-स-। : लिंग वचन के अनुसार रूपान्तरित होता है । उदा-

।जरा सा । , ।जरा सि ।, `जरा सा, जरा सी`

३.३.२.३ ।वाल-। :उदा-

।वांवाला । `वहां वाले`

।वांवालो । `वहां वाला`

।वांवालि । `वहां वाली`

३.४ निपात

निपात पद या पद समुच्चय के पश्चात वाक्य में निक्षिप्त होते

है । जिसके सम्बन्ध में कोई व्याकरणिक या वाक्यात्मक रीति या पद्धति अभिप्रेत होती है । इसके द्वारा निश्चय अथवा अवधारण की सूचना मिलती है ।

३.४.१ ।ले। `भी` यह समेतार्थक निपात है । उदा-

।राम लै क्योइ। `राम ने ही कहा` अर्थात राम ही कहने वाला है अन्य कोई नहीं ।

।लै। का व्यवहार `भी अर्थसूचक भी है । उदा-

।वुले आलो । `वह भी आयेगा`

३.४.२ ।लेगै।: यह ।ले। `भी` के साथ विकल्प से प्रयुक्त होता है ।

उदाहरण-

।वुले आलो । ~ ।वु ले गै आलो । `वह भी आयेगा`

।वांले जाये । ~ ।वां लेगै जाये । `वहां भी जाना`

।लै। केवलार्थक रूप में भी प्रयुक्त होता है ।

उदाहरण-

।राम लै क्योइ । `राम ने ही कहा`

।वीलै खाइ । `उसने ही खाया`

३.३.३ ।ई । : यह केवलार्थक `ही` अर्थसूचक है । इसके अन्य भेद ।ए। तथा ।ऐ । है । उदाहरण-

।मैं जूलों । `मैं ही जाऊंगा`

।वीकुवै छ । `उसका ही है`

।तुमै आला । `तुम ही आओगे`

३.३.४ ।तक। :उदाहरण-

वां तक । `वहां तक`

।घर तक। `घर तक`

।ऐल तक । `अब तक`

।आज तक। `आज तक`

३.३.५ ।त। : `तो` अर्थसूचक

उदाहरण-

।मैंत वांनै जूं । `मैं तो वहां नहीं जाऊंगा

।वु नौल् त न आ ।   `वह कल तो नहीं आयेगा`

३.३.६   ।नैं। : `न` अर्थ सूचक ।उदाहरण-

।जाला नैं ।   ` जाओगे न`

।हो लो नैं।   `होगा न `

। किताब नैं।   `पुस्तक न`

३.३.६.७   निपातीय संयुक्त प्रयोग

उदाहरण-

।घर तक त मैं ज्ञ लो ।   `घर तक तो मैं जाऊंगा`

।वां तक नैं ।   `वहां तक न`

।वां तक ले ।   `वहां तक भी`

५

वाक्य रचना

४.

वाक्य रचना

४.० प्रत्येक पूर्ण उच्चार वाक्य होता है। पूर्ण उच्चार की सीमा अन्त्य सुर लहर ।फाइनलइन्टोनेशन। द्वारा ज्ञातव्य है। वाक्य में शब्दों का बाह्य सम्बन्ध प्रकट होता है। पिठौरगढ़ी में व्यवहार्य वाक्यों के प्रकार, विश्लेषण, वाक्यांश, प्रयोग, उपवाक्य, अन्वय, अधिकार, पदक्रम आदि प्रस्तुत प्रकरण में विचार्य हैं।

४.१ वाक्यों के प्रकार

पिठौरगढ़ी में वाक्य की सीमा अन्त्य सुर लहर है। अतः इस आधार पर वाक्यों का प्रकार भेद तर्क संगत है। अन्त्य सुर लहर के आधार पर पिठौरगढ़ी वाक्य चार प्रकार के हैं :

।क। सामान्य कथनात्मक

जैसे, ।मैं पढ़लो। `मैं पढूंगा`

।ख। हां या ना प्रश्नात्मक

जैसे, ।मैं पढ़लो ? मैं पढ़लो कि। `क्या मैं पढूंगा ?`

।ग। प्रश्न सूचक

जैसे, ।को पढ़लो ?।`कौन पढ़ेगा`

।४। विस्मयबोधक

जैसे, ।मैं पढ़लो। `मैं पढूंगा !`

रचना या वाक्य गठन के आधार पर उक्त सभी प्रकार के वाक्यों के तीन भेद मिलते हैं —

।१। साधारण वाक्य

जैसे, ।मैं जूंलो। `मैं जाऊंगा`

।२। मिश्र वाक्य

जैसे, मैंलै कै हालछ कि मैं न जूं। `मैंने कह दिया है कि मैं नहीं जाऊंगा`

।३। संयुक्त वाक्य

जैसे, ।दाइ पढ़लो और मैं पढ़लो। `बड़ा भाई पढ़ायेगा और मैं पढूंगा।`

भाव या अर्थ के आधार पर अनेक भेद मिलते हैं जिनमें से निम्नलिखित

प्रमुख हैं -

।१। सामान्य कथन

जैसे, ।उ आइ । `वह आया`

।२। विधानसूचक

जैसे, ।वां जान्यैछ । `वहां जाना चाहिए`

।३। निश्चयात्मक

जैसे, ।मैं जूंलो । `मैं जाऊंगा`

।४। आज्ञासूचक

जैसे, ।इस्कूलजा। `स्कूल जा`

।५। निषेधात्मक

जैसे, । मैं न जानूं। `मैं नहीं जाता`

।६। प्रश्नसूचक

जैसे, । तैं कां जांछै ।`तू कहां जाता है`

या । तैं जालैकि । `तू जायेगा क्या`

।७। इच्छासूचक

जैसे, ।मैं जांछ्यूं रै । `मैं जाना चाहता था`

।८। सम्भावना सूचक

जैसे, शैत आज वर्षा अमीं । `शायद आज वर्षा आय`

।९। विस्मयसूचक

जैसे ।अहा ! कस फ्कूक छ! । वाह ! कितना सुन्दर है` ।

।१०। आग्रह सूचक

जैसे । मैंस एग्गिलास पानि दियालु ।

`मुझे एक गिलास पानी दीजिएगा`

क्रिया के प्रकट होने या न होने के आधार पर उपर्युक्त वाक्यों के दो भेद मिलते हैं --

।क। प्रकट क्रिया वाले जैसे ।को उ रैछौ। `कौन आ रहा है`

।ख। अप्रकट क्रिया वाले ~~`कौन आ रहा है`~~ । मैं । `मैं`

उपर्वर्णित सभी प्रकार भेद ।मैं। `मैं` । साधारण, मिश्र तथा, संयुक्त वाक्यान्तर्गत समाविष्ट हो जाते हैं और सम्प्रति इन्हीं दृष्टिकोणों से वाक्य प्रकार विवेच्य है ।

४.१.१ साधारण वाक्य

साधारण वाक्य एक क्रिया वाले वाक्य हैं जिनमें से कुछ लुप्त क्रिया वाले तथा कुछ प्रकट क्रिया वाले हैं ।

४.१.१.१ लुप्त क्रिया वाले वाक्य

इन वाक्यों में केवल उद्देश्य प्रकट करता है । क्रिया का प्रयोग नहीं होता है । इस कोटि के अन्तर्गत प्रश्नों के उत्तरवाले उच्चार तथा आह्वान संबंधी उच्चार विशेषतः आते हैं जो नाम ।संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण। अथवा क्रिया विशेषण के रूप में अभिव्यक्त होते हैं । प्रश्न के उत्तर वाले उच्चार अवरोही सुरान्त तथा आह्वान संबंधी उच्चारान्तर्गत मात्र संज्ञा वाले वाक्य आरोही सुरान्त एवं अवरोही सुर मोड़ अन्त वाले मिलते हैं । उदाहरण :

प्रश्न के उत्तर वाले उच्चार —

प्रश्न ।कोवाछ्‌ट। `कौन आया`
उत्तर ।राम↓। `राम`
प्रश्न । पाठाकेड कसा। `बकरी के बच्चे का रंग कैसा है`
उत्तर । कालो↓। `काला`
प्रश्न । गौरु को चरालो↑ `गाय कौन चरायेगा`
उत्तर ।मैं↓। `मैं`
प्रश्न । तुम कां जांछा↑। `तुम कहां जाते हो`
उत्तर । `वां↓। `वहां`
प्रश्न । `तुम क्वालि आलाछ↑। `तुम कब आवोगे`
उत्तर ।अली↓। `अभी`
प्रश्न ।भात खालै कि । `भात खायेगा`
उत्तर । ।ना ।`नहीं या ।होय। हां`

आह्वान सम्बन्धी उच्चार-

।ग्वाला।   `लड़के`

।हरी।   `हरी`

आरोही सुरान्त वाक्य दूरस्थ के लिए आते हैं। पुरा मोड़ अन्त वाले वाक्य निकटस्थ के लिए आते हैं --

। ग्वाला ।   `लड़के`

संबोधन युक्त लुप्त क्रिया वाले वाक्यों में ।ओ।, ।अरे।, ।हो।, ।रे। सम्बोधनों का प्रयोग होता है। ।ओ। तथा ।अरे। संज्ञा के पूर्व और ।हो। एवं ।रे। संज्ञा के उपरान्त आते हैं।

उदाहरण-

। ओ ग्वाला । `ओ लड़के।   ।ग्वाला हो । `लड़के हो `

। अरे ग्वाला । ` अरे लड़के।`

।ग्वाला रे । ` लड़के रे`

।ओ। और ।अरे। के साथ होने पर निकटस्थ में अवरोही सुर भी मिलता है --

।ओ ग्वाला। ` ओ लड़के, ।अरे ग्वाला। `अरे लड़के`

कहीं कहीं विस्मयबोधक उच्चारों में भी क्रिया लुप्त रहती है --

।ओ। इतुक ठुलो। ` ओह। इतना बड़ा। `

४.१.१.२ प्रकट क्रिया वाले वाक्य इस कोटि के वाक्यों में निम्नलिखित उपभेद हैं :

।१। अवरोही सुरान्त वाक्य :- इनमें अन्त्य सुर अवरोही होते हैं।

उदाहरण- :

।मैं जूंलो।   `मैं जाऊंगा`

।गोपु जालो।   `गोपू जायेगा`

।२। अवरोही + मोड़ अन्त वाले वाक्य -- इन वाक्यों की क्रिया के साथ दृढ़ निश्चय का भाव निहित रहता है। उदाहरण:

।मैं जूंलो। = ।मैं जूंलो। ` मैं अवश्य जाऊंगा`

।गोपु ऊंछ। = `गोपू आता है`

।३। आज्ञार्थक वाक्य

।क। धीर सुरान्त वाक्य - इस प्रकार के वाक्यों में सामान्य आज्ञा द्योतित होती है। उदाहरण:

।तै छुम रौ। 'तू चुप रह'

।तै उथकै जा। 'तू उधर को जा'

।ख। आरोही सुरान्त वाक्य - ये वाक्य प्राय: आशीर्वादात्मक होते हैं। उदाहरण-

।तै जी रये। 'तू जीता रह'

।तेरो मल ह्वे जो। 'तेरा भला हो जाय'

।ग। आरोही + । ⊤ ।अन्त वाले वाक्य - इस कोटि के आज्ञार्थक वाक्यों के साथ संदेहार्थक अव्यय जुड़ते हैं। उदाहरण-

।शै त गोपु जवौ। 'शायद गोपू जाय'

।४। प्रश्नवाचक वाक्य

ये वाक्य दो प्रकार से बनते हैं :

।क। अन्त्य सुर को आरोही करके-

वु जालो 'वह जायेगा'

।ख। प्रश्नवाचक अव्यय द्वारा - ये सामान्य प्रश्न वाचक वाक्य होते हैं। इस प्रकार के वाक्यों के अन्त में ।कि। या ।ह। का प्रयोग होता है --

।तै जालेकि तै जालेह। 'तू जायेगा क्या ?'

।वु जालोकि वुजालोह। 'वह जायेगा क्या ?'

।ग। प्रश्नवाचक विशेषण द्वारा

।कतुक मन छन। 'कितने आदमी हैं'

।कसि जागा छ। "कैसी जगह है"

।घ। प्रश्नवाचक सर्वनाम द्वारा

।को ग्योछ। 'कौन गया है'

।के ह्योछ। 'क्या हुआ है'

।ड। प्रश्नवाचक क्रिया विशेषण द्वारा-

नानो कब आइ।	'लड़का कब आया'
तैं कां जांदै।	'तू कहां जाता है'
इशो किलैं करैं।	'ऐसा क्यों करता है'
यो कशिकै उठालो।	'यह कैसे उठेगा'

।५। निषेधार्थक प्रकट क्रिया वाले वाक्य

इस कोटि के वाक्य आज्ञार्थक वाक्यों के उपर में मिलते हैं-

।क। तैं वां जा। 'तू वहां जा'

।ख। ।नहीं जाता। 'नहीं जाता'

।ग। ।यो काम तैंले करन्छ। 'यह काम तूने करना है'

।घ। ।नैं करन्छ। 'नहीं करना है'

ऊपर ।ख। और ।घ। निषेधार्थक वाक्य हैं।

निषेध सूचक शब्द ।जन। के प्रयोग द्वारा भी निषेधार्थक प्रकट वाक्य मिलता है --

।तैं जन जायै। 'तू मत जाना'

इस प्रकार के वाक्यों में निषेधार्थक आज्ञा का भाव रहता है।

।६। बल ।E। तथा बलवर्द्धक निपात ।त। वाले वाक्य बल वाक्य के किसी भी अंश पर पड़ सकता है। उदाहरण-

।गोपुE आज आलो। 'गोपू आज ।ही। आयेगा'

।गोपु आजE आलो। 'गोपू आज ।अवश्य। आयेगा'

।त। से निश्चय का बोध होता है--

।मैं त न जूं। 'मैं तो नहीं जाऊंगा'

प्रकट क्रिया वाली वाक्य कोटि में केवल क्रिया भी हो सकती है। ऐसे वाक्यों में कर्ता प्रायः लुप्त रहता है --

।आ। 'आओ', ।औ। 'आओ'

।जांछु। 'जाता हूं' ।ऊंछ। 'आता हूं'

ये भी पूर्ण उच्चार है।

।७। विधान सूचक वाक्य

ये वाक्य दो प्रकार के हैं -

।क। ।चैं। युक्त वाक्य

।ख। अन्य

।चैं। युक्त वाक्य --

।तैं पढ़न्चैं। 'तुमे पढ़ना चाहिए'

अन्य

।पढ़नौ भलिबात मैं। 'पढ़ना अच्छी चीज़ है'

।८। इच्छा सूचक वाक्य

।मैं खान्चाहूं। 'मैं खाना चाहता हूँ'

।उ पढन्चांह्। 'वह पढ़ना चाहता है'

।९। विस्मयबोधक वाक्य

।गरहरा पूर्वं लागि रयोछ।

'ग्रहण पूरा लगा है !'

।उ भौत सुन्दर छ। 'वह बहुत सुन्दर है !'

।१०। आग्रहसूचक वाक्य - ये वाक्य दो प्रकार के हैं। एक विनय मिश्रित आग्रह सूचक और दूसरे आग्रहसूचक

विनयमिश्रित आग्रह -।मैंश बिड़ि दी दिय हात्। 'मुझे बीड़ी दे दीजिए'

आग्रह - '।मैंश बिड़ि दी दियव। ' मुझे बीड़ी दे दीजिए तो'

।११। उपर्युक्त के अतिरिक्त प्रकट क्रिया वाले साधारण वाक्यों की विशिष्ट कोटियां भी मिलती हैं। इनमें निम्नलिखित उल्लेख्य हैं :

।क। अन्त में ।भल। उच्चार युक्त वाक्य। यह उच्चार सामान्य कथन, प्रश्न निषेध आदि सभी प्रकार के वाक्यों के साथ आकर एक विशिष्टता का देता है। उदा-

'।वाँ हरि बै ग्योछ भल। ' वहां हरिया ही गया ।भल।'

।वीलै कि क्योछ भल। 'उसने क्या कहा ।भल।'

। उ न ग्यो भल। 'वह नहीं गया ।भल।'

।ख। ।घँ। युक्त वाक्य

।घँ। उच्चार वाक्य के आरम्भ तथा अन्त में आकर उसे परिवर्द्धित करता है।

आरम्भ में--

।घँ जांछ्व तैं। `देखें जाता है या नहीं `

अन्त में--

। ऍ दिय घँ। `आ दीजिए ।घँ।`

मध्य में भी यह आ सकता है -

। उ ऍ घँ जांछ्व। `वह भी ।घँ। जाता है तो`

आरम्भ में आने पर `।घँ। `देखें`या `देखें तो`। मध्य में `तो` और वाक्यान्त का ।घँ। `शायद` की भांति लगभग प्रयुक्त होता है।

।ग। ।प। युक्त वाक्य --

।प। का वाक्य के अन्त में आगमन प्रयोग को विशिष्टता प्रदान करता है --

।कां जौंप । `कहां जाता है ।प।`

।उसे आलोप । `वह भी आयेगा ।प।`

इसी की भांति ।पैं। भी प्रयुक्त होता है -

।तैं आ ये पैं। `तू भी जाना ।पैं।`

।होय पैं, हु इस्से च्यो। `हां ।पैं। वह ऐसा ही हुआ`, आदि।

।घ। ।ज्यू। युक्त वाक्य

ज्यू प्राय: सम्मान सूचक है। वाक्य के आरम्भ में यह ज्येष्ठ व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता है, मध्य और अन्त में सम्मान सूचनार्थ --

।ज्यू कां जांछा। `।ज्यू। कहां जाती हो ?

।बुढ़ ज्यू कि करछा। `बुड्ढे जी क्या करते हो`

।न्हौ आमां बुड़ज्यू। `चले बुड्ढे जी`

।ङ। ।ला। युक्त वाक्य आदि ।

उदा--

। कां कां जाछा `।लाू। कहां जाते हो।ला।`

।मां वी ला। `यहां आ ।ला।`

।पानि ल्यौ लि। `पानी ला।लि।`

।नैं ला, मैं न जूं। `नहीं जी, मैं नहीं जाऊंगा`

।च। प्रश्नसूचक शब्दों के विविध प्रयोग

कुछ आज्ञार्थक वाक्य इस प्रकार के हैं कि उनमें प्रश्नसूचक शब्द प्रयुक्त होते हैं और आज्ञा पर बल पड़ता है --

।जानैं क्न। `जाता क्यों नहीं ।अर्थात जा।

। उन्मैं क्लि नैं। ` आता क्यों नहीं ।अर्थात आ।

निश्चयार्थक वाक्यों में प्रश्नसूचक शब्द -

।किलै न जानूं। `क्यों नहीं जाता`

।अर्थात अवश्य जाता हूं।

निषेधार्थक वाक्यों में प्रश्नसूचक शब्द-

।किलै जांछै। ` क्यों जाता है` ।अर्थात मत जा`।

विस्मयार्थक वाक्यों में प्रश्नसूचक शब्द -

।कैक हो यो। `क्या है जी ये ! `

।छ। कुछ वाक्य प्रश्न सूचकों से युक्त होने पर भी उत्तर निरपेक्ष मिलते हैं। उदा-

।ये झ्यावारा म्वाष्टा में डालिबेर किकरूं।

`इस टूटी कटाई में डालकर क्या करूँ `

।ज। कुछ उच्चारों में केवल एक ही शब्द होता है। इस प्रकार के उच्चारों से प्रयोजन पशुओं के प्रति प्रकट किये गये उच्चार हैं। इन उच्चारों में अधिक अधिकार या अनुशासन की भावना रहती है --

। चिट्कैल। ` चलता क्यों नहीं। बैल।`

।कंजुली इथकै औ। ` कन्जी ।गाय का नाम। इधर आ`

।शिक उथ जा। ` बिल्ली उधर जा `

।औरै यां औ। `रे यहां आ`।

हिन्दी में उच्चारों के ये संकेत स्वाभाविक चाहे न लगें किन्तु विवेच्य बोली में ये अत्यन्त सहज एवं भावपूर्ण हैं।

४.१.२ मिश्र और संयुक्त वाक्य

ये वाक्य दो या दो से अधिक वाक्यों के योग से प्रयुक्त होते हैं। मिश्र वाक्य में एक वाक्य प्रधान तथा अन्य आश्रित वाक्य रहते हैं। आश्रित वाक्य उपवाक्य कोटि के रहते हैं। उदाहरण-

।इजालक्यौछकि यां आयेע। 'मां ने कहा कि यहां आना'

उक्त वाक्य में ।इजालक यौछ। तथा । कि यां आये । ' ये दो साधारण वाक्य हैं। इनमें पहला प्रधान तथा दूसरा आश्रित उपवाक्य है।

संयुक्त वाक्य में दोनों या उपवाक्य प्रधान ' होते हैं और प्रत्येक समानाधिकरण उपवाक्य कोटि का रहता है। उदा-

।इजावन गैछ और मैं इस्कूल गयें। ' मां जंगल गई और मैं पाठशाला गया'।

यहां । इजा वन गैछ । और । मैं इस्कूल गयूं । ये दो उपवाक्य हैं जो ।और। द्वारा संयुक्त हैं। ।और। संयोजक कभी कभी नहीं भी जुड़ता है, लुप्त रहता है।

।और। के स्थान पर किसी विशेष पद से भी इस प्रकार के वाक्य सम्बद्ध रह सकते हैं —

।वु अनी पर अब न आ। 'वह आता पर अब नहीं आयेगी'

।पैली वु जाली फिरि मैं जूंलो। ' पहले वह जायेगी फिर मैं जाऊंगा

।उ आलो तब मैं जूंलो। ' वह आयेगा तब मैं आऊंगा '

कुछ वाक्य निषेधार्थक अव्यय द्वारा संयोज्य हैं —

।न वु रौलो न मैं रूं। ' न वह रहेगा न मैं रहूंगा '

विभाजक अव्यय युक्त संयुक्त वाक्य -

।या तैं आलै या मैं जूंलो। ' या तू ही आयेगा या मैं ही आऊंगा

४.२ वाक्य विश्लेषण

प्रत्येक वाक्य में एक उद्देश्य तथा एक विधेय रहता है। उद्देश्य और विधेय का विस्तार और लोप दोनों हो सकता है। वाक्य में उद्देश्य तथा विधेय रचनात्मक संघटक होते हैं। इन दोनों उद्देश्य संघटकों के स्थान निश्चित स्थिर हैं। सामान्यतः वाक्य का पूर्वांश उद्देश्य तथा उत्तरांश विधेय होता है।

४.२.१ संज्ञा या संज्ञा के स्थानापन्न जैसे सर्वनाम, विशेषण, संज्ञा-कृदन्त या कोई वाक्यांश उद्देश्य होता है ।

उदाहरण-

संज्ञा - ।किशना निको छ। `किशना अच्छा है`

।मालु ऊंछ । `मालु आता है`

सर्वनाम- ।वु निको छ । `वह अच्छा है`

। तैं ऊंछै। `तू आता है`

विशेषण-

।कालो निको छ। `काला अच्छा है`

।निकाख दिय। `अच्छे को दो`

।एक बाछ । `एक आया`

क्रिया विशेषण-

।भैर निको छ । `बाहर अच्छा है`

सम्बन्धवाचक-

।गोपु को बाछ। `गोपू का ।भाई। आया`

क्रियार्थक संज्ञा-

।धानो निको छु। `मनन करना अच्छा है`

कहीं कहीं कर्ता लुप्त रहता है । उदाहरण-

।पड़िग्यो। `सो गया`

।देखिबेर हिट। `देखकर चल`

४.२.२ क्रिया प्रधान संघटक विधेय होता है । इसके अन्तर्गत सामान्य, संयुक्त तथा अपूर्ण सभी क्रिया रूप आ जाते हैं । उदाहरण-

सामान्य-

।वु आंछ। `वह आता है`

संयुक्त

। वु फाड़मुर्योछ। `वह फाड़ता रहा है`

अपूर्ण -

। वु निको छ्यो। `वह अच्छा था`

४.२.३ उद्देश्य तथा विधेय का संक्षेप एवं विस्तार दोनों हो सकता है।

उदाहरण-

|गोरु|

|कालोगोरु|

|ठुलो कालोगोरु|

|ठुलो वालो कालो गोरु|

|सिंधनियां ठुलो कालो गोरु|

|हरो सिंधनियां ठुलो कालो गोरु|

|दुद्यालो हरो सिंधनियां ठुलो कालो गोरु|

|लछियाको दुद्यालो हरो सिंधनियां ठुलो कालो गोरु|

|यो लछियाको दुद्यालो हरो सिंधनियां ठुलो वालो कालो गोरु|

इसीप्रकार विधेय का विस्तार तथा संक्षेप द्रष्टव्य है :

|चरछ|

|पैटभरि चरछ|

|रोज पैटभरि चरछ|

|रोज निकुके पैटभरि चरछ|

आदि।

४.२.४ उद्देश्य के विस्तार के अन्य उदाहरण हैं -

संज्ञा का विस्तार:

४.२.४.१ विशेषण अथवा विशेषण के स्थान पर प्रयुक्त हो सकने वाले पदों के द्वारा संज्ञा का विस्तार हो सकता है। उदाहरण-

विशेषण-

|निको मैंस| 'अच्छा आदमी'

सार्वनामिकविशेषण-

|यो मैंस| 'यह आदमी'

सम्बन्ध वाचक -

|गौं को मैंस| 'गांव का आदमी'

संज्ञायुक्त विशेषण-

|गौंवालो मैंस| 'गांव वाला आदमी'

|विद्वान मैंस| 'विद्वान आदमी'

संख्यावाचक -

।एक मैस । `एक आदमी`

क्रियार्थक संज्ञा-

।जान्या मैस । ` जाने वाला आदमी`

वर्तमान कृदन्त-

।चल्दो मैस। `चलता आदमी `

भूत कृदन्त-

।मरीनो मैस। `मरा आदमी`

४.२.४.२ दो विशेषण संयोजक पदों द्वारा संयुक्त होते हैं -

।निको और ठुलो मैस । `अच्छा और बड़ा आदमी`

।निको या घिनो मैस। ` अच्छा या बुरा आदमी`

४.२.४.३ विशेषण वाक्यांशों द्वारा संज्ञा का विस्तार-

।हिटिबेर ऊन्यां आदिमि । ` चलकर आने वाला आदमी`

४.२.४.५ समानाधिकरण पदों द्वारा संज्ञा का विस्तार-

।भदो मैन आयो । `भादो मास आया`

।सब स्कूल वाला ठिठुला कि नाना ऐं ग्या ।

`सब स्कूल वाले क्या छोटे क्या बड़े आ गये`

।मैं दस मुट्ठि चांव मिल्य । ` मुझे दस मुट्ठी चावल मिले `

४.२.४.६ विशेषण का विस्तार

।क। विशेषण द्वारा विशेषण का विस्तार-

।भौत निको। ` बहुत अच्छा`

। कतुक निको। ` कितना अच्छा`

।इतुक निको । ` इतना अच्छा`

इनका उच्चारण अव्ययवत् हो जाते हैं ।

।ख। बलात्मक निपातों द्वारा विशेषण का विस्तार । इन निपातों का प्रयोग विशेषण के पश्चात होता है । उदाहरण-

।निको लै । ` अच्छा भी `

४.२.४.७ क्रिया का विस्तार

क्रिया विशेषण पद अथवा वाक्यांशों द्वारा क्रिया का विस्तार होता है । क्रिया विशेषण प्रायः क्रिया से पूर्व आकर क्रिया का विस्तार करते हैं । उदाहरण-

।जां ‑कां ‑ कथ जालो । `जहां, कहां किधर जायेगा'

।जब ‑कब जब‑ तब जालो। `

`जब, कब, जब, तब जायेगा । `

क्रिया विशेषण वाक्यांशो द्वारा क्रिया का विस्तार-

उदाहरण-

।अलुलै ग्यो । `अभी गया `

।अलुलैत ग्यो। `अभी तो गया`

निषेधात्मक एवं प्रश्नवाचक अव्यय भी इस कोटि के वाक्यों के साथ रहते हैं-

।आजि लै न ग्यो । `अभी भी नहीं गया`

।अलुलै किलै ग्यो । `अभी क्यों गया `

परसर्गों द्वारा भी क्रिया का विस्तार होता है -

।स्कूल सिन ग्यो । `स्कूल को गया`

। डाराा मैं ग्यो । `पहाड़ी पर गया`

।शांकाड़ाले हारा है । `छड़ी से मारता है`

इनके साथ बलबोधक निपात भी आते हैं -

।स्कूल सिनै ग्यो । `वह स्कूल को ही गया `

। डारा ा मैं ग्यो । `पहाड़ी पर ही गया`

। वु वातैं बैठ्‌छ्य । `वह वाते ही बैठा `

पूर्वकालिक कृदन्तों के योग द्वारा क्रिया का विस्तार -

।पड़िबेर उठिछ । `सोकर उठा`

।बैठिबेर लै पटै न है । `बैठकर भी थकावट नहीं गई `

।वु उठिबेर फट आन्दे रैयो । `वह उठकर शीघ्र जाता रहा`

क्रिया विशेषण की द्विरुक्ति द्वारा क्रिया का विस्तार-

।धीरु धीरु लै रुंछ । `धीर धीर से रोता है`

।सैब सैब ऊंछ । `धीरे धीरे आता है `

४.२.५ विधेय - विधेय पर आगे उल्लेख्य है कि निम्नलिखित पद विधेय हो सकते हैं।

क्रिया--

।तैं जांछै। `तू जाता है`

।पानि बगछ। `पानी बहता है`

संज्ञा अथवा सर्वनाम-

।वीको नाम गोपु छ। `उसका नाम गोपू है`

।वु रामोकोछ। `वह राम का है`

।वु पाख मैं छ। `वह छत पर है`

।ऐसो ज्ञान कै मैं न्हाति। `ऐसा ज्ञान किसी में नहीं है`

विशेषण-

आरु मिठो छ। `आड़ू मीठा है`

।राम बड़ा दयालु और बलवान छन। `राम बड़े दयालु और प्रतापी हैं`

।वीका आंखा द्वि छन। `उसकी आंखें दो हैं`

वाक्यांश--

।मैं वां बटे आईनाको छूं। `मैं वहां से आया हुवा हूं`

४.२.६ उद्देश्य और विधेय पृथक पृथकत: लुप्त भी रहसकते हैं। यह स्थिति भाव समझने में बाधक नहीं रहती है।

उदाहरण-

उद्देश्य लोप : इस दृष्टि से आज्ञार्थक वाक्य द्रष्टव्य है--

।आ। `आ` ।आंछ। `आता है`

।जा। `जा` ।जांछ। `जाता है`

।पढ़। `पढ़` ।पढ़छ। `पढ़ता है`

विधेय लोप - सम्बोधनोक्वार इस कोटिके अन्तर्गत आ सकते हैं--

।रामा। `राम!`

।च्याला। `लड़के`

४.३ वाक्यांश

उद्देश्य तथा विधेय, वाक्यांश युक्त होते हैं । वाक्यांशों की रचना दो प्रकार की मिलती है ।

४.३.१ अन्त: केन्द्र मुखी संरचना:

इस संरचना में वाक्यांश का वही कार्य रहता है जो उसके सन्निकट संघटक का रहता है । उदाहरण-

।तात पानि। 'गरम पानी'

इस वाक्यांश में ।पानि। का वही कार्य है जो ।तातुपानि। का है । अत: यहां ।पानि। विशेष्य है और ।तात। गुणसूचक है ।

एक से अधिक विशेष्ययुक्त अन्त:केन्द्र मुखी संरचना में प्राय: सूचक नहीं होता है । उदाहरण-

।फल और फूल। 'फल और फूल'

।दाल, भात, घी, चीनि और दै ।

'दाल चावल, घी, चीनी और दही'

बड़े वाक्यांश अन्त:केन्द्रमुखी संरचना के विभिन्न स्तर हो सकते हैं । ऐसे वाक्यांशों के अन्त में एक या एक से अधिक विशेष्य हो सकते हैं । उदाहरण-

।अनेक मीत निका आपिनि । : इस वाक्यांश में ।अनेक। विशेषण तथा ।मीतनिको पानि । विशेष्य होगा । आगे विश्लेषण करने पर ज्ञात होगा कि ।मीत।, ।निको। का और ।निको।, ।पानि। का गुणसूचक है । इस प्रकार पानि। विशेष्यों का भी विशेष्य हुआ । यह अन्तिम विशेष्य अर्थात ।पानि। पूरे वाक्यांश के भाव को द्योतित करता है, अत: उक्त वाक्यांश का केन्द्र है ।

गुणसूचकों की दूसरी कोटि भी मिलती है जिसमें संरचना का विस्तार अवरुद्ध रहता है । उदाहरण-

।यो पानि । ' यह पानी '

उक्त वाक्यांश अन्त:केन्द्रमुखी है । ।पानि। के पूर्व अनेक विशेषण लगाये जा सकते हैं किन्तु ।यो। के पूर्व कोई विशेषण नहीं रखा जा सकता है, अन्यथा संरचना प्रस्तुत बोली के गठन के विरुद्ध होगी । इस प्रकार के गुणसूचकों

क के पूर्व कोई गुणायुक्त विशेषण नहीं रक्खा जा सकता है।

४.३.२ बहिः केन्द्रमुखी संरचना

इस कोटि के वाक्यांश वही कार्य धोतित नहीं करते जो उसके कोई सन्निविष्ट संघटक करते हैं। इनमें न कोई विशेष्य होता है और न कोई गुणायुक्त। उदाहरण-

।गोरु खिन। 'गाय के लिए'

।रामो को। 'राम का'

बहि केन्द्रमुखी संरचना का पूरा भाव धोतित करने के लिए ।गोरु खिन पानि। , । रामाको मैं। आदि प्रकार से कहना होगा।

४.३.३ कार्य की दृष्टि से वाक्यांशों की निम्नलिखित कोटियां हैं।

४.३.३.१ संज्ञा वाक्यांश

संज्ञा वाक्यांशों में विशेष्य संज्ञा रहता है और गुणायुक्त अन्य संज्ञा अथवा विशेषण आदि रूपसारिणियों के शब्द होते हैं।

उदाहरण-

।नानो रूख। 'छोटा पेड़'

।ठुलो ढुङ्गो। 'बड़ा पत्थर'

४.३.३.२ विशेषण वाक्यांश

विशेषण वाक्यांश में गुणवाची विशेषण विशेष्य होता है और अन्य विशेषण अथवा क्रिया विशेषण आदि गुरा युक्त होते हैं।

उदाहरण-

।भौत मिठा। 'बहुत मीठा'

। दस पांच। 'दस पांच'

४.३.३.३ क्रिया विशेषण वाक्यांश

उदाहरण-

संज्ञा की द्विरुक्ति से निर्मित:

।घर घर। 'घर घर'

।गौं गौं। 'गांव गांव'

विशेषण की द्विरुक्ति--

।निको निको। 'अच्छा अच्छा'

।साफ साफ। 'साफ साफ'

क्रिया-विशेषण की द्विरुक्ति-

।आब बाब । ` थोड़ी देर में`

। कब कब । ` कब कब `

।जब जब । `जब जब `

क्रिया विशेषण + निषेधात्मक अव्यय + क्रिया विशेषण -

।कबै न कबै । ` कभी न कभी `

।कँ न कँ । ` कहीं न कहीं `

क्रिया विशेषणों के योग से -

।अछिल पछिल । ` आगे पीछे `

४.३.३.४ क्रिया वाक्यांश

उदाहरण-

।पड़ि ग्यो । ` सो गया`

।न्है ग्यो । `चला गया `

।गै हुनो । ` गई होगी`

।न्है जालि । `चली जायेगी `

क्रिया वाक्यांश के रूप कर्ता के लिंग, वचन, काल के अनुसार रहते हैं ।

४.३.४ शब्द

ऊपर के विश्लेषण से वाक्य अपने अन्तिम स्वतंत्र अवयवों में विभक्त हो जाता है । परिणामतः अनेक शब्दकोटियां मिलती हैं । वाक्यांशों का अन्तिम वाक्यात्मक विश्लेषण शब्द कोटियों तक ही रुकता है, इसके उपरान्त का विश्लेषण पद कोटि का होगा । निकटस्थ अवयवों से विश्लेषण से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, परसर्ग आदि व्याकरणिक कोटियां सामने आती हैं तथा इनका परस्पर सम्बन्ध भी प्रकट हो जाता है ।

४.४ प्रयोग

प्रयोग को प्रायः वाच्य कहा जाता है । इस दृष्टि से विवेच्य बोली में तीन प्रकार के उच्चार मिलते हैं । इस प्रकार के प्रयोग वाक्य स्तर पर ही विचार्य है ।

४.४.१ कर्तृ प्रयोग

इसमें वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्ता होता है । उदाहरण-

।गोरु जांइ। `गाय जाती है`

।पानि निकोछ। `पानी अच्छा है`

।ु चेलो छ। `वह लड़का है`।

।ु ग्योछ। `वह गया`

४.४.२ कर्मणि प्रयोग

इसमें वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्म होता है । उदाहरण-

।पानि पिइं जांइ। `पानी पिया जाता है`

।किताबपढ़ी जांइ। `पुस्तक पढ़ी जाती है`

। काम करी जांइ। `काम किया जाता है`

कर्मणि प्रयोग में कर्ता `द्वारा` शब्द के साथ आता है --

।म्यार्‍पिति काम करी ग्योछ। `मेरे द्वारा काम कर लिया गया है।

४.४.३ भावे प्रयोग

इसमें वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्ता या कर्म नहीं होता है।

उदाहरण-

।यां आइं जालो। `यहां आया जायेगा`

।अब न हिटी जानो। `अब नहीं चला जाता`

४.४.४ कर्मणि तथा भावे दोनों प्रयोगों में कर्ता करण कारक में ही रहता है। उदाहरण-

।म्यार्‍पिति न खाइनो। `मुझसे खाया नहीं जाता`

।म्यार्‍पिति नहिटीनो। `मुझसे नहीं चला जाता`

४.५ उपवाक्य-आश्रित वाक्य

जिन वाक्य में एक या एकाधिक आश्रित वाक्य रहते हैं। इनकी संरचना साधारण वाक्यों के समान मिलती है। आश्रित वाक्यों की निम्नलिखित कोटियां परिलक्षित होती हैं।

४.५.१ संज्ञा वाक्य

इस कोटि के आश्रित वाक्य किसी संज्ञा की स्थिति में प्रयुक्त हो सकते हैं। उदाहरण-

।वां बटे तैं हिटले वां बटे मैं लै हिट्लो।। 'जहां से तू चलेगा वहां से मैं भी चलूंगा'

।जां तक तैं जालै वां तक जूंलो।। ' जहां तक तू जायेगा वहां तक जाऊंगा'

।वां। के स्थान पर ।तां। भी उसी अर्थ में व्यवहार्य है।

।२। जथ उथ तथ
जथैं उथैं तथैं

उदाहरण--

जथैं देखछा उथैं पानी पानिछ।। 'जिधर देखो उधर पानी पानी है'

।ग। रीतिवाचक क्रिया विशेषण वाक्य

।१। इसिकै । जसिकै ।।
इसो । जसो

उदाहरण-

वु इसिकै हिट्छ जसिकै हात्थि हिट्छ। ।
'वह ऐसे चलता है जैसा हाथी चलता है'

। वु म्यार सामिनि इसो रंछ जसो बिरालुक सामिनि मुसो रंछ।।
'वह मेरे सामने ऐसे रहता है जैसे बिल्ली के सामने चूहा रहता है'

।२। जसी जसी ।उसी उसी ।।

उदाहरण-

।जसी जसी उर्न जाला तसी तसी दिना जाया। ।।
'जैसे जैसे आते जायेंगे, वैसे वैसे देते जाना'

।घ। संकेतार्थक क्रिया विशेषण वाक्य

।जो ।तो ।।

उदाहरण-

।जो तैं जालै तो मैं जूंलो।। 'यदि तू जाता है तो मैं जाऊंगा'
।जो। के स्थान पर ।जदि। या ।यदि। भी रहता है।

उदाहरण-

। जार हु आयो त मैं जूंलो ~ ।   `यदि वह आया तो मैं जाऊंगा`

।ड।   विरोधार्थक क्रिया विशेषण वाक्य

हालांकि । तबले ~ ।

उदाहरण-

।हां ला कि मैं ले मैं थ्योइ तब ले न मान्यो ~ ।

यद्यपि मैंने मना किया तब भी नहीं माना`

४.६   लोप

इस पर पीछे ४ २ ६ के अन्तर्गत भी किंचित चर्चा हो चुकी है । वाक्यांशों और आश्रित वाक्यों पर विचार कर लेने के उपरान्त यह प्रसंग स्वतंत्रतः उल्लेख्य है ।

४ ६१   वाक्य अथवा वाक्यांश में से प्रश्नों के उत्तर में प्रश्न से सम्बन्धित पद के अतिरिक्त अन्य अंश लुप्त हो जाते हैं । यह लोप निम्नलिखित प्रकार का मिलता है ।

४.६.१.१   प्रश्न के उत्तर में केवल कर्ता रहता है ।

उदाहरण-

प्रश्न -   ।को आइ । `कौन आया ?`

उत्तर -   ।भाया।   `भाई ।आया।

४.६.१.२   केवल कर्म रह जाता है । उदाहरण -

प्रश्न - । त्वैं कि खाइ । `तूने क्या खाया ?`

उत्तर - । भात ।   `भात ।खाया।`

४.६.१.३   विशेषण मात्र रह जाता है । उदाहरण-

प्रश्न -   ।पाणिकसोछ ।   `पानी कैसा है ?

उत्तर-   । साफ ।   `साफ ।पानी साफ है । `

४.६.१.४   क्रिया मात्र अवशिष्ट रहती है ।

यह स्थिति आज्ञार्थक वाक्यों में मिलती है । उदाहरण ऊपर ४.२.६ में उल्लिखित हो चुके हैं ।

आह्वान वाक्य का प्रति क्रियावाक्य भी केवल क्रिया अवशिष्टमय रहता है। उदाहरण-

आह्वान- ।आया। `मधुया`

उत्तर - ।ऐ गयूं। `आया`

४.६.१.५ क्रिया विशेषण मात्र अवशिष्ट रहता है -

स्वीकारात्मक तथा निषेधात्मक उत्तरों में केवल ।हाय। अथवा ।नां। परिलक्षित होताहै। उदाहरण-

प्रश्न - । तैं वां गैछै कि । `क्या तू वहां गया ?`

उत्तर- ।नां। `नहीं ।मैं वहां नहीं गया।`

अन्य इस कोटि के अन्य उदाहरण निम्नलिखित हैं।

प्रश्न -
।तैं कब आछैट । `तू कब आया?`

उत्तर- ।बैलि । `कल`

प्रश्न- । वु कां कं छट। `वह कहां रहता है ?`

उत्तर- ।वां। `वहां`

इसप्रकार प्रश्न के उत्तर में वाक्यांशों का लोप अनेकशः परिलक्षित होता है।

४.७ अन्वय

अन्वय से प्रयोजन पदों के उस प्रतिरूप से है जिसके द्वारा अन्य रूपवर्गी व्यवस्थात्मक प्रतिरूपों में परिलक्षित होते हैं।

४.७.१ क्रिया के लिंग वचन कर्ता के लिंग वचन के अनुसार मिलते हैं :

पुल्लिंग एक वचन-

।चेलो ग्यो । `लड़का गया`

पुल्लिंग बहुवचन ।
।च्याला ग्या । `लड़के गये`

स्त्री लिंग

।चेलि ऊंछि । `लड़की आती है`

स्त्री लिंग में कर्ता इकारान्त है तो क्रिया ईकारान्त में सहमान्य है और यह प्रवृत्ति अर्थात् स्त्री लिंग क्रिया का ईकारान्त भी होना, प्रस्तुत बोली की अपनी है। उदाहरण-

। चेलि गै । `लड़की गई`

।च्येलि गै । `बेटी गई`

।मालि गै । `लड़की बाई या छोटी बाई`

४.७.२ एक से अधिक कर्ता होने पर निकटतम कर्ता के लिंग वचन के अनुसार क्रिया के लिंग वचन मिलते हैं। उदा-

।चेलि च्याला सब ग्या। `लड़की लड़के सब गये`

४.७.३ एक से अधिक कर्ता बहुवचन रूप में मान्य हो तो क्रिया भी बहुवचन में रहती है :

। इजा बाबु आयान। `माता पिता आये`

।ठुलि ठालि रइन। `छोटी बड़ी आई`

४.७.४ दूसरा कर्ता प्रथम के विधेय के रूप में हो तो क्रिया प्रथम कर्ता के लिंग वचन के अनुसार रहती है। उदाहरण-

।स्यै चिट्ठि लेखनाकूकाम ऊँछि।

`स्याही पत्र लिखने के काम आती है`

४.७५ जब कर्ता में दो या अधिक शब्द भिन्न पुरुषों के होते हैं तो क्रिया के लिंग वचन प्राय: प्रथम पुरुष कर्ता के अनुसार रहते हैं। उदाहरण-

।मैं और तैं वां जूंला। `मैं और तू वहां जायेंगे`

।तैं और ऊ वां जाला। `तू और वह वहां जाओगे`

४.७.६ तीनों पुरुषों में क्रिया के रूप व्ययनात्मक हैं। उदाहरण-

।मैं जांछु। `मैं जाता हूं`

।तैं जांछै। `तू जाता है`

। चेलो जांछ। `लड़का जाता है`

।चेलि जांछि। `लड़की जाती है`

।हम जानूं। `हम जाते हैं`

।तुम जांछा। `तुम जाते हो`

।उन जानान्। `वे जाते हैं`

। उन जांछिन। `वे जाती हैं`

४.७.७ विशेषणका रूप विशेष्य के अनुसार मिलता है। उदाहरण-

।निको चेलो। `अच्छा लड़का`

। मिथि पाटि्ठ। `बुरी लकड़ी`

४.७.८ सम्बन्धसूचक, विशेषण संज्ञा के अनुसार प्रतिबिंबित होते हैं। उदाहरण-

।मेरि चेलि। `मेरी लड़की`

।मेरो चेलो। `मेरा लड़का`

।हमारा च्याला। `हमारे लड़के`

।वीको खेरी । `उसका सिर`

। वीका खुट्टा। `उसके पैर `

। वीकि छाति । ` उसकी छाती`

४.७.९ सकर्मक क्रिया का लिंग वचन कर्म के अनुसार रहता है । उदाहरण-

।मैंले रोटी खाइ । ` मैं रोटी खाई`

।वीले बाटा खायान । ` उसने रोटियांखाईं `

।सिपैले गोलि चलाइ । ` सिपाही ने गोली चलाई `

४.७.१० कर्म सप्रत्यय होने पर क्रिया पुल्लिंग एक वचन में मिलती है । उदाहरण-

। वीले चोरि करन्थान मान्यु । `उसने चोरी करने वाला को मारा`

।इजाले नानास् दूध दीइ । ` मां ने बच्चे को दूध दिया`

४.७.११ अप्रत्यय कर्म वाली वाक्य रचना में यदि दो कर्म हो तो क्रिया का लिंग वचन निकटतम कर्म के अनुसार रहता है । उदा-

। मैंले चटनि और भात खाइ । ` मैंनेचटनी औउ भात खाया`

सभी कर्मों का ।सबै। में अन्तर्भाव भी हो जाता है । उदाहरण-

।वीले दूध दै फल सब खाइ । ` उसने दूध दही, फल सब खाया`

कर्म सप्रत्यय होने पर भी ।सबुन। में सभी कर्मों का अन्तर्भाव संभव है । उदाहरण-

।मैंले आपुनी घर, देलि, छानी सबुन देखियु । ` मैं अपना घर, देहरी, छानी सबको देखा,`

४.७.१२ यदि द्वितीय कर्म प्रथम के विधेय के रूप में हो तो क्रिया का लिंगवचन प्रथम के अनुसार रहता है । उदाहरण-

।राजाले ठुलु च्यालास युवराज बनाइ । ` राजा ने बड़े लड़के को युवराज बनाया `

४.७.१३ परसर्गयुक्त कर्मकारक का विशेषण पुल्लिंग में ही मिलता है —

।मैं भाइस भलो मान्छु । ` मैं भाई को अच्छा मानता हूं `

।मैं बैनिस भलो मान्छु । ` मैं बहिन को अच्छा मानता हूं `

[illegible] बिना परसर्ग वाले कर्मकारक में भी मिल सकती है । उदा-

।मैंले पोथि लिखि [illegible] ।

।मैले माया निकोमानछ्य ।

४.७.१४ यदि दो या अधिक संज्ञायें एक ही कारण से संबंधित रहती हैं तो कारकीय परसर्ग अन्तिम क्रम से संबद्ध रहता है । उदाहरण-

। मैं आपुन चीजबस्तश लही बेर एक तरफ चलि दियूं ।

` मैं अपनी चीज, वस्तु को लेकर एक तरफ चल दिया `

४.८ अधिकार

कुछ रूप सहवर्ती रूपों को शासित करते हैं अथवा अपेक्षा रखते हैं या साथ लेते हैं । वाक्यान्तर्गत इनकी स्थिति अभिशासन या `अधिकार ` की जैसी रहती है ।

४.८.१ पिठौरागढ़ी में कारक परसर्ग जुड़ने से पूर्व नाम शब्दावली विकारी रूप ग्रहण करती है । इस प्रकार दो विकल्प रूप प्रतिलक्षित होते हैं । ये रूप क्रिया एवं क्रिया रूपों से अभि शासित होते हैं । उदाहरण-

।तैं लहै । ` तू ले `

।त्वैश लिन्छ । ` तुम्हें या तुझको लेना है`

। कै लहुन्यो । ` कोई ले `

। कैश लिन्छ । ` किसको लेना है`

। चेलो खालो । `लड़का खायेगा `

। च्याला ले खाइ । ` लड़के ने खाया`

। च्यालाश दिय । ` लड़के को दो `

४.८.२ प्रधान उपवाक्य आश्रित वाक्यों को अभिशासित करते हैं । उदाहरण अनपेक्षित है ।

४.८.३ एक वचन का कर्ता सम्मान का भाव द्योतित करने के लिए क्रिया को बहुवचन में अधिकृत किये रखता है :

।मास्टरसैब ऐ ग्यान । ` मास्टर साहब आ गये`

।वीकाबाबा मरिग्यान । ` उसके पिता मर गये`

।गांधि महात्माछ्या । ` गांधी जी महात्मा थे`

४.९ वाक्य में पदों का क्रम उनके प्रकार एवं अभिप्राय के अनुसार मिलता है । प्रत्येक प्रकार के वाक्य में पदक्रम निश्चित रहता है ।

४.९.१ साधारण कथनात्मक वाक्यों में पदों का क्रम इस प्रकार मिलता है -

कर्ता, कर्म क्रिया अर्थात पहले कर्ता, फिर कर्म

तत्पश्चात अन्त में क्रिया रहती है ।

।राम रोटो खांछ । ` राम रोटी खाता है `

।वु निको मैस छ । ` वह अच्छा आदमी है `

४.६.२ विशेषण विशेष्यों के पूर्व आते हैं । उदाहरण-

।कालो आदिमि निको । ` काला आदमी अच्छा है `

४.६.३ क्रिया विशेषण क्रिया के पूर्व आते हैं । उदाहरण-

। वु आज आछ । ` वह आज आया `

। तैं वां जालै । `तू वहां जायेगा`

। सैजलै हिटे । ` धीरे से चलना `

४.६.४ करण कारक कर्मकारक से प्रायः पूर्व आता है । उदाहरण-

।मैं कलमैलै चिट्ठि लेखछु। ` मैं कलम से पत्र लिखता हूं `

पश्चात भी आ सकता है । उदाहरण-

।मास्टर च्यालान छड़िलै मारगाछ । ` अध्यापक लड़कों को छड़ी से मारता है` ।

४.६.५ सम्प्रदान कर्ता तथा कर्म के बीच रहता है । उदाहरण-

। वु मैखिन मिठै ल्यालौ । ` वह मेरे लिए मिठाई लायेगा`

४.६.६ अपादान कर्ता तथा क्रिया के मध्य आता है । उदाहरण-

।गंगा पहाड़बटि आंछि । ` नदी पहाड़ से आती है `

४.६.७ अधिकरण कारक कर्ता तथा क्रिया के मध्य अथवा वाक्य के आरम्भ में रहता है । उदाहरण-

। वु पाख में ग्यौछ । ` वह छत में गया `

। गोठ गोरु छन । `गौशाला में गाय `

४.६.८ सम्बोधन कारक वाक्य क आरम्भ में आता है । उदाहरण-

। औ च्याला । यां औ । ` ओ बेटे यहां आ `

। हे भगवान क्या करुं । ` हे भगवान ! क्या करुंगा ?`

४.६.९ प्रश्नवाचक वाक्य में कर्ता कर्म क्रिया का क्रम यथावत् रहता है, प्रश्नवाचक शब्द वाक्य के आरम्भ, मध्य तथा अन्त तीनों स्थितियों में मिलता है । आरम्भ वह कर्ता की स्थिति ग्रहण करता है । उदाहरण-

। को छ । ` कौन है ? `

वाक्य के मध्य में प्राय: क्रिया का विस्तारक होता है । उदाहरण-

।सु कां जांछ । ` वह कहां जाता है`

अन्त में आकर `हां` या `ना` रूप में प्रतिफलित होता है । उदाहरण-

।सु जाली कि । ` क्या वह जायेगा`

। तैं आलेछ । ` तू आयेगा क्या ?

४.६.१० निषेधात्मक पदकर्ता के बाद आते हैं । उदाहरण-

। मैं न जूं । ` मैं नहीं जाऊंगा`

। सु नै पड़ । ` वह नहीं सोयेगा`

। पीले न क्रयो । `उसने नहीं किया `

।बिना। शब्द वाक्य के आरंभ और मध्य में आ सकता है । उदाहरण-

।बिना पीकू काम न हो । ` बिना उसके काम नहीं होगा

।पीकू बिना काम न हो। " "

।जन। `मत` वाक्य की तीनों स्थितियों में मिलता है । उदाहरण-

।जन करे । ` मत करना `

।त्वां जन जाये । ` वहां मत जाना `

।खाये जन । ` खाना मत `

४.६.११ द्विकर्मक क्रियाओं में गौण कर्म पहले और मुख्य कर्म पीछे आता है :

।मैंले गोरुख काड़ दीछ । ` मैंने गाय को घास दी`

। गोरुले बाच्छाश दूध दीछ । ` गाय ने बछड़े को दूध दिया ।`

४.६.१२ अवधारण के लिए उपर्युक्त क्रम में अन्तर पड़ जाता है :

।क। कर्ता और कर्म का स्थानान्तरण -

।गोरु मैंले नै चाया। ` गाय मैंने नहीं देखी`

।ख। करण सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण आरम्भ और अन्त में भी आ सकते हैं :

करण- ।म्यारपिति यो नहुनु । ` मेरे द्वारा यह नहीं होगा`

।होलो यो त्यारपिति । ` होगा यह तेरे द्वारा`

सम्प्रदान-

। मैं हीं से ल्यालो सु एक केलो ।

`मेरे लिए भी लायेगा वह एक केला`,

।मं एक चीज ल्यूंलत्वैखिन । ` मैं एक चीज लाऊंगा तेरे लिए `

आदान-

।घर बठे आलु ।   ` घर से आयेगा वह `

।वुले आलो घर बठे। ` वह नी आयेगा घर से `

अधिकरण-

।घर मैं वीकुकि आदिमिछन । ` घर मैं उनके दो आदमी हैं `

।कि आदिमि छन वीकुघर मैं । ` दो आदमी हैं उनके घर मैं `

सम्बन्ध-

।कैकु यो गड़ो । ` किसका है यह खेत `

।यो गड़ो छ कैको। ` यह खेत है किसका `

।ग।   अन्यत्र अनेक उदाहरणों मैं उक्त क्रम परिवर्तन मिलता है :

।बटी पैक   ।   ` तैयार हो फिर तू अब `

।को जालो पै वां   ।   ` कौन जायेगा फिर वहां `

।त्पुर धैका वि बटव्वाश। ` वह देखा तो उस राहगीर को `

आदि ।

४.१० अतिसण्डीय तत्व

वाक्य मैं पद क्रम वही रहने पर भी अतिखण्डीय तत्वों के योग से वाक्याभिव्यक्ति परिवर्तित हो जाती है । इनमें सुर तथा बल प्रमुख हैं ।

४.१०.१ एक प्रकार की संरचना मैं प्रयोजन की दृष्टि से सुर योजना के अनुरूप भिन्न भिन्न सुर रेखायें बनती हैं । उदाहरण-

।मैले खाछ ।   ।सामान्य कथन।

।मैले खाछ ।   ।प्रश्न सूचक ।

मैले खाछ !   ।आश्चर्य सूचक।

इस प्रकार पदक्रम वही रहते हुए भी वाक्यों मैं सुर के कारण अन्तर मिलता है ।

५

बोली विभेद

बोली विभेद

५.० विवेच्य बोली में स्थानगत विभेद के साथ साथ विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में भी वैविध्य दृष्टिगत होता है । इन वैविध्यों के आधार पर पिठौरागढ़ी का बोलीगत विभाजन प्रस्तुत प्रकरण में अभिप्रेय है । इस विभाजन के दो आधार हैं :

।क। स्थान वैभिन्य, एवं ।ख। जाति वैभिन्य,

स्थानगत तथा जातिगत दोनों ही विभेद ध्वन्यात्मक एवं रूपात्म विभेद प्रमुख हैं ।

५.१ स्थानगत विभेद

इस दृष्टि से विवेच्य संभाग को प्रमुख क्षेत्रों में विभाज्य है :

।१। सोर्‌याली बोली क्षेत्र - इस क्षेत्र में व्यवहृत बोली `सोर्यालि बोलि ` नाम से जानी जाती है ।

।२। गंगोली क्षेत्र - इस क्षेत्र की बोली को `गङोलि बोली ` कहा जाता है ।

सोर्यालि बोली का प्रभाव क्षेत्र पिठौरागढ़ प्रमुख से पूर्व में झूलाघाट , उत्तर में धारचूला, दक्षिणी सीमान्त तथा पश्चिम में राम गंगा तक विस्तृत है । यद्यपि इस क्षेत्र में भी कतिपय उपविभेद हैं तथापि वे अन्य बोलियों के प्रभावमात्र हैं, जो यथास्थान उल्लेख्य हैं । सोर्याली बोली क्षेत्र से पश्चिम का क्षेत्र गंगोली बोली का है । पिठौरागढ़ संभाग के पूर्व एवं पश्चिमोत्तर क्षेत्र में डोट्याली बोली[१] का प्रभाव मिलता है तथा दक्षिणी सीमान्त में कुमय्यां बोली की किंचित छाया परिलक्षित होती है ।

५.१.१ ध्वन्यात्मक स्तर पर विभेद

उक्त दोनों क्षेत्रों में कुछ भिन्न ध्वनि प्रवृत्तियां मिलती हैं जिनमें से कुछ स्पष्टत: वर्ण्य हैं ।

१- पिठौरागढ़ से पूर्व काली नदी के पार पूर्वी क्षेत्र डोटी कहलाता है, वहां के निवासी डोट्याल तथा उनकी भाषा डोट्याली कहलाती है ।

५.१.१.१ सोयांली में जहां ।न। प्रयुक्त होता है, गंगोली में वहां ।ण। तथा गंगोली में जहां न रहता है वहां सोयांली में ।ण। या ।ड़। मिलता है । उदाहरण-

सोयांली	गंगोली	
।पानि।	।पाणि ,पाड़ि ।	`पानी`
।कांनो।	।काणा, कांडो।	`काना`
।काणा।	।कानो ।	`कांटा`
।घुणो ।	।घुनो ।	`घुटना`
।श्यैनि ।	।श्यैणि, श्यैड़ि।	`स्त्री `
।बन ।	।बंण, बंड़।	`बन`
डुनियां ।	।डुणियां, डुड़ियां ।	`डुण `

यदि । क ख क ख क । मध्य तथा अन्त्य व्यंजन ध्वनियां सोयांली में न् है तो मध्य न् के स्थान पर गंगोली में न् यम ण् मिलता है । उदाहरण -

कुनान	कुनन, कुणान ,	` कहते हैं , कोने में ,
जानान	जानन, जांणाने,	` जाते हैं,`
नानान	नानन माणान,	` बच्चों को `

गंगोली के दक्षिणी भाग में ।ण । तथा अपेक्षाकृत उत्तरीभाग - नाचिनी , मुन्स्यारी, आदि क्षेत्रों में ।ड़। का प्रयोग सोयांली के ।न। के स्थान पर प्रायः मिलता है । उदाहरण-

पूर्व	गंगोलीहाट,बेरीना	नाचनी, मुन्स्यारी	
श्यैनि	श्यैणि	स्याड़ि	`सत्री`
जाना	जाणा	जांड़	`जाना`
पानि	पाणि	पाड़ि	`पानी`
खानो	खाणा	खाड़	`खाना`
जन	जणि	जंड़	`मत `
बनालि	बणालि	बड़ालि	`बनायेगी`
बैनि	बैणि	बैड़ि	`बहिन `

यदि मध्य ।ड़। हो तो न् के स्थान पर न् ही मिलता है --

।पड़न । ।पड़न। `पढ़ना`

५.१.१.२

सोरयाली में प्राप्त ल् के स्थान पर गंगोली में कही ।व।
तथा कहीं ।र। भी मिलता है । उदाहरण-

सो०	गंगोली	
विराल्	बिराव्	`बिल्ली`
मोल	मोव	`कल`
फल	फव	`फल`
होटल	होटव	`होटल`

गंगोली के `गड़तिर` भाग में ।ल। के स्थान पर ।र। भी
मिलता है जो उपर्युक्त शब्दों में - ।बिराउ । , ।मोर। , ।फर।,
।होटर। , रूप में प्रयुक्त होता है ।

गंगोली में कहीं कहीं उक्त ।वाव । , ।ब। , भी परिश्रुत होता है -

काली	कावो	कावा	`काला`
ताली	तावो	तावो	`ताला `

५.१.१.३ सोर्याली बोली में तालव्यी करण की प्रवृत्ति विशेषता मिलती है ।

सो०	गंगोली	
ग्यो	गो	`गया`
भ्यो	भो	`हुवा`
हवै ग्यो	है गो	`हो गया`
न्हैग्यो	न्है गो	` चला गया`
क्यो	को	`कहा `

फलस्वरूप सोर्याली, गंगोली बोली की अपेक्षा अल्प, विवृत, है ।
क्योंकि इसमें ध्वनि उच्चारण में मुख अपेक्षाकृत पूरा नहीं खुलता है जैसा कि
गो ।गं०। ग्यो ।सो। को ।गं०। क्यो ।सो०। आदि
से प्रकट है । दूसरी ओर गंगोली बोली अपेक्षाकृत अधिक विवृत है जो
इसके ओकार से प्रकट है ।

५.१.१.४ सोर क्षेत्र के पूर्वापर भागों -- झूलाघाट, अस्कोट, जौलजीवी, धारचूला, ज् के स्थान पर झ , छ् के स्थान पर थ , तथा क के स्थान पर ग मिलता है। उदाहरण-

	सोर्याली-मुख्यभाग में	सोर्याली-पूर्वापर भाग में	
ज झ :	जांछु	झान्छु	`जाता हूं`
	जांछ	झान्छ	`जाता है`
	जालै	झालै	`जायेगा`
छ - थ :	कलमछि	कलमथि	`कलम थी`
	पढ़छ्यो	पढ़नथ्यो	`पढ़ता था`
	हिट्छ्या	हिट्थ्या	`चलते थे`

यह स्थिति केवल भूतकाल में आती है।

क- ग :	करछ	गर्छ	`करता है`
	करनर्यो	गरनलार्यो	`कर रहा है`
	कर्न्छ्यो	गरनथ्यो	`करना था`

५.१.१.५ सोर्याली बोली में व्यंजन संयोग विशेष स्थान रखता है। यह संयोग प्रायः द्वित्व व्यंजन के रूप में परिलक्षित होता है। उदाहरण-[२]

गं०	सो०	
काचो	काच्चो	`कच्चा`
बाछो	बाच्छो	`बछड़ा`

२- इस दृष्टि से पिठौरागढ़ी का गंगोली रूप हिन्दी के निकट है। ऊपर दिये गये गंगोली तथा हिन्दी रूपों में मुख्यतः अन्त्य स्वरमुख्यतः के कारण अन्तर है। हिन्दी में आकारान्त रूप है तथा गंगोली में ओकारान्त किन्तु सोर्याली में इतना तो है ही, साथ ही व्यंजन संयुक्तत्व भी है।

सांचो	शांच्चो	`सच्चा`
पाको	पाक्को	`पका`
टूटो	टूट्टो	`टूटा`
फुटो	फुट्टो	` फूटा`
कुटो	कुट्टो	`गोड़ाई` `करने का औजार`
हाथि हानि	हात्थि हाथि	`हाथी`

५.१.१.६ गंगोली बोली अपेक्षाकृत कठोर ध्वनियाँ संजाये है जबकि सोर्याली मैं ।न। , ।म। जैसे मृदु व्यंजनों का व्यवहार पर्याप्त होता है ।
उदाहरण-

सो०	गं०	
।खान्र्योछ ।	।खांड़ोछ।	` खा रहा है `
।कुन्र्यो ।	।कूंड़ो ।	` कह रहा `
।जान्र्यो ।	।जांड़ो ।	`जा रहा `

उपलिखित ।ड़। - ङं अथवा ।ं। भी परिश्रुत होता है ।
सोर्याली के ।ल। के स्थान पर भी कुछ शब्दों में गंगोली में ।ड़। रहता है । उदाहरण-

सो०	गं०	
चल्ली	चड़ो	`चिड़िया`

५.१.१.७ गंगोली में स्वरों का अघोषीकृत रूप भी परिश्रुत होता है । स्पर्श व्यंजनों में अपेक्षाकृत तनाव कम मिलता है । संघर्षी के स्पर्श संघर्षी ध्वनियां भी उच्चारण में अपेक्षाकृत कम तनाव चाहती है । ये तथ्य उक्त बोली को सुनकर सहज ही जाने जा सकते हैं । इस विशेषता के कारण गंगोली बोली में संरचनों की संख्या भी अपेक्षाकृत अधिक है । ।अ, इ, उ, ए, ओ, औ । के फुसफुसाहट तथा व्यवहार्य व्यंजनों की अपेक्षाकृत अल्प तनाव वाली स्थिति इसी प्रवृत्ति के परिणाम हैं ।

५.१.२ रूपिमिक विभेद

विवेच्य दोनों बोली रूपों में सभी दिशाओं में रूपात्मक भेद मिलता है ।

५.१.२.१ संज्ञा रूप

ऊपर ।न। , ।ण। , ।ल। , ।ड़। , की स्वनात्म स्थिति की ओर संकेत किया गया है। उक्तविभेद रूपात्मकस्तर पर भी विचार्य है। जिन संज्ञाओं प्रातिपदिक रूपों के मध्य अथवा अन्त्य स्थिति में सोर्याली बोली में ।न। आता है, वहां गंगोली में प्रायः ण मिलता है :

सो०	गं०	
।कनका।	।कणका।	`चावल के टूटे हुए दाने`
।बानो।	।बाणो।	`बाफं, मन्द बुद्धि`
।सनकि।	।शणकि।	`सनकी`
।नुन्न लुन।	।लुण।	`लवण`
।बन।	।बण।	`वन`

जिन संज्ञाओं के अन्त में सोर्याली में ।ल। रहता है वहां गंगोली में प्रायः ।व। या ।ब। मिलता है :

।ब्याल्।	।ब्याव, ब्याब।	`शाम हवा`
।माल।	।माव, माब।	`माल`
।खाल।	।खाव, खाब।	`बावड़ी, चमड़ा`
।तल	।तब।	`नीचे`.

।ल। के स्थान पर ।ब। की स्थिति से यह भी प्रकट होता है कि गंगोली में अन्त्य ।ल। के लोप की प्रवृत्ति है। यह बात अन्य उदाहरणों में ज्ञातव्य है :

।तलि।	।तह तह।	`नीचे`
।मलि।	।मह।	`ऊपर`
।गलि।	।गह।	`गलना`
।बलि।	।बह।	`जलना`
।मलो।	।मवो।	`ऊपरी`

यह स्थिति मध्यग ।ल। के विषय में पाई जाती है :

।खुवा।	।खउवा।	`खुवा`
।मुल्वा।	।मुवा।	`लड़का`

५.१.२.२ सर्वनाम

सर्वनामों के लिए दोनों क्षेत्रों में भिन्न रूप प्रयुक्त होते हैं।

उदाहरण-

सो०	गं०	
।मैं ,मि।	।म,मैं, मुँ, मुं ।	`मैं`
।तैं।	।तु।	`तू`
।तैं ले।	।तीले त्वीले।	`तूने`
।उनुश।	।उनन।	`उनको`
।आपुनो।	।आपुराणो।	`अपना`

५.१.२.३ विशेषण

।निको।	।भलो,भवो।	`अच्छा`
।घिनो।	।गये।	`बुरा` खराब`
।कालो।	।कावो।	`काला`
।लाल।	।लाव।	`लाल`
।पींला।	।पियंव।	`पीला`

पियंव का अन्त्य व कहीं कहीं । । भी परिवर्तित होता है, अर्थात -।पियंव पिय । ध्वनि से युक्त अन्त्य रूप भी है -

। मैल । मैव मे ।

५.१.२.४ क्रिया रूप

।क। सोर्याली क्षेत्र के पूर्व तथा पूर्वोत्तर भाग में भूतकाल में छ के स्थान पर थ युक्त रूप मिलते हैं। उदाहरण-

।छ्यो।	।थ्यो।	`था`
।छ्या।	।थ्या।	`थे`
।छि।	।थि।	`थी`
।बैरेछ्यो।	।बैथ्यो।	`गया हुवा था`

।ख। क्रिया भूतकाल के निम्नलिखित रूपों में ओ के स्थान पर औ मिलता है :

सो०	गं०	
।म्यो।	।-भौ।	`हुवा`
।गैछ्यो।	।-गौछ्यो।	`गया था`
।क्यो।	।कौ।	`कहा`
।कछ्यौं।	।करौं।	`किया`

।ग। क्रिया अपूर्ण काल के रूपों में सोर्याली तथा गंगोली में अन्तर है --

सो०	गं०	
।जान्र्यो।	।जारा गौं।	`जा रहा है`
।जान्छ्योछा।	।जारा छा, जाड़छा।	`जा रहे हो`
। कर्न्मैछ्या।	। करा छ्या।	`कर रहे थे`

अपूर्ण काल में उक्त रूपों के अतिरिक्त अन्य भेद भी द्रष्टव्य हैं-

गंगोली	सो०	
।जारायूं।	।जा मरयूं।	
। या	। जाम्मरयूं।	
।जान्लारयूं।	।जान्मरयूं।	`जा रहा हूं`
। या	।जानूला गिरयूं।	
।जांड़ारयूं।	। जानूनयूं।	

प्रत्येक विभेद के ये विभिन्न रूप एक ही क्षेत्र में व्यक्ति विभेद से परिश्रुत होते हैं।

उक्त उदाहरणों से प्रकट है कि अपूर्णकाल में सोयाली में गंगोली बोली से अधिक क्रिया रूप मिलते हैं। अपूर्ण काल का उपर्लिखित मु युक्त रूप सोयाली का अपना है । ।लागिरयूं। रूप अल्मोड़ी की बोली के प्रभाव से है जो अधिक सम्पर्कशील व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त होता है। ।न्न। ।उदा- जान्मयूं। इस प्रकार का रूप कुमय्यां बोली के प्रभाव से मिलता है। अन्य रूप वैकल्पिक रूप से व्यवहृत होते हैं । प्रयत्नलाघव से ।लागिरयूं। के स्थान पर ।लारयूं। भी परिलक्षित होता है। सोर के पूर्वी तथा पूर्वोत्तर भाग में । करिछ्या। के स्थान पर ।मर्‍यो। `किया`, ।किकुर्न्योछै। के स्थान पर ।किरनलायुंमा।, जैसे रूप डोट्याली बोली

के प्रभाव केके फलस्वरूप मिलते हैं । ।जानूं। के स्थान पर ।फानूं। जैसे रूप भी उक्त प्रभाव के ही कारण है ।

वैरीनाग क्षेत्र में क्रिया रूपों में सोरयाली के ।नु। के स्थान पर ।रा। तथा ।ड़। युक्त रूप रहते हैं :

।बनाफलि ।	।बड़ालि।	` बनायेगी `
।बनी ।	। बड़ी ।	` बना `
।जान्मरयूं।	।जांरायूं, जांड़यूं ।	` जा रहा हूं `
।जान्मर्‌यो।	। जांड़ी ।	`जा रहा है`

।घ। कनाली छीना तथा अस्कोट उपक्षेत्र में क्रिया रूपों में लाघवता परिलक्षित होती है । उदाहरण-

सोर घाटी	कनाली छीना और अस्कोट	
।भ्योछ।	।-भिछ।	`हुवा `
।ग्योछ।	। गिछ।	`गया `
। क्योछ।	। किछ।	`कहा `

इन्हीं क्षेत्रों में क्रिया वर्तमान काल में अनुनासिक स्वर के स्थान पर नासिक्य व्यंजन मिलता है :

।रंछ ।	। रन्छ।	` रहता है`
।जांछ।	।भान्छ।	` जाता है`

।ङ। सम्भावित भविष्य काल में गंगोली बोली में रूप विस्तार मिलता है ---

सो०	गं०	
।हुनो ।	।हुनेनो ।	` होता होगा`
।जानो हुनो ।	।जारा हुनेलो।	` जाता होगा`

५.१.२.५ क्रियार्थक संज्ञा

सोर्याली में क्रियार्थक संज्ञा रूपिम ।-न-। है और गंगोली बोली में ।-रा-। अथवा ।-ड़-। :-

सो०	गं०		
।जांनी।	।जांराती	जांड़ी ।	`जाना`
।खांनी।	।खांराती	खांड़ी ।	`खाना`
। गानी।	।गाराती	गाड़ी ।	`गाना`
।हिटनी।	।हिटराती	हिटड़ी।	`चलना`
।बानी ।	।बाराती	बाड़ी ।	`खेत जोतना`

५.१.२.६ लिंगवचन कारक

लिंग एवं वचन सम्बन्धी कोई उल्लेखनीय भेद नहीं मिलता है। कारक रचना किंचित वैभिन्य र..ती है। यह विभिन्नता विकारी कारक तक ही सीमित है --

सो०	गं०	
।च्याला।	।च्याया ।	`लड़के`
।क्याला।	।क्याया ।	`केले`
।तैं ।	। त्वी ।	`तुझ`
।मैं ।	।मू ।	`मुझ`
	।किन्तु सर्वत्र नहीं ।	
।बाटान।	। बाटरा ।	`रास्ते`
।नानान।	।नानन नानरा।	`छोटे`
।जानान।	।जानन।	`जाते`
।हुनान ।	।हुनन।	`होते`

५.१.२.७ क्रिया विशेषण

क्रिया विशेषणों के अन्तर्गत विभेदात्मक दृष्टि से स्थान वाचक क्रिया विशेषण उल्लेख्य है। गंगोली में -थ से युक्त रूप प्राय: नहीं मिलते हैं जबकि सोर के पूर्व तथा पूर्वोत्तर उपक्षेत्रों में स्थानवाचक क्रियाविशेषणों के साथ -थ मिलता है ----

।कां ।	।कथ।	`कहां`
।जां ।	।जथ।	`जहां`
।तां ।	।तथ।	`तहां`
।यां ।	।इथ।	`यहां`

।वां। ।उथ। `वहां`

गंगोली और सोर्याली में निम्नलिखित प्रकार के शब्दों में भेद परिलक्षित होता है :

सो०	गं०	
भितर	भितैर	`भीतर`
तल	तव	`नीचे`
		आदि ।

५.१.२.८ परसर्ग

सोर्याली तथा गंगोली बोलियों की परसर्गीय व्यवस्था कहीं कहीं पर्याप्त विभेद रखती है । सोर्याली में अपेक्षाकृत परसर्गात्मक विकल्प कम मिलता है । जबकि गंगोली में अधिक विकल्प परिलक्षित होता है । उदाहरण-

	सो०	गं०	
कर्ता	।लै।	।लै यै ।	`ने`
कर्म	।शं।	।कैं करिाा कहिं ।	`को`
करण	।पिति।	।है।	`द्वारा`
सम्प्रदान	।रिवन रवीं।	।हुं हुरिाा लिज्या ।	`के लिए` `लिए`
अपादान	।बटे है ।	।बटी, बै, बठि।	`से`

आवागमन की आधुनिक साधन सुलभता के साथ-साथ परस्पर सम्पर्क बढ़ने के कारण उक्त परसर्गात्मक विभेद कम होता जा रहा है और प्राय: परसर्गों का प्रयोग मुक्त परिवर्तन सुना जा सकता है । सोर्याली के अन्तर्गत कनाली छीना, अस्कोट, धारचूला, उपक्षेत्रों में कर्ता परसर्ग प्रयोग कहीं ।ली तथा कहीं ।ल। रूप में परिश्रुत होता है । उदाहरण-

।मैंले । ।मैंल् । `मैंने`

५.१.२.६ निपात

परसर्गों की भांति निपातीय रूप भी बहुत कुछ अन्तर वाले हैं । यथा-

सो०	गं०	
मैंले	मैंर	`मैं भी`

उलैं	उलैऐ	`वह भी`
वांतक	वांले	` वहां तक`

स्थानगत उपविभेद

५.१.३ ऊपर विवेच्य संभाग को दो प्रमुख दोत्रों में विभाजित करके उनमें परस्पर बोली विभेद दर्शाने की चेष्टा की गई है। सम्प्रति सम्भाग को प्रमुख स्थानों की बोली के पृथक पृथक अवलोकन द्वारा विभेद अधिक विस्तार से विवेच्य है।

५.१.३.१ पिठौरागढ़ खास की बोली

पिठौरागढ़ खास की बोली से प्रयोजन पिठौरागढ़ नगर के आसपास की बोली को ही मानक रूप में ग्रहण किया गया है।

ध्वनियों की दृष्टि से यहां संभाग के अन्य भागों की अपेक्षा ।नु। ।मु। ।ल। जैसे मृदु व्यंजनों का अधिक व्यवहार होता है। ।पानि। `पानी ` ।छौनि। `लड़की`, ।भोल। `आगामी कल`, ।जान्रयूं। `जा रहा हूं`, ।उन्मरयूं। `आ रहा हूं` आदि उच्चारों से यही प्रकट होता है जबकि अन्य अनेक भागों में उक्त उच्चारण क्रमश: ।पाड़ि पाणि।, ।छ्योड़ि।, ।भोव।, ।जाड़यूं जाणारयूं।, उंढ़ारयूं।, आदि भांति होता है। सामान्य भूतकाल में क्रियाओं के साथ तालव्यीकरण की प्रवृत्ति इसी भाग में मिलती है।

।ग्यो। `गया`, ।भ्यो। `हुआ`, ।क्यो। `कहा` आदि जबकि अन्यत्र इनके स्थान पर ।गो।, ।भो।, को। अथवा ।गिछ।, ।भिछ।, ।किछ।, जैसे प्रयोग मिलते हैं। कुछ रूपों में औष्ठीकरण की भी परिश्रुत होता हैं। उदाहरण-

।ह्वाला। `होंगे, ।ह्वैबेर। `होकर` ।क्वै। `कोई`, ।ज्वै। `जो`, ।क्वाड़ा। `कौना`, ट्वाला `बहरे` आदि।

परसर्गों में ।ले। `ने`, ।क्षा `को` ।पिति,क्यां। `द्वारा`, ।लिं, लिन। `लिए` ।है बटे। `से- अपादान` आदि प्रचलित हैं।

इस भाग में ।छ। का क्रिया रूपों में विशेष योग मिलता है :

।निकोछ । `अच्छा है` , । आछ। `आया है` ।मैं हूं। मैं हूं,

आदि से यही प्रकट होता है ।

५.१.३.१ वड्डा की बोली

वड्डा पिठौरागढ नगर से लगभग पांच मील पूर्व में है । यहां की बोली पर कुछ कुछ डोट्याली बोली का प्रभाव आने लगता है । जैसे क के स्थान पर ग् , उच्चारान्त में प, छ के स्थान पर थ् आदि इस बोली में मिलते हैं । उदाहरण-

।वी दिन ग्ये थ्यूं इस्कूल। `उस दिन गया था स्कूल`

।कां जांछि प । `कहां जाता है तो`

। न्है गेथ्यूं प । `चला गया था तो`

मानक सोरयाली के अपूर्ण काल सूचक रूपिम ।-न्र्यो। या ।न्र्यो। `रहा` के लिए वड्डा की बोली में ।बर्यो। मिलता है,

। पतो मैं चल बर्यो। `पता नहीं चल रहा`

। वु खान्बर्यो । `वह खा रहा है`

कहीं कहीं प के स्थान पर फ रहता है--

शैप शैफ :

।हमतुमयांकालिपारिफ शैफ् । `हम तो इसकालिपार के साहब`

वड्डा की बोली कुछ अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं -

।वां बढी थै कै बेर उतारर । `वहां से लेकर उतार हुआ`

।उस्ये नौ मैल थ्यो । `वैसे नौ मील था`

।उर्स्य बीस मैलोक फरक हैव जान्छ। `वैसे बीस मील का अन्तर हो जाता है ।`

।हमरै गडि खनौलि के मैन् । `हमारे पास खेती बाड़ी कुछ नहीं`

। वीमैं कुबेर तीन मूठ छाड़िबेर के न्हाति । `उसमें तीन मुट्ठी छोड़कर कुछ नहीं है ।`

।तन यां छिसदारिवालुम्या । `यों या वे यहां हिस्सेदारी वोलहुए`

वड्डा के जन सामान्य भी सम्मान से `जी` का प्रयोग करते हैं ।

५.१.१.३ झूलाघाट की बोली

झूलाघाट पिठौरागढ़ से लगभग पन्द्रह मील पूर्व में नैपाल और भारत के सीमान्त पर है। यह कालीनदी के किनारे पर है और इसके पूर्व कालीपर नैपाल का डोटी नामक इलाका है। सीमान्त पर होने के कारण यहां की बोली पर डोट्याली बोली का प्रभाव होना स्वाभाविक है। ज् की जगह झ्, क् की जगह ग्, अनुनासिक स्वर की जगह क्रिया शब्दों में नासिक्य व्यंजन इसी प्रभाव के परिणामस्वरूप है। आरम्भिक स्पर्शों पर प्राणत्व अधिक परिश्रुत होता है। उदाहरण-

।घ घर झान्छ। 'घर जाता है'

यहां घर अपेक्षाकृत अधिक प्राणतत्वयुक्त ।एस्पिरेटेड। है।

क के स्थान पर ग -

।येशो गरयूं। 'ऐसा किया'

उक्त उदाहरण में इ के स्थान पर य भी उल्लेखनीय है।

झूलाघट में प्रयुक्त होने वाले कुछ पद प्रयोग इस प्रकार हैं-[१]

दरबड़ 'जल्दी', बुतकि 'दावात'
टांग 'बटन' पस्या 'ठहरना'
डोटि 'चादर' घोल्च्या 'ताला'
कुरड़ी 'बातचीत' गैदागेडी 'नानातियां'
गैदा 'बच्चा' लौड़ि 'लाठी'
स्याल स्याल शुल शुल 'कानाफूसी'
हापुड़ि उपुड़ि 'अताश- उतावली दिखाना'
चुलि आंशि 'मांस काटने की उल्टी बांसी'
बुमोजिम 'अनुसार, कुरकानी' बातचीत'

अन्य उदाहरण-

।अब कि करन्छौ। 'अब क्या करता है'
।सुती गिछ। 'सो गया'
।वैसकन्छ। 'आ सकता है'

१- ये प्रयोग श्री शिवदत्त भट्ट, झूलाघाट जी के सहयोग से प्राप्त हुए हैं।

५.१.३.४ कनालीछीना की बोली

कनालीछीना पिठौरागढ़ से लगभग ग्यारह मील उत्तर में है। बोली विभेद की दृष्टि से इस स्थान में निम्नलिखित प्रवृत्तियां मिलती हैं :

वर्तमान कालिक क्रिया में कहीं कहीं अनुनासिक स्वर के स्थान पर नासिक व्यंजन मिलता है -

। न् । ,

उदाहरण :

जांछ जान्छ `जाता है`

खांछ खान्छ `खाता है` आदि।

क्रिया अपूर्ण वर्तमान काल में प्रायः ।-र्छ-। मिलता है --

किकरमर्छ्य । `क्या कर रहा है`

।जाम्मर्छ्य । `जा रहा है`

भूतकाल में ये ही ।किकरमथ्र्यो । `क्या कर रहा था`

।जाम्मथ्र्यो । आदि रूप में मिलते हैं।

सामान्य भूतकाल में ।क अ क। क्रम के रूप यथा, ।कि। `कहा` ।मि। `हुवा` , ।गि। `गया` , ह्रस्व स्वर युक्त है और पिठौरागढ़ खास की अपेक्षा लघु रूपात्मक है। ये रूप कनालीछीना में ।किथ्यो। , मिथ्यो।, की भांति भी सामाजिक अन्तर से व्यवहृत होते हैं। पिठौरागढ़ खास में उक्त उच्चारों के स्थान पर क्रमशः ।क्योछ।, म्योछ।, ।ग्योछ।, प्रयुक्त होते हैं।

भूतकाल की क्रिया `था` के लिये प्रस्तुत बोली में ।थ्यो। `थे` के लिए ।थ्या। , `थी` के लिए ।थि। उच्चरित होते हैं।

उत्तम पुरुषसर्वनाम ।मि, मी। `मैं` है, अन्य सर्वनामों में कोई विभेद नहीं मिलता है।

५.१.३.५ अस्कोट की बोली

अस्कोट पिठौरागढ़ से लगभग पच्चीस मील उत्तर में है। इस उपक्षेत्र की बोली में भी छ् की जगह फ , ह् की जगह थ् की श्रुति उल्लेखनीय है:

। वु दुकान फान्मरिछ ।	` वह बाजार जा रहा है `
। मैं फान्छु ।	`मैं जाता हूं `
। उ फान्छ ।	` वह जाता है`
।कामकि चीज् कांथि ।	`का म की चीज कहां थी`
।त्वैश जरूरी पढ़न थ्यो।	`तुम्हें अवश्य पढ़ना था `
। वुकां थ्या ।	` वे कहां थे `

अपूर्ण काल में म् , न् के स्थान पर विकल्प से प् परिश्रुत होता है----

करन्भ्र्ययोछ , करम्र्ययोछ - करन पैरिछा `

बस्कोट की बोली कुछ अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं --

।इजा चुल्यानि छ ।	`मां रसोई में है `
।रामस घर फान्थ्यो।	`राम को घर जाना था`
। चेलिबेटीन पढ़न फारयान।	` लड़कियां पढ़ने गई हैं `
।घर में तीन स्यैनिमान्स छन ।	` घर में तीन स्त्रियां हैं `
। चेलि खानाकु बनालि ।	` लड़की खाना बनायेगी`
। उन किबन मयू T छुन ।	` वे धंधा कर रहे होंगे `
।हिमालय बिठे गंगा निकन्छि ।	` हिमालय से गंगा निकलती है `

५.१.३.६ धारचूला की बोली

धारचूला पिठौरागढ़ से लगभग साठ मील उत्तर में है । यह स्थान भी भूलाघाट की तरह कालीनदी के किनारे नेपाल तथा भारत के सीमान्त पर है । यह उपक्षेत्र दो भिन्न भाषा की बोलियों का है । एक आर्य परिवार की बोली है जिसे कुमांउनी कहा जाता है और दूसरी आर्येतर परिवार की बोली जिसे यहां ` भोटिया बोलि` कहा जाता है । प्रस्तुत प्रसंग में आर्य परिवार की बोली ही विचार्य है । धारचूला की बोली में ज् की जगह झ्, छ की जगह थ् , क की जगह ग् , मिलता है । परसर्ग `से` के लिए ।बटि।, ` में ` के लिए ।मा ।लै। , कहीं कहीं में के लिए ।मन। , `को` या के लिए ` ।पै। और ।स्याख। ` का प्रयोग उल्लेखनीय है । भूतकाल के क्रिया रूपों में सोरयाली की भांति तालव्यीकरण

नहीं मिलता है । उदाहरण-

।ऊ किरन लाथ्यो । `वह क्या कर रहा था`

।मैं बजार बटि आयूं । `मैं बाजार से आया`

। वी थैं एक फल दे । `उसको एक फल दो`

।खानाकि व्याख्या खानाकछिय। `खाने के लिए खाना दो`

। वु घर भान्छ । `वह घर जाता है`

।तुमि स्कूल गछा । `तुम स्कूल गये`

यहां गछा का प्रयोग द्रष्टव्य है । सोर्याली में यह प्रयोग ।ग्योछा। रूप में मिलता है । इसीप्रकार ।भछ। `हुआ` ।कछ । `कहा` आदि रूप परिलक्षित होते हैं ।

क्रिया अपूर्ण काल में ।-ला-। का प्रयोग होता है -

।भान लार्यों । `जा रहा हूं`

।खान्लाथ्यों । `खा रहा था`

सर्वनामों में ।ऊ। `वह`, ।तुमि। `तुम` ।मैल। `मैंने` `मुझे` आदि रूप मिलते हैं -----

।मुथ्यां भान्दि । `मुझे जाने दो`

।ऊ कांबदी आछ । `वह कहां से आया`

।तुमि क्याकि नां अना २ `तुम क्यों नहीं आते`

बोली के अन्य कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखिति हैं :

।उननले काम गरनथ्यो । `उन्होंने काम करना था`

। चेलिया खानाकि बनालि। `लड़की खाना बनायेगी`

।उन कि गरनलाराछन । `वे क्या कर रहे होंगे`

।मुखथै पानि ल्या । `मेरे लिए पानी लाओ`

।वी थैं एक फल दो । `उसको एक फल दो`

। घर में तीन पुतारियां छन । `घर में तीन स्त्रियां हैं`

।तुमि भाना, उनि अनान । `तुम जाते हो, वे आते हैं`

५.१.३.७ गंगोलीहाट की बोली

गंगोलीहाट पिठौरागढ़ से लगभग अठारह मील पश्चिम में है । इस उपक्षेत्र के अन्तर्गत चौड़ापार, बेलपट्टि, हाट, मढ़ाविर मनार, कोठेरा, आदि इलाके बोली विभेद की दृष्टि से महत्व रखते हैं ।

५.१.३.७.१ चौढ़यार क्षेत्र में सर्वनामों में ।ऊ। `वह`, ।यूं। `मैं`, ।ऊं। `उन`, ।त्वे। `तुझे` ।तुमिले। `तुमने` आदि रूप उल्लेख्य हैं ---

।ऊ घर है आ । `वह घर से आया`

।यूं घर गयूं । `मैं घर गया`

।ऊं किकराला । `वे क्या करेंगे`

। त्वे पढ़ छ्यू । `तुझे पढ़ना था`

। तुमिले खारा ारिखिलाछ । `तुमने खाना खाया`

क्रिया रूपों की दृष्टि से निम्नलिखित प्रयोग द्रष्टव्य हैं --

।आयूं । `आया हूं`, ।ऐरछा । `आये हो`,

।किया । `किया`, ।गोछा । `गये थे`,

।पढ़मैर्याछि। `पढ़ रहा था`, ।खारा ानैरछ्यूं । `खा रहा था`

।जारा ार्छ्या । `जा रहे थे` आदि ।

यहां ।रा ा। का विशेष प्रयोग मिलता है --

।खांरा ाछिन । `खाने की है`, ।खारा ा बरा ालि । `खाना बनायेगी`, ।कररा ा हुनाला। `कर रहे होंगे` आदि ।

अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं :

।ऊं कसिकै आइन । `वे कैसे आये ?`

।किताब खरीदिन । `पुस्तक खरीदी`

।ऊ घर ग्यान । `वे घर गये`

।मां जांछु । `मैं जाता हूं` आदि ।

५.१.३.७.२ बेलपट्टी क्षेत्र की बोली

इस क्षेत्र की बोली चौढ़यार की बोली से निम्नलिखित रूप अन्तर रखती है । ।रा ा। का अधिक प्रयोग, क्रिया अपूर्ण काल में र की परिव्याप्ति, नासिक व्यंजन के स्थान पर अनुनासिक स्वर का प्रयोग ---

।पुस्तक पढ़रा ा लै रौछि । `पुस्तक पढ़ रहे थे`

।पढ़रा ा है यौंछि। `पढ़ रहा था`

।जौर्यां है । `जा रहे हो`

।जंछारछुं । `जा रहा हूं`

बोली के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं ----

।चेलि ले खाणा खाछ । `लड़की ने खाना खाया`

।उन मैस पढ़नैर्यान । `वे मनुष्य पढ़ रहे हैं`

।तु इस्कूल ग्योछे । `तू स्कूल गया`

। वीले की करौछ । `उसने क्या किया`

।चेलि गैराणी रैछि। `लड़की गा रही थी`

गंगोलीहाट खास को हाट कहा जाता है । व्यापारिक स्थल होने के कारण इसकी बोली का कोई एक स्थिर रूप अंकित नहीं किया जा सकता है । तब भी इस स्थान की बोली बैलपट्टी की बोली से अभिन्न है ।

५.१.३.७.३ गढ़तिर मनार क्षेत्र की बोली, गंगोलीहाट, की बोली के उपर्युक्त रूपों से कुछ परसर्गों जैसे, `से` के लिए ।बटी । , के लिए` हेतु ।हीं। आदि, क्रिया अपूर्ण काल जैसे, ।पढ़ायनि । `पढ़ रहे हैं, ।करायी। `कर रहे हैं`, ।लागिरैछ । रही है` आदि, सम्भावनार्थ में ।हुनोलो । ।हुनालो । , ।ल। की जगह ।व। यथा ।फव । `फल` जैसी दिशाओं में अन्तर युक्त है । अन्यत्र कोई उल्लेखनीय भेद नहीं है ।

गढ़तिमनार ।नाकुर। में बटी के स्थान पर ।बैठे। और ।है। दोनों प्रयोग मिलते हैं । मूं के स्थान पर मुं रहता है,

।उ कां बैठे आ ? । `वह कहां से आया ?`

।मुं देश है आयूं । `मैं शहर से आया`

कहीं कहीं ।ल। के स्थान पर ।व। तथा ।र। प्रयुक्त होता है --

।राम छै भोव पकताव होल । `राम के पास कल एक किताब होगी`

।वीले फर खाणा छि । `उसे फल खाना था`

सम्बन्धसूचक प्रत्यय शब्द के साथ मिलता है :

।राम मुहुना दगाड़ा छि । `राम मोहन के साथ था`

कर्मकारकीय परसर्ग का काम कर्ताकारक के परसर्ग ले से लिया जा सकता है -----

। रामलि घर जाणा छि । `राम को घर जाना था`

अधिकरण में परसर्ग के स्थान पर विभक्ति मिलती है :

। रिस्यान इज छै छ। `रसोई में मां है`।

क्रिया अपूर्ण काल में ।-लागि-। रूपांश का संयोग रहता है :

।आदिमि पड़रा लागि रयान। ` मनुष्य पढ़ रहे हैं`

।चेलि गैरा लागिरैछि। ` छात्रा गा रही है `

क्रिया पूर्ण भूत के रूप में लाघवता मिलती है :

।उंकैशिके आइन । ` वे कैसे आये थे `

५.१.३.७.४ कोठेरा गंगोलीहाट के निकट की बस्ती की कोठेरा में ` से ` के ।हैं।, `आया है ` के लिए ।उआंर्यो।, `किया ` के लिए ।करोछ। `जा रहे हो ` के लिए ।जां आंर्यो है। ` गा रहे के लिए ।गांआंर्यां। ल के स्थान पर ल छि - यथा ।मोलहि। `कल` ।फल। `फल` आदि लक्षण प्रमुख हैं। उदाहरण-

। उ कां हैं उआंर्योा । ` वह कहां से आया है ? `

।उले कि करोछ। ` उसने क्या किया`

। तु घरहीं जां आंर्यो है। ` तू घर जा रहा है `

।वी करिा फल खारा चैछिं। ` उसे फल खाना था`

। राम कैं भोलही किताब होलि। ` राम के पास कल किताब होगी` । आदि

५.१.३.८ बेरीनाग की बोली

यह क्षेत्र गंगोलीहाट से लगभग ८ मील उत्तर में है। यह गंगोली बोली का क्षेत्र है। बोली विभेद की दृष्टि से इसमें परसर्ग प्रयोग, कुछ सर्वनाम और क्रिया रूप आदि विभिन्नतायुक्त परिलक्षित होते हैं।

उदाहरण-

।उ बजार मिटै आ। ` वह बाजार से आया`

।तीम कहै बाछा । ``तुम कहां से आये हो ?`

।वील कि करछ । `उसने क्या किया ?

।तीम इस्कूल जाइरछ्या । ` तुम स्कूल गये थे`

।त्वे करिम पढ़ेछ छ । ` तुम्हें पढ़ना है `

।चेलिनैलि पांरिा पीछ। ` लड़कियों ने पानी पिया`

।मि फलं खांडछ्यूं । ` मैं फल खा रहा था`

।न। के स्थान पर ।ड़। या ।रा। प्रयुक्त होता है --

।उ बजार जांड़ौ । `वह बाजार जा रहा है`

।प्राथना क्णीयां । `प्रार्थना कर रहे हैं`

।गीत गैरागान । `गाना गा रहे हैं`

।स्याड़िमि जांड़ान । `स्त्रियां जाती हैं`

।खांड़ीकी खाछ । `खाना खाया`

।खांड़ै की बड़ालि । `खाना बनायेगी`

ल के स्थान पर व मिलता है -----

। वि फव खाराा छि । `उसको फल खाना था`

।मैंकैं भोवहीं पुस्तक होलि । `मेरे पास कल पुस्तक होगी`

भूतकालिक क्रिया ।कर्मवाच्य। में कृ नहीं रहता है ---

।पुस्तक मिलि । `पुस्तक मिली`

।पुस्तक मिलिन । `पुस्तकें मिली`

उल्लेख्य है कि इन स्थलों पर सोयांली में ।मिलछ्य। , ।मिलछ्यन। जैसे प्रयोग मिलते हैं ।

पुल्लिंग पक्ष्यार्थ संभाव्य दशा के लिए ।-य-। का संयोग रहता है:

। हुन्यौलो । `होता होगा`

बोली के अन्य उदाहरण इस प्रकार हैं --

।किरराा लागि रा हुन्याल । `क्या कर रहे होंगे`

।कलम मेज मैं हुनेति । `कलम मेज में होगी`

। उ पंडितारााछ । `वह अध्यापिका है`

।चेलिलि खांराा खिछाछ । `लड़की ने खाना खाया`

।तैं किताब पढ़नौ राछिये । `तुम पुस्तक पढ़ रहे थे`

।मिं घो घढ़ुं जा छुं । `मैं पढ़ने जा रहा हूं`

।तैं इसकूल गिछै । `तुम स्कूल गये थे`

५.१.२.६ थल की बोली

यह बेरीनाग से लगभग ग्यारह मील पूर्व में राम गंगा के किनारे का क्षेत्र है । इस स्थान की बोली प्रयोग एवं रूप.की दृष्टि से विभिन्नता लिये हुए है :

नाम और परसर्ग प्रयोग --

।उं कां बैठे आछ । ` वह कहां से आया`

।मुं शहर आयुं । ` मैं शहर से आया`

।चेलियो ले पडिच्छ । ` लड़कियों ने पढ़ा `

।तीले पड़िच्छ । `तूने पढ़ा `

। मोहना दगाड़ । ` मोहन के साथ `

।मु त्यास्था पानि ल्या । ` मेरे लिए पानी लाओ `

।सन्थ पकुन्था भितर इजा छै छ । `रसोई में मां है `

क्रिया--

थल की बोली में सहायक क्रिया ।छ। के स्थान पर ।च्छ। का व्यवहार उल्लेखनीय विशेषता है। क्रिया रूपों में ।क। के स्थान पर ।ग। भी द्रष्टव्य है :

।क्या पड़च्छै । ` क्या पढ़ता है `

।शहर गैच्छ । `शहर गया था `

।आच्छै । `आये हो `

।उले क्या गरिच्छ । ` उसने क्या किया `

।घर जान मरैच्छै । ` घर जा रहे हो `

।क्या गरममरिच्छा । ` क्या कर रहे हो`

।उ जानच्छी । `वह जाती है

।पानि खाच्छ । ` पानी पिया `

अपूर्ण काल में ।-म्पुर्-। का योग थल की बोली की दूसरी प्रमुख विशेषता है :

।किताब पढ़न मर थै । ` किताब पढ़ रहे थे `

।जान मरयूं । `जा रहा हूं `

।गरन मरयूं । `कर रहा हूं `

।गान मुयान । `गा रहे हैं ` आदि ।

वस्तुत: उक्त रूपों से प्रकट होता है कि थल वह स्थल है जहां सोयांली बोली का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होने लगता है । ।-म्पर। युक्त क्रिया रूप सोयांली में उपलब्ध है ।

।छ। के स्थान पर ।थ। मिलने लगता है --

।खान थ्यो । ` खाना था`

।पढ़न थ्यो । `पढ़ना था `

भविष्य काल सूचक रूपिम द्वित्व रूप में मिलता है :

।एक किताब होल्लि। ` एक किताब होगी `

सम्भाव्य दशा ।हो। के संयोग से प्रकट होती है :---

।उं पढ़न मरयो हो । ` वह पढ़ रहा होगा `

। कलम मेज मैं हुनि हो। `कल मेज मैं होती होगी`

सोरयाली प्रश्न सूचक ।के । के स्थान पर ।क्या। प्रयुक्त होता है:

।क्या नाम हो । ` क्या नाम है`

।बेलि क्या भैच्छ । ` कल क्या हुआ`

। किलै। के स्थान पर भी ।क्या। मिलता है -

।क्या ना ऊन्ना। `क्यों नहीं आते ?`

इसके अतिरिक्त सामान्य प्रयोगों में भी विभेद मिलता है :

।खान्नाखित्था खन्ना दे । ` खाने के लिए खाना दे `

।किताब मोहनो छ । ` किताब मोहन का है `

।मुथ्या भोल्ल कागज हुन्ना । ` मेरे पास कल कागज होंगे `

।छ्योड़ि खाना पकालि। ` लड़की खाना बनायेगी `

।चेलि बेटियों ने पानि खाछ । ` लड़कियों ने पानी पिया`

।मीले हौड़ धोयू । ` मैंने स्नान किया `

।उन घारिया जनाम । ` वे स्त्रियां जाती हैं `

।छौड़ि ग्यान । `लड़किया गई `

।वां एक मानछ । ` वहां एक मनुष्य है`

।छोड़ी गीत गान मरिथी । ` छात्रा गाना गा रही थी `

आदि ।

इसके अतिरिक्त प्रकार थल की बोली कुछ अपनी उल्लेखनीय विशेषतायें लिए हुए हैं । जैसे क्रिया रूपों में संयुक्तत्व या विपुत्व की स्थिति इस बोली का स्थानीय लक्षण है । एक साथ क न और छ थ की दृष्टि से यह बोली भारखला की बोली से समानता रखती है, तथा अनेक क्रिया रूपों एवं

नामरूपों की स्थिति इसे सायाँली के निकट रख देती है। ।यूं। , ।ती। `तू` जैसे प्रयोग गंगोती बोली के अनुकूल मिलते हैं। सब मिलकर यह सायाँली बोली से सर्वाधिक प्रभावित है।

५.१.३.१० नाचनी की बोली

नाचनी थल से लगभग ग्यारह मील उत्तर की ओर है। यहां की बोली निम्नलिखित विभेद रखती है :

परसर्गों में ।बे ,बटि । `से` , ।कि । `को`, ।मैं, मे ।`में` ।हैं। `पर` , ।लैं। `ने ,को` ।ल। `से` , ।वैं । `लिए , के लिए, ।है बटि । `से `।अपादान। आदि उल्लेखनीय हैं --

।उ कांबटि आछ । ` वह कहां से आया`
।उ कां वै आछ ।
।तैनी पढ़ने की जाला । ` तुम पढ़ने को जाओगे`
। राम लै घर जाड़छि । ` राम को घर जाना था`
।राम है बटि स्याइलौं। `राम से स्याही लावो `
।कलमैल ल्यास । ` कलम से लिखा `
। मिक दैं पारिम्म ल्हांव । ` मेरे लिए पानी लावो `

कुछ नाम रूप भी भिन्न मिलते हैं ---

।मैंस । ` आदमी `, क्योंड़ि ` लड़की ` , ।स्याड़ी। स्त्री`, ।मास्टरांड़ि ` `अध्यापिका `, ।कंवरि । `कब` , । रिस्या ।`रसोई`, बैरा ` बहिन` , ।म्वील या म्वल। ` कल- खाने वाला`, ।क्योंड़ । `लड़का ` , ।चिटि। ,चिट्ठी`, ।रूपयें। ` रुपये` , ।कल्ड़ । `अवश्य`, ।थ्यकाल। ` कपड़े` , ।व्यलीं। ` कल-बिगत` , ।ल्यूट । `लड़का`, ।पाड़ि। `पानी` आदि।

क्रिया रूपों में अपूर्ण काल ।-ड़-। मिलता है :

।खाड़छ्यु । ` खा रहा था` , ।तु घर जाड़ छै। ` तुम घर जा रहे हो ,` । वु बजार जाड़ौछ । ` वह बाजार जा रहा हैं` , ।गीत गाड़ाछी । ` गीत गा रहे थे ` आदि यही प्रकट करते हैं। कहीं-कहीं अपूर्ण काल में ।-रू-। भी रहता है ---

।प्रार्थना कनरैय । ` प्रार्थना कर रहे हैं `

।ङ। क्रियार्थक संज्ञा सूचक बनकर आता है ----

।वील फल खाड़ छि । ` उसने फल खाने थे `।

उक्त उदाहरणों से प्रकट होता है कि नाचनी की बोली में ।-ड़-। की उपस्थिति उसकी प्रमुखताओं मे से है । समापिका क्रिया ` है ` के लिए इसमें ।छ। `है` ,।छन। ` हैं` , ।छा। ` हो`, छिि `था, थी, ।छ्या। `थे ` का प्रयोग होता है । यह प्रकृति पिठौरागढ नगर के आसपास की बोली से समानता रखती है ।

भूतकाल में ।आछि। `आयी` , ।गैछि। `गई` तथा ।आरै। `आयी है ` ।जैरान। `गई है ` आदि प्रयोग मिलते हैं । भविष्य काल में । लि । ` होगी ` , ।खाल। ` खायेगी` , ।हुवेल्यूं । `होऊंगा` आदि रूप उल्लेखनीय हैं ।

सर्वनामों में ।मि। `मैं` ।तै। `तू` ।त्वीले। ` तूने` , ।उ। `वह` ।तैमी। `तुम` , ।मीतैकि `मेरे लिए` आदि प्रयुक्त होते हैं ।

५.१.३.११ मुन्स्यारी की बोली

मुन्स्यारी नाचनी से लगभग बाईस मील उत्तर में है । इस बोली में रांथी क्षेत्र की शाखा ।ण। तथा ।ड़। की विद्यमानता उल्लेखनीय है । क्रिया रूपों के अतिरिक्त परसर्ग संज्ञा आदि शब्दों में भी ये ध्वनियां मिलती हैं :

।क्यौड़ि खाड़ खाल । ` लड़की खाना खायेगी`, ।उ गाणो हुवेलि । ` वह गा रही होगी, ।राम कड़ी घर जांड़ चै छी । ` राम को घर जाना था `, ।वु भौत खराब लौड़ छ । ` वह बहुत बुरा लड़का है` ।क्यौड़ ऐ । `लड़का आया` , आदि उच्चार यही प्रकट करते हैं ।

रांथी की अन्य विशेषताओं में परसर्गों का प्रयोग - ।बटि, बै, बटी `से `, ।ल, लि । `ने` ।कड़ी ।`को` ,।ली । ` द्वारा` , ।तैं । `लिए आदि प्रमुख हैं ।

संज्ञाओं में । नूं। `नाम `, रूपैं। `रुपये`, ।कपड़ा। `कपड़े`,

क्यौड़ि `लड़की आदि, सर्वनामों में ।ऊ। `वह` ।मी । `मैं` ।तू । `तू` ।वीले । `तुमने`, ।ऊं । `उन आदि, काल वाचक रूपों में । भुवल। `कल-आगामी` , ।व्यलि। `कल-विगत` ।कमरा। `कब` आदि मिलते हैं ।

क्रिया रूपों में ।आयूं । ` आया`, पढ़ी। `पढ़ा`, ।जेरौछि। `गया था`, । जेरौछुं । ` मैं गया था , ।पनरौछिये। ` पढ़ रहे थे, ।जाराय़ूं। ` जा रहा हूं` , ।करौछ। `किया` ।पनरौछि। `पढ़ रहा था`, ।जाराों छै। ` जा रहा है` , `।प्रार्थना कनयों। `प्रार्थना कर रहे हैं , ।गैरा छि । ` गा रहे थे `, ।जारांन। `जाते हैं `, ।ऐछ। ` आयी है` , ।कन् रौछा । ` कर रहे हो `, ।गांणी हुवैलि । `गा रही होगी` । जाड़ हुनल्यूं। ` जा रहा होऊंगा ` - इस प्रकार के प्रयोग परिलक्षित होते हैं ।

इसके विपरीत मुन्स्यारी के ही हरकोट ग्राम की बोली में उक्त ।ड़। के स्थान पर प्रायः ।र।, ।रा।, की जगह ।न। मिलता है।

रांथी ग्राम	हरकोट ग्राम	
क्यौड़ि	क्योरि	`लड़की`
गांड़	गार	`नदी`
जाराय़ूं	जैनौछी	`जा रहा हूं `
खारा	खान	`खाना `

परसर्गों में ।ले, ला। `ने` , ।बै। `से` ।जै । `लिए`, ।ले`। `द्वारा` आदि लाघवता परिलक्षित होती है । उदाहरण--

। जै रछ । ` गया था` ,

।जानुरछा । ` जा रहे हो`, ।कन्यां । ` कर रहे हैं `,

।पढ़न छि । ` पढ़ना था ` आदि ।

मुन्स्यारी के मदकोट इलाके की बोली में ।ण। और ।ड़। का प्रयोग अत्यंत सीमित प्रयोग संज्ञाओं में मिलता है । क्रिया रूपों में ।न। ही प्रयुक्त होता है । उदाहरण--

।क्यौड़ि । ` लड़की` ।क्योड़। ` लड़का` ।सैरिाम `स्त्री व

पिठौरागढ़ सम्भाग-

बोली - विभेद
उत्तर
पश्चिम
पूर्व
दक्षिण
मिलम ग्लेशियर
सोना ग्लेशियर
भोटिया बोलियाँ
सोर्याली बोली
गंगोली बोली

क्रिया रूप -- ।जानुछुं। `जा रहा हूं` ।जानन। `जाते हैं`, ।खानछि। `खाना था`, ।जानुछि। `जानाथा`, ।वु जा न्है। `वह जा रही है`, ।खान् बनौल। `खाना बनायेगी` आदि।

५.२ जातिगत विभेद

जातिगत आधार पर विवेच्य बोली के तीन प्रमुख विभेद मिलते हैं जो क्रमशः ब्राह्मण, राजपूत, तथा शिल्पकारों द्वारा प्रयुक्त होते हैं। ब्राह्मण वर्ग संस्कृतनिष्ठ होने के कारण उनकी बोली में संस्कृत के शब्दों का प्रयोग बाहुल्य मिलता है। ब्राह्मणों की बोली में उपविभेदों की स्थिति, अपेक्षाकृत अल्प है। जातिगत विभेद की दृष्टि से राजपूतों, जिन्हें स्थानीय बोली में खशिया कहते हैं, की बोली ब्राह्मणों की अपेक्षा शिल्पकारों, जो स्थानीय बोली में डूम कहलाते हैं, की बोली के निकट है। एक ही ग्राम में ब्राह्मण, राजपूत और शिल्पकार रहते हैं और उनकी बोली कम से कम दो विभेद रखती है। एक ब्राह्मणों द्वारा व्यवहृत बोली तथा दूसरी ब्राह्मणेतर जातियों द्वारा व्यवहृत बोली। इसके लिए ऐतिहासिक कारणों के साथ-साथ सामाजिक स्थितियां भी उत्तरदायी हैं। ब्राह्मणों का कार्य संस्कृत भाषा के माध्यम से ब्रह्मवृत्ति द्वारा जीविकोपार्जन रहा है तथा अन्य राजपूत कृषि कार्य में संलग्न रही हैं। शिल्पकार उक्त दोनों जातियों के कार्यों में सेवा भाव से सहयोग देते रहे हैं। ये तीसरे वर्ग के लोग लोहार, बढ़ई, मोची, ढोली, ओड़-- राज आदि के रूप में कार्य करके उक्त दोनों उच्चतर वर्गों के कार्य सम्पादन में सहयोग देते हैं। प्रायः ये लोग ब्राह्मणों के आश्रित रहे हैं जिसके परिणाम स्वरूप ब्राह्मणों ने इन्हें अपनी भूमि का कुछ भाग गुजारे के लिए दिया है जो अब भी इन लोगों के पास है। इसके बदले ये लोग ब्राह्मणों की तरह तरह से सेवा करते हैं। इतना निकट का निरन्तर सम्पर्क होते हुए भी एक ही बस्ती में उल्लेखनीय बोली विभेद पाया जाता है। इसका कारण परम्परागत होने के साथ-साथ वृत्ति का भिन्न भिन्न होना है।

कुछ व्यवसायिक शब्दावली को छोड़कर राजपूत तथा शिल्पकारों की बोलियों का कम उल्लेखनीय अन्तर नहीं रखता है। व्यवसायिक स्वरूप की दृष्टि

से ही राजपूत तथा शिल्पकारों की बोली को दो भिन्न वर्गों में रक्खा गया है अन्यथा इनका विवेचन एक के अन्तर्गत विचार्य है। जातिगत विभेद गंगोली क्षेत्र की अपेक्षा सोर्याली बोली क्षेत्र में उल्लेखनीय है।

५.२.१ ब्राह्मणों की बोली

ब्राह्मण वर्ग से तात्पर्य यहां उस वर्ग से है जो संस्कृत के पठन पाठन में रत रहकर अपने तथा राजपूतों के विभिन्न संस्कार, उत्सव, आदि में पुरोहित के रूप में शब्दावली का कार्य सम्पादन करता रहा है। इनकी बोली में संस्कृत शब्दावली का प्रभाव स्वाभाविक है।

उच्चारण की दृष्टि से ब्राह्मण वर्ग यथासंभव संस्कृत की ध्वनियों का अनुगमन करने की चेष्टा करता है। दिवस, मास, तिथि, गोत्र, व्रत, नामकर्ण, विवाह, तथास्तु, सिद्धिरस्तु, आशीर्वाद, चिरायु, दशकर्म, पूजा, पाठ, स्तवन, आचमन, आदि उच्चार संस्कृत के अनुकूल उच्चारित होते हैं। स्थानीय शब्दावली में ये संज्ञाओं का उच्चारण पिठौरागढ़ी की प्रवृत्ति का अनुसरण करता है। यथा - अधिकांश पुल्लिंग शब्द एक वचन में ओकारान्त तथा बहुवचन में आकारान्त, स्त्रीलिंग शब्द प्रायः इकारान्त उच्चरित होते हैं। व्यंजनांत शब्दों के विषय में उक्त बात लागू नहीं होती क्योंकि व्यंजनान्त शब्द परम्परागत अथवा आगत रूप से पुल्लिंग अथवा स्त्रीलिंग रूप में व्यवहृत होते हैं।

अन्य दृष्टियों से उक्त विभेद आगे ५.२.३ में विवेच्य है।

५.२.२ राजपूतों की बोली

राजपूतों की बोली में संस्कृत का प्रभाव नहीं मिलता है। उनकी बोली स्थानीय परिस्थितियों से प्रायः पूर्णतः प्रभावित है। इसमें उनके व्यवसाय विषयक शब्दावली का समावेश है जिसका उच्चारण वे अपने ढंग से करते हैं और यही ढंग उनकी बोली को भिन्नता प्रदान करता है। यही बात शिल्पकारों की बोली के विषय में कथ्य है। राजपूतों तथा शिल्पकारों की बोली में उच्चारण शीघ्रतापूर्ण कर जाने अथवा उच्चारों में लाघवता की प्रवृत्ति मिलती है।

५.२.३ ब्राह्मण एवं ब्राह्मणेतर बोलियों में अन्तर समझने के लिए निम्नलिखित उदाहरण द्रष्टव्य हैं। यह विवेचन पिठौरागढ़ खास के आधार पर

दिया जा रहा है --

ब्राह्मण	ब्राह्मणेतर	
।घर।	।घौर ।	`घर`
।मैं ।	।मि।	`मैं`
।क्यो।	।थ्यो।	`था`
।क्या।	।थ्या।	`थे`
।छि।	।थि।	`थी`

ब्राह्मणों की बोली में कुछ क्रिया रूप । व्यंजन + य् । के संयोग से उच्चारित होते हैं ----

।ग्यो । `गया` , ।भ्यो । `हुआ`, ।क्यो। `कहा` । अन्य जातियां इन उच्चारों को संक्षेप में बोलती हैं । यथा उक्त उदाहरण ।गिछ। । , मिछ।, किछ।, कहे जाते हैं ।

उच्चारण में लाघवता की प्रवृत्ति दोनों वर्गों में विभेद का प्रमुख कारण है । अन्य क्रिया रूपों में से भी उक्त बात प्रकट होती है---

।किकरम्मयुरौछै । `क्या कर रहा है` ।बुखनमर्युरौछ। आदि उच्चार प्राय: ब्राह्मणों के मुख से कुत होते हैं किन्तु राजपूत इनके स्थान पर ।किकमछैं ।, । बुखामछ्य । आदि उच्चारण करते हैं। दूसरा विभेद भूतकाल की क्रिया ।छ। के कारण है। ब्राह्मण । क्या, क्यो, छि । आदि प्रयोग करते हैं और राजपूत तथा शिल्पकार इनके स्थान पर ।थ्या, थ्यो, थि । ।।

तीसरा अन्तर सर्वनाम प्रयोगों का है। ब्राह्मण वर्ग प्राय: ।मैं। ।मैंले। , ।हम ।, ।तुम।, आदि का प्रयोग करता है किन्तु अन्य वर्ग क्रमश: इन्हें ।मी,मि । ।मीले । , ।हमि । ।तुमि। , बादि रूप में प्रयोग करता है ।

चौथा अन्तर परसर्गों का प्रयोग है। ब्राह्मणों में । बटे, बटि । `से` ।खिन। `लिए` जैसे प्रयोग मिलते हैं और रावपूत तथा अन्य इनके स्थान पर क्रमश: ।बै। ,।त्यासा। आदि उच्चारे अपनाते हैं ।

उक्त रूपों में मुक्त परिवर्तन से व्यक्तित विभेद हो सकते हैं किन्तु एक ही स्थान पर उक्त प्रकार का वैविध्य जातिगत आधार को उल्लेखनीय निरूपित

करता है।

ब्राह्मणों में भी कई कोटियां हैं, ऐसे भी ब्राह्मण हैं जिनका प्रमुख कार्य राजपूतों की तरह कृषि रहता है। इस प्रकार के ब्राह्मणों की बोली राजपूतों की बोली के निकट मिलती है।

५.२.४ सम्प्रति शिक्षा प्रसार के साथ-साथ जातिगत वैभिन्य कम होता जा रहा है। अब ब्राह्मणों के घरों में बच्चों को संस्कृत के ग्रन्थ भी नहीं पढ़ाये जाते जैसे कुछ पूर्व अनिवार्यतः पढ़ाये जाते थे। पुरानी मान्यतायें तेजी से बदल रही हैं। विभिन्न स्थानों के तथा विभिन्न जातियों के छात्र एक स्थान पर आकर शिक्षा पाते हैं और उनमें बोली वैविध्य के तत्व अल्पतर होते जा रहे हैं। आधुनिक सभ्यता एवं फैशन के अनुकूल बोली का स्वरूप बन रहा है। शिक्षित समाज अंग्रेजी के प्रभाव से विमुक्त यहां भी नहीं है। तथा सयानों के पास बोली विभेद की मूल सामग्री अब भी प्राप्य है।

५.३ बोली विभेद की सीमायें

बोली विभेद की कोई निश्चित रेखा नहीं खींची जा सकती है। तब भी उक्त सोर्याली तथा गंगोली बोलियों की एक निकटतम सीमा का अवलोकन सम्भव है। सोर्याली एवं गंगोली बोलियां पूर्व से पश्चिम और रामगंगा द्वारा विभाजित होती हैं। रामगंगा के पूर्वी किनारे किनारे सोर्याली एवं गंगोली का मिश्रित रूप प्रयुक्त होता है और उत्तर की ओर सोर्याली का प्रभाव क्रमशः कम होता जाता है। गंगोली बोली का प्रभाव पिठौरा जिले केबाहर पश्चिम में अल्मोड़े जिले के प्रभागों तक गया है। पिठौरागढ़ के दक्षिण में राम गंगा के पार कुमय्यां बोली का क्षेत्र है और सोर्याली के दक्षिणी सीमान्त में कुमय्यां का प्रभाव दृष्टिगत होता है। उपर्युक्त विभेद एक बोली के ही विभेद हैं और उनमें ऐसी रेखायें नहीं है कि संभाग के एक छोर के निवासी दूसरे के वाणी व्यापार को न समझ सकें। वस्तुतः इनका केवल वैज्ञानिक एवं भाषाशास्त्रीय महत्व है जिसके अवलोकन से भाषा की सूक्ष्म प्रवृत्तियों को समझने समझाने में सहायता मिल सकती है।

६

शब्दावली

शब्दावली

६.०. रूप, प्रकृति एवं प्रयोग की दृष्टि से विवेच्य शब्दावली को दो प्रमुख वर्गों में रक्खा जा सकता है :

(क) स्थानी शब्दावली

यह स्थानीय प्रकृति एवं प्रयोग से मूलत: सम्बद्ध है ।

(ख) अस्थानीय शब्दावली

यह शब्दावली अन्य भाषा-उपभाषाओं से भी सम्बन्ध रखती है ।

६.१. स्थानीय शब्दावली

विशिष्टता एवं प्रयोग की दृष्टि से प्रस्तुत शब्दावली पुन: निम्नलिखित उपवर्गों में विभाज्य है :

(१) सूक्ष्मभाव एवं क्रिया व्यंजक शब्दावली ।

(२) अनुकरणमूलक शब्दावली ।

(३) स्थानीय प्रकृति एवं व्यक्ति विषयक शब्दावली ।

उपर्युक्त शब्दावली द्वारा क्षेत्रीय प्राकृतिक उपादानों का पूर्णशब्दीकरण तो हुआ ही है, नित्य कार्य तथा सामान्य व्यवहार भी अंग प्रत्यंगत:, इन शब्दों में मुखर हो सका है । किसी स्थान, वस्तु, अथवा अंग के विभिन्न उपभाग जो सकते हैं, यहां उन उपभागों एवं उपभेदों के पृथक पृथक नाम मिलते हैं । अभिव्यक्ति की अनेकता तथा भाव व्यापार की सूक्ष्म मुखरता प्रस्तुत शब्दावली की विशेषता है । नीचे दिये गये उदाहरणों से यही बात प्रकट होगी ।

६.१.१ सूक्ष्म भाव एवं क्रिया व्यंजक शब्दावली

सूक्ष्म मुखरता —

।कढ़ाई। 'कढ़ाई':

जाम 'लोहे की सब से छोटी कढ़ाई जो बिना मुनड़ों की होती है' ।

भदेलो 'जाम से बड़ी बिना मूनड़ों की कढ़ाई'

तमाल्लो 'चौड़े आकार की हल्की कढ़ाई'

कढ़ै   अन्यत्र प्रयोज्य अर्थात मूनह्रों वाली कढ़ाई ।

।खाजि। `खुजली` :

खाजि   `रोग जन्य खुजली`

कंडुर्यें   `जूं, पिस्सू, खटमल आदि जन्तुओं द्वारा काटे जाने पर लगने वाली खुजली`

चिलै   `गेहूं, जौ आदि अनाजों के भूसे का त्वचा के साथ संसर्ग होने से उत्पन्न खुजली`।

खुर्जै   `अज्ञात कारण से लगने वाली खुजली`

कोकैं   `बबों या घुइयां जैसी वस्तुओं के रस का त्वचा के साथ संसर्ग होने से चटचटाने वाली खुजली` ।

।खितानो `गिरना`:

ढ़ालीनो   `द्रव वस्तु -- जैसे पानी, दूध आदि बर्तन से गिरना`

लोटनो   `मनुष्य और पशुओं का गिरना`

घुरकनो   `पहाड़ी मार्गों जैसे कांठे से विशेषत: पशुओं का गिरना, गोल वस्तुओं का लुढ़कना`।

खितोनो   `गिरने के अर्थ में अन्यत्र प्रयोज्य` ।

।चुलो `चूल्हा` :

धोलो   `वह स्थान जहां जले हुए अंगारे तथा गर्म राख रखते है` ।

रोंड़ो   `वह चूल्हा जिसमें जली हुई आग प्राय: तापने के काम आती है`।

शग्गड़   `टिन का बना हुआ एक चौकोर आकार का सांचा जिसमें आग जला कर तापी जाती है`।

चुलो   `रसोई घर या रसोई के कमरे में आग जला कर भोजन बनाने का स्थान` ।

।फाड़ु। `फाड़ु : प्राय: फाड़ु लगाने को `फाड़ फाड़नो` कहा जाता है और यह क्रिया तीन प्रकार के उपकरणों द्वारा की जाती है ।:-

कुब्बो   बाब्बों नामक मजबूत घास से बना हुआ कूंचा घर के भीतर मिट्टी से लीपे जाने वाले फर्श पर कूड़ा कर्कट साफ़ करने के काम आता है` ।

करेठो 'घर के बाहर आंगन तथा आस पास फाड़ू देने के लिए काम में आने वाला पेड़-पौधों की टहनियों से बना हुआ उपकरण'।

फाड़ु 'अन्यत्र फाड़ू' के अर्थ में प्रयुक्त होता है'।

।टोकरि ।टोकरी':

शोजो 'सब से छोटी टोकरी या डलिया'।

छापरि 'शोजो से बड़ी टोकरी या डलिया'।

टोकरि 'छापरी से बड़ी टोकरी या डलिया'।

डालुलो 'सब से बड़ी टोकरी जिसमें प्राय: घास, चारा आदि हल्के पदार्थ ढोये जाते हैं'।

डोक्को 'विशेष आकार की बनी हुई टोकरी जो ऊंचाई में अधिक तथा गोलायी में कम होती है'।

थुपड़ो। 'ढेर'

लुट्टो 'पुआल या नलो(पशुओं का चारा) का व्यवस्थित ढंग से पेड़ या जमीन पर बना हुआ स्तूप नुमा ढेर'।

खल्यो 'ईंधन की लकड़ी को सुरक्षित रखने की दृष्टि से बनाया गया स्तूप या गुम्बद नुमा ढेर'।

कुन्यो 'धान की बालों से युक्त पुआल का व्यवस्थित ढंग से बनाया हुआ स्तूप या गुम्बदनुमा ढेर'।

थुपुड़ो 'किसी वस्तु का अव्यवस्थित ढेर'।

।धूनो । 'धोना':

खकोलनो 'केवल पानी से बर्तन या कपड़े धोना'।

मांशनो ~~'हाथों से कपड़ों को छपकाकर धोना'~~। 'राख मिट्टी आदि की सहायता से बर्तन साफ करना'।

छपकूनो 'हाथों से कपड़ों को छपकाकर धोना'।

धूनो 'अन्यत्र एवं सामान्यत: प्रयोज्य'।

।पकूनो। 'पकाना':

भुटनो 'बिना पानी डाले अन्न के सूखे दानों को आग पर भूनना, जैसे

।भट्ट भुट । `भट्ट भून`, घी या तेल डाल कर साग छौंकना, जैसे शाग भुट । `साग छौंक` ।

पोळनी `गर्म राख या कोयले में अन्न की गोळी जाळें या कन्दमूलों का पकाना, जैसे । ध्वागा पोळ् । `मक्का भून` ।

ततूनी `पानी, चाय या दूध को गरम करना`।

उमाळनी `चाय या दूध पकाना`।

पकूनी `अन्यत्र प्रयुक्त होता है` ।

। पीड़ । `दर्द` :

मुड़ा `सिर दर्द` ।

दंताल `दांत दर्द` ।

अंख्यांत `आंख का दर्द या रोग` ।

चरै `कटे हुए अंग पर जल आदि के संसर्ग से होने वाला दर्द` ।

टौनि `अत्यन्तशीत में चोट लगने पर एक विशेष प्रकार की वेदनानुभूति`

चढ़क `एक विशेष प्रकार से दर्द होना, जो वात आदि विकार के कारण होता है` ।

बाधा `प्राय: हल्के दर्द के लिए प्रयोज्य शब्द` ।

लौर `एक विशेष प्रकार की पीड़ा जिसमें दर्द एक स्थान से दूसरी ओर जाता हुआ अनुभव होता है` ।

सर्वं `वात रोग के कारण होने वाला मांसपेशियों या जोड़ों का दर्द` ।

मशिमशि `पेट में होने वाला हल्का दर्द` ।

।बात । `बात` :

पतका `फुसलाने वाली बातें` ।

बल्को `हल्के ढंग की बातें` ।

फश्का `निराधार बातें`।

क्वोड़ा `औरतों की परस्पर की विशेष ढंग की बातें`।

बाथ `अन्यत्र प्रयोज्य` ।

।बाश। 'गन्ध':

चुर्रनि	'पेशाब की गन्ध'
गर्तीनि	'गोमूत्र की गन्ध'
गुर्रनि	'विष्ठा की गन्ध'
पार्दनि	'अपान वायु की गन्ध'
भूर्मनि	'एक विशेष प्रकार की गन्ध'
चुक्लिंनि	'खट्टेपन की गन्ध'
शर्ड़नि	'सड़े हुए पदार्थों की गन्ध'
पर्शनि	'खाद की गन्ध'
बाश	अन्यत्र प्रयोज्य।

।बुड़नों। 'चुभना':

खड़नों	'बिना धार अथवा बिना नोक वाले वस्तुओं का चुभना'
बुड़नों	'अन्यत्र अर्थात् तेज धार वाले या नोकीले उपकरणों का चुभना'।

। मुख । 'मुख':

थोलृ	'होठों से युक्त वह बाह्य भाग जो होंठ बन्द होने पर बाहर से दृश्य रहता है'।
खाप्	'होठों से अन्दर का वह भाग जो होंठ बन्द करने पर नहीं दिखाई देता है'।
मुख	अन्यत्र प्रयोज्य। यह मुख का वह पूरा भाग है जिसमें होंठ, नाक, आंख आदि दिखाई देते हैं'।

।रश्मि। 'रस्सी':

गल्यूं	'पशुओं को बांधने के लिए काम में आने वाली रस्सी'
ज्योड़ो	'अन्य वस्तुओं को बांधने के लिए प्रयोज्य रस्सी'।
रश्मि	अन्यत्र प्रयोज्य।

।लुटिया। 'लोटा':

कशिणि	'पानी पीने का पात्र जो एक विशेष धातु कांसा या कस्कुट से बनता है'।

गड़ुवा 'विशेष आकार का बना हुआ पानी पीने का एक पात्र'।

घण्ट्ठ
घण्टि 'अपेक्षाकृत छोटे आकार की पीतल की बनी पात्रिका जो पानी पीने के लिए प्रयोज्य है'।

लुटिया अन्यत्र प्रयोज्य।

उल्लेख्य है कि 'घण्टि' या 'गड़ुवा' को उनके विशेषाकार के कारण 'लुटिया' नहीं कहा जा सकता है। 'कशिणि' का प्रयोग 'लुटिया' से वैकल्पिक सम्बन्ध रखने लगा है।

(ख) विशेष भाव व्यापार एवं क्रिया व्यंजकता-

अनेक शब्द ऐसे हैं जिनका भाव लिपिबद्धता द्वारा सहज ही स्पष्ट नहीं होता है। बोली से अत्यन्त निकट का सम्पर्क होने पर ही उन्हें समझा जा सकता है। नीचे इसी प्रकार के कुछ विशिष्ट शब्द हैं जिनका महत्व दर्शाने में अभीष्ट भाव के निकट पहुंचने की यथासम्भव चेष्टा की गई है। इस प्रकार की विशिष्ट भावाभिव्यक्तियां विवेच्य बोली में पर्याप्त प्राप्य हैं :

। अंशेलि । : 'फसल काटने के लिए पहले पहल बांशि 'हंसिये' का प्रयोग'।

। अकुलि । : 'जिस भूमि में 'कुलो' (सिंचाई का पानी) नहीं जाता'।

।अखौड़ो । : 'एक विशेष गुण सूचक विशेषण जो रूखा एवं कुछ कठोर स्वभाव वाले व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है'।

।अंगालि । : 'हाथ मोड़ कर एक बार में समा सकने वाली लकड़ी, घास आदि का परिमाण'।

।अचैनो । : 'जो नहीं चाहिए'

।अटानो । : 'समाविष्ट होना'।

।अड्यालूनो । : 'कड़छी या चम्मच से भोजन आदि बनाते समय उसे उलटना'।

। अत्थो । : 'पूरा'

।अतश्यूनो । : 'जल्दबाजी करना'

। अतीर । : 'पार न की जा सकने वाली नदी'।

। अन्कशो । : 'अनोखा, विचित्र'

। अन्वरि । : 'विस्मयकारी घटना'।

। अपैट, अबार। : 'अशुभ दिन'

|अलच्छिना | : 'लक्षणहीन'

| अलौ | : 'बिना लवण का'

| अलीत | : 'बहुत मैला रहने वाला'

| अलैं बलैं | : 'आधि व्याधि' जैसे भाव के लिए प्रयोज्य ।

| अलौटी | : 'कम खुला'

| अश्यानौ | : 'किसी व्यक्ति की अत्यन्त अबोध स्थिति की ओर संकेत करना, बच्चा' ।

| आंली | : 'वर्षा ऋतु में घनी घास से युक्त स्थिति'

| उकलनौ | : 'ऊपर को चढ़ना, पीतल जैसी धातु के बर्तन में खट्टी वस्तु की प्रतिक्रिया' ।

| उकाली | : 'पहाड़ी भूमि पर का उठान,चढ़ाई'

|उकुश मुकुश| : 'दम घुटने जैसी स्थिति'

| उचैनौं | : 'किसी देवता के प्रति किया जाने वाला संकल्प' ।

| उक्टिौ | : 'कच्चे कांटे के लग जाने से उत्पन्न होने वाला विषैला प्रभाव' ।

| उजा | : 'ऊर्जा'

| उदैस | : 'वियोग जन्य उदासी'

|उघड़नौ | : 'खुलना', कपड़े की सिलाई खुलती है तो कहते हैं । उघड़िग्यौ' सिलाई निकल गई'।

| उघ्यूनौं | : 'औजार तेज करने की क्रिया'

| उब्यूनौ | : 'गीली औखली सुखाना'

| उमैल | : 'फसल के बाद खेतों में छोड़ दिए गए पशुओं की उन्मुक्त स्थिति' ।

| उमा | : 'गीली गेहूं की बालियों को भून कर तैयार किया गया खाद्य' ।

|एकमल्यां | : 'एक के बाद एक दुहराने का भाव'

| वौली | : 'वह जल जिसमें मिट्टी मिल गई हो और जल मिट्टी युक्त हो गया है'। इसका विलोम -'टौली' है ।

।औतरनौ। : 'पहाड़ों में यह मान्यता है कि दैवी देवता किसी व्यक्ति में अवतरित हो सकते हैं। देवता के इस प्रकार अवतरने अवतरित होने की क्रिया 'औतरनौ' है।

। कट्कि । : 'चाय या दूध में मीठा घोल कर अधिक व्यय होता है, इसके विपरीत मीठे -- गुड़, मिश्री आदि के एक टुकड़े को दांत से थोड़ा-थोड़ा काट कर उसके सहारे चाय आदि पिया जाय तो कम मीठे में काम चल जाता है। यह किफायती भाव 'कटिक खूनी' कहा जाता है।

। कण्नौ। : 'अं अं शब्द करते हुए भाव या व्यथा प्रकट करने को 'कणानौ' कहते हैं और जो धन इत्यादि के लिए कणाता है उसे कणियां 'कंजूस' कहा जाता है।

।कलि कलि। : 'किसी की दीन-हीन अवस्था से करुणाई होने का भाव'

। कल्पन् । : 'कल्पना से प्रयोजन लगता है। किन्तु प्रयोग में इसका भाव कल्पना से बहुत गहरा है।'

। क्वाड़ा। : 'मकान का ऐसा कोना जो एक तरफ हो, उपेक्षित हो या अंधेरा हो'।

। कशोबू । : 'कुछ पता नहीं'।

। काप । : 'वह स्थिति जो दो शाखाओं के मध्य शाखाओं की दिशा में सन्धि के ऊपर रहती है'।

। कारनौ। : 'हंसिया आदि औजारों को बिना तपाये पीटें तेज करने की क्रिया'।

।कुकड़ीनौ। : 'पीठ से आगे की ओर झुकना'

। कुठौ । : 'भुने हुए तिलहन तथा नमक मिश्रित चूर्ण की विशेष अवस्था'।

।कुत्या,कुति। : 'दुलार से कहा जाने वाला स्नेह सूचक'। इसका प्रयोग प्राय: प्यार से बच्चों के लिए होता है

। कुत्को । : 'अकेले अकेले बिना किसी को दिये स्वयं ही उपभोग करने अथवा अधिकार का भाव।

। कैलो । : `कालेपन की स्थिति में होने का आभास`

। कैंलो । : `भयमिश्रित संकोच से युक्त होने का भाव` ।

। कोंचनो। : `किसी तंग स्थान पर अधिक वस्तु या व्यक्तियों को बलात् ठूंसना`।

।खजबज । : `अव्यवस्थित एवं अनावश्यक काम का भाव`

।खल्कनो । : `एकत्र वस्तु का एकाएक गिरने का भाव`

। खति । : `दयाद्र होने की स्थिति`

। खिर्श । : `अपमान मिश्रित लज्जा`

। खुल्मुल्नो। : `खुला हुआ अथवा ढीला होने का भाव`

। खुश्नो । : `अटके हुए स्थान से अलग निकलना`

। खैड़ि । ? `एक प्रकार का सक्कारिता का भाव` । इसका प्रयोग खटपट करने वाले -- झगड़ालू` के रूप में भी होता है।

। खोड़नो। : `कृषि औजारों को तपा कर पीट कर तेज करने की क्रिया` ।

।खोश्नो । : `किसी वस्तु को तंग स्थान में रखने की एक विशेष क्रिया` ।

। गानो । : `बौने की तरह छोटा होने का भाव`

। गाबा । : `अवों के पत्तों की अर्द्ध-उन्मीलित अवस्था` ।

।गुजुमुजो । ।: `मोड़माड़ या उलझावट का भाव` ।

। गुद्याड़ा ।: `फटे पुराने मैले चीथड़े`

। गुमसुम । : `किसी प्रकार न बोल कर चुपचाप होने की अवस्था`।

। गुम्क्यूंनो। : `हाथ से मारने का एक विशेष भाव` ।

। गोठ्यूनो ।: `गोठ (कमरा ) में बन्द करने की क्रिया` ।

। घोघ्नो । : ``अव्यवसाय करना`

। घोप्टो । : `जमीन की ओर मुंह करके उल्टी रखी व हुई वस्तु-- विशेषत: बर्तन` ।

। चटक । : `किसी रंग के गहरा होने का भाव`

। चिमोड़ी। : `ऐसी वस्तु के लिए प्रयुक्त होता हो जो आसानी से न टूट सके। जैसे बालुई मिट्टी के खिलाफ चिकनी मिट्टी से कहा जायगा कि। माटो चिमोड़ी छ। `मिट्टी - चिमड़ी है`। किन्तु चिमोड़ी शब्द अपने इसी विशेष अर्थ में। गुड़ चिमोड़ी छ। `गुड़ चिमड़ा है`, ।कपाड़ा चिमोड़ी छ। `कपड़ा चिमड़ा है`। आदि में भी प्रयुक्त होता है।

।चिरोड़ी । : `विशेष प्रकार की खिजाहट`

। चीश । : `जलते हुए कोयले, लकड़ी आदि या आग की लपट को छू जाने पर होने वाली अनुभूति`। स्पर्श न होने पर आंच लगने को । राफ । कहते हैं।

।चुपड़नो । : `तेल,घी आदि लगाना`

। चोक चोक।: `एक उपचार उच्चारण जो दूसरे का थूक पड़ने पर किया किया जाता है`।

। चोपनो । : `द्रव में डुबोना`

। छल । : `भूत प्रेत बाधा`

। छ्यांलो । : `जो घना न हो, स्फूर्ति युक्त`

। छिरनो । : `थोड़ा थोड़ा निकलना`

। जकुरनो । : `शरीर में एक प्रकार का कम्पन होना`

। ज्यू । : `जेठानी या सयानी स्त्रियों के लिए स्नेह सम्मानार्थ प्रयोज्य शब्द`।

।फंफाड़नो।: `उपेक्षित रूप से हिलाना डुलाना`

। फरो । : `पतली तोली`

। फुल्लुरो। : `बिखराये बालों वाला`

। फाफ्कीनो।: `गुच्छों से लदा होना`

। टट्या । : `बार-बार दस्त होने की अवस्था`

।टटक्यूनो। : `फटक कर अलग करना`

। टनकूनो। : `कस कर बांधना`।

।टन्नं। : `कस कर बांधा हुआ`

। टपक्या। : `एक विशेष प्रकार से बना हुवा सूखा साग` ।

।टाकुळी। : `नंगे सिर`

। टांज । : `उपयुक्त व्यवस्था`

। टुन्नं । : `बेहोशी की अवस्था`

। टोकँ । : `अप्रसन्नता प्रकट करने का भाव`

। टोटिलो। : `मुख के बळ उल्टा रखा हुवा(बर्तन)`

।टोप । : `नीचे सिर करके बैठने की अवस्था`

। टोल । : `कान में सुनाई पड़ने वाली अज्ञात अस्पष्ट आवाज`

। टौळो । : `कीचड़ से गंदला व बना हुवा स्वच्छ जळ`

। ठौनि । : `शीत से हाथ पैरों में होने वाली वेदना`

।डाम्नो । : `लपेटा हुवा कपड़ा जलाकर लौ हीन करके उपचार क्रिया करना` ।

। ढिमीनो। : `हिलना-मिलना`

। तरौड़ि । : `खिजलाहट का भाव`

।ताड़्यूनो । : `तरळ को एक पात्र से दूसरे में गिराना`

।थपोड़नो । : `भद्दे ढंग से लगाना`

। थाक्नो । : `पशु का दूध बन्द होना`

।थुच्च्यूनो । : `ढेर लगाना`

। थेचनो । : `एक विशेष प्रकार से पीटना या छोटा करना`।

।दन फन । : `इधर उधर फेंक कर व्यर्थ करना`

। दांति । : `दांत से टूटने योग्य आवरण वाला`। जैसे ।दांति अखो। `दांती अखरोट` ।

। दिगो । : `एक सहानुभूति सूचक शब्द`

।धकूयूंनो । : `कंटीले डंडे से मारना`

।धद्याद । : `लगातार पुकारने की क्रिया`

। धपोड़नो। : `गीले या ढीले भोजन को विशेष प्रकार से खाने की क्रिया` ।

। घराड़ । : ``काम रुकने का भाव`

।घारै घार। : ` सोचा जाने के अर्थ में प्रयोज्य` ।

। घिनालि। : ` दूध, दही, मट्ठा, घी, आदि के लिए प्रयोज्य ।
(घिनालि घिकि ।`घर में दूध देने वाल पशु है ?`
जिससे उक्त सब चीजें प्राप्त हो सकें ।

।घिडोड़ी। : `कमजोर पालतू पशु के लिए प्रयोज्य`

। थैं । : ` विशेष भाव द्योतक । इसका अर्थ`देखें` और`तो`
से मिलता जुलता है । जैसे।थैं कि करैछ । `देखें क्या
करता है` या । हांण थैं । ` मार तो` ।

। धो, धाँ। : ` भोजन करते-करते अन्त में पूर्णता से प्राप्त संतुष्टि`

। नरैं । : ` निकट अथवा दूरस्थ किसी व्यक्ति के लिए अनुभव
होने वाली दर्शन,मिलन की मधुर आकांक्षा` ।

। निजूत । ? `वर्षा में भली प्रकार भीगा हुवा जिसमें सिर, मुख,
आदि अंगों एवं कपड़ों से पानी टपकने लगता है ।`

।निश्वास। : ` प्रिय सम्बन्धी की अनुपस्थिति में विरहानुभूतिमय
छटपटा देने वाली दर्शन,मिलन की आकांक्षा`।

। नौराट । : `वेदना की अवस्था में उत्पन्न आवाज़`

। न्या । : ` ओढने या पहनने या कमरे में बैठने से प्राप्य
गरमाहट` ।

।पढ़्नी । : `दुधारू पशु को उसके स्तन पकड़कर दूध देने के लिए
तैयार करना` ।

। पढ़म । : `सहकारिता का भाव`। इसमें उदाहरणार्थ क और
ख व्यक्ति पहले दिन क का काम कर देते हैं,दूसरे
दिन दोनों ख का :

क   ख
     क + ख
ख.   क

।पटक्यूनौं। : ` बातों से फुसलाना`

। पल्कनो । : ` अभ्यस्त होना`

।पुरड्यूनौं । : ` विशेषत: कपड़े को धूल आदि में फेंक कर बिगाड़ना`

। पँ । : ` हां`(विशेष अभिव्यक्ति ।

(पेट्यूनो । : ` पेट में डालना`

। पौंगिबलै। : ` अनुनय विनयमय चरण वन्दना`

। फत्यूनो ।: ` बार-बार पानी में हाथ डाल कर उसे खराब करना` ।

। फराड़् ।: `स्थान या तबियत से तंग(संकुचित) न होना --फैला हुवा`

।बट्यूनो । : ` तैयार करना`

।बड़्मांति । : ` बड़े हौसले से`

।बरशूनौं । : ` विशेष प्रकार से मारना`

।बालौड़ौ । : ` पशु को दूध देने की विलम्बित अवस्था`।

। बाटुली । : `` स्मरण कारक हिचकी` ।

। बिचपाति।: ` विशेष प्रकार से उपद्रव करने वाला`।

। बिटनो । : ` पक्षी द्वारा विष्ठा छोड़ने की अशुभ क्रिया` ।

। बिशानो ।: ` विशैला प्रभाव होना` ।

। बिशूनो । : ``विश्राम करना` ।

। बुज्वो । : ` विशेष आकार वालो अथवा निस्तेज धारयुक्त`।

। बौलो । : ` एक बीमारी की अवस्था` ।

।भिटकनो । : ` आग पर रखे हुए साग, दाल, दूध आदि का सूख जानौ` ।

। मुरानो । : `जलती हुई लकड़ी के टूटने से स्मरण कारक आवाज़ होना` ।

। मेद ।: `एक उपचार क्रिया,जैसे।श्यापौक्-काटोनाक मैदम्यौ----मैदम्यौ।बादि उच्चारों द्वारा सर्प विष दूर किया जाता है` ।

।म्याश। : 'एक प्रकार की बेसुध अवस्था'।

। मांज। : 'चूल्हे के ऊपर होने का भाव'।

।मातनौ। : 'एक प्रकार का खेलना'।

।मानुमिन्दि। : 'अनुनय विनय का भाव'।

।मिज्ज्यू। : 'स्वेच्छा से मित्रता जोड़ कर संगी बनने वाले'। स्त्रीलिंग ।सड्ज्यू।

।मुनुनौं। : 'विधि उपचार द्वारा वश में करना'।

।मुल्या। : 'लड़का जिसके माता-पिता नहीं'

।मैशौ। : 'शुरुवात'

।रकझूनौं। : 'एक विशेष प्रकार से तंग करना'।

।रयाल्नौ। : 'आटे जैसी पिसी वस्तु को जल, मट्ठा आदि तरलों में घोल कर एक रस करना'।

।रिमड़ा। : 'पशुओं की लड़ाई'।

। रुजनौ। : 'वर्षा में शरीर या कपड़े भीगना'।

। रैलौ। : 'कुण्ड'

।लधरौनौ। : 'बैठी हुई स्थिति में पीठ को किसी वस्तु को लगाकर सहारे से बैठना'। आरामकुर्सी पर पीठ के सहारे बैठने यही भाव व्यक्त करता है।'

।लौड्यूनौ। : 'पत्थरों से मारने की क्रिया'।

। लौदौ। : 'तुरन्त का ब्याया हुआ पशु'।

। शैलौ। : 'किसी वस्तु का विशेष अवस्था में अधिक टिकाऊ होने का भाव'। जैसे - कहा जाता है कि । यौ आटौ शैलौ छ । यह आटा अधिक चलेगा'। इसके विपरीत दूसरे को ।शैलौ। नहीं कहा जाता क्योंकि वह अधिक दिन चलता। इसीप्रकार वीक् हाथ शैलछ । उसके हाथ से वस्तुएं अधिक दिन चलती है

।हग्ल्याट। : 'सामान्यत: ईंधन की लकड़ी । लाकोड़ौ। कहलाती हैं। लकड़ी जब आग में पड़कर जलने लगती है तो उस जलती हुई लकड़ी को हग्ल्याट कहा जाता है।

., १.२ अनुकरण मूलक शब्दावली

परस्तुतियाँ - इस वर्ग के शब्द घटना या क्रियागत से सादृश्य रखते हैं और विविध प्रसंगों में यहाँ इनका व्यवहार होता है :--

|अलबलाट | 'अलबल (उलझने) की क्रिया से उत्पन्न स्थिति'

|उघड़नो | 'सिले हुए कपड़ों का तागा तोड़ते हुए कपड़े के टूकड़ों को जोड़ से अलग होते समय की ध्वनि पर आधारित' ।

|उघरनो | 'किसी वस्तु का घर-घर शब्द करते हुए गिरने की ध्वनि पर आधारित' ।

|उवांइं | ' भैंस का बोलना ।'

|कूकाट | ' बच्चों द्वारा चिल्लाया गया इसी प्रकार की ध्वनियों से युक्त शब्द ।'

|कटाकट | 'काटी जाने वाली वस्तु से उत्पन्न शब्द' ।

|कपकूपनो | ' इसी प्रकार की ध्वनि करते हुए काटना' ।

|कलबलाट | ' कलबल' शब्द जो अस्पष्ट शोर से सुनाई देता है'।

|खजबज | ' वस्तुओं को इधर उधर अव्यवस्थित करना' ।

|खड़ खड़ | ' वस्तुओं के परस्पर टकराने से उत्पन्न ध्वन्यात्मक शब्द' ।

|खनाखन | ' रुपये पैसे आपस में टकराने पर इस प्रकार का शब्द मुखर करते हैं ।'

|खुन् खुन् | ' बच्चों द्वारा इसी प्रकार का शब्द करते हुए रोना'।

|गड़बड़ | ' बादलों का गरजना' जब वह गड़ गड़ या घड़घड़ शब्द करता है' ।

|गपागप | ' खाद्य वस्तुओं को शीघ्रता से खाना' ।

|घूघाट | ' बाल का बोलना जो इस शब्द में समाविष्ट ध्वनियों से नितान्त सादृश्य रखता है ।'

|घमाघम | ' लड़ाई के समय मुखर शब्द' ।

|चटाचट | ' हाथ से लगातार मुक्क मारने से उत्पन्न श्रुति' ।

| चूचाट | ' चिल्लाने की आवाज़' ।

| छनमनाहट| 'कुछ वस्तुओं का परस्पर टकराना ऐसा शब्द मुखर करता है'।

|छन्कूनों | ' इसी प्रकार का शब्द करते हुए कोई वस्तु काटना' |

|फटापट| ' जल्दी-जल्दी '

|टुप टुप | ' जमीन पर टुप टुप करते हुए चलना' |

|डूडाट | ' गाय का लगातार बोलने का शब्द' |

|ढम ढम | ' ढोल से उत्पन्न शब्द' |

|तड़ तड़ | ' पानी बरसते समय उत्पन्न ध्वनि' |

|तड़कूनों | ' काटना' वस्तुओं को काटते समय तड़क व तड़क, इस प्रकार का शब्द होता है |

|दमादम | 'दम दम आवाज करते हुए पीटने पर श्रुत शब्द'

|धक्धक् | 'हृदय की धड़कन'

| नौराट्| 'पीड़ा के कारण होने वाली आवाज़' |

|पड़ पड़ | 'पेड़ गिरने पर होने वाला शब्द' |

|पिच पिच| 'सड़ी हुई या गली वस्तु को दबाने पर उत्पन्न ध्वनि' |

|पटापट | 'हाथ से लगातार पीट ले जाना मलमन्हि पटापट' शब्द मुखर करता है |'

|फड़फड़ाट| ' कपड़ों से होने वाला शब्द'

|शूशाट | ' वर्षा में तीव्र जल प्रवाह द्वारा उत्पन्न शब्द' | आदि |

१. ३. स्थानीय प्रकृति एवं व्यक्ति विषयक शब्दावली

इस कोटि के शब्दों की संख्या पर्याप्त हैं :

फलों के नाम -- प्रमुख फलों के नाम इस प्रकार हैं :

|खुश्म्यारु| 'खुबानी की जाति का एक फल जो आकार में अपेक्षाकृत छोटा होता है' |

|उर्लवा | 'आलूबुखारा की जाति का एक फल जो आकार में अपेक्षाकृत छोटा और स्वाद में खट्टा होता है' |

|मतकाकड़ि| 'नीबू की जाति का एक फल जो नीबू,बड़े नीबू से भी पर्याप्त बड़ा होता है और जिसका बात अर्थात् बल्कल खाने के काम आता है,खट्टा भाग नहीं खाया जाता है' |

।हिशालु । : `एक पहाड़ी जंगली मीठा फल`

।किरमोड़ी। : `ब जंगली एक खट्टा मीठा फल`

।काफल । : ` पहाड़ी फल जो बहुत प्रसिद्ध है`।

।ग्यांलि । : `जो दानों के आकार का एक मीठा फल`

।मल्यो । : `जंगली झाड़ियों में लगने वाला एक खट्टा मीठा फल`

।मैल । : `नाशपाती की जाति का एक फल जो आकार में अपेक्षाकृत छोटा होता है ।

।भिड़ो । : `अत्यन्त मीठे गूदे वाला एक फल जिसकी गुठली से `च्यूरा` नामक घी बनता है और गूदे से गुड़ भी बनता है ।`

कन्द- । तैड़ो, तेकुनो, गिठो , सोताफल,बन्तैड़ो । आदि ।

वनस्पतियों के नाम--

पेड़ : ।शल्लो । `बोड़`

।शानन,टुंणि, शलि, फल्यांट,ब थार, पयां। आदि इमारती लकड़ियां हैं ।

।बांज । एक प्रसिद्ध वृक्ष है जो ईंधन की लकड़ी के साथ कुछ इमारती लकड़ी के लिए भी काम में लाया जाता है।

।लड़ैक्यो । एक ऊंचा बड़े आकार का वृक्ष है जो ईंधन की लकड़ी के काम आता है ।

झाड़ियां : काटेदार -।बरलगलु । ।तिमुरो । हिशालु ।किरमोड़ो, कुल्या, घिङारु, वातोरा । आदि

बिना काटेदार-- ढड्याल्, तित्पाति, दतून्यां,मल्यो। आदि ।

घास : बल्मोड़ो, कुरो, कुमर, बुरशिनियां, बोलमैरि,कड्वा, फुल्या, गुफलि, तित्या, खौल्या, शिमारि,जिबालि, बुचड्या(क्यो), शों, ज्वांत, बाभ्यो, रतहळिया, पनुबाभ्यो, ज्येट्ट्या, तिपतिया आदि ।

पहाड़ तथा वन सम्बन्धी : ।उढयार ।, 'गुफा', ।टुक्को । 'पहाड़ की चोटी', । गैर। 'पहाड़ का धंसा हुआ भाग, ।डांड़ो । 'पहाड़',।स्वाला । 'पहाड़ का एक भाग,' ।थर्प। 'पहाड़ का एक भाग',।धारो 'पहाड़ का उभरा हुआ भाग'।खान्। 'दो पहाड़ों-के मध्य का संधिस्थल', ।पाट्टो। 'मैदान भाग', ।तप्पड़। उभरा हुआ खुला स्थल जहां धूप पर्याप्त रहती है', ।कांठो। 'पहाड़ों का दुर्गम स्थल' आदि ।

नदी-नाले : ।गाड़। ' वह नदी जो पैदल पार की जा सकती है ।

।गंगागंडा । 'वह नदी जो पैदल पार नहीं की जा सकती है' ।

।रौड़ो। 'वर्षा ति में उत्पन्न जल प्रवाह' ।

।शिमार। 'कीचड़ वाली जगह' ।

।बगड़। 'नदी के किनारे का रोड़े और बालू वाला भाग'

।ताल । 'जल कुण्ड'

।खाल । 'ताल'(चमड़े की खाल भी)

जीव-जन्तु :

जल जीव - किंचित

।गड़याल । 'किंचित कठोर आवरण वाला एक छोटा जीव'

।गिदुलो । 'केंचुवा'

।मेकुनी । 'मेंढक'

थल-जीव :

।घोरड़ । 'शिकार योग्य एक जंगली जानवर'

।शशो । 'खरगोश'

।शौली । 'काँटेदार अंगों वाला एक जानवर'
।काकड़ । 'नर्म रोमों वाला एक जंगली जानवर'
।

पक्षी :

।चलूली । 'चिड़िया'
।घुग्गु । 'उल्लू'
।घुड़ती । 'कबूतर'
।तितोरी। 'तीतर'
।शिन्टोली। ' शिन्टोला'

विषैले कीड़े :-

। उप्यां । 'पस्सू'
। शल्शा । 'खटमल'
। झीना । 'मच्छर'
। कन्शांडोली । 'कन्खजूरा'
।बड़याल । 'बड़ी ततैया'
।भिमाड़ी । 'ततैया'
। मौनी । 'शहद की मक्खी'
। किरमोली । 'चींटी'
। छेपोड़ी । 'छिपकली'
। श्बाप । ' सांप'

कृषि एवं अवृ विषयक शब्दावली :

।बच्या,आधेली । 'साझा, बटाई पर'
। अशिपालु । 'अकुशल' ।
। आंकुली । 'नवांकुर'
। आफर । 'लोहार की कार्य शाला'
। आंशि । 'हंसिया'
। आद । 'नमी'
। इवोली । . ' मेंड़'
। इजोरी । ' भूमि के भाग विशेष'

उकाशुर्नो	'ऊपर की ओर खींचकर निकालना' ।
उकैरो	'पौधों की जड़ों पर अधिक मिट्टी रखना' ।
उगो	'हल का हत्था'
ऊडपूड	'खेत के सिरे (लम्बाई की ओर के)'
उचूनो	'उठाना'
उपाड़नो	'जड़ से उखाड़ना'
उमेल	'फसल के बाद खेतों में छोड़े गये पशुओं की उन्मुक्त स्थिति'
उमा	'भुनी हुई गेहूं की बालें'
एक बट्यूनो	'एकत्र करना'
एक मल्यां	'लगातार'
एकराज्योक	'बहुत'
एक हलि	'एक दिन में जोतने योग्य भूमि'
ओखल	'ऊखल'
ओगल	'एक साग जिसका बीज भी फलाहार के काम आता है'।
ओड़ो	'खेतों में सीमा सूचक पत्थर'
कदुवा	'कोल्हू'
कनका	'चावल के टूटे हुए छोटे छोटे कण, गेहूं'
कनोलो	'खेतों की ऊंचाई की तरफ का विभाजक'
कपश्या	'नमी वाली जगह'
कमूनो	'खेती करना'
करैठो	'खलिहान में प्रयोज्य झाड़ू'
काति,कातो	'छोटा खेत'
कामदार	'कार्य कर्ता'
किलो	'खूंटा'
कुकड़ी	'मुर्गी'
कशि	'जमीन खोदने के लिए प्रयोज्य औजार' ।

| कुट्‌टी | 'गुड़ाई के काम आने वाला औजार'
| कुनको | 'जो खेत अधिया में न देकर स्वयं बना रक्खा हो या जिसमें किसी का हक़ न हो, उसके लिए प्रयोज्य
| कुन्यां | 'धान को फसल काटकर उससे बनाया गया ढेर'
| कुल्यूनो | 'सिंचाई करना'
| केड़ो | 'कांटेदार झाड़ियां जो खेतों में उग आती हैं और उन्हें काटकर जला दिया जाता है'।
| कोंनो | 'छोटे दाने का अनाज, धान के छिक्कल' ।
| खणनों | ' खोदना'
| खलो | 'आंगन, खलिहान' ।
| खात | 'ढेर'
| खेति | 'फसल'
| खोड़ | 'कांजीघर'
| गड़ो | ' खेत'
| गढोलो | 'घास या पशुओं के चारे का बोझ'
| ग्यूं | ' गेहूं'
| गिरो | 'गेहूं कूटने वाली लकड़ी'
| गुदा | ' अनाज के दाने'
| घांति | ' फेरा' जैसे ।एेलग्धांति । 'इस बार'
| चान्नों | ' चने'
| चिलो | ' भूसा'
| छकाल | ' दोपहर'
| छड़नो | ' डालना -- बीज डालना'
| जोतनो | ' जोतना -- हल जोतना'
| जंवाड़ि | ' जौ की फसल की बारी या जौ की फसल वाले खेत'।
| भिकोड़ो | 'कांटेदार झाड़ी, झगड़ा'
| भिपा | 'कांटेदार पौधे जो खेत में उग आते हैं-- देखिए ऊपर 'केड़ो' ।

फोल	'फाड़ो'
टांको	'टांका-- मरम्मत'
टिपुनो	'तोड़ना -- अनाज को बालें तोड़ना'
दुणां	'अनाज में मिश्रित अखाद्य वस्तु'
ढाडोरो	'लताओं -- जैसे ककड़ी, कद्दु,तोरई, आदि के सहारे के लिए जमीन में गाड़ी हुई लकड़ी की बड़ी शाखा' ।
डलांटो	'ढेलों को तोड़ने का उपकरण'
डाल	'उपल -- ओले'
डांशि	'एक प्रकार का पत्थर'
ढैड़ा	'ढेले जिन्हें तोड़ कर धान और जौ के बीज बोये जाते हैं ।
ढुङ्गो	' पत्थर'
तिनोड़ो	' तिनका'
तोर-नौश	' खेत के किनारे(चौड़ाई की ओर)'
तौश	'प्यास'
तुरोड़ि	' शीघ्र'
दातुलि	' हंसिया'
दुनों	' बैल के चारा खाने के लिए बना दोने के आकार का लकड़ी का पात्र; दुगुना'
दुलो	' छेद'
धों	' वर्षा-- बादल'
धोरा	'पानी का धारा'
नलो	' गेहूं, जौ,महुवा, आदि के पौधों का चारे के रूप में अवशेष जिसमें से अन्न अलग कर लिया जाता है' ।
नालि	'नाली-- लगभग एक सेर की मात्रा की नाप
परखो	' खाद'

| पराल | ` पुआल`
| परालूफाड़ी| ` पुआल से धान अलग करने का लकड़ी का उपकरण`
| पल्वाला | ` उस तरफ`
| पिठो | ` धान कूटने पर निकलने वाला पशुओं का चारा`
| पुत्कों | ` अनाज रखने का पात्र`
| पुलो | ` गट्ठर`
| फर्कनों | ` लौटना`
| फालो | ` हल में लगने वाला लोहे का फाल`
| फिजूनो | ` फैलाना`-- पसो फिजनो
| फूनों | ` खोलना`
| फाड़ो | ` फड़वा`
| बताल | ` मौसम-- उपयुक्त अवसर`
| बतूनो | ` सूप से अनाज और कूड़ा हवा द्वारा अलग करना`
| बयालो | ` हवा`
| बरशनो | ` बरसना`
| बांड्हो | ` हेड़ो`
| बाज्जो | ` बिरला`
| बाटनो | ` बाटना -- रस्सी बाटना`
| बाण | ` हिस्सा`
| बाल्लो | ` बाल -- अनाज की बाल`
| बिन्नों | ` वह खेत जिसमें रोपाई के लिए पौधे तैयार होते हैं`
| बियां | ` चावलों के बीच में बिना कुटे धान`
|बियों-बीज| ` बीज`
| बिश्कुनों | ` धूप में सुखाने के लिए फैलाया जाने वाला अनाज`
| बोंण | ` औजार का हत्था`
| बुब्बो | ` निस्तेज धार वाला`
| बेड़नो | ` लपेटना`

| बैकर | 'मजदूरी के रूप में दिये जाने वाले अनाज आदि'
| बोकनो | 'ढोना'
| बोट | 'पौधा'
| बौड़ो | 'बछड़ा'
| बौनो | 'अनाज के खेत में उगी हुई घास', बौना'
| बौरो | 'मजदूर'
| बोशो | 'खेत में खोदने का एक औजार'
| भुड़ा | 'अनाजों को पौधों से अलग करने के बाद बचे अव-
शेष जिनमें कुछ अन्न बचा रहता है' ।
| भूड़ | 'छूने पौधों की स्थिति'
| भूश | 'भूसा'
| मजूर | 'मजदूर'
| माणनो | 'पुवाल से धान अलग करने की क्रिया'
| माण्डिरो | 'महीन दानों का एक अनाज'
| मानो | 'नाप -- नाली का एक चौथाई'
| मांश | 'उड़द'
| मिदुरा | 'गोड़ाई के काम आने वाला औजार'
| मिशुनो | 'मिलाना'
| मिशारि | 'मिश्रित'
| मुट्ठि | 'मुट्ठी की नाप--छ: मुट्ठी का एक माना
होता है ।'
| मुठो | 'घास, चारे आदि का गट्ठा'
| मुंड़ो | 'पेड़ या झाड़ी की जड़ का भाग जो जलाने
के काम आता है' ।
| मैशो | 'शुरुवात'
| मै | 'लकड़ी का एक कृषि उपकरण'
| मौळ | 'खरोदना'
| मौनो | 'वर्षा में गोड़ाई या अन्य कृषि कार्य करते
समय इसे ओढ़ कर वर्षा से बचते हैं', शब्द की
मक्खी'

| म्वाला | 'बैलों का मुखावरण जिससे बैल फसल नहीं खा सकते'
| म्वाला | 'खरोदना'
| रम्टा | 'छोटी कुल्हाडी'
| रिमड़ | 'पशुओं की लड़ाई'
| रूड़ | 'सूखा मौसम'
| रोपैं | 'रोपाई'
| रौड़ो | 'बरसाती नाला'
| लपौड़ | 'बबाल'
| लोद | 'भांगे के पौधे का बल्कल जो रस्सी बनाने के काम आता है'।
| वल्वाला | 'इस तरफ'
| वार पार | 'यहां से वहां'
| शपड़नो | 'संभालना'
| शर | 'वलान -- पशुओं द्वारा खेती ~~करना~~ चरना'
| शांकनो | 'दोष लगाना'
| शां कोड़ो | 'पशुओं को हांकने के लिए कमुची'
| शाना | 'अच्छे -- जो काने अर्थात् खराब नहीं हैं'।
| शामि | 'हल में लगने वाला गोल छल्ला'
| शारनो | 'एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाना, नकल करना'
| शितमितो | 'सब्जी'
| शिन्को | 'तिनका'
| शिमाल | 'कुशल'
| शिमि | 'क्रीमी'
| शिमार | 'कीचड़ वाली जगह'
| शियो | 'हल चलाने पर खेत में बनने वाली लीक'
| शिरौला | 'मुने धान से निकले हुए चावल जो चबाये जाते हैं'।
| शोंग | 'शोंघ'
| शुप्पो | 'सूप'
| शुलों | 'लकड़ी का डण्डा जिसमें पिरोकर पशुओं का चारा ढोते हैं।'

। शेल् । 'छाया'

। शाँट्ट्यूनाँ। 'शाँटी से मारना'

। शोतर । 'वर्षात में पशुओं के नीचे बिछाये जाने वाले पत्तों सहित बिना काँटेदार टहनियाँ'।

। शाँड़ो । 'घर के निकट के खेत'

। श्याँठा । 'पानी में होने वाली एक घास'

। हकूनाँ । 'हाँकना'

। हथाँलो । 'हथेली में एक बार समा सकने वाली घास आदि की मात्रा'।

। ह्यूं । 'बर्फ'

। हाळ । 'हल से जोतने योग्य परिमाप'

। हळिया । 'हल चलाने वाला'

। हळो । 'हल'

घर सम्बन्धी शब्दावली --

। आगोली । 'अर्गला'

। मुनो । 'जिसमें अर्गला लगती है'

। शाडोली । 'श्रृंखला'

। खुटकुनो । 'सीढ़ियाँ'

। देळि । 'देहरी'

। मोळ । 'दरवाजे का चौखटा'

। चाँथारा । 'बैठने के लिए बना चौड़ा स्थान'

। ईं । 'दीवार'

। भित्तो । 'छत में लगने वाली लकड़ी की खपच्चियाँ'

। पाखो । 'ढालू छत'

। मरानो । 'मुख्य इमारती लकड़ी'

। जुवा । 'कड़ियाँ'

। धूर । 'छत की प्रमुख लकड़ी'

। बाँळि । 'कड़ियों को आधार प्रदान करने वाली मजबूत लकड़ियाँ'

| कुठो | `नमक तथा भुने भांगे, मंगोरे या सरसों को पीस कर बना चूर्ण जिसे सब्जी के स्थान पर रोटी के साथ काम में लाते हैं`।

| कर्ड़ गडेरि। `बण्डा`

| पिड़ो | `अबीं`

| सोतलूया | `जल में उत्पन्न होने वाला साग`

| क्वेराली | `राइता बनाने के काम आता है`

बस्तियों के नाम --

बस्तियों के नामों में निम्नलिखित रूप मिलते हैं --

कुम्डार, शातशिलिंग, वड्डा, मुणकोट, थकोट, खिशाड़, ग्वान्ना, मौरख्वाला, पुनैड़ि, शिल्पाटा, हुड़ेति, पौणि, बणोलि, टकाड़ि, टकोरा, डुडसानि, रँवोलि,गैंना, घड़बे, रोड़िपालि, पगन्ना, रौलकुन्वा, घुड्डा, रै, फुंणि, दयौल्थल, कापड़िगों, म्वींनि, चिट्टल, पालि, पोखरि, कोठ्यारा, थल, मैलति, शिडालि आदि ।

व्यक्तियों के नाम --

पुलिंग: किशना, रमुवां, जगति, देवुवा, हरुवा, चन्वां, केशरि, तिल्वा, मोहन, रेबुवा, गाडि, तारि, कलुवा, मनुवां, लिल्वा आदि। अवसर के अनुसार नाम अनेक प्रकार से पुकारे जाते हैं -- यथा उपर्युक्त नाम विशेष प्रसंग होने पर क्रमश: किशनानन्द, रामसिंह, या रामदत्त, या रामचन्द्र, जगतसिंह, देवीसा, हरिदत्त, हरीसिंह, चन्द्रशेखर, चन्द्रसिंह, केशरसिंह या केशर राम आदि रूप में कहे जाते हैं।

विवेच्य बोली में जातियों के अनुसार तीन प्रकार के नाम मिलते हैं --

ब्राह्मणों के नामों के साथ अन्त में प्राय: दत्त या चन्द्र रहता है, राजपूतों के नामों के साथ प्राय: सिंह या चन्द और हरिजन या शिल्पकारों के नामों के साथ राम लगता है ।

अंगों के नाम --

खाप`मुख के अन्दर का भाग`, मुख`मुख-जिसमें आंख ,नाक, आदि दिखाई देते हैं, खोरी`सिर`, थोल`मुख का वह भाग जो होठों से युक्त है`,

खुट्टा' पैर', नल्या'पिण्डलियां' आदि दृष्टव्य हैं।

सम्बन्धियों के नाम --

इजा' मां', बौज्यू 'पिता', काखि' चाची', बुबु'दाद, बुआ', जेठ्ज्या' ताई', दादा' बड़ा भाई', भाया' छोटाभाई', दिदि 'बड़ी बहन', बैनि' छोटी बहिन', आदि उल्लेखनीय हैं।

बर्तनों के नाम --

व्याला, जाम, भदेलि, तशाल्लो, कढ़ै, डाडु, फाँलो, कशिणि, घण्टि, गड्वा, कशेरो आदि।

सर्वनाम शब्दावली --

इस कोटि के शब्दों में मि, मी, 'मैं', निमि, तुमि, तैमि, 'तुम', उ 'वह', वी 'उस' आदि प्रमुख हैं।

क्रिया विशेषण --

तलि' नीचे', मलि' ऊपर', ऐल' अब', भोल'आगामीकल', बेलि 'विगतकल' आदि।

अस्थानीय शब्दावली

इस वर्ग के अन्तर्गत उन शब्दों से अभिप्राय है जो विवेच्य क्षेत्र से बाहर से गृहीत हैं। इनमें भारतीय भाषाओं तथा भारत के बाहर की भाषाओं के शब्द आते हैं। इस वर्ग के कुछ शब्द अपने तत्सम रूप में प्रयुक्त होते हैं, कुछ स्थानीय प्रकृति के अनुकूल हो गये हैं और कुछ भिन्नार्थों रूप में प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण :

(क) संस्कृत

तत्सम रूप : अन्न, अति, अर्थ, आधार, आकाश, इति, इष्ट, ईश्वर, आधार, उद्धार, उत्पात, उदय, एकान्त, कर्म, कंठ, काल, कुल, कुशल, गीत, गोत्र, गति, जन, तप, दुष्ट, दैव, धार, नाग, नाम, प्रारब्ध, प्रेत, पल, पुस्तक, मौन, मृत्यु, लोक, शूल, ज्ञान आदि व्यंजनान्त तथा ह्रस्व स्वरान्त शब्द विवेच्य बोली में तत्सम रूप में ही मिलते हैं।

दीर्घ स्वरान्त संस्कृत शब्द ह्रस्व स्वरान्त होकर प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण:
कन्या, काया, छाया, दिशा, मामा, लिला, हत्या, आदि।

संस्कृत के अनेक शब्दों के तद्भव रूप मिलते हैं --
अखोड़ (अखरोट), आगोली (अंगुली), अडवाला (अंकमाल), कल्यौ(कल्यवर्त) कुकुड़ो (कुक्कुट), कोख (कुक्षि), गोठ(गोष्ठ), गुसैं(गोस्वामी), गहाक (ग्राहक)। छाजो(छाद्य), तुमोड़ो(तुम्ब), तातो(तप्त), तीथ(तिथि), तीस (तृष्णा), दाबो(दर्भ), देलि(देहली), नतर(नतर्हि), न्नाति(नास्ति) नौनि(नवनीत), नवान(नवान्न), पाखो(पक्ष), मोसो(मसि), मुडोरो (मुदगर), नलौ(नाल), लिखा(लिक्षा), बल्द(वलीवर्द), आदि शब्द तद्भव रूप में व्यवहृत होते हैं।

(ख) हिन्दी

मुख, हाथ, पेट, बात, मैदान, बादल, साफ, आसमान, आंगन, तेल, लाल, सफेद, इन, उन, अब, तब, जब, कर, उठ, बैठ, आदि व्यंजनान्त उच्चारण होने वाले शब्द यथावत बोले जाते हैं। स्वरान्त शब्द परिवर्तन के साथ ग्राह्य हैं। उदाहरण :

पुल्लिंग आकारान्त शब्द ह्रस्व ओकारान्त रूप में मिलते हैं --
।घोड़ो। 'घोड़ा', ।केलो। 'केला', ।कालो। 'काला', ।पोलो। पोला, ।मेरो। 'मेरा', ।तेरो। 'तेरा', टेड़ो। 'टेढ़ा', ।तेड़ो। 'तिरछा' स ।लम्बो। 'लम्बा', ।छोट्टो। 'छोटा', ।खोटो। खोटा, ।घाटो। 'घाटा', ।करनो। 'करना', ।खानो। 'खाना', ।देखनो। 'देखनो' आदि।

हिन्दी के एकारान्त बहुवचन शब्द भी आकारान्त रूप में मिलते हैं --
।क्याला। 'केले', ।च्याला। 'चेले', ।ट्याड़ा। 'टेढे', ।काला। 'काले', आदि।

अन्य शब्द भी प्राय: ओकारान्त या आकारान्त रूप में मिलते हैं --
।जागा। 'जगह', ।बाटो। 'बाट', आदि।

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द का भी अन्त्य या ह्रस्व हो जाता है :
। माला । 'माला' ।

ईकारान्त शब्द इकारान्त होकर प्रयुक्त होते हैं :

।आदिमि। `आदमी`, ।घड़ि। `घड़ी`, ।गाड़ि। `गाड़ी`, ।पानि। `पानी`, । दिदि।दीदी,।तालि। `ताली`, ।खालि। `खाली`।मालि।माली आ

इसी प्रकार ऊकारान्त शब्द उकारान्त मिलते हैं --

।माँदु। `माँदू`, ।चक्कु। `चाकू`, ।तमाखु। `तम्बाकू`,।टट्टु। `टट्टू`, ।लट्टु। `लट्टू` आदि ।

अन्त्य ध्वनियों में परिवर्तन के अतिरिक्त आन्तरिक परिवर्तन भी द्रष्टव्य है :

तेरे -- त्यारा, मेरे -- म्यारा, उसके-- वीका, सीधा-- शिदो, झूठा-- झुट्टो, घुटना -- घुणो, कांटा-- कांणो आदि ।

उपर्युक्त सभी परिवर्तन विवेच्य बोली की अपनी प्रकृति के अनुकूल होते हैं

(ग) नैपाली

नैपाली के प्रभाव से पिठौरागढ़ के पूर्वी सीमान्त पर शब्दों में ज् के स्थान पर झ तथा छ के स्थान पर थ् मिलता है । उदाहरण--

जा - झा, मछुया -- मथ्या आदि

(घ) अंग्रेजी

अंग्रेजी के शब्द भी कुछ अपने तत्सम रूप में प्रयुक्त होते हैं तथा कुछ विवेच्य बोली की प्रकृति के अनुकूल परिवर्तित होकर । उदाहरण :

रेल, बस, पेपर, प्यन, पिन, स्कूल, फील्ड, लेटर, मास्टर, टीचर, आदि शब्द यथावत मिलते हैं ।

लाल्टीन`लैन्टर्न, लम्पु`लैम्प` गिरौण्ड`ग्राउण्ड`, बक्स`बक्स` आदि प्रकार के शब्द किंचित परिवर्तन के साथ गृहीत हैं ।

कुछ शब्द अंग्रेजी शब्दों से मिलते जुलते हैं और उनका अर्थ अंग्रेजी अर्थ के समान वही न होकर मिलता जुलता है -- । रिङ्। `घूम`-चारों ओर घूमना`, अंग्रेजी में यह शब्द `अंगूठी` अर्थ सूचक है ।

।बौट । `पौधा`, अंग्रेजी में बौटेनी` शब्द पौधों से ही सम्बद्ध है, आदि ।

(क) तमिल -

तमिल	पिठौगढ़ी
कैट्ट `बुरा`	गट्ट `बुरा`
निरै `पूरे`	निरै `पूरे`
पुल `घास`	पुलो`घास का गट्ठर`

तमिल	पिठौरगढ़ी
कट्टू `दाग`	कांट `दाग`
पडु `लेट पड़`	पड़ `लेट, सो, पढ़`
शिसीम `बिल्ली बोलती है`	शिरु `बिल्ली को पुकारने के लिए प्रयोज्य`

आदि ।

-o-

द्वितीय खण्ड

पिथौरागढ़ सम्भाग का लोक साहित्य

१

सामान्य परिचय

पिठौरागढ़ का लोक-साहित्य

१

सामान्य परिचय

१.० पिठौरागढ़ सम्भाग का लोक साहित्य लिखित एवं मौखिक दो रूपों में मिलता है। लिखित लोक साहित्य भी दो प्रकार का है -- प्रकाशित तथा हस्तलिखित। लिखित कोटि के लोक साहित्य में से कुछ तो ऐसा है जिसके साथ रचयिता का कोई उल्लेख नहीं मिलता है तथा कुछ विशिष्ट रचयिताओं से सम्बद्ध मिलता है। लोक साहित्य की प्रकृति का सम्बन्ध जन-मानस के सहज उन्मीलन से है जो उसकी विविध प्रवृत्तियों द्वारा मुखर होती है। ये प्रवृत्तियां लोक-मानस--जनहृदय ~~अजस्र मुखर होती है। ये प्रवृत्तियां लोकमानस~~ के चारों ओर की सहज परिस्थितियों -- प्राकृतिक, सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय आदि में अपनी मार्ग पाती हैं। मौखिक तथा लिखित लोक साहित्य में प्रकृति अथवा प्रवृत्तिगत कोई भेद नहीं है, दोनों में भाव एवं भावनाओं की सहज मुखरता के दर्शन होते हैं।

१.१ रचनायें

१.१.१ प्रकाशित रचनाओं में मूल तथा अनूदित दोनों प्रकार की रचनाएं हैं। अनूदित रचनाओं में संस्कृत से पिठौरगढ़ी में अनुवाद किया गया है। प्रसिद्ध कवि गुमानी की रचनायें इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। संस्कृत से अनुवाद करने की परिपाटी संस्कृत की अध्ययन विरति के साथ-साथ कम होती गई है। अब प्राय: सभी रचनायें मौलिक रूप से में प्रस्तुत हो रही हैं।

१.१.२ रचना की सहज प्रवृत्ति के अनुसार आरंभ में विवेच्य क्षेत्र में पद्यमय रचनायें ही अस्तित्व में आयीं। सम्प्रति नवीन गतिविधियों के अन्तर्गत कहानी, नाटक, एकांकी आदि गद्य रचनाओं की ओर ध्यान दिया जा रहा है। यह अभी अमुद्रित रूप में मिलता है। स्थानीय बोली में रचनाएं प्राय: स्फुट गीतात्मक हैं क्योंकि इनका सम्बन्ध जन-जीवन के सुखदुख से संबंधित विभिन्न पक्षों की अभिव्यक्ति से है। किसी एक विशेष कथा को लेकर काव्य रचना बहुत कम हुई है। पुस्तकों के रूप में प्रकाशित रचनाओं में होली, मंगलगीत आदि से संबंधित प्रकाशन प्रमुख हैं। ये संग्रह के रूप में मिलते हैं। स्फुट गीतों के संग्रह भी उल्लेखनीय हैं।

१.१.३ विवेच्य संभाग में मौखिक लोक साहित्य अपने विपुल आवरण में श्रुति-परम्परा से प्रचलित है। इनमें मौखिक गाथायें जो प्रबन्धात्मक कोटि की हैं, विशेष

आकर्षक है। लिखित एवं मौखिक दोनों ही का रचनात्मक संबंध विविध मुखी है। इनमें से, जैसा ऊपर भी किंचित संकेत हुआ है, अनेक रचनायें स्फुट कोटि की हैं। ये स्थानीय प्रकृति और जीवन के बारे में अनेक अनेक प्रकार के चित्रांकनों से सम्बन्धित संबंधित हैं। उदाहरण --

।१। पहाड़ों का डांणा कांणा --

पहाड़ का डांणा कौणा क्या भला लागनी ।
जस भात है लेक माणा सवाद लागनी ।।
छल छल छलकन्यां क्या ठण्डो पानी ।
ब्वारी चेली घसियारी खुशि ह्वे बेर जानी ॥[1]

अर्थात् पहाड़ के अंग-प्रत्यंग कितने अच्छे लगते हैं जैसे भात से माणा ।चावल के आटे से बनी हुई एक प्रकार की रोटी। अधिक अच्छे लगते हैं। ठण्डा ठण्डा पानी पहाड़ों में छलछलाता हुवा बहता है और बहूबेटियां खुश हो होकर पहाड़ों की ओर जाती हैं।

आषाढ़ आयी --

जब दीन हुनि ग्या सब घाम न्हे ग्यो,
मौंणि आपन बेंग जून पै गै ।
रे हो छोटी का बाबू उठना किले नै,
तारा ले निकलि ग्यान अब सांझ पड़ि गै ।

। । ।

चारों तरफ छ हरियाली छायी
क्स रंग रे रौछ सबक मनन में[2]

उक्त पंक्तियों में आषाढ़ मास में प्रकृति एवं जीवन की झांकी चित्रित की गई है।

।२। सामाजिक समस्याओं को लेकर प्राय: सभी कवियों ने रचना की है। छुवाछूत, नारी धर्म, सफाई, नशेबाजी आदि प्रकार की समस्यायें उठाई गई हैं

१- रचयिता श्यालीराम शिल्पकार। यह रचना श्याली का सेल नामक पुस्तिका में संगृहीत है।

२- रचयिता -- प्रसिद्ध लोक कवि -- लालमणि।

यथा :--

।क। छूतछात कोई चीज़ नहीं है। सभी मनुष्य हैं और एक ही ईश्वर की सन्तान है। कीड़े-मकोड़े, पशु-पक्षी, आदि सब में एक ही तत्व विद्यमान है। ईश्वर तक को तो सब प्रसाद चढ़ाते हैं, तब मनुष्य ही परस्पर छूतछात का भेदभाव रखता है --

छूतछात को रैगी भगवन
छूतछात कसि के मै।
कामणा बै हुम तक सब जाणी,
तुमन बै उत्पन्न मै।
किड़ पिटडा हाथि वौ कगार
सब मैं व्यापक तुमै मै।
+ + +
हुम कसाई भंगी हाथ बै
तुम नैवेद सबै है।[3]

।ख। 'नारी का धर्म अपने पति की चरण सेवा है। पति ही नारी के लिए ब्रह्मा, विष्णु, शिव है और वही ईश्वरों का ईश्वर है। उसी की सेवा नारी का एकमात्र धर्म है। पति सेवा द्वारा बिना परिश्रम के ही नारी वैकुण्ठ का पद पा लेती है। पातिव्रत धर्म की महिमा अपरम्पार है --

आपणा स्वामी चरण पर मन लावरी,
बरमा विश्नू शिव पति छ महीश ।
जीवन को जीव पति ईशन को ईश ।।
+ + +
पतिव्रता नारिन का भला भला काम।
वधिला बैकुन मैं लन रौछ नाम ।।[4]

।ग। बीड़ी सभी लोग पीने लगे हैं। इसके बिना चैन नहीं होता, न नींद आती है, न खाना पचता है और न घर का काम चलता है। इसके चुम्बन में सभी रस लेते

३- श्री कृष्ण पन्त ।बचीराम। द्वारा रचित हस्तलिखित प्रति संख्या ६, जो श्री नरेन्द्र संग्रहालय मटेना बेरीनाग में उपलब्ध है।

४- महिला धर्म प्रकाश -- बचीराम, पृ० ४।

और यह घर बाहर सर्वत्र साथ रहती है। । मुख में आग लगाती है, धुवां निकालती है। इस कुटिल से बचो यह मौत की निशानी है --

बीड़ी बीड़ी बीड़ी सब जाति पिनी बिड़ि ।
ये बिन चैन नहाति ये बिन नीन नहाति ।।
ये बिन अन्न नी पचनों घर को काम नी चलनो ।
ये चुम्बन मे रस छ, घर बरण सदै दगड़ छ ।

+ + +

ज्वानन कणी सते मैं, आखिर मौत दिखें गैं ।।

[३] धर्म, उपदेश और भक्ति से सम्बन्धित रचनाएं भी पर्याप्त मिलती हैं। आरम्भ में संस्कृत से अनूदित रचनाएं प्रस्तुत की गयी हैं। भागवत के अनेक प्रसंगों, भगवत गीता, दुर्गा सप्तशती आदि के आधार पर अनुवाद हुए। वर्तमान समय में उक्त विषयों पर मूल रचनाओं की ओर प्रयास मिलता है। उदाहरण --

[क] राम स्मरण का महत्व सभी धार्मिक विचार वाले व्यक्ति समझते हैं। जो राम नाम भूल गया मानो नरक में चला गया। राम नाम स्मरण में ही सुख है, उसी में बल है जिससे यमदूत भी भयभीत हो जाते हैं।.... राम को कभी न भूलो, सारा कार्य पूरा हो जायेगा यह निश्चय है, सभी बातें विश्वास पर निर्भर हैं --

राम नाम जो भुलि गै, सो जणि नरकै पड़िगै ।
राम नाम जो जपछ, वीकै भौतै सुख छ ।
राम नाम मैं बल छ, यम कै मे थरथर छ ।

+ + +

सबै भुली जन राम, बणि जालो सब काम ।

[ख] भगवान भक्तों के हृदय में आते हैं। युग-युग दीन दुखियों का दुख दूर करने के लिए अवतार लेते हैं और पृथ्वी का भार हरण करते हैं। वे नटवर रूप में विविध लीलायें करते हैं और अनेक प्रकार से भक्तों का कल्याण करते हैं। सज्जनों के लिए वे सज्जन तथा दुष्टों के लिए काल हैं --

भगत हृदय मैं रंछा,
सुन्दर बात सुणूंछा,
दीन दुखी की सेवा लीजिए,
लिछा युग-युग मैं अवतार ।

लिहँ वैर तुम उन्नून बचूंछा,
हरछा धरनी भार ।

+ + +

साधु हृदय मैं साधु बणूछा,
दुष्ट हृदय हौं मैं काल ।
रूप रूप मैं तुमैं बसी छै,
कैनी जाणनी हाल ।`

[ग] `माता पिता और गुरू देव रूप हैं । वे ही त्रिदेव हैं, उनकी रात दिन सेवा करनी चाहिए । भक्ति रूपी फूलों द्वारा उनकी पूजा करनी चाहिए और उनके भोजन इत्यादि का आदर के साथ प्रबन्ध करना चाहिए । श्रवणाकुमार की कथा स्मरण करके उनकी सेवा करो । भीष्म की जैसी पितृ भक्ति द्वारा सुमति तथा सुगति सब सुप्राप्य है --

देवी का समान इजा बाबा गुरुदेव,
रात दिन सेवा करौं यौई मैं त्रिदेव ।
भक्ति रूपी फूलन ले सदै पूजा करी,
भोजन नैवेद अति आदर ले धरी ।

+ + +

[घ] जवानी मैं मनुष्य जो भी करे किन्तु मृत्यु निकट आने पर ईश्वर की ओर ध्यान चला ही जाता है । भक्त अपने इष्ट से अत्यन्त करुण स्वरों में निवेदन करता है कि हे प्रभो अन्तिम समय में हमें भूल न जाना । प्राण निकल जाने पर सभी साथी छोड़ देते हैं । पुत्र, स्त्री आदि संबंधी भी साथ नहीं जाते, वे शीघ्र बाहर रख देते हैं । बहुत ही कर दिया तो रो धो लेते हैं और उनका कार्य इतना ही है । इसलिए हे दयामय मैं बहुत अधम अधम हूं पर अन्त समय आप न छोड़ियेगा--

प्रभो अन्त समय जन छोड़िया
प्राणवायु का निकलण पर तो, कुटुमी सबै दगड़िया ।
सुत वित नारी साथ नि जाना फटपट धरनी भैर ।

+ + +

थोड़ा बहुतरी अबे भी करनी साथ क्षण मैं करनी ।

+ + +

करुणानिधि मैं बड़ो अधम हूं अन्त समय जन छुड़िया ।

(५) विवेच्य के कवियों ने राष्ट्र भावना को भी समुचित रूप से रचनाओं में आवेष्टित किया है। इनमें स्वतंत्रता, जन्मभूमि, हमारा देश, भोट आदि अनेक प्रसंग स्पर्श किये गये हैं --

स्वतंत्रता

देश हुनै ग्यो स्वतंत्र आज, देश में हमोरो आपुनो राज,
देश अखिल बढ़िग्या अब, उन्नति करी हमुले जब।

जन्मभूमि

नमस्कार जन्मभूमि, तू छै मेरी माता,
आपुनो मुलुक निको, जां आपनि थात।

- - -

हमर देश

गंगा जमुना बगनी दादी हमर देश मा,
जन्म भातान लीनी, दादी हमार् देश मा ॥

भोट

कै कैं दीनू भोट मायी, कै कैं दीनू भोट।
भोट भिखारी घर घर फिरनी, भीख मांगनी भोट।

- - -

आदि रचनाओं में देश प्रेम तथा राष्ट्री भावना का उन्मेष दृष्टव्य है।

१.२ वर्ण्य विषय

१.२.१ विवेच्य संभाग में ब्राह्मणों में संस्कृत के पठन-पाठन की ओर विशेष प्रवृत्ति है और अधिकांश शिष्ट लिखित रचनायें इसी वर्ग द्वारा प्रणीत हैं। अपने संस्कृत ज्ञान के कारण कवियों ने संस्कृत साहित्य से रचनाओं का अनुवाद अपनी बोली में किया जो उनकी धार्मिक प्रवृत्ति का भी द्योतक है। जन भाषा के कवियों का ध्यान सामाजिक बुराइयों की ओर भी गया और धार्मिक विचारों का आश्रय लेकर इन बुराइयों की आलोचना भी मिलती है। प्रसिद्ध कवि गुमानी ने गोरखा राज्य के अत्याचारों का वर्णन किया और अंग्रेजी राज्य के कारण फैली बुराइयों के विरुद्ध भी बहुत कुछ लिखा गया। इससे उनकी राष्ट्रीय भावना तथा देश प्रेम की प्रवृत्ति का परिचय मिलता है।

१.२.२ स्थानीय कवियों ने क्षेत्र के प्राकृतिक वैभव और वहां की समृद्धि को भी अपने काव्य का विषय बनाया। नीति उपदेश सम्बन्धी साहित्य भी मिलता है।

नारी-धर्म, पातिव्रत धर्म आदि की महत्ता का वर्णन, धार्मिक प्रवृत्तियों को अभिव्यक्ति का रूप देने में नीति उपदेश और दर्शन की ऊंची-ऊंची रचनायें प्रस्तुत की गयीं ।

१.२.३ समाज उत्थान की पुकार के साथ साथ नवयुग तथा नव-निर्माण की ओर भी लोक कवियों का ध्यान गया । अन्ध-विश्वासों का खण्डन, पिता-पुत्र, सास-बहू, स्त्री-पुरुष, भाई-बहिन आदि सबके आदर्श व्यवहार को लेकर वाणियां मुखर हुईं । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विकास योजनायें, पंचायती राज्य, सांस्कृतिक उत्थान आदि की ओर ध्यान गया । चीन के आक्रमण का बहुत अधिक प्रभाव विवेच्य संभाग पर पड़ा । जनता के मनोबल को ऊंचा उठाने के लिए पुकार हुई । भावनात्मक एकता, राष्ट्ररक्षा के गीत गाये गये । भारत की प्राचीन संस्कृति की महत्ता स्थापित करते हुए नवयुग का स्मरण दिलाया गया । जंगलात विभाग की स्थापना के साथ-साथ अनेक सरकारी कर्मचारी नियुक्त हुए । 'पतरौल और घस्यारी' में जंगलात विभाग के कर्मचारीगणों की ज्यादती का ही वर्णन मिलता है ।

१.२.४ सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन और उनसे सम्बन्धित समस्यायें, स्थानीय प्राकृतिक वातावरण, देवी-देवताओं से संबंधित रचनाएं, वर्तमान सामाजिक स्थिति, लोक जीवन, भूमि व्यवस्था, पौराणिक तथा धार्मिक प्रसंग, हरिजन उत्थान, समाज कल्याण, उत्सव, त्यौहार, मेले आदि विभिन्न प्रकार के वर्ण्य विषय बने । इस प्रकार जीवन, जगत तथा प्रकृति के विविध उपादानों को लोक-वाणी में संजोया गया और इन पक्षों की मार्मिक झांकी प्रस्तुत की गयी ।

१.२.५ विवेच्य संभाग के लोक कवियों का ध्यान क्षेत्रीय जन-जीवन के चित्रण की ओर अधिक गया है । आत्मसुधार, परोपकार और सच्चाई की भावना को अपनाने की बात कहते हुए भारतीय संस्कृति तथा दर्शन की ओर ध्यान आकर्षित किन-मकन किया गया है । जीवन के वियोग पक्ष को लेते हुए विरह की बड़ी मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है । यह विरह केवल आंसू बहानेवाला न होकर प्रेरणा के स्रोत के रूप में चित्रित हुआ है । प्रेम भावना के इस चित्रण में संयोग और वियोग की विभिन्न स्थितियों की मर्मस्पर्शी झांकी प्रस्तुत हुई है । वर्णनों में यथार्थता अधिक और कल्पना की उड़ान कम मिलती है ।

१.३ भावानुभूति

१.३.१ पिठौरागढ़ के लोक साहित्य में भाव सबलता के साथ-साथ कल्पना की मार्मिकता के दर्शन होते हैं। कल्पना की ~~अनेक~~ कोरी उड़ान न होकर यहां के काव्य में अनुभूति के रंग रूप तथा रस के ~~पोषक~~ पोषक तत्व के रूप में इसे अपनाया गया है। भाव और कल्पना का सामंजस्य दिखाकर सरस, सुन्दर एवं हृदयग्राही चित्र प्रस्तुत करने की चेष्टा की गयी है। प्रवासी प्रियतम की याद में कलपती हुई नायिका के आंसू किसी सहृदय की आंखों को सजल कर देते हैं। नायके की रणमणि (कसक-भरी याद) में दुखी शैल वधू की वेदना हृदय पर छा जाती है। प्रकृति साथ-साथ हंसने और रोने लगती है। बुरुंशी, दुदभाती, तथा प्योली के फूल नायक-नायिकाओं की ही भांति प्रत्येक के जीवन को भी उल्लास, उमंग और सरसता से भरपूर बना देते हैं। खिली हुई चांदनी में रात हंसती हुई जान पड़ती है, तो कभी ओस के आंसू बिखर बिखराती है। इस प्रकार अनुभूति की मार्मिक अभिव्यक्ति द्वारा सहृदय के लिए रसानुभूति की सामग्री प्रस्तुत हुई है।

१.३.२ विवेच्य साहित्य में हर्ष, शोक, करुणा, वियोग, सुख-दुख के प्रभूत चित्रण मिलते हैं। प्रकृति के अंचल में उल्लास से भरपूर वातावरण में जहां कोमलता का साम्राज्य है, वहां श्रम की कठोरता भी विद्यमान है। जीवन के सभी पक्षों की सानुभूति छाप लोक साहित्य में मिलती है। क्षण भर के संयोग के बाद विरह की घड़ियों का ही साथ यहां के जीवन से जुड़ा हुआ है। कितनी मधुर होती है वह घड़ी जब प्रवासी प्रियतम घर लौट आते हैं। वर्षों से संजोये हुए सपने साकार हो जाते हैं। बुरुंश के खिले हुए फूल की भांति हृदय में अपूर्व उल्लास का अनुभव करते हैं। धरती की हरियाली उनके मन पर छा जाती है। लहरें उनके लिए खेलती हैं और पक्षी उनके लिए गाते हैं। कलकल के संगीत में डूबे हुए निर्झर, टेढ़ी-मेढ़ी पर्वतीय सरितायें, फूलों की चादर ओढ़े धरती, सुरीली बोली में गाने वाले कफू, घुघुती, आदि यहां के जीवन में अपूर्व मिठास तथा सरसता का संचार करते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य के मोहक वातावरण में पलने वाले पर्वतीय का जीवन उक्त सरसता के वातावरण में डूब जाता है। इसी कारण ~~इ~~ इस जन साहित्य में सौन्दर्य, प्रेम, संयोग और वियोग के अनेक चित्र रसिकों को रस में सराबोर करने की अद्भुत क्षमता रखते हैं। श्रम से परिपूर्ण जीवन में संयोग के अवसर बहुत कम आते हैं, तब भी संयोग की घड़ियां चाहे जितनी सुलभ हों रस से परिपूर्ण रहती हैं।

१.३.३ परिस्थितियों की विषमता के कारण यहां संयोग के आनन्द पर भी वियोग की छाया दिखाई पड़ती है और इस प्रकार विरह की प्रधानता है। प्रियतम का प्रवास, विरह व्यथा, हृदय की वेदना, पीड़ा तथा व्याकुलता -- ये सभी यहां की

भावभूमि को उद्वेलित करने में निरत मिलते हैं। फूलों के साथ गये हुए प्रियतम परदेश से बादलों के साथ भी नहीं लौटे। आंखों में उनकी मूर्ति समाई हुई है। कोई बार त्यौहार नहीं भाते। दिन में भूख और रात की नींद जाती रहती है। आंखें प्रियतम की सुधि में बेसुध रहती हैं। उनकी पाती भी आती है तो विरहानल में जलते हुए हृदय पर पानी के छींटे का काम करती है। संयोगावस्था के सुखद प्राकृतिक दृश्य वियोगावस्था में विरहानल बढ़ाते हैं।

१.३.४ यहाँ की नारी के लिए शादी की शहनाई बजते ही वियोग का दाण आ जाता है। प्रियतम थोड़े समय के लिए आता है और विदेश चला जाता है। अधिकांश प्रियतम सेना में कार्य करते हैं। उनके लिए वर्ष में कुछ ही दिन की छुट्टी नियत है। एक ओर मायके की याद, भाई का स्नेह, मां बाप का दुलार, सखी-सहेलियों की चुहल उसके हृदय को कचोटती है, दूसरी ओर ससुराल में मायके के सपने देखने वाली लाड़ली की बाट जोहती हुई बुरांशी के फूल को अपनी बेटी `हिरू` समझने वाली मां की व्यथा साकार होकर बोलती-सी जान पड़ती है। कभी वह परिश्रम की चक्की में पिसती हुई विरह व्यथिता शैलवधू है तो कभी- भाभी, ननद या सास है। वह कुछ भी हो, किसी भी रूप में हो, करुणा पक्ष उसके भाग्य से जुड़ा हुआ है। नारी जीवन की ऐसी ही व्यथा, कि प्रियजन की मृत्यु, विधवा जीवन की दयनीय स्थिति, बेटी का बिछोह -- ये सभी करुणाजनक चित्र सामने लाते हैं और चलते फिरते, उठते-बैठते, सोते आदि दैनन्दिनों के समय रस भरी लोक वाणी मुखरित होती जाती है।

१.३.५ कठोर परिश्रम, निरन्तर संघर्ष, जीवन के अभावों और निर्धनता में जीवन यापन करने वाले यहां के किसान के कष्टों की भी बड़ी मार्मिक अभिव्यक्ति क्षेत्रीय लोककाव्य में मिलती है। प्रवासी ब जीवन की कठिनाइयों के बीच अपने प्रदेश के लिए, सगे सम्बन्धियों के लिए, तड़पने वाले तथा प्रियतमा की याद में घुलने वाले पर्वतीय निवासियों के दुख से विजड़ित उद्गारों ने भी बड़ी मार्मिक, करुणा तथा हृदयस्पर्शी अभिव्यक्ति का रूप पाया है। कभी किसी के कलेजे का टुकड़ा सदा के लिए बिछुड़ता है तो कभी हाथों पर रची मेंहदी सूखने भी नहीं पाती और मांग का सिन्दूर धुल जाता है। सारी करुणा सिमटकर ऐसे प्रसंगों में समा जाती है।

१.३.६ वीरता विवेच्य अंचल के जीवन में छायी हुई है। यहां की धरती पर वीर गोरिया (ग्वैल देवता) की काठ की घोड़ी भी शत्रुओं को पछाड़ देती है। यहां

यहां की गाथायें शौर्य के आख्यानों से आपूरित हैं। आज भी सीमा पर डटा हुआ पर्वतीय वीर सिपाही देश की रक्षा के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने की भावना लेकर ही सेना में गया है। सैनिक महज कर्तव्य वह सेना में रहकर ही नहीं निभाता अपितु उसका व्यक्तिगत उसे सैनिक की भांति नित्य निरन्तर द्वार पर आये शत्रुओं से सतर्क बने रहने को प्रेरित करता है। आज के जन साहित्य में सैनिक की वीर भावनाओं का उपयुक्त आकलन भी अपने उक्त रूप में मिलता है। वीर रसानुभूति का प्रत्यक्ष स्वर प्रकृति पशु, पक्षी सब ओर गूंजता है हुआ सा ज्ञात होता है। सिंह और बाघ की दहाड़ का, यहां का जीवन अभ्यस्त है तथा किसी भी शत्रु को ललकारने में सक्षम है।

१.३.७ प्राचीन काल से ही विवेच्य अंचल तपोभूमि के रूप में ज्ञातव्य रहा है। कैलाश और मानसरोवर इससे सटे हुए उत्तर में स्थित हैं। स्थल स्थल पर केदार, भगवती कालिका, शिव इत्यादि के पूजा स्थल एवं ऋषि मुनियों के तप की पवित्रता तथा चिन्तन की महानता वाले स्थल, यहां का शान्त वातावरण भक्ति तथा शान्त रस की भावभूमि का कारण बनता है। पर्वतों के कोरों में जन-जीवन के आराध्य एवं इष्ट देवों के प्रति भी उमड़ती हुई भावधारा काव्यक्षेत्र में छलाछल रस उंडेल देती है। यहां भक्ति एवं धर्म भावना की अनुभूति, प्रेम भावना के समान ही बलवती मिलती है। गीतों, कथाओं, गाथाओं, भागवत आख्यानों आदि अनेक माध्यमों से उक्त अनुभूति अभिव्यक्ति का मार्ग पाती है। रामायण, भक्त भागवत, महाभारत, गीता आदि के प्रति जो श्रद्धानुभूति यहां की जन-भावना में अन्तर्लिप्त है, वह भाव पक्ष का ही एक उदात्त खण्ड है। यही कारण है कि मौखिक तथा लिखित लोक साहित्य का एक बड़ा भाग उक्त प्रकार की भावनाओं से संबंधित है।

१.३.८ प्रेम, शौर्य, परिश्रम और भगवद् चिन्तन के साथ साथ मनोरंजन का भी यहां के साहित्य में महत्वपूर्ण भाग है। यहां का विविध मुखी जीवन एक साथ सबकुछ उपस्थित करता है। सबेरा हुआ, ग्वाल मंडली अपनी बंशी हाथ में लिए जंगल की ओर चल पड़ती है। प्रकृति की गोद में हंसते, खेलते, उल्लसित होते हैं। जंगल में विविध प्रकार से गीतों का कार्य क्रम, गाथाओं, कथाओं, चक्र, पहेलियों की बारी सभी एक-एक कर रस छलकाते हैं। एक पहाड़ में बैठकर पुरुष अपने संगीत में कुछ कहता है -- दूसरे पहाड़ में से स्त्री उसका संगीतमयी वाणी में उत्तर देती है।

वह दृश्य देखते ही बनता है, वह गान सुनते ही बनता है और भाव, संगीत तथा अभिव्यक्ति का सामंजस्य बेसुधकारी होता है। यह सब यहां के जन-साहित्य में जैसे समेट कर रखा हुवा हो।

१.३.६ मां अपने छोटे बच्चे को छोड़कर घास के लिए अन्य कृषिकार्य के लिए खेतों में जाती है। दिन भर बालक उसकी थपकी के लिए तरसता रहता है। रह-रहकर अपने लाड़ले की याद में मां के काम करते हुए हाथ रुकते हैं किन्तु बेबसी और लाचारी की उस मूर्ति को काम पूरा करना है। दूसरी ओर परदेश की ओर जाने वाले अपने बेटे को बरसती हुई आंखों से विदा करने वाली मां देखती रहती है और उस मार्ग को जहां से उसका लाल आंखों से ओझल हुवा था निहारते नहीं थकती है। वह परदेश में उसके दुखों की कल्पना में खोई रहती है। उसके पत्र को गले लगाती है। प्रवास से लौटने वाले अन्य लड़कों से उसकी कुशल पूछती है और हृदय पर पत्थर रखकर उसकी प्रतीक्षा करती है। बेटी की विदा का भी अवसर है। दुखी मां के उद्गारों को वाणी मिलती है तो वात्सल्य रस की सरस झांकी सामने आती है। मातृ हृदय की यह व्यथा वात्सल्य की भाव भूमि बन जाती है जिसमें वात्सल्य भावना के वियोग पक्ष की मार्मिक अभिव्यंजना हुई है।

इस प्रकार विवेच्य क्षेत्र के जन-जीवन में विभिन्न पक्ष जो रस तथा भाव-व्यंजना की दृष्टि से महत्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करते हैं। यहां के लोक साहित्य में इसी प्रकार के मार्मिक स्थल भाव सबलता और अनुभूति की गहनता के साथ अभिव्यक्ति का मार्ग पाते हैं तथा रस परिपाक के सक्षम साधन बनते हैं।

१.४ रसानुभूति

१.४.१ प्रस्तुत लोक काव्य में श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का वर्णन मिलता है। तब भी संयोग की अपेक्षा वियोग को ही अधिक स्थान मिला है। इसका कारण यह है कि दिन रात परिश्रम के कारण तथा प्रवासी जीवन के कारण यहां विरह की घड़ियां अधिक हैं, संयोग के तो कुछ ही क्षण मिल पाते हैं। अतः वियोग की याद कर संयोगावस्था में भी उदासी छाई रहती है।[१]

१- उघड़ि की समझि बैर हियो भरी उंछ,
    छल छल आंसान बठे जल बगि आंख।

अर्थात् उस समय के स्मरण से हृदय भर आता है अब आंखें वियोग दुख से अश्रुपूर्ण रहती हैं।

संयोग के अनेक चित्र बड़े मार्मिक रूप में मिलते हैं। प्रेमी को देखकर प्रेमिका अत्यन्त भाव विह्वल हो उठती है। उसकी भूख प्यास सब जाती रहती है। वह अपने तन-मन की सुधि भी भूल जाती है।[१] प्रवासी संगी को पाकर जो स्थिति होती है, वह वर्णन से परे है।[२] बात यहीं समाप्त नहीं होती है। थोड़ी देर के लिये गये हुए संगी को न पाकर प्रेमी उसकी खोज में चल पड़ता है और जंगल में काम करते हुए उसे देखते ही बेसुध हो जाता है। कुछ इसी प्रकार की स्थितियां यहां के मिलन वर्णन में समाई हुई हैं।

उधर प्रियतम के प्रवास के कारण नायिका विरह की पीड़ा में व्याकुल रहती है। उसे सभी कुछ दुखदायी जान पड़ता है। प्रकृति के सभी उपादान हृदय की व्यथा को बढ़ाने वाले सिद्ध होते हैं। उदासी, हृदय का भर आना, मोहित होना, तनबदन की सुध भूलना आदि प्रकार से वियोग का प्रभाव परिलक्षित होता है। प्रियतम परदेश है। विरहिणी उनके लौटने की बाट जोहती है। इधर सरसों की खेती फूल गयी है। प्रकृति के प्रति ईर्ष्या प्रकट करते हुए नायिका कहती है -- "सभी के स्वामी घर लौट आये हैं, मेरे निर्मोही प्रियतम मुझे क्यों भूल गये। अपने देवर के द्वारा पति के लिए भेजे गये संदेश में उसका विरह कातर हृदय झांक रहा है।[३]

षट्ऋतु और बारहमासा वर्णन में वियोग श्रृंगार की मार्मिक व्यंजना हुई है। जब निष्ठुर प्रियतम नहीं आते और बादल गरजते हैं तथा बिजली चमकती है तो विरहिणी के हृदय की व्यथा बढ़ती है। उसकी आंखें अपने निर्मोही प्रियतम को खोजती हैं। उसके पास पंख होते तो वह उड़ कर अपने प्रियतम के पास पहुंच

१- उनुश देखिबेर् खुशि हुई गैछ,
 भीक त भूख तीस सब हराई गैछ,
 और तकि रौलो मडि,
 तन मन बदन की सुधि भूलि गैछ।

२- कसो हुंछ उ बखत खड्ी, ज बखत मिलनी द्वि जनी।

३- सरसों का गाड़ा फुलि गया, मेरि दुनियां बांजि रै गै।
 सबुंका मन्शा घर ऐ गया मेंकी चिलि नाई है रै।

जाती ।[1] परन्तु उस प्रियतम तक कैसे पहुंचे, वहां तो कोई भी नहीं पहुंच पाया ।[2] यह विरह साधारण नहीं है । इसमें आत्मा की व्याकुलता है । श्रृंगार के वियोग-पक्ष का यह अलौकिक रूप है । स्वामी की गोद में स्वर्ग का सुख रहता है और शरीर तो मेरा यहीं है लेकिन प्राण तुम्हारे पास हैं[3] आदि प्रकार के वर्णन वियोग की उच्च भावभूमि में पहुंचा देने में समर्थ हैं । विरहिणी को देखने वाले भी अनुभव करते हैं कि उसे देख कर गोठ (गौशाला) की गाय चौंक पड़ेगी । अतः उसे गोठ नहीं जाना चाहिए और उदासी छोड़कर धैर्य रखना चाहिए । उसके स्वामी की ममता फिर लौट आयेगी ।[4] इस प्रकार वियोग के विविध प्रसंग यहां के लोक जीवन में मिलते हैं तथा जनवाणी में इनकी सरस अभिव्यक्ति परिलुत होती है ।

१.४.२ प्रिय का संदेशा लेकर आयी हुई घुघती को जब बिल्ली मार जाती है, तो उस समय प्रेयसी का जो उद्गार प्रकट करती है, वह करुणा रस की व्यंजना का कारण बनता है । उधर प्रिय सेना में था । सीमान्त पर शत्रुओं का सामना करते हुए वह वीरगति को प्राप्त हो गया । डाकिया तार लाता है । पढ़ने वाला सही सही नहीं कह पाता किन्तु प्रियतमा ऐसे अनेक तार दूसरों के नाम पर आते देख चुकी होती है । वह अनुमान करके ही शोक का अनुभव करने लगती है । शोक में बेसुध बेसुध को तब कभी भी सुधि आने का कोई सहारा नहीं रह जाता है । होश आने पर उसका स्फुट एवं अस्पष्ट प्रलाप दर्शकों एवं श्रोताओं को भी शोक में निमग्न कर देता है । लोक कवि ऐसी स्थितियों का चित्रण कर करुणा रस की धारा

१- बाटा तलि स्याप की छड़ि बाटा मैं सरप,
पंख हुवा उड़ि अनु तुमरी तरप ।

२- त्यारा देश स्वामि म्यारा कोई ले नी पुज्यौ,
खोजि खोजि मरि गया, बाटो लै नी पायो ।

३- स्वामिकी गोदी मैं छुंछ स्वर्गक बास,
माटि मेरि इति छुरि छ त्यारा पास ।

४- गोरु गोठ जन जाये कलड़ी तरकली,
धियहार काम हवौ, फिरि माया फरकली ।

प्रवाहित करते नहीं चुकता ।[१] इसी प्रकार पुत्र हरिया की मृत्यु का समाचार सुन मिलने पर मां शोकपूर्ण रुदन में सबको करुणार्द्र कर देती है ।[२] एक गोपी गीत में गोपी सपने में अपने पिता से कह जाती है कि मेरी मृत्यु हो गयी है । चैत के त्यौहार के अवसर पर आप लोग जब औरों की बेटियों को देखेंगे तो मेरा ध्यान आ जायेगा । मेरी मां आशा में रहेगी कि गोपी भी आयेगी और उस रास्ते को देखती रहेगी जहां से मैं ससुराल गयी थी ।[३] इस प्रकार के अनेक वर्णन करुण रस की व्यंजना करने में समर्थ हैं ।

१.४.३ विवेच्य लोक काव्य में वीर रस का सहज चित्रण यहां की प्रकृति एवं वातावरण के अनुकूल ही हुआ है । हर समय शौर्य का आह्वान है । जंगल जाते समय शेर, बाघ, भालू जैसे बलवान जानवरों से लोहा लेना है । घर में भी इनका सामना करने को तैयार रहना पड़ता है । दोनों में युद्ध छिड़ ही गया । बाघ तो वीरता की मूर्ति है ही, शेरुवा भी कम न निकला । इस युद्ध का चित्रण वही कर सकता है, जिसने उसे देखा हो । विजयी शेरुवा ने स्वयं उसका वर्णन भी कर डाला और उसकी कथा कही जाने लगी । दो राजाओं के परस्पर युद्ध का सचित्र वर्णन वीरता का वातावरण उत्पन्न कर देता है । कत्यूरी और मोटियों की सेना के बीच हुए युद्ध का सजीव वर्णन इसी प्रकार का है । युद्ध मंत्रणा करते ही युद्ध के बाजे बजने लगे । आधी सेना सवारी पर है और आधी पैदल । युद्ध के नगाड़े बजते ही घमासान युद्ध छिड़ गया ।[४] चीन के आक्रमण के समय का वातावरण

१- कथ ग्यो आज मेरो सुहाग,
कस फुट्यो आज मेरो भाग ।
कसिकै धरूं आब आपुनो मन्ना,
जुगुलि कि होलि कि करूं धानुना ।

२- हरिया की इजा डाड हांणछी,
सुण्न्या को कल्ज्यां दि टुक हुंछ ।

३- बाटि देखी इजा, गोपि आली आली,
जै बाटि सैराब गयाँ, उइ बाटि आली ।

४- यस मत करि वेर लागि गया,
कमारा निशाणा उचि बाधि लै गया ।
बाजि गया डंका नगारा निशारा,
हुन लटी गय अब युद्ध घमासान ।

वीर रस की धारा से सरोबोर रहता ह मिलता है। लोक कवि अस्त्रशस्त्र धारण करने के लिए सबका आह्वान करता है। कोमलांगी स्त्रियां भी गोली चलाने का प्रशिक्षण लेती हैं। वे जोश से भरी हुई मानो शत्रु के छक्के स्वयं ही छुड़ा देंगी।[1] शत्रु के विरुद्ध वीर लोक देवताओं की भी पुकार की जाती है।[2] वीरता और युद्ध कौशल के ऐसे अनेक स्थलों पर वीर रस की व्यंजना हुई है।

१.४.४ रौद्र, वीभत्स, भयानक आदि रसों की व्यंजना भी स्थल-स्थल पर लोक-काव्य में पिरोई हुई मिलती है। दुधारी तलवार हाथ में लेकर, दूसरे में ढाल संभाल कर वीर गुस्से में भर जाता है और उसकी आंखे लाल हो जाती हैं।[3] कत्यूरों और भोटियों की लड़ाई में खून और लाशों का वर्णन रोमांच ले आता है।[4] वीर जब तलवार लेकर चलने लगता है तो चारों ओर हाहाकार छा जाता है, भयानक वातावरण हो उठता है।[5] शरीर का नाशवान होना, संसार की असारता, आदि के वर्णन द्वारा लोक कवियों ने शान्त रस की व्यंजना की है।[6] भक्ति रस की निर्बाध धारा भी यहां के कलाकारों के लिए वर्णनीय रही है। अपने इष्ट देवों के ध्यान में भक्त अपनी सुधबुध भूल जाता है। उसे कुछ भी नहीं सुहाता। पहले उसका इष्ट भोग लगायेगा, तब वह खायेगा। भगवत्प्रेम तथा भक्ति रस के अनेक चित्रण

१- अस्त्रशस्त्र सब लियौ, रङ्ले हत्यार,
घरबै आवौ मैर, हैं जाऔ तय्यार।
खाना लै तरवार लियौ ढाल तलवार,
लट्ठ स्वट्ट सबै लियौ दतङंया धार।

२- लोड़िया वीर उठाऔ लोड़,
पथरिया तै पाथर फोड़।
लकड़िया तै उठा लकड़ी,
चानियों माजि चील जसा पड़ौ।

३- गुस्सा भय हलवै का आंखि ह्वै लाल,
दुधारी तलवार थामि, गेड़बाली ढाल।

४- भरी गयीं गुस्सा भजा, ह्वै भरा मारा
खून कौत गंगा बगी, लाशों की दीयारा।

५- रणमब कुदि घोड़ि ह्वै हाहाकार,
एक कणि हत मारू, घोड़ि मारि चार।

६- भरिलै बौराणि भरमक डालो, अंब कालम संयम आलो।
कुटुम काबिल निइ औनैर, धन दौलत नीइ रौनैर।

प्रस्तुत लोक काव्य में भरे पड़े हैं।[1] हास्य रस की व्यंजना के भी अनेक उदाहरण प्राप्य हैं। कहीं-कहीं यह श्रृंगार एवं वीर रस के पोषक के रूप में भी आया है। श्रृंगार रस के पोषक के रूप में उन स्थलों पर हास्य का पुट मिलता है जहां एक अप्रतिम सुन्दरी के रूप पर मोहित होकर वृद्ध पुरुष तक उससे विवाह करना चाहते हैं। सुनपता की कन्या राजुला विवाह योग्य होने पर रुदुवा हुनियां उसके पिता से कहता है कि राजुला का विवाह मुझसे कर दीजिये। कवि ने रुदुवा के रूप का वर्णन करते हुए कहा है कि उसके सूप की भांति कान, आंख हुक्के की तरह तथा नाक चील के समान थी। ऊंट की तरह पीठ, भैंसे की तरह होंठ तथा ढोलक के समान पेट था[2]। बीनियों के आक्रमण के समय के अनेक हास्य प्रसंग वीर रस के पोषक के रूप में आये हैं।[3]

१.४.५ इस प्रकार विवेच्य काव्य में प्राय: सभी रसों की व्यंजना मिलती है। तब भी श्रृंगार को प्रमुख स्थान मिला है। श्रृंगार में भी वियोग पक्ष अत्यन्त मार्मिक है। यहां विरह की तीव्र अनुभूति अभिव्यक्त हुई है किन्तु दो प्रेमियों के इस वर्णन में ऐन्द्रियता अथवा वासना की गंध नहीं मिलती है, अपितु इसके स्थान पर अनिर्वचनीय सात्विकता की गंध मिलती है। इसके उपरान्त करुण रस प्रमुख है। यहां करुणा साकार होकर स्फुरण करने लगती है। भक्ति रस व्यंजना भी उसी के साथ सामने आती है। वीर रस अपनी प्रधानता प्रकट करता-सा विदित होता है। अन्य रस भी यथावसर मुखरता पा सके हैं।

१.५ शैली

१.५.१ विवेच्य लोक साहित्य में लोक कविता की प्रमुखता मिलती है। यहां की कविता शैली लोक गीतों के लय पर गीतात्मक है। प्राय: सभी रचनायें गेय हैं।

१- पंच नामा देवा तुम, है जया दयाला, गरीब पुकार पर करि दिया स्याल।

२- सुप जसा कान छिका, हुक्का जसा आंखा।
ऊंट जसी पुठ बीको, भैंस जीड़ डेर।

३- बीनियो कड़ हुला हैं यों भूत हैं भिड़ोड़,
लगाबी छिड़ोड़, काणि थियो बौड़,
छुटि दियों चटाचटि बाधि दियो बौड़।

वीरगाथायें तथा पौराणिक प्रसंग भी गेयता से अछूते नहीं रह पाये हैं। लोकगीतों की शैली तो अत्यन्त प्रचलित है ही, इसके अतिरिक्त चित्रात्मक शैली भी अपनायी गयी है। अधिकांश वर्णन चित्रवत साकार रूप में मिलते हैं। कोरी कल्पना तथा चमत्कारपूर्ण उक्तियों या उपमाओं को बहुत कम प्रश्रय मिला है। प्राय: अधिकांश साहित्य हृदयस्पर्शी, विचारोत्तेजक और शिक्षात्मक है। शैली में प्रौढ़ता, परिष्कार तथा परिमार्जन भी मिलता है। जीवन के करुण पक्षों को वाणी देने में प्राय: सभी कवियों ने मर्मस्पर्शी तथा हृदयग्राही शैली का सहारा लिया है। देशप्रेम, समाज सुधार की भावना जैसे विषयों पर शैली उपदेशात्मकता के अधिक निकट है, तब भी बीच-बीच में उसमें सरसता की झलक मिल जाती है।

१.५.२ प्रसिद्ध कवि गुमानी ने समस्यापूर्ति के रूप में स्थानीय लोक कविता को एक नवीन शैली दी किन्तु उनके बाद के रचयिताओं ने उसे प्राय: नहीं अपनाया। समस्यापूर्ति संबंधी कविता की विशेषता थी कि प्रथम तीन पंक्तियां संस्कृत में तथा अन्तिम पंक्ति समस्यापूर्ति के रूप में स्थानीय बोली में लिखी गयी है। इस चौथी पंक्ति में कोई प्रसिद्ध कहावत या मुहावरा होता है जो प्रथम तीन पंक्तियों के रहस्य को स्पष्ट कर देता है। गुमानी की यह अपनी शैली थी। गुमानी ने कई पद ऐसे भी लिखे हैं जिनमें एक पंक्ति संस्कृत की, एक हिन्दी की, एक नेपाली की और एक अपनी जन बोली ह की है। गुमानी ने वर्णनात्मक शैली में भी अनेक रचनाएं की हैं।

१.५.३ संवादों का समावेश यहां की शैली की एक प्रमुख विशेषता है। पतरौल और घस्यारी, सासु ब्वारी, साली भीना आदि संवाद इसी कोटि के हैं। फिल्मी गीतों की शैली में भी रचनाएं होने लगी हैं किन्तु इस कोटि के गीतों में अपेक्षित आकर्षण नहीं प्राप्य है। यहां की रचनाओं में प्रतीकों की योजना को भी स्थान मिला है। रूपक, उपमा आदि अलंकारों के माध्यम से किया गया प्रतीक विधान प्रस्तुत साहित्य अधिक हृदयग्राही बना सका है। भावानुभूति को स्पष्ट करने के लिए यह मार्ग उपयोगी सिद्ध हुआ है। प्रेम एवं यौन सम्बन्धी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कवियों ने प्रतीकों का खुलकर प्रयोग किया है, किन्तु इससे काव्य में कोई अश्लीलता नहीं आने पायी है। प्रस्तुत लोक काव्य में `सुवा `।तोता। का विशेष स्थान है। यह प्रियतम एवं प्रियतमा दोनों के लिए

प्राय: प्रयुक्त हुआ है। वस्तुत: यह प्रेम का प्रतीक बन गया है और उसे सम्बोधित करके गीतों में हृदय की बात कही जाती है। भ्रमर को भी प्रियतम का प्रतीक माना जाता है। `तैं ` होली गुलाब फूल मैं हूं तो भंवर ` कहकर अपने संबंधों की ओर संकेत किया जाता है। प्रिय के प्रेम और मिलन की इच्छा के लिए `तीस` का प्रयोग भी उल्लेखनीय है। प्रिय जिस प्रकार पानी की प्यास नहीं सहन कर सकता, वैसे ही प्रेयसी उसके (प्रियतम) बिना नहीं रह सकती।[१]

१.५.४ प्रस्तुत लोक काव्य में अलंकारों का सप्रयास प्रयोग नहीं हुआ है, अपितु स्वाभाविक रूप से ही अलंकार काव्य में समाविष्ट हो गये हैं। किसी बात को घुमाफिरा कर न कहकर सीधे-सादे शब्दों में प्रकट किया गया है। इसीलिए यहां चमत्कार या शब्द वैचित्र्य प्राय: नहीं मिलता है। अलंकारों में उपमा का सर्वाधिक समावेश हुआ है। स्थानीय वातावरण से उपमानों का चयन करके लोक कवियों ने मौलिकता का परिचय दिया है। उपमान मूर्त तथा अमूर्त दोनों रूपों में पाये जाते हैं। `मेरी प्रीति ठीक पानी की प्यास की तरह`[२], `तुम्हारी लटों के फेर मोर की तरह नाच रहे हैं`[३] `मेरा हृदय नैनीताल की तरह भर आता है`[४] आदि वर्णन उक्त कथन की पुष्टि करते हैं। अनुप्रास की स्वाभाविक छटा बड़ी मनोहर बन पड़ी है।[५] श्लेष तथा यमक के भी उदाहरण मिलते हैं। रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अन्य अलंकार भी यथाप्रसंग मिलते हैं किन्तु सभी अलंकार स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त हुए हैं, उनमें बोझिलता नहीं मिलती है।

१.५.५ विवेच्य लोक कविताओं में विविध छंदों का प्रयोग किया गया है। कुछ कवियों जैसे `गुमानी कवि` ने छन्दशास्त्र के नियमों के अनुसार रचनाएं की हैं किन्तु अधिकांश रचनाएं हृदय के लयात्मक उद्गार हैं और अपने स्वाभाविक रूप में छंदात्मक एवं संगीतात्मक हैं। छन्द की दृष्टि से लोकगीतों के अनेक प्रकार मिलते हैं। जैसे,

---

१- `सर्गै रिटी सुधि चील, भीं मैं पड़ि छाया
 जसि तेरि पांणि तीस, उसी मेरी माया।
२- जसि तेरी पांणि तीस, उसी मेरी माया।
३- यो त्यारा धागरी लटक जसा नाचनी मोर।
४- मेरो हियौ भरी औंछ जस नैनीताल।
५- बनै बनै काफल किल्मोड़ो, बाड़ा मुणी कोमल कोकोड़ो छ।

भ्वाड़ा, फाग, न्यौल्या आदि अत्यन्त प्रचलित रूप हैं। लोक गाथायें भी गेय हैं और वे स्याला तथा जागौं या जागरी के रूप में जानी जाती हैं। होली की अपनी पृथक् टेक है। छन्दशास्त्र के अनुसार देखने पर पंच वर्णिक, अष्ट वर्णिक, नव वर्णिक, एकादश, द्वादश, चतुर्दश वर्णिक छन्द मिलते हैं तथा सवैया, घनाक्षरी, हरिगीतिका, दोहा, चौपाई आदि के साथ-साथ मुक्त छन्दों का प्रचुर प्रयोग हुआ है।

१.५.६ भाषा की दृष्टि से पिठौरागढ़ के लोक साहित्य में कुमाऊंनी भाषा का प्रयोग हुआ है जो अपनी अनेक विशेषताओं के कारण पिठौरागढ़ी के नाम से अभिहित की जाती है। काव्याभिव्यक्ति की भाषा बोलचाल की भाषा से किंचित भिन्न है। काव्य की भाषा प्राय: गंगोली की भाषा रही है, जिसपर भाषा के प्रकरणों में विस्तार से कहा जा चुका है। अब सोर्याली में भी रचनायें होने लगी हैं। लोक साहित्य के मौखिक रूप पर स्थानीय बोली की पूर्ण छाप रहती है। पिठौरागढ़ के पूर्वी सीमान्त पर नेपाली भाषा का प्रभाव है जो वहां के साहित्यिक उद्गारों में झलकता है। वस्तुत: यहां के लोक साहित्य की भाषा स्वभावत: ही लोकवाणी से भिन्न नहीं है। यह अवश्य है कि उस पर शिक्षा तथा संपर्क के प्रभाव से अन्य बोली अथवा भाषाओं की छाप दृष्टिगत होती है। लोकगाथाओं में भी भाषा का स्थानीय रूप ही परिलक्षित होता है। लोक साहित्य के परम्परित रूपों में यही स्थानीय प्रभाव आकर उन्हें स्थानीयता में घुलामिला लेता है। भावों की प्रभावपूर्ण प्रेषणीयता ही भाषा की प्रमुख विशेषता के रूप में मिलती है।

१.६ विधाएं

पिठौरागढ़ी लोक साहित्य विभिन्न विधाओं में उपलब्ध है जिसे निम्नलिखित पांच वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :--

(क) लोक गीत साहित्य,

(ख) लोक गाथा साहित्य,

(ग) लोक कथा साहित्य,

(घ) लोकोक्ति, कहावतें, पहेलियां,

(ङ) वार्ता विनोद आदि मुक्त-प्रकीर्ण साहित्य।

१.६.१ लोकगीत साहित्य प्राय: गीतात्मक है जो जन जीवन के अनेक प्रसंगों में गाया जाता है। कुछ लोकगीतके साहित्य शिक्षा तथा उपदेशार्थ विविध प्रसंगों में परिकथित

होता है। अन्य का उल्लेख पूजा, संस्कार, पर्व, मेला, त्यौहार आदि अनेक अवसरों पर किया जाता है।

१.६.२ लोक गाथाओं का प्रचलन देवी देवताओं के स्तुतिगान के रूप में मिलता है लोकगाथाओं के विविध रूप स्थान-स्थान पर मान्य हैं और उनके गान एवं कथन की विधियां विशेष्य स्थान विशेष से प्रभावित मिलती हैं।

१.६.३ लोक कथा साहित्य -- यह विधा भी लोकगीतों की भांति विविधमुखी है तथा त्यौहार, मेले, पर्व, संस्कार आदि के अवसर पर यथाप्रसंग लोक कथाओं का उल्लेख होता है। घरों में 'झग्गड़' या 'रौड़ि' (अंगीठी) के चारों ओर बैठकर उक्त कथाओं द्वारा 'बखत कटै' (समय बिताना) और मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षात्मक लाभ उठाया जाता है।

आगामी प्रकरणों में उक्त विधायें विस्तार [illegible] में विवेच्य हैं।

---o---

२

लोक गीत

२.

लोक गीत

२.१ लोकगीत लोक हृदय के सहज एवं स्वाभाविक उद्गार हैं जो जीवन के विविध प्रसंगों में विविधशः प्रकट होते हैं। लोक साहित्य में लोकगीतों का महत्व यहां तक है कि लोक साहित्य कहने से लोकगीतों की ओर ही सर्व प्रथम दृष्टि जाती है और लोक साहित्य के अन्य अंगों में यह सब से सबल अंग विदित होता है। विवेच्य लोक साहित्य में भी लोकगीतों का स्थान अन्य विधाओं में सर्व प्रमुख और विशेष है। लोक जीवन के सारे तत्व लोकगीतों में प्रस्फुटित हुए हैं तथा सीधी सच्ची भावनाएं इनके माध्यम से प्रकट हुई हैं। समस्त लोक जीवन को संचालित करने वाले सांस्कृतिक सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक दिशाओं पर प्रकाश डालते हुए यहां के लोकगीत स्थानीय समाज का पूर्ण चित्र प्रस्तुत करते हैं और उसे रूप रंग देते हैं। इसके माध्यम से लोक जीवन की सुन्दरता साकार हो उठी है। इन गीतों के रस में निमग्न होकर पर्वतीय जन अपना श्रम,वेदना,शोक सब को भूलने में बहुत कुछ समर्थ होता है। लोक-गीत मौखिक परम्परा द्वारा जीवित रहते आये हैं और अब इनका लिखित रूप भी सामने आने लगा है। लोक प्रचलित सामान्य विश्वास तथा भावनाएं इन गीतों के माध्यम से वाणी पा सकी है। वस्तुतः ये लोकगीत यहां के लोक जीवन की पूर्ण अभिव्यंजना में एकमात्र कारण बने हैं। उक्त लोक गीतों में भी अनेक प्रकार प्रचलित हैं। इन गीतों को निम्नलिखित वर्गों में रखा जा सकता है :-

(क) संस्कार गीत

(ख) देवी देवताओं की स्तुति,पूजा, त्योहार गीत

(ग) ऋतु गीत

(घ) जातियों के गीत

(ङ) कृषि गीत

(च) बाल गीत

(छ) मुक्तक गीत

स्रोत की दृष्टि से उक्त गीत दो प्रकार के मिलते हैं। प्रथम वे हैं जो परम्परा से मौखिक रूप में प्रचलित हैं और जिनका किसी रचयिता के नाम से कोई सम्बन्ध नहीं

है । दूसरे वे हैं जो लिखित रूप में उपलब्ध हैं और इनके रचयिता के सम्बन्ध में ज्ञात है । यहां दोनों प्रकार का गीत साहित्य विवेच्य है ।

२.१ लोक गीत का परम्परित रूप

२.१.१ संस्कार गीत

२.१.१.१. इस कोटि के गीतों का सम्बन्ध जीवन के विभिन्न संस्कारों से है और अवसरों पर स्त्रियों द्वारा गाये जाते हैं । कर्म आदि अनुष्ठानों के साथ इनका घनिष्ठ सम्बन्ध है । लोकाचार पालन करने वाली स्त्रियों की दृष्टि मन्त्र पढ़ने वाले ब्राह्मण पर रहती है और विशेष कर्म के साथ उनके तद्‌विषयक गीत आरम्भ हो जाते हैं । कुछ गीत कर्मों के इतने निकट हैं कि गीत बद्ध मन्त्रानुवाद से प्रतीत होते हैं। जन्मोत्सव, छठी और नामकर्ण के गीत इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं । व्रतबन्ध[१] के प्राय: सभी गीत मंत्रानुसार हैं । व्रतबन्ध और विवाह के गीतों में राम, लक्ष्मण, दशरथ, कौशल्या, कृष्ण, राधा आदि का पर्याप्त उल्लेख मिलना इन पर पौराणिक कथा पात्रों की छाप का द्योतक है । विवाह सम्बन्धी गीतों में राम और सीता वर-वधू के प्रतीक हैं तथा दशरथ और कौशल्या माता-पिता के किन्तु व्रतबन्ध के गीतों में राम, सीता, लक्ष्मण आदि का उल्लेख माता, पिता, चाचा, आदि के रूप में किया गया है ।

२.१.१.२. संस्कार गीतों की दो कोटियां हैं । एक वे जो प्रत्येक संस्कार के पूर्व अनिवार्य रूप से गाये जाते हैं । दूसरे संस्कार विशेष से सम्बन्धित गीत हैं । अनिवार्य गीत भी दो प्रकार के हैं । एक सामान्य जो किसी भी शुभ कार्य या संस्कार के आरम्भ में अवश्य गाये जाते हैं । इनके द्वारा मंगल भावना प्रकट करते हुए सम्बन्धी व्यक्तियों को निमंत्रण दिया जाता है । इसीलिए इन गीतों को 'शकुनाखर' या 'न्यूतनो' कहते हैं । किसी शुभ कार्य के आरम्भ में शंख घंट वाद्य बजाने, दाईं ओर जलपूर्ण कलश रखने और खिले हुए कमल और गुलाब के पुष्पों को लाने की प्रार्थना है

१- व्रतबन्ध -- यह संस्कार जनेऊ संस्कार है । इसमें जनेऊ डालने के साथ मुंडन, कर्ण छेदन आदि कार्य किये जाते हैं ।

जिन्हें धारण करके गणेश, राम लक्ष्मण,सीता आदि देव देवियाँ अमर बनी रहती हैं। तदुपरान्त परिवार के सदस्यों के प्रति अमर होने की कामना प्रकट की जाती है[1]। इन गीतों में गणेश ब्रह्मा, विष्णु आदि देवता ,प्रकृति, सामाजिक व्यक्ति, सम्बन्धी आदि प्राय: सभी का उल्लेख मिलता है। मांगलिक कार्यों के गीतों में संहार कर्ता शिव का उल्लेख नहीं किया गया है।

२.१.१.३ विवेच्य क्षेत्र में हिन्दू धर्म में वर्णित दश कर्मों के प्रति पूर्ण आस्था अब भी है और कर्म सम्बन्धी गीतों का इन्हीं से सम्बन्ध है। ये प्रत्यक संस्कार के पूर्व गाये जाते हैं। मुख्य कर्म सात हैं और तत्सम्बन्धी गीतों की संख्या भी सात ही मिलती है। जैसे- गणेश पूजा का गीत, मातृ पूजा का गीत, आवदेव का गीत, नवग्रह पूजा का गीत, आदि। गणेश पूजन में गोबर की गणेश बनाकर सफलता, समृद्धि, पुत्र, धन आदि की कामना की जाती है। गणेश पूजन प्रत्येक संस्कार का अंग है[2]। आवदेव के ~~मूलनर्म~~ गीत में देव पूजन, मातृ पूजन, पितृ पूजन, का विधान मिलता है। स्त्रियां गीतों में पितरों को शुभ कार्य में आमंत्रित करती हैं जो अपने लोक से ही अपनी संतानों को आयुष्मान तथा पुत्रवान होने का आशीर्वाद देते हैं[3]। नवग्रहों का पत्थान भी प्रत्येक संस्कार के साथ जुड़ा हुआ है। उस समय के गीतों में सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रह अपने अपने वाहनों पर आते हैं। शुभ कार्य के अवसर पर अग्नि की भी स्थापना होती है और अग्नि की खोज चारों दिशाओं में की जाती है क्योंकि अग्नि की अनुपस्थिति में यज्ञ, होम आदि संभव नहीं हैं[4]। उक्त गीतों की विशेषता यह है कि इनमें उल्लिखित वस्तुएं तत्सम्बन्धित मंत्रों में भी हैं, या कहीं मुख्य वस्तुओं का उल्लेख करते हुए शेष का संकेत कर दिया गया है।

१- 'शकुना दे शकुना दे सब सिधि काज ए अति नीको
शकुना बोल दईणां बाजन कन शंख सबद
जीवो जनम आछा यमरो ए'।

२- 'अग्नि बिना होम नहीं कुल बिना वेद नहीं,
पुत्र धन दायक यज्ञन रच शुभ जय गणपति.... ।'

३- 'सैनूं करी शंख ध्वनि वेद ध्वनि दिया जोती
शुभ जय काज सोहे राज सोहे'।

४- 'पूरब को देश में मैले हैरी फेरी... ।'

२.१.१.४ कर्म गीतों के उपरान्त संस्कार विशेष सम्बन्धी गीत गाये जाते हैं। ये जन्म, कृतबन्ध, और विवाह सम्बन्धी गीत हैं। जन्म सम्बन्धी गीत जन्म के विविध संस्कारों से सम्बद्ध होते हुए भी समान रूप से एकाधिक अवसरों पर गाये जाते हैं। जन्म दिन के गीत छठी के अन्दर मिलते हैं और `जन्मोत्सव` के अनेक गीतों की भावभूमि जन्म-दिन के गीतों की होती है। ऊपर संकेतित हुआ है कि इस क्षेत्र में व्यावहारिक दृष्टि से सात संस्कार मनाये जाते हैं, इनमें से पांच जन्म संस्कार संबंधी हैं। शिशु के जन्म लेते ही `जातकर्म` छठे दिन `छठी`, ग्यारहवें दिन `नामकर्ण`, पांचवें, छठे, सातवें, या आठवें महीने में `अन्न प्राशन` तथा प्रतिवर्ष जन्मदिन के अवसर पर जन्मोत्सव मनाया जाता है। पांच संस्कारों के अनुसार ही पांच प्रकार के जन्म सम्बन्धी गीत भी मिलते हैं -- अर्थात् जन्मदिन के गीत, छट्ठी के गीत, नामकरण के गीत, पासिनी के गीत, और जनमवार गीत,। जन्म दिन के गीत में कौशल्या की पुत्र कामना व्यक्त है। दशरथ संतान रहित रहना भाग्य दोष मानते हैं। अन्य वश न चलने पर अन्त में माली एक जंगली बूटी का पता देता है जिसकी सहायता से तीनों रानियां पुत्रवती होती हैं। छट्ठी के गीतों में नव-प्रसूता की विभिन्न इच्छाओं तथा मन की स्थितियों का वर्णन रहता है। विभिन्न भोजन और आभूषणों के उल्लेख के साथ हास-परिहास की भावनाएं व्यक्त हुई हैं। बधाई के गीतों में अयोध्या या मथुरा गोकुल में आनन्द की चर्चा प्रमुख विषय है जिनमें राम-जन्म, कृष्ण-जन्म, सम्बन्धी प्रसंग हैं। ननद-भावज के गीत हास-परिहास के साथ परम्परागत विरोध को स्पष्ट करते हुए उनकी आर्थिक स्थिति पर भी प्रकाश डालते हैं।

पहली बार अन्न चखाया जाने वाला दिन `पासिनि` कहा जाता है। उस समय `थाल ज्यूनार`, फंगुली, और भात के गीत गाये जाते हैं। गीतों में विभिन्न भोजनों का प्रभाव प्रकट किया जाता है[१]।

१- " भात जी खाली भागीवन्द होली बाली,
दाल जी खाली बाली दयावन्त होली बाली,
--- --- --- --- --- ---
पूरी जी खाली बाली पुन्यात्मा होली बाली।"

२.१.१.५ जन्मोत्सव संस्कारों के उपरान्त व्रतबन्ध संस्कार आता है । यह दो भागों में बंटा है । पहले दिन गृह जाग होता है और दूसरे दिन जनेऊ । इन दोनों अवसरों के गीत पृथक-पृथक हैं । गीतों को विषय वस्तु प्राय: मंत्रों के अनुसार ही मिलती है । ज्ञात होता है कि मंत्रों को ही ध्यान में रखते हुए इन गीतों की रचना की गयी है । दीपक जलाने और होम के गीतों में पौराणिकपात्रों तथा अन्य मांगलिक पदार्थों की चर्चा हुई है[1] । 'मनला' गीत में बालक के उपयुक्त वस्त्र की रचना हिरन की खाल निकाल कर तथा रेशम का वस्त्र पिरोकर होती है । व्रतबन्ध के गीत प्राय: लोकाचारों का ही अनुसरण करते हैं । इनके उपरान्त विवाह सम्बन्धी गीत हैं जो विवाह संस्कार के समय गाये जाते हैं । ये लोक भावना की अपेक्षा कर्मकाण्ड के निकट होने के कारण लोक हृदय की अभिव्यक्ति इनमें कम हुई है । विवाह के अवसर पर अपनाये जाने वाले विभिन्न आचारों के अनुसार विवाह गीतों के अनेक प्रकार मिलते हैं । इनमें 'स्नान', 'पूर्वांग', 'नौलू' 'शैलूनी', 'रत्याली', चतुर्थी कर्म, 'कन्यादान', 'दुन्नून', आदि गीत प्रमुख हैं ।

२.१.१.६ संस्कार गीत स्रोत , भाव और भाषा की दृष्टि से क्षेत्रीय न होकर आगत हैं । इनमें ब्रज तथा अवधी का प्रभाव ज्ञात होता है । इस पर भी स्थानीय भाषा तथा लोकाचार का इन पर स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है ।

२.१.२ देवी देवताओं की स्तुति, पूजा और त्यौहार गीत

२.१.२.१ शुभ कार्यों के अवसर पर पंच देवताओं का स्मरण किया जाता है । उनसे सम्बन्धित गीत गाये जाते हैं । देवताओं की स्तुति और उनकी पूजा का विवेच्य क्षेत्र में व्यापक प्रचार है । इन स्तुति एवं पूजा गीतों में भूमि, अंतरिक्ष, ब्रह्मा, विष्णु के साथ स्थानीय देवताओं की संख्या अधिक मिलती है । स्त्रियों का जीवन तो यहां व्रतों का जीवन है । सालभर व्रतों और पर्वों की धूम रहती है । विविध त्यौहारों, पर्वों और व्रतों के अतिरिक्त भी इतवार, सोमवार व्रत के दिन हैं ।

१- " ये जग दिपड़ा जाग हो दिपड़ा
 रामीचन्द की लक्ष्मिन की जाग हो दिपड़ा.... ।"

मंगलवार को पुरुष भी व्रत रखते हैं , पूर्णमासी, एकादशी को भी पुरुषवर्ग व्रत रखता है । इन व्रतों के दिन स्त्री पुरुष विविध पूजा पाठ, स्तुति, भजन और मंगल गान करते हैं । जिनमें मांगलिक आकांक्षा रहती है ।

२.१.२.२ देवी देवताओं के अनेक गीत धार्मिक अवसरों पर मेलों में सुनाये जाते हैं , जिनमें कहीं स्थान विशेष का उल्लेख और तत्सम्बन्धी कथाएं उल्लिखित हैं । कैष्ट्या , मानू, चौपखिया, घज, थलकेदार, महाकाली आदि अनेक स्थल तथा देव देवियां हैं जिनके निमित्त मेले लगते हैं तथा विविध गीत गाये जाते हैं ।मेले के गीत उपलक्ष्य विशेष से बिल्कुल हटकर अन्यान्य विषयों का वर्णन करते हैं किन्तु कुछ इस बात का संकेत भी करते हैं कि प्राचीन काल में स्थान विशेष सम्बन्धी गीत उस अवसर पर अवश्य गाये जाते होंगे, उन्हीं की प्रधानता रही होगी और वे पथमूलक रहे होंगे । कालान्तर में उनके साथ अन्य विषयों पर गीतों का प्रचलन बढ़ता गया , यहां तक कि कहीं मूल विषय के स्थान पर दूसरे प्रकार के गीत ही प्रधान हो गये ।

२.१.२.३ व्रत त्यौहार मूलक गीत मुख्यत: स्त्रियों से संबन्ध रखने के कारण स्त्रियों में ही प्रचलित हैं । इनके साथ किये जाने वाले विभिन्न अनुष्ठानों द्वारा उनके धार्मिक विश्वासों एवं आचार प्रथाओं पर अच्छा प्रकाश पड़ता है जो स्थानीय विशेषताओं से युक्त होते हुए व्यापक रूप में हिन्दू धर्म के अंग हैं । व्रत तथा त्यौहारों का माहात्म्य प्राय: कथाओं में वर्णित होने पर भी अनेक गीतों का सम्बन्ध भी इन से है । भाद्रपद शुक्ल सप्तमी और अष्टमी का त्यौहार स्त्रियों में जितना लोकप्रिय है , उतना ही दूसरे रूप में पुरुषों में प्रचलित है । यह अवसर`सातों-आठूं` के नाम से प्रसिद्ध है । स्त्रियां इस अवसर पर व्रत रखती हैं ।`गमारा` के नाम से पार्वती का पूजन होता है । घास से बने हुए शिव-पार्वती सजाये जाते हैं और प्रतिदिन उनकी पूजा होती है । अन्तिम दिन उन्हें`सेलूनों` आचार द्वारा पवित्र स्थान पर रख दिया जाता है । इसी अवसर पर पहले दिन शिव-पार्वती के पूजन के समय स्त्रियां सप्त-ग्रंथि युक्त डोर धारण करती हैं । दूसरे दिन स्वर्ण, चांदी रेशम आदि का टुकड़ा बनाकर प्रतिष्ठा के उपरान्त बाईं भुजा में धारण किया जाता है । इस अवसर पर शिव-पार्वती, राम, लक्ष्मण के उल्लेख युक्त गीत गाये जाते हैं । इनमें से एक गीत में गणेश, राम, लक्ष्मण एवं शिव के पांसा खेलने का वर्णन है । भीतर उनकी

पत्नियाँ व्रत पूजा कर रही हैं जिसके लिए वे अपने स्वामियों से 'लाड़ी का पुष्प' लाने की प्रार्थना करती हैं। स्वामियों द्वारा प्रश्न किये जाने पर कि इस अन्धकार पूर्ण रात्रि में गहरी नदी तथा फिसलने वाले मार्ग को पार कर कैसे जायेंगे-- वे उपाय बतलाती हैं। तथा क्रमश: व्रत रखने वाले परिवार के लोगों का नाम लिया जाता है[१]।

'गमांरा' का दूसरा गस्त महत्वपूर्ण है। उसमें उल्लेख है कि पार्वती स्नान करके जप करने के लिए बैठ गई और उन्होंने शिव जी से डोर-दुबड़ लाने की प्रार्थना की। शिव जी बोले कि तुम्हें डोर क्या शोभा देगा ? भात मत खाना अन्यथा तुम्हारी माता का रंग काला पड़ जायेगा, गणेश को गोद मत लेना अन्यथा वह काला पड़ जायेगा, काले शालिग्राम की पूजा भी मत करना और स्वर्ग की ओर दृष्टि भी मत करना। यह सुन कर पार्वती दु:खी हो गयी और एक चारण द्वारा अपने मायके समाचार भेजा कि शिव जी के घर रहते-रहते घाघरी फट गई, पिछौड़ी की किनारियाँ बची रह गई, आंगड़ी फट कर तार-तार हो गई और गणेश की चोली भी फट गई है। कुछ समय उपरान्त वे स्वयं रुष्ट होकर डोली में बैठ कर मायके चली गई। भाभी द्वारा सत्कार न पाने पर पार्वती ने भाभी को शाप दिया कि तुम्हारे घर कन्या ही कन्या हों, गायों के बछड़े ही उत्पन्न हों, भैंसों के पड़वा हों और धान के खेतों में झड़ने वाले धान हों। बहू के हाथ से सत्कार पाकर उसे आशीर्वाद दिया कि तुम्हारे पुत्र ही पुत्र हों, गायों की बछिया हों, खेतों में प्रचुर धान्य हो। भाभी ने उसे पुन: आमंत्रित किया और वही शुभ आशीर्वाद उसने भी प्राप्त किया[२]। उक्त गस्त में सामाजिक सम्बन्ध, लोक विश्वास तथा नारी स्वभाव पर प्रकाश पड़ता है। यहां दैवी पात्र साधारण स्त्री पुरुषों की भांति

१- 'भितर सिद्धी बुद्धि भितर खिता देही
भितर पार्वती भितर बहीराणी।'

२- 'गवरा देवी का सप्तमी बरत
नाइ धोइ गवरा जप बैटी छैन
आणि दियौ महेश्वर देवा हार यो डोर
लै कलि गवरा किया हार हाले। ...'

--- --- --- --- --- ---

उपस्थित हुए हैं। लोक मानस द्वारा उनका सामान्यीकरण मिलता है कि जिससे तादात्म्य की भावना अवकाश पाती है। यह विशेषता उन सभी गीतों में है जहां ईश्वर या देवताओं का नामोल्लेख हुआ है।

२.१.२.४. 'सातूं आठूं' का दूसरा रूप पुरुषों द्वारा मनाया जाता है। यह राजपूत जिन्हें स्थानीय बोली में 'खाशिया' कहा जाता है, जाति द्वारा बड़े सोल्लास मनाया जाता है। इसमें कुण्ड के कुण्ड लोग एकत्र होकर लोक गीतों का सामूहिक, प्रश्न-उत्तर रूप में गान करते हैं। इस गान को 'खेल लागनो' कहा जाता है। इस अवसर पर दूर-दूर से लोग एकत्र होकर अपनी रचना प्रतिभा का परिचय देते हैं। समस्याएं रखी जाती हैं, उनका उत्तर दिया जाता है। इसी मौसम में पिठौरागढ़ में 'हिलू जातुरा' नाम का प्रसिद्ध उत्सव मनाया जाता है। हिल जातुरा का अर्थ 'कीचड़ की यात्रा' है। यह वर्षान्त में अनेक प्रकार के क्रिया कलापों का प्रतीक है। जैसे रोपा लगाना, घास काटना, दूध-दही आदि से सम्बन्धित कार्य-- ये सब उस उत्सव में स्वांग रूप में प्रदर्शित किये जाते हैं और साथ-साथ गीत भी गाये जाते हैं।

२.१.२.५. ऐतिहासिक घटना से सम्बन्धित त्योहारों में 'खतोड़वा' उल्लेखनीय है। यह आश्विन मास में कन्या संक्रान्ति के दिन मनाया जाता है। उस दिन सूखा घास लाकर एकत्र की जाती है और अन्धेरा होने पर गोठ(गोशाला) से 'खतोड़वा' को मनाया जाता है। जले हुए राके(मशाल) लेकर पूरे गांव के लोग एक स्थान पर एकत्र होते हैं और खतड़वा के पुतले जलाते हैं। ये पुतले घास के बने होते हैं और लकड़ियों की चिता पर रखे जाते हैं[1]। उस अवसर पर 'गै की जीत खतोड़ुवा की हार....' आदि स्वरों में गीत मुखर होते हैं।उक्त वृत्तान्त कुमाउंनी इतिहास की एक घटना से जुड़ा हुआ है[2]। उत्सवों में

१- गैड़ा की जीत खतड़ुवा की हार
   गैड़ा पड़्यो श्योल खतड़ पड़्यो भ्योल...

२- सत्रहवीं शताब्दी में कुमाउनी सेनापति गैड़ा ने गढ़वाली सेनापति खतड़सिंह को युद्ध में मार डाला था। इस विजय की सूचना कुमाऊं वालों को सूखी घास जला कर दी गई। तब से यह दिन मनाया जाता है।

हरेला, दुतिया, घुघुती आदि उल्लेखनीय हैं। इन अवसरों पर विविध गीतों द्वारा लोक हृदय उल्लसित होता है।

२.१.३. ऋतुगीत

२.१.३.१. विवेच्य क्षेत्र में प्राय: तीन ही ऋतुएं होती हैं। -- जाड़ा गर्मी तथा वर्षा। ऋतुवर्णन कवियों का प्रिय विषय है। ऋतुगीत अनेक अवसरों पर विविध रूपों में गेय हैं। इनमें से सर्व प्रसिद्ध गीत -- होली के गीत हैं। अन्य प्रकारों में षट्ऋतु और बारहमासा गीत प्रमुख हैं।

२.१.३.२. पिठौरागढ़ में होली बड़े उल्लास मनायी जाती है। बसन्त पंचमी के दिन बसन्ती रंग में रूमाल, और कपड़े रंगे जाते हैं। शिवरात्रि के दिन से होली के गीत आरम्भ हो जाते हैं। होली की एकादशी से तो प्रतिदिन होली के गीत गाये जाते हैं। दिन में खड़े होकर 'खड़ी होली' तथा रात को बैठकर 'बैठक की होली' गाते हैं। पूरे गांव के लोक दिन में एकत्र होकर गाते हैं और प्रत्येक परिवार के आंगन में जाकर होली गाना होता है। खड़ी होली गीतों में से अनेक तो खड़ी बोली, ब्रज तथा अवधी के प्रभाव से युक्त हैं किन्तु अनेक गीत स्थानीय बोली के हैं। वर्ण्य विषय की दृष्टि से उक्त होली गीत राधा-कृष्ण, राम-सीता, शिव-पार्वती, से प्राय: सम्बद्ध हैं। बहुत से गीत स्थानीय तत्वों से युक्त भी हैं। एक गीत में विश्वामित्र द्वारा राम से जनकपुर धनुषयज्ञ में चलने के लिए कहने का वर्णन है[1]। दूसरे में सीता जी का पति के साथ जाने का विवरण[2]। इसी प्रकार कृष्ण से सम्बद्ध गीत हैं[3]। सामान्य प्रसंगों को लेकर गीत स्थानी-

---

१- 'उठि रामचन्दर अखाड़ा देखन, सीता को व्याहुंच जनकपुर में।
सबै राजा आला जनकपुर में, हम लैकै जायनु जनकपुर में।
कैलै कूंछा राजा गट्ठो गट्ठो बात, सूरजवंशी हूं हम जाता ।।'

२- 'धन धन नारी, नारि सीता जू।
पति संग गैन पंच कुटी जूय ।
बाग माफ आज मृग बैरी ज्यू।...'

३- ' मान भुल्या यशोदानन्दन कै,
देवकीक घर जनम ल्लीछ
कंस असुर कैं मारन खिन।...

स्थानीय बोली में मिलते हैं । एक होली गीत में कहा गया है कि ए सखी तुम्हारा रात भर का झगड़ा है । अच्छा तो तुम बुरूंजो का फूल बन जाओगी, तुम कटूजो का फूल बन जाओगी, तुम घुघुती बन जाओगी.... ।[1] दूसरे एक गीत में स्थानीय फल बेडू के पकने की चर्चा है जिसे गायक ने नहीं कहा है । न्योलि, घुगुति, तितरि आदि आज बोल रही हैं , काफल चैत में पकता है, आज होली खेलें... । होली गीतों में वर्ण्य विषय का बन्ध ठोस न होकर भावों का पृथक-पृथक फूलों की तरह से एक स्थान पर गुंथन मिलता है । टेक मिलाने की सप्रयास योजना मिलती है ।

२.१.३.३. होली गीतों की भी कई कोटियां मिलती हैं । कहा जा चुका है कि बसंत पंचमी के दिन से होली का आरम्भ होता है । बसंत पंचमी को यहाँ 'सिर पंचमी' भी कहा जाता है । इस दिन जौ की पत्तियां देवी देवताओं को चढ़ाने के उपरान्त सिर में धारण की जाती हैं जिसका उल्लेख गीतों में हुआ है ।इस समय की होलियां प्राय: स्तुति परक हैं । इनका गायन शिवरात्रि के दिन से आरम्भ होता है । शिव का वृत रख कर उन्हें अबीर गुलाल लगाया जाता है और उसके बाद गायकों को भी अबीर गुलाल लगाया जाता है । इस अवसर के गीतों में अधिकांश भजन कीर्तन की कोटि के होते हैं । एकादशी के दिन से रात-दिन होली गीतों का कृम चलता है । होलिका दहन के उपरान्त 'छलड़ी' का दिन होली गीतों का अन्तिम दिन होता है । इस दिन श्रृंगार और अश्लीलता से भरे हुए गीत गाये जाते हैं।[1] छलड़ी के दिन ही स्नान करने के उपरान्त सारे गांव में प्रसाद बंटता और सायंकाल बैठ कर गीत गान होता है । होली के गीत भक्ति , श्रृंगार और प्रसंग प्रधान रहते हैं । भक्ति विषयक होली गीतों में देवी-देवताओं की स्तुति , संसार की असारता, निर्वाण कामना आदि का उल्लेख रहता है । श्रृंगार प्रधान गीतों में उन्मुक्त हास-परिहास और स्पष्ट यौन संकेत किये जाते हैं ।

२. १. ३. ४. षट्ऋतु और बारहमासा गीतों के अन्तर्गत, होली गीतों के अतिरिक्त बसंत गीत प्रचलित हैं जिन्हें 'ऋतुरैणा' कहा जाता है । होली गीतों से ये इस प्रकार भी भिन्न हैं कि होली गीतों की एक विशेष लय और सुर होता है जिसे स्थानीय

१- ' नानू भौ जोरी लाल बरोस
ठुलठुलू जो रूप लाल बहिष ।...'

बोली में `होलिकूभाग` कहा जाता है । बसंत गीतों में बसंत आगमन और स्वरूप का वर्णन मिलता है । बसन्त ऋतु आ गई है और बहार छा गई है । वृक्ष लता और पौधों में फूल खिल गये हैं । [1] वसंत के स्वरों में जन जीवन भी ताल सुर से नाच उठता है । जब रंगीला चैत आता है तो बसंत की मादकता , पुष्पित कानन, लहलहाती खेती, फैली हुई हरियाली, बुरूंश के लाल फूल उसे दुल्हन की तरह सजाते हैं । वसंत में परदेशी भंवरा भी लौट आया है । नाना प्रकार के पक्षी मीठे-मीठे गीतों द्वारा वसंत की बहार में मिठास घोल रहे हैं, परन्तु मायके न जा सकने वाली `बेटी` [2] के लिए यह कलेजे में `हूक` पैदा करने वाली है । वह मां की याद में घुली जा रही है । फूला हुआ बुरूंश विर-हिणी को अंगार लगता है [3] ।

२.१.३.४. वर्षा की बहार रसिकों को यहां भी आकर्षित किये बिना नहीं रहती है । आषाढ़ के आते ही चौमासा आरम्भ हो जाता है [4] । इधर बादल बरसते हैं , उधर विरहिणी की आंखें बरसती हैं । अपने प्रियतम के विरह में कलपती हुई

---

१ - " आई गे बसन्त ऋतु छाइ गे बहार,
फुलि गे डालि बोटि सारो गाड़धार ।
--- --- --- --- --- ---
बसंती छ आज ऋतु, बसंती जूं हम,
कंठ हमोर ताल दीछ, मन नाचू छम छम ।...."

२- परदेशि भंवरा घर लौटि आयो, खेत पात खुली ता मन लायो ।
लागी गो चैत बसंत आयो, घर घर ऋतुराज सुहायो ।
--- --- --- --- --- --- --- ---
चलि गैछ हवा बढ़ि फरफरार, हंस चकोर कुलकनी मोर ।...."

३- फुलिगो बुरूंश स्वाबम घाटा व बाटों को,
--- --- --- --- --- ---
रोहै रैछ में चैत ऋतु चैत देवी,
करम खेलड़ो परा कसो दियो लेखो ।

४- " पहिलो महीना चौमासोको आयो अब असाड़,
मैं पापिनी कुर कुर मरूं मांस रयो न हाड़ ।...

विरहिणी को वर्षा बहार जैसे काटने को आती है। बादलों का गरजना, बिजली का चमकना, सभी कुछ विरहिणी को सताने के लिए आता है। प्रियतम की याद में उसकी भूख, प्यास और नींद मिट जाती है[1]। सावन भी कम कष्टदायक नहीं रहता। लगातार वर्षा से सूखी हुई पहाड़ियों की चट्टानों से भी पानी पसीज कर आने लगता है पर निष्ठुर प्रियतम का हृदय पता नहीं कब पसीजेगा। जिस के स्वामी घर पर हों, उसके लिए तो सावन के गीत अच्छे हैं, किन्तु जिसके प्रियतम परदेश हों उसके लिए किस काम के[2]। पर्वतीय क्षेत्र में जाड़े की ऋतु बहुत कष्ट प्रद है। ठण्डी हवा और तुषार के कारण कष्ट असह्य होने लगता है। इन कठिनाइयों से बचने की दृष्टि से बहुत से लोग तीर्थ-यात्रा करने मैदानों -- गर्म स्थानों में चले जाते हैं और कुछ दक्षिणी क्षेत्र के लोग भाबर (तराई के मैदान) में आ जाते हैं। खेती का कार्य भी होता है जिसको देखने के लिए वहां रहना भी आवश्यक है[3]। पूस में दिन छोटे तथा रातें लम्बी होती हैं। ठंड अधिक बढ़ जाती है। रात भर लकड़ी जला कर बैठना पड़ता है[4]। माघ के महीनों में तीर्थ यात्रा की विशेष महत्ता समझी जाती है। इसी माह में 'घुघुती' नामक प्रसिद्ध त्योहार मनाया जाता है। इस माह ब्राह्मणों को खिचड़ी का भोजन कराना उत्तम समझा जाता है। दान की बड़ी महिमा कही गई है[5]। उधर विरहिणी के हृदय की

१- 'आशाढ़ मैना आयो, वर्षा ले गै ल्यायो,
स्वामी मेरो निठुरो छ के देश छायो।...'

२- 'कालो छ मंहीनो यतो रूणा झूणा रीत,
जैको स्वामी घर हला सोई गाली गीत।...'

३- 'मंङ्सिर आई, हिमऋतु छाई, मनशों में है गै हाई तवाई।
पहाड़ धापू लकड़ा कटाई, भावर सक फापिड़ा कुवाई।
कुपर कुवाई ग्यो कि बोवाई, धान महाई लाई फाबई।

४- 'लागि ग्यो पूस सुणि लिय बात, दिन हैगि छोटा लामि हैगे रात,
फुकनि अबै लकाड़ा रात बहौत, जाड़ो हुंछ सम्प्या मरण की मौत।

५- 'अबै घर दान करनो बधाई, कै पर रौज हाई तवाई।...'

दशा ही और रहती है। प्रियतम घर कब लौटेंगे। किसी के लिए ये बधाई के दिन हैं और किसी के भाग्य पर विरह व्यथा तथा विपत्ति पड़ी है। पाला और बर्फ के होते हुए भी यहां के खेतों की हरियाली कम नहीं होती। बर्फ के पिघलते ही हरे-हरे गेहूं के पौधे दिखायी देते हैं। इन्हीं दिनों फूलदेई त्यौहार के लिए सरसों फूलना आरम्भ कर देती है।[1]

२.१.३.६. प्रस्तुत लोक गीतों में बारहमासा गीतों का भी अपना स्थान है। इस ओर भी कवियों का ध्यान गया है। यहां प्राय: हर मास का पहला दिन त्यौहार के रूप में आता है। श्रम प्रवास और विरह यहां के जीवन के अंग ज्ञात होते हैं। घर का कोई भी प्रिय व्यक्ति परदेश हुआ तो घर में उदासी छायी रहती है। इन त्यौहारों में और भी अधिक उदासी रहती है। बारहमासा गीतों में यही उदासी झलकती है। बारहमासा गीत आषाढ़ या चैत से आरम्भ होते हैं। आषाढ़ आते ही प्रसिद्ध फल बेडू और तिमुली पक कर तैयार हो गये। खेतों में हरियाली छा गयी। विरहिणी के लिए यह सब दु:खदायी है।[2] वर्षा आरम्भ भी हो गयी। चारों ओर बादल छा गये किन्तु निष्ठुर प्रियतम का पता नहीं है। सावन में विरहिणी का हृदय और अधिक भरा रहता है। उधर खेती का कार्य भी होता है, घनघोर काली घटा भी छायी रहती है। भादों में सर्वत्र जल ही जल दिखायी पड़ता है। जहां देखो पानी ही पानी[3] असौज (आश्विन) का महीना आता है। फसल तैयार होती है। परिश्रम के कारण इधर थकावट, उधर प्रियतम के विरह में न भूख है, न प्यास। मन हर घड़ी बेचैन रहता है।[4] कार्तिक दीवाली का महीना है, विरहिणी की आंखें यहां भी अश्रुपूर्ण हैं।[5]

१- द्वि मैना ह्यून के भल मानी, गाड़न में हरिया ग्यूं जामि जानी,
   छुमुति त्यार कुंछ बे मैन, फुल्देलि पूं फुलि जांछ दैन।

२- सब जागा पानि छ कैं न्हाति बागी
   विगर स्वामी हरू तड़पन लागी।..."

३- "जाति देख उतिछ धरखा मारो, चौमास भदौ की रात अन्यारी।"

४- "भूख प्यास नीछ अब, चैन नीछ मैकैं,
   निरदई स्वामी मैरि दाया नीछ त्वै कैं।..."

५- "कवै घर ऊनी कविल्ला लिह जानी, स्वामी बिगर म्यार आंखा में पानी।

अगहन आया। पूस भी आ गया। पुस्यूड़ी या घुगुती त्यौहार में सब उल्लास मना रहे हैं किन्तु प्रियतम न जाने कब घर आते हैं[1]। फागुन का महीना आया। खेतों में हल चलाने के दिन आ गये। परदेश से भंवरा (प्रियतम) भी आ गये। समय बड़ा सुहाना है[2], फिर चैत आता है। घर,वन,आंगन सर्वत्र शोभा छा जाती है। बहू-बेटियां अपने माता-पिता के यहां आती हैं किन्तु विरहिणी पुन: परदेश गये पति के लिए शीघ्र आगमन की कामना करती है[3]। बैशाख में गेहूं जौ की फसल कट कर एकत्र होने लगती है। हिसालू, किल्मोड़ा, काफल, आदि फल पक जाते हैं[4]। जेठ के महीने में अन्य महीनों की अपेक्षा कुछ गर्मी रहती है। खेती का कार्य समाप्त प्राय रहता है। परदेशी प्रियतम दो दिन के लिए घर आते हैं। वियोग की आशंका से उदासी छायी रहती है[5]। इस प्रकार बारहमासा वर्णन वियोग पक्ष में बहुत ही मनोरम रूप में मिलता है।

२.१.४. जातियों के गीत

२. १. ४. १. जातियों के गीतों के गीतों के अन्तर्गत प्रमुखत: ढोली और हुड़कियों के गीत आते हैं। ढोलियों का काम शुभ कार्यों के अवसर पर ढोल दमुवां बजाना होता है और इसी अवसर पर वे गीतों को भी करते हैं किन्तु गीतों का गायन आवश्यक नहीं है। ढोलियों की जीविका का यही आधार रहता आया है। ढोली के

१- "क्वे घर दान करनी बधाई, कैं पर रोज हाड़ु तवाई।"

२- "फागुन आयो हलिया लै आयो,
 परदेशी भंवरा घर लौटि आयो,
 खेति पाति कुती तन मन लायो।"

३- "चैता का मैना बुति जाली धान, स्वामी परदेश है भट घर आन।..."

४- "बैशाख आयो ग्यों को चुकाई,
 हिसालु किल्मोड़ी है गे खाई।
 काफल पाको लाल मकोरा,
 टिपि टापि आनी नानि ठुलि ठोरा।"

५- "द्वि सार खाली छैं उदासो, द्वि दिन घरं छनी भाबर भा सो।..."

साथ मशक बाजा(फूक कर बजाया जाने वाला बाजा) भी बजता है । उस पर गीत गाया जाता है और वह गीत स्थानीय बोली में लोकगीत भी होता है और अब तो सिनेमा के गीत भी अपनाये जाने लगे हैं किन्तु परम्परित रूप में ढोली और अन्य बाजे वालों के गीत लोकगीतों के रूप हैं । विवाह के अवसर पर तो ढाल,तलवार लेकर युद्ध नृत्य करने वाले एक पृथक ही धुन और लय द्वारा परिचालित होते हैं । इस नृत्य खेल को यहां `छाल्ला खेलणो` कहते हैं ।

२.१.४. २. हुड़किया खाना बदोस जाति है । अब तो ये लोग एक स्थान पर बसने लगे हैं । हुड़क्या परिवार के सभी लोग -- स्त्री, पुरुष, बहू-बेटियां साथ-साथ चलते हैं और गीतों के गायन द्वारा रोपी चलाते हैं । इनके गीतों की विषय वस्तु प्राय: विविध मुखी रहती है । उसमें प्राय: दाता की प्रशस्ति प्रमुख होती है । हुड़कियों का पेशा गायन तथा नृत्य ही है । इनके गीतों का स्तर हल्के ढंग का रहता है । इनमें अतिशयोक्तिपूर्ण एवं अतिरंजित वर्णन रहता है । किन्तु समय के साथ कदम रखते हुए अब ये सामाजिक, श्रम धार्मिक, राजनैतिक तथा नव जागृति सम्बन्धी गीत बना कर गाने लगे हैं ।

२. १.५. कृषि गीत

२.१.५.१. विवेच्य क्षेत्र में कृषिगीत प्राय: `हुड़कीबौल` कहे जाते हैं । हुड़का एक बाजा होता है और `बौल` श्रम को कहते हैं । हुड़के के साथ -साथ किये जाने वाले श्रम के साथ सस्वर गाये जाने वाले गीतों में स्त्री पुरुष दोनों वर्ग साथ-साथ भाग लेते हैं । हुड़का बजाने वाला हुड़किया होता है और वह पुरुष ही होता है । रोपाई या गोड़ाई के समय ये गीत समूह रूप में गाये जाते हैं । बहुत से स्त्री पुरुष एक साथ धान की रोपाई करते हैं या मडुवे की गोड़ाई करते हैं । इस प्रकार सम्मिलित होकर कार्य करने को `सोड़ी` कहा जाता है ।

२.१.५.२. उपर्युक्त गीत के लिए एक प्रमुख गायक होता है जो काम करने वाले को और मुख करके आगे की ओर बढ़ता है । रोपाई में श्रम करने वाले पीछे को हटते हैं किन्तु गोड़ाई में वे आगे को बढ़ते हैं । प्रमुख गायक गीत की एक पंक्ति गाता है जिसे सामूहिक रूप में सम्पूर्ण टोली दुहराती है । गीत में पहले देवी-देवताओं से कार्य

सफल करने के लिए स्तुति होती है। उसके उपरान्त गायक मुखिया दिन भर अन्य कथा-गीत या केवल गीत सुनाता है जिसमें श्रृंगार के अतिरिक्त अवसरानुकूल उत्साह वर्धक भाव मुख्य होते हैं। वह टौली का कार्य भी देखता है। कहीं भी शिथिलता देख कर वह 'छाल पर छाल' अर्थात् शीघ्रता से हाथ चलाओ, भी कहता चलता है। रोपाई समाप्त होने पर मंगल कामना के साथ गीत समाप्त होता है।

२.१.५.३. उक्त गीत कई श्रृंखलाओं में गाये जाते हैं। आरंभ में प्रार्थना गीत होते हैं जिनमें देवताओं से अच्छा मौसम बनाये रखने को कहा जाता है[१]। देवताओं में स्थानीय देवता प्रमुख रहते हैं। प्रार्थना के उपरान्त गायक स्थानीय देवी-देवताओं को निमंत्रण देता है जिससे रोपाई या गोड़ाई का कार्य सकुशल सम्पन्न हो। ये निमंत्रण गीत हैं जिनमें भूमि के 'भुमियां' थाती के थत्याल से दया करने को कहा जाता है। विभिन्न स्थानों में पृथक-पृथक देवों के नाम हैं। खेत में उक्त टौली के काम करते समय कहा जाता है कि किस प्रकार बैलों की बाईस जोड़ियां खेत जोतने में लगी हैं, एक सौ बीस स्त्रियां रोपाई कर रही हैं,दो सौ पुरुष पानी दे रहे हैं आदि। धान की बालियां चांदी की तरह और भूसी मोती की तरह श्वेत और बहुमूल्य बने, आदि। दिन भर गायक ऐतिहासिक, पौराणिक,स्थानीय लोक कथाओं को गीत बद्ध रूप में हुड़के की थाप पर सुनाता है। इनके अतिरिक्त मुक्तक गीत भी गाये जाते हैं जो 'भगनौल' 'भगनौल' जैसे प्रेम परक गीत होते हैं जिनमें से कुछ में धान रोपने की क्रिया से लेकर धान काटने तक का क्रम वर्णित रहता है। सब लोगों के जीवित रहने की कामना भी कुछ गीतों में रहती है[२]। इस प्रकार विविध प्रकार से श्रमरत टौली के श्रम को हरने की चेष्टा की जाती है। 'हैड़ी' के अतिरिक्त अन्य अवसरों पर भी स्त्रियां जब भी दो या अधिक मिल कर खेतों में कार्य करती हैं, वे गीत गाकर श्रम के अनुभव को कम करने की चेष्टा करती हैं। इन गीतों का उद्देश्य ही व्यक्तियों को कार्य में संलग्न रखना है। 'हैड़ी' में कार्य वेग से भली भांति किया जाता है और इससे यह अत्यन्त श्रमसाध्य और कठिन है जिसका स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। अत: शिथिलता दूर करने में उक्त गीत सहा-

---

१- 'सेवा दिया बिदो हो,........।'

२- जी रया तुम सब लोग, जी रया कुड़ी का पुरखा,.....।'

यक होते हैं। रोपाई गोड़ाई आदि कृषि कार्यों के अतिरिक्त भी कभी-कभी उक्त गीत अन्य अवसरों पर जैसे सामूहिक रूप से वस्तुओं को ले जाने आदि के समय भी गाये जाते हैं। भाव और प्रयोजन सर्वत्र एक ही -- श्रम सरलता को बनाये रखना है।

२. १. ६. बालगीत

बच्चों के लिए बनाई गई तुक बन्दी इस वर्ग के अन्तर्गत विचार्य है। शिशुओं को सुनाने के लिए माँ जो सस्वर गान करती है, उसे भी बाल गीत के अन्तर्गत ही रखना युक्तियुक्त है।

२.१.६.१. बच्चों के लिए जोड़ी गई तुकबन्दी प्रायः शिक्षात्मक अथवा उपदेशात्मक रहती है। इन्हें बालविनोद भी कहा जाता है। जैसे, स्वर-पाठ तथा गिनती सिखाने की दृष्टि से बनाई गई एक तुकबन्दी में अकारादि और एक दो, तीन के क्रम से रचनायें आदि[१]। पहेलियां भी साथ-साथ चलती हैं। एक पहेली में कहा गया है कि ओ बच्चों! कान खोल कर सुनो, मैं मनुष्य का प्रधान अंग हूं। मेरे बिना बच्चे बुढ़े सब जवान, सब हैरान होते हैं। आंखों से चार अंगुल दूर रहता हूं[२]। हमारा आदर करो तो हम मीठी तान सुनाएं। बताओ मेरा क्या नाम है। नित्य उपयोग

१- अ बै अनार तो आ बै आचार।
इ बै क्वो इमली कि खाणी अचार।।
ई कूनी ईख, रिखु ढाक पाडा।
उ बै त लू कुनी लौंड मांडा।
ए मैटि एक्का में एथ उथ जानों।
ऐ बैकू ऐनक आंखा लूंनो।
--- --- --- --- ।
एक, द्वो, तीन, गिनती सुनल्ह्य नवीन।।
चार पांच छै, घरै पड़ो रै।।
सात आठ नौ, अधिन कै न कौ।।
दस दस-दस, बर खावौ भात रस।।
ग्यार बार तेर, बण में रंड्ड शेर।।
चौद पन्द्रह शौल, अधिन क्यै मोल।।
--- --- --- --- ---।

शेष अगले पृष्ठ पर

की वस्तुओं के विषय में की गई तुकबन्दी विविध मुली मिलती है । एक घड़ी के विषय में विनोद युक्त वर्णन है[1]। एक कविता में छींक के बारे में कहा गया है कि यदि सोमवार छींकेगा तो मार पड़ेगी, मंगलवार छींक हुई तो समझो कि घर में कोई शुभ सूचना मिलेगी । यदि बुधवार छींक हुई तो पूरा परिवार पड़ा रह जायेगा। इसी प्रकार गुरु, शुक्र, शनि और रवि की छींक के बारे में शुभअशुभ विचार किया गया है[2]। दूसरी पहेली में कहा है कि फलमल सन्ता है किन्तु जोगी नहीं है , दूध देता है[3] पर गाय नहीं है । पेड़ पर रहता है पर पक्षी नहीं है । बताओ वह क्या है ?

पिछले पृष्ठ का शेष-

२- सुणों ननतिनों खोलो कान । मैं छूं मैं सक अंग प्रधान ।।
   म्यार बिना हुनी हैरान । बाळा बुड़ा और जवान ।।
   आंखा है कनूं छुं दूर । चारै अंगुळि सुणों ल्हूर ।।
   खोलो तुमले आपनि जवान । नों गों कओ लगाई घ्यान ।।

१- टिक टिक, टिक टिक,टिक टिक कूं छी ।
   टिकिया छूं, कोर्चे तु कै जै बतूंछी ।।
   सेकिण्ड मिनिट घण्टा बनाया ।
   मैरात कै जै नि समझै में आया ।।
   घड़ि घड़ि टिक टिक है घड़ि कूंछै ।
   चाल घड़ि रुक धैत कै जैं बतूंछै ।।
   आपूंत हर घड़ि सनन्वैई रूंछै ।
   टिक टिक मैथें किलै नित कूंछै ।। अंचल, सन् १६३८,श्रेणी १, अंग ३ ।

२- उठनें छू यूं कराले सोमवार । तो कै पिनि खाले हरो मार ।।

   ऐत्वारै छ्यूं भलि भलि बात । लाहू छानो छिये हात ।। -- वही अंग-५ ।

३- फल मल सन्ता, जोगि छै नीछ, दूध छै दोंछ पैं, गोरु छै नीछ ।
   बोट में रुंछ पैं पंछी छै नीछ, बोल बतून्यां यो दानि कीछ ? -- वही अंग-५।

गणित की पहेलियां भी बालक बालिकाओं के सम्मुख कही जाती हैं । उदाहरण--

एक भैंस थैं सौ छौ रुपयां,
सात थैली मैं जैं छौ बांधिया,
जौ कि बोथैं मांगौ जतुकै,
बिन खोली दी सकछौ उतकै,
बताव धैं ? हर थैलि मैं कतुकै ?

स्वरों की भांति व्यंजनों को लेकर भी विनोदपूर्ण रचनाएं मिलती हैं । एक व्यंजन खेल में वर्णन है कि बगीचे में ककड़ी लगी हुई हैं । दिन भर खड़िया से लिखना गडुवा जमीन पर पड़े हुए हैं । घर को मैला न रखना । चम्मच से दूध[1] पिलाया जाता है । जड़ों में पानी देकर पौधा बड़ा होता है और फल देता है । 'ऐना' भी एक प्रकार की पहेली है । बच्चों के प्रति 'ऐनों' का भी वर्णन किया जाता है । ये भी छन्दबद्ध होते हैं और बच्चे बड़े विनोद से इनको परस्पर कहते हैं । उदाहरण --

जौ फुल छ बोकी कुशल, नी फुलौं सनमान,
बिन फुलिया नै बोज छ, फुलियौ बिन संतान ।।
बोज प्यौरौ खाई जांछ, अलग अलग परकार ।
प्यार मिलणा लै साग सब, है जाको मजदार ।।
---- ---- ---- ---- --
फिर लै मैं गाली दिनी, कै मुख थामीज ।

१-* क- ककड़ा छन धाड़ पन लागिया ।
ख- खड़िलै तुम दिन भर लैखिया ।।१।।
ग- गडुवा भौं पन छन पड़िया ।
घ- घर कैं मैलौ जन धरिया ।।२।।
ङ ज ण पैली नी ऊंना ।
बीच बीच मैं छन लुकि रूंना ।।३।।
च- चमची लै दूध प्यछानी ।
छ- छला ली यथ उथ प्यरनी ।।४।। * अंचल सन् १६३८।श्रेणी-१, अंक-१०

कहूं मैं बताया, गालि दिण छुवड़िया ?[१]

बारह खड़ी सिखाने के लिए बहुत ही विनोद पूर्ण तथा तथ्यपूर्ण रचना मिलती है, जो दृष्टव्य है :-

एक कान् क, व्यंजन का, कैमति कि,
दैणी की, एक लगै कै, दो लगै कै,
लग कानो को, दो लग क न्यान कौ,
सिर बिन्दो कं, दो लास बिन्दास क: ।[२]

एक अन्य पहेली में कहा गया है कि मुझे दावत नहीं चाहिए, न कलम चाहिए, तब भी मैं लिखती हूं और इल्म(शिक्षा) सिखाती हूं । अपने गुण क्या क्या कहूं, स्वयं बताते लज्जा लगती है । 'खड़ी' कहते हैं किन्तु पड़ी रहती हूं । इस प्रकार के मेरे कर्म हैं ।[३]

२.१.६.२ दूसरे प्रकार के बाल गीतों में बच्चों को झुलाने, सहलाने आदि अवसरों पर गाया जाता है । इसी प्रकार के एक गीत में झुलाने वाला व्यक्ति 'घुगुती बासो' कह कर आरम्भ करते हुए बालक से पूछता है -- आमा(दादी) कहां है ? बालक उत्तर देता है -- ननिहाल में है । प्रश्न पूछे जाने पर कि वह क्या लायेगी ? उत्तर मिलता है कि दूध भात लायेगी । उसे कौन खायेगा ? बालक कहता है कि हम खायेंगे और तब वह व्यक्ति चावल के बर्तन की ओर संकेत करके इसे समाप्त करता है[४] । गीत का स्वर झुलाने की गति के अनुकूल सम ताल पर चलता है ।

१- वही अंग -११

२- वही सन् १९३९, श्रेणी-२, अंग-३ ।

३- नि चैनी दवात मकें, नि चैनी कलम । फिर लगीं लेखि दिखूं, सिखूंछू इलम ।।
गुण निज कै कै बतूं, लागिछ शरम । खड़ी कूं नौ पड़ी मयूं, यस छ करम ।।

४- घुगुती - बासुती,
आम कांछ -- मालूकोट,
कै ल्यालि-- दूदभाती,
को खाली -- तू खालै,
माते की तौलि पुरै पुरै ।

'क्यूं मूसी'[१] 'आ निनी'[२], आदि भी इसी कोटि के गीत हैं। इनमें मनोरंजन का तत्व प्रमुख होते हुए भी बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से इस प्रकार के गीतों का महत्व है।

२.१.६.३. तीसरे प्रकार की रचनाएं बच्चों की अपनी रहती हैं जिन्हें वे प्राय: खेलों में प्रयुक्त करते हैं। उदाहरण :-

'उरकुच्चि मुरकुच्चि दामी दरै कुच्चि,
लइया लैं चौ पीतल कै चौ,
सुनाकि चेलु चै छि कसि कसि हन्किन,
औड़ माड़ दैनी हात्ती ठसकौ मसकौ तोड़।'

एक अन्य उदाहरण --

' अटकम बटकम गैर महाजन,
कुलिया पतौ आम जाम,
मैं है बैठी पान फूल चौ सौ जा।'

इस प्रकार गीतों का आरम्भ प्रारम्भिक अवस्था से ही जन जीवन में मिलता है, बालगीतों की विभिन्न कोटियों से यही प्रकट होता है। अत्यन्त साधारण सी प्रतीत होने वाली उक्त रचनाएं बच्चों को गीतात्मक लय धुन और लगन प्रदान करती हैं।

२.१.७. मुक्तक गीत

पिठौरागढ़ के लोक गीतों का विस्तृत स्वरूप मुक्तकों के रूप में मिलता है। विभिन्न अवसरों तथा विविध प्रसंगों में मुक्तकों का व्यवहार होता है। जन हृदय का उन्मुक्त प्रवाह इन्हीं के द्वारा प्रस्फुटित होकर सवेग बहता है। वर्ण्य

१- क्यूं मुंसी क्यूं,
माल माड़ा बौं पाक्या ताल् गाड़ा ग्यूं।....

२-' आ निनी, आ निनी,
पौथा कि निन्नी ऐ जालौ।.....'

की दृष्टि से मुक्तकों की कोई सीमा नहीं बांधी जा सकती है । जन जीवन के सभी प्रसंगों को लेकर प्रकृति, समाज, धर्म, भक्ति, राजनीति, आदि के साथ इनका सम्बन्ध है । स्वरूप और शैली की दृष्टि से निम्नलिखित प्रमुख प्रकारों में विभाज्य होकर विवेच्य है :-

(क) न्यौलि

(ख) बैरा

(ग) भगनौला

(घ) चांचरी

(ड) फुवाड़ा

(च) छपेलि

२.१.७.१. न्यौलि

२.१.७.१.१ इसे 'न्यौलि', 'न्यौला' आदि अन्य नामों से भी पुकारा जाता है । न्यौली का अर्थ किसी नवीन स्त्री को नवीन रूप में सम्बोधन करना या किसी स्त्री को नवीन रूप में आलम्बन मानते हुए स्वर बदल बदल कर प्रेम परक अनुभूतियों को व्यक्त करना है । न्यौली प्रेम परक संगीत प्रधान गीत है जिसमें दो-दो पंक्तियां होती हैं । इनमें से पहली पंक्ति प्राय: तुक मिलाने के लिए होती है । न्यौली में जीवन चिन्तन की प्रधानता तथा दार्शनिक दृष्टिकोण का भाव रहता है । यह विरह प्रधान गीत है और इसके स्वर अधिक करुण एवं मर्मस्पर्शी होते हैं । न्यौलि में आलम्बन के प्रति संबोधन एक अपरिचित की भांति होता है और स्मृति के आधार पर उमड़ती हुई भावनाएं व्यक्त होती हैं । इनमें भावगाम्भीर्य तथा हृदय का स्पन्दन दर्शनीय रहता है ।

२.१.७.१.२ न्यौली में दोनों पंक्तियां पूर्ण वाक्य होती हैं , चाहे दूसरी पंक्ति के साथ उसका सम्बन्ध हो या न हो । किन्तु पंक्तियां अपने में पूर्ण होकर पूर्ण सार्थक होती हैं । गाते समय दोनों पंक्तियां कहने के बाद दूसरे वाक्य का अंतिम पद दुहराया जाता है जिससे गीत का मुख्य भाव होता है और इस प्रकार व्यवहार में तीन-तीन पंक्तियां प्रतीत होती हैं । न्यौली को दो व्यक्ति गाते हैं।

इसे अधिकतर जंगल में घास काटते हुए अथवा लकड़ी बटोरते हुए गाते हैं। विशेष अवसरों पर गांव में भी इनका गान होता है। एक ओर से एक व्यक्ति कुछ कहता है दूसरी ओर से दूसरा व्यक्ति जो स्त्री भी हो सकती है, उसका उत्तर देता है। स्वरों के धीरे-धीरे विस्तार द्वारा संगीतात्मकता का सन्निवेश 'न्योली' शैली की विशेषता है।

२.१.७.१.३. न्योली में अनेक प्रकार के भाव मिलते हैं। परम्परित तथा आधुनिक दोनों प्रकार के दृष्टिकोण इसमें रहते हैं। जीवन के प्रति एक दार्शनिक दृष्टिकोण मिलता है जिसमें कहीं विरक्ति है कहीं उदासीनता, कहीं पीड़ा है और कहीं विवशता। उदाहरण स्वरूप, भाग्य के कारण किसी का प्रेमी कहीं का कहीं आ पड़ता है[१]। बेद(बालिश्त) भर कपाल में न जाने क्या लिखा है? यह कौन जानता है[२]? सब कुछ रोका जा सकता है, यहां तक कि बहता हुआ पानी रोका जा सकता है किन्तु मन नहीं रोका जा सकता है[३]। यदि अपने प्रेम पर विश्वास है तो निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि प्रेम की प्रतिक्रिया होकर पुन: प्रेम ह होगा[४]। स्वामी परदेश में है, प्रेमिका कहती है वह ईश्वर की शरण में है[५]। प्रेम में कितनी तल्लीनता है कि दोनों कार्य कारण सम्बन्ध परस्पर गुम्फित हो

१- पाणी पण घ्यूला छुटो घाजै लै थमायो
 कै को सुवा कां ऐ पड़्यो माया लै घुमायो, न्योली माया लै घुमायो।

२- अस्कोट वंडूयाला भटी धारचुला दैलीक
 बेद भरि कपाल में के जसो लैखीछ न्योली के जसो लैखीछ।

३- काटून काटून पलो बाँछ बाँमासो को बन
 कन्यां पानी थामो बांछ न थामीनो मन, न्योली न थामीनो मन।

४- गोरु गोठ जन आये कलहि तरकलि
 हिय हार जन होये, फिरि माया फरकली न्योली फिरि माया फरकली।

५- सौण में सुरश्यानि ब्लैक हरिया बरन
 स्वामी म्यारा परदेश ईश्वर शरन न्योली ईश्वर शरन।

जहां प्रेमी के हंसिये का बाजा बजता है , वहीं मेरे प्राण फंकृत होते हैं[१]। इस प्रकार न्यौली में गहराई और प्रेम की टीस के दर्शन होते हैं । जो रोके नहीं रुकती हैं और न्यौली के ही रूप में अभिव्यक्ति का मार्ग पाती हैं । कभी कभी न्यौली केवल एक बार भी कहा जाता है । न्यौली गीतों में प्रणाम भावों की उत्कट तीव्रता मिलती है और विरहानुभूति की गम्भीरता प्रत्यक्ष होती है । ये गीत अनुभूति प्रधान हैं और किसी न किसी रूप में विवेच्य क्षेत्र के प्रत्येक भाग में गाये जाते हैं । इनमें जीवन के विविध पक्ष उद्घाटित होते हैं और जन हृदय इनके द्वारा अपनी विवशता में संतोष पाने का मार्ग खोजता है । न्यौली के कुछ उदाहरण हैं —

"सबै फूल फुली न्योळ पैयां फुलो फन,
मैर जूं ला भितर जूंला माया मुळै जन न्यौली माया मुळै जन"

"काफल खान्यां चड़ मार्यो शोशाक् गो लि छै,
माया को बनवास भयो घरै को बौळिछै, न्यौल्या घर की बौळी छै"

"बांठ भला बरमा का ग्यूं भला पाली का,
दंत भला भि ना ज्यूका काजल साली का, न्यौली काजल साली का"

२.१.७.२. बैरा

२.१.७.२.१. बैरा जिसे बैर भी कहते हैं । इसका शाब्दिक अर्थ संघर्ष है जो गीत-युद्ध के रूप में गायकों के बीच होता है । इसमें एक पक्ष दूसरे को पराजित क करने की चेष्टा करता है । अपने पक्ष का समर्थन और दूसरे पक्ष का खण्डन करने के लिए सैकड़ों तुकान्त अतुकान्त , सम्बद्ध-असम्बद्ध पद उसी स्थान पर तुरन्त बना लिए जाते हैं । कल्पना, कौशल तथा तर्क बुद्धि के आधार पर परस्पर विजय पाने की प्रवृत्ति रहती है । बैरा गाने वालों की यहां बड़ी प्रतिष्ठा है । पूर्वोत्तर भाग में तो विवाह के अवसर पर वर एवं कन्या पक्ष के लोग अपने-अपने बैरिया

१- हल्द्वानी का गौर बकारा कालिढुंगी चरान
जो त्यारा बांशिकी बाजो वां म्यारा परान न्यौली वां म्यारा परान ।

(बैरा गाने वाला) साथ रखते हैं ।

२.१.७.२.२. बैरा गाते समय किसी वाद्य यंत्र का प्रयोग नहीं होता है । कंठ स्वर के आधार पर इनका क्रम चलता है । इनका प्रचलन विशेषत: किसी मेले के अवसर पर होता है । रामेश्वर का मेला जो मकर संक्रान्ति को पिठौरागढ़ के दक्षिणी सीमान्त पर रामगंगा और सरयू के संगम पर मनाया जाता है । पिठौरागढ़ के उत्तर में जौलजीवी नामक स्थान बहुत बड़ा मेला लगता है जो लगभग महीने भर चलता है । इन मेलों में अन्य गीत शैलियों के साथ बैरा का गान होता है ।जंगल में कार्य करने के लिए गये हुए स्त्री, पुरुष भी बैरा गाते हैं जो निस्तब्ध वातावरण में अत्यन्त मुखर रूप में परिश्रुत होकर श्रोताओं को आकर्षित करता है ।

२.१.७.२.३. कोई भी गायक 'बैरिया' बैरा गीत आरम्भ कर देता है । वह किसी आश्चर्यपूर्ण घटना का दृश्य का वर्णन करते हुए प्रतिद्वन्दी से उसके विषय में प्रश्न करता है ? उसके चुप हो जाने पर प्रतिद्वन्दी गायक आलाप लेते हुए गीत आरम्भ करके पहले उसे प्रश्न का उत्तर देता है और फिर अपनी ओर से उसी प्रकार प्रश्न करता है । प्रथम गायक उसका उत्तर देता है और झट नया प्रश्न करता है । प्रश्न उत्तर का यह क्रम अखण्ड गति से चलता रहता है । बैरा में कही जाने वाली पंक्तियों की संख्या निश्चित नहीं रहती फिर भी एक बार कही गयी पंक्तियों में एक प्रश्न और एक उत्तर का क्रम प्राय: रहता है । प्रश्न की विशेषता उसके दुरूह और गूढ़ होने में है । उसका उत्तर जितना युक्तियुक्त होगा उतना ही बैर श्रेष्ठ होगा । उक्ति वैभव, प्रत्युत्पन्न मति, कल्पना-शक्ति , लम्बी सांस आदि की सहायता से उत्तर देकर श्रोताओं को प्रभावित करने का प्रयास किया जाता है ।

२.१.७.२.४. बैर का विषय राजनीति, पुराण, रीति, समाज आदि किसी से सम्बन्धित हो सकता है । इसमें गायक का दृष्टिकोण प्रधान न होकर व्यंग्य का कटाक्ष प्रधान रहता है । वर्णन के लिए वही उपादान ग्रहण किये जाते हैं जो किसी गुण के लिए प्रसिद्ध हों । इसलिए गायक किसी सामाजिक विषमता या ऐसे व्यक्ति को लक्ष्य में रखता है जो किसी विशेषता से युक्त हो । बनिया अपनी लोभी प्रवृत्ति के लिए प्रसिद्ध होता है । घर में अकेली रहने वाली स्त्री प्राय: इधर उधर ताक झांक करती है।

सांसारिक कष्टों से भयभीत होने वाले लोग गृहत्यागी बन जाते हैं। ये ऐसी प्रवृत्तियां हैं जिन्हें गायक पकड़ता है और प्रश्न का विषय बनाता है। अनेक समसामयिक विषय में ग्रहण किये जाते हैं। हरिजन उत्थान की पुकार होने के कारण अब शूद्र लोग ब्राह्मण क्षत्रियों की भांति जनेऊ धारण करने लगे हैं। दूसरी और अनेक ब्राह्मण क्षत्री अब जनेऊ नहीं पहनते हैं। बैर के उदाहरण इस प्रकार हैं :-

'दातुलै धार कांठ बड़ी धार गोली दाणी मार,
धार को सिकार पुजै लर्ल की बजार,
मी हुणि दुनियां कां छ लोभी संसार।[1]....'

\+ + + +

'रहट की ताना घट कुल बाना,
कैल पालै जातिया क्या कैका बिगड़ा दाना,
जैल त्वीकैं जनम दियो वो है भली राना,
मुखड़ी को छबि तेरो गढुवा उसारण।[2].....'

\+ + + +

'टिपि हाली रैंस[3], बेलि व्याल सपना में
देख्या ऐसो भैस।.....'

आदि।

बैरों का दूसरा स्वरूप भी है। पंक्तियों में परस्पर सम्बद्धता मिलती है। इस प्रकार के गीत बैर नाम से अब शिक्षितों द्वारा लिखे जाने लगे हैं। उदाहरण :-

---

१- हंसिया की धार जैसे कांठे दुर्गम (पहाड़ी भाग) पर मोटा ताजा धार चढ़ा। उसे गोली मार दी गई प्राप्त शिकार लाला की बाजार पहुंचा दिया और दुनियां मुझसे लोभी कहती है।

२- रहट की तान, घट(पनचक्की) का कुल(नाली), किसने जतिया(सांड़) पाला और किसके दिन आ गये, जिसने तुझे जन्म दिया उससे तो राणा अच्छी, तेरी मुख की छबि तो कोल्हू की तरह है।

३- रैंस तोड़ दी है। कल शाम स्वप्न में ऐसा व्यक्ति देखा।

"पुज दिय दैला औ बैना
फिजि दिय फूल औ वैना
अक्छ्यत पिठ्यां मैं दयूंलो,
जो रयै जाग रियै माया ।.....[१]"

२.१.७.३. मगनौला

२.१.७.३.१. मगनौला या मगनौल सौन्दर्य या रति विषयक गीत है । ये सौन्दर्य और प्रेम परक मार्मिक उक्तियां हैं जो गाते समय मुख्य या केन्द्रीय उक्ति से सम्बद्ध कर दी जाती हैं । प्रमुख गायक आलाप लेते हुए आरम्भ में कुछ पंक्तियां सामान्य रूप से गाता है तब टेक कहते हुए हुड़का बजाकर अपने साथियों को उसे दोहराने का संकेत करता है । स्वर विस्तार इसकी विशेषता है । छन्द की पंक्तियों को अधिकाधिक विस्तार पूर्वक गाकर स्वर एकाएक उतार लिए जाते हैं और गायक मुख्य पंक्ति का साथ नहीं छोड़ता है । मगनौल खड़े होकर दूसरों को सम्बोधन करके गाये जाते हैं । पुरुष गायक के अन्य साथी उसके स्वरों को और चढ़ाते हुए गीत की पंक्तियां दुहराते हैं । उत्तर कोई दूसरा व्यक्ति सामने हुआ तो वह इसी प्रकार मगनौल कहता है । दोनों ओर के साथी "हैवार"[२] कहकर स्वर विस्तार करते हैं । यह पद्यात्मक गद्य की भांति प्रतीत होता है ।

२.१.७.३.२. मगनौल का रचना विधान कई प्रकार का मिलता है । कुछ में प्रथम की सार्थक पंक्तियां इसकी टेक बनती हैं । तब छन्द कहने के उपरान्त अन्य लोग सस्वर उनकी पुनरुक्ति करते हैं ।एक मगनौल में इस प्रकार का भाव है कि थलकेदार के धुरा(पर्वतीय भाग में बुरूंश फूल खिल गया है किन्तु मैं किसके लिए फूल चुनूं । मेरी प्रेमिका तो ~~रूठी~~ रूठी हुई है । इस मुख्य के उपरान्त विभिन्न उपमानों द्वारा उसके उभरते हुए यौवन, हिलती हुई छातियों, मुख की लाली आदि का वर्णन मिलता है जिसे सुविधानुसार विस्तृत कर लिया जाता है[३]। इसी प्रकार अनेक मगनौलों में नायिका का नखसिख वर्णन मिलता है ।

१- बहिन द्वारा देहरी में अक्षत फूल डालकर पूजा करने का उल्लेख है ।

२- अर्थात् साथ में गाने वाला जिसे "भाग लगूनेर" कहा जाता है ।

३- "थल केदार धुरा बुरूंश फुलिग्यों
मैं कै रवों रियूं फूल मेरी लंब रिसै ग्या ।...."

दूसरे प्रकार के भगनौल छन्दबद्ध होते हुए तुकान्त होते हैं। बीच की पंक्तियां गद्य की तरह सुना कर अंतिम शब्द की तुक मिलाई जाती है। यह प्रयास आठ दस पंक्तियों तक होता है। तीसरा प्रकार छन्द प्रधान है जिसमें केवल दो-दो पंक्तियों के जोड़ रहते हैं जो भगनौल के मूल रूप होते हैं। इच्छित रूप में मनोभाव व्यक्त होना इनकी श्रेष्ठता की कसौटी है। इनमें सौन्दर्य और प्रेम विषयक भाव विविध रूप में मिलते हैं। कुछ भगनौलों का भाव इस प्रकार है कि प्रेयसि का मुख मण्डल देख कर मुख बादल की तरह फट जाता है[१]। तेरा मेरा प्रेम तो बाल्यकाल से प्रारम्भ हुआ है[२]। मैं गुलाब का फूल बनूंगा और तू भ्रमर बन जाना[३]। हे प्रेमी तेरी सन्तान की रूप रेखा मेरी जैसी हो[४]। तराजू में तौल कर देख लेना किसका प्रेम अधिक है[५]। आंखों के सामने संसार घूमता है लेकिन हृदय में प्रेमिका रात-दिन घूमती रहती है[६]।

२.१.७.३.३. भगनौलों में प्रथम पद या तो दूसरे पद से मिलता है या सम्बद्ध सा रहता है और केवल तुक मिलाने के लिए प्रयुक्त हुआ ज्ञात होता है। प्रायः प्रमुख सार्थक पंक्ति अन्त में रहती है। पंक्तियां बढ़ सकती हैं और गीत का आकार विस्तृत होता जाता है। ऐसी स्थिति में मैं ये किसी दृश्य या प्रसंग का वर्णन करते से ज्ञात होते हैं।

२.१. ७.४. बांचरी

१-" ढ़िपुवा दराण, तेरि मुखड़ि देखि बेर यो जस सराण ।....."

२-" अंतरै की गढी, तेरो मेरी प्रीत लागी नान्छना बटी ।....."

३-" नथा को पंवरा , मी हुलों, गुलाबी फूल तू होली भंवरा ।...."

४- "क्यारी झीना को , तो सुवा च्याला है जो म्यार अन्वारो को"

५- " मारो है छ माखी,
तराजू में तौलि लिल्ये,
कैकी माया बांकी ।...."

६- " पकै लाली पुवा,
आंखोन में दुनियां रिटो,
हिरदै में सुवा ।....."

२.१.७.४.१. ये गीत चंचरीक गति से सम्बन्धित ज्ञात होते हैं। चंचरीक की भांति वृत्ताकार घेरे में ये गीत गाये जाते हैं। चांचरी गीतों में धार्मिक भावों की प्रधानता रहती है किन्तु अब श्रृंगार परक भाव भी आने लगे हैं। स्त्री पुरुष कन्द पर कन्द मिलाकर घण्टों तक अविराम गति से नृत्य करते हुए गीत गाते हैं। धार्मिक भावना के कारण वातावरण अपेक्षाकृत गम्भीर और आकर्षक बना रहता है। एक चांचरी में शिव जाटाधारी भैरूं की शरण में जाकर आत्म समर्पण की भावना व्यक्त करते हुए सम्पूर्ण भारतवर्ष की एक राष्ट्रीय रूप में कल्पना की गयी है जिसका रक्षक भैरव है। हिमाचल से समुद्र पर्यन्त भूमि उसकी चौकी है, यहां का ध्यान रखना उसका कर्तव्य है, अब वह जो भी करे[1]। धार्मिक भावनाओं के साथ-साथ प्रेम परक तथा अन्य सामाजिक विषयों का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। इस प्रकार के चांचरी गीतों में कहीं प्रेमी के हृदय पर किसी ने ऐसी चोट की है जैसे शिकारी बाघ पर करता है[2]। कहीं पर प्रेमी प्रेयसि के गांव में ही उसके नाम की धूनी रमा कर बैठ गया है[3]। देवर की प्रशंसा और पति की बुराई इसलिए की जाती है कि देवर ढीठ होने पर भी लाल मिठाई लाते हैं जब कि पति सस्ते गट्टे उठा लाते हैं और ऊपर से रूखा सूखा व्यवहार करते हैं[4]। इस प्रकार चांचरी में अनेक प्रसंगों का समावेश उसकी आधुनिकता का प्रतीक है। चांचरी का एक उदाहरण निम्नलिखित है जिसका भाव है कि नूपुर छम-छम बजते हैं। इसलिए यह बाजा लादे। नूपुर बाजा कितना मधुर सुनाई देता है।

१- "शिव जटा धारी भैरूं तुम जै करला,
बदरी नाथ वली हो भैरूं तुमी जै करला।....."

२- "कलमा बाग मारी कौरूं लै
सुवा रे स्यू मारी सरस्यूं लै।....."

३- "लधो पसी लोरा, कधो घरूं धोरा,
त्यारा गौं में नसी रे रौ म्यार गौं क फकीरा।....."

४- "खसम म्यारा पट्टुवा देवर म्यार ढीठ,
देवरा ल्यूनी लाल मिठाई, खसम सस्ता गट।....."

मेरे मायके का बाजा होगा । यह बाजा ला दे । यह बाजा किस देवता को शोभा देता है । ढोली के गणेश को शोभा देता है । मोहरी के नारायण को भी शोभा देता है । यह बाजा ला दो । स्वरग में इन्द्र, पाताल वासुकि, भूमि का भूमिपाल, थातो का कुरम इन देवताओं को शोभित होगा-- यह बाजा कितना मधुर सुनाई देता है , इसे ला दो --

छम छम बाजन्क हो , छम घुडर्या बाजो लै दे ।
क्या भलो सुणो क हो, छम घुडर्या बाजो लै दे ।।
म्यार मैत को ढोली हो, छम घुडर्या बाजो लै दे ।
--- --- --- --- --- --- ---
स्वरग इन्दर हो, छम घुडर्या बाजो लै दे ।
पाताला वासुकि हो, छम घुडर्या बाजो लै दे ।
--- --- --- --- --- --- ---
क्या भलो लागन्क हो, घुडर्या बाजो लै दे ।।[१]

२.१.७.४.२. चांचरी एक नृत्य गीत है और इसमें मन्द मन्द पद संचालन होता है । वेष भूषा रंग रंगीली रहती है । मेले, पर्व, त्योहार आदि अवसरों पर चांचरी गीत तथा नृत्य होते हैं । इसमें चार पांच से लेकर सौ सौ तक स्त्री पुरुष भाग लेते हैं ।

२.१.७.५. झोड़ा

२.१.७. ५. १. झोड़ा यहां पर्याप्त प्रचलित सामूहिक नृत्य गीत है । इसमें सभी स्त्री पुरुष भाग लेते हैं । अधिकाधिक संख्या एकत्र होकर वृत्ताकार घेरा बनाते हुए परस्पर एक दूसरे के कंधों में हाथ रख कर धीमे एवं सरल पद संचालन के साथ गीत गाना आरम्भ करते हैं । वृत्त के बीच में खड़े होकर मुख्य गायक गीत की प्रथम पंक्ति कहता है और तब अन्य व्यक्ति उसे दुहराते हुए अंग प्रत्यंगों के संतुलित संचालन द्वारा लहरों की भांति प्रभाव उत्पन्न करते हैं । गति की तीव्रता के अनुसार आकर्षण बढ़ता जाता है। घेरे का वृत्ताकार होना आवश्यक नहीं है । दो दल बना कर स्थान परिवर्तन करते हुए

१- अंचल, १६३८, श्रेणी-१, अंक-११, पृष्ठ -१७ ।

भी इन्हें गाया जा सकता है । फोड़े दो तीन मंजिलों के भी होते हैं । अर्थात् दो मंजिल वाले में व्यक्तियों के कंधों पर चढ़ कर गीत गाये जाते हैं । इसी प्रकार तीन मंजिल वाले में दूसरी मंजिल के व्यक्तियों के कंधों पर चढ़ कर गीत और पद चालन होता है ।

२.१.७.५. २. विषय वस्तु की दृष्टि से फोड़ा भाव प्रधान, धार्मिक और सामयिक आदि अनेक कोटियों में बंट सकता है धार्मिक फोड़ों में प्राय: स्थान या अवसर विशेष सम्बन्धी देवी देवताओं का स्मरण, पूजा विनय आदि की भावनाएं व्यक्त होती हैं । मेले के अवसरों पर धार्मिक दृष्टिकोण से उसका वर्णन किया जाता है । देवताओं में शिव के विभिन्न रूप, देवी देवियों में काली, दुर्गा आदि शिव से ही सम्बद्ध शक्तियों का उल्लेख रहता है । इन देवी देवताओं को भेंट देकर मनौती करने का प्रयास किया जाता है । अन्य देवी देवताओं को भी भेंट देकर मनौती कामना का वर्णन है । पशुबलि या नारियल आदि की भेंट दी जाती है । विश्व, जीव, जगत तथा माया के सम्बन्ध में भी उल्लेख रहता है । इस प्रकार के फोड़े मुख्यत: जन-साधारण की धार्मिक आस्था, प्रकृति एवं मूर्ति पूजा तथा दैवी शक्तियों पर विश्वास को व्यक्त करते हैं । इस पर धीरे धीरे समाज की विकासशील प्रवृत्तियों का प्रभाव होता रहा है । धार्मिक भावनाओं के स्थान पर अन्य प्रकार की भावनाएं मार्ग पाने लगी हैं। भाव प्रधान फोड़े में उत्साह एवं उल्लास का भाव रहता है । मुख्य उद्देश्य मनोरंजन और कौतूहल होता है । इनमें आमोद-प्रमोद की सामग्री मिलती है ।

२.१.७.५.३. प्रेम सौन्दर्य सम्बन्धी गीतों में श्रृंगार का वियोग पक्ष मुख्यत: रहा है । प्रेमी प्रेमिकाओं की चेष्टाओं द्वारा कोमल भाव उत्पन्न होते हैं । उक्त गीतों में प्रधानता पुरुषों द्वारा गाये जाने वाले गीतों की है यद्यपि कुछ गीतों में स्त्रियों की ओर से भी प्रेम सौन्दर्य विषयक भाव व्यक्त हुए हैं । श्रृंगार वर्णन में विभिन्न प्रतीकों के सहारे शिष्टता का पूर्ण निर्वाह किया गया है । छोटी मछली या मोतियों की लड़ी ही प्रतीक हैं जो प्रेमिका एवं उद्धत अमर्यादित प्रेमी के अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं । गायक बीच -बीच में हास्योत्पादक उक्ति कर देते हैं जिससे श्रोताओं और भाग लेने वालों का श्रम दूर हो जाता है । हास्य व्यंग्य में किसी का उपहास

नहीं किया जाता है अपितु यह सामाजिक पारिवारिक आदि पर आधारित रहता है। यहाँ प्रेम का उत्कृष्ट रूप आत्म बलिदान में निखरा है। इनमें नारी सौन्दर्य तथा पुरुष हृदय की कोमलता प्रभावपूर्ण है और प्रेम भौतिक धरातल से ऊपर उठता हुआ सार्वकालिक हो जाता है जिसके फल स्वरूप शरीर की भिन्नता होते हुए भी प्राणों की एकता हो जाती है। प्रसिद्ध गीत 'बेडु पाको बार मास' इसी प्रकार की भावनात्मक गहराई एवं व्यापकता साथ-साथ लिए हुए है। इसमें ग्रीष्म के उदास दिन आ जाने पर कोई स्त्री मायके पहुँचा देने की प्रार्थना करती हुई दूसरे के कष्ट को अपना कष्ट मानती है और अपने भावपूर्ण हृदय की तुलना नैनीताल से तथा प्रिय की तुलना भोर के तारे से करती हुई अन्त में धरती माता के प्रति शुभाकांक्षा प्रकट करती है[१]। एक अन्य गीत में प्राणों को स्नेह और जीवन को दीपक बनाकर प्रिय मिलन की उत्कट इच्छा प्रकट की गई है। प्रेमिका कहती है -- शिखर के उस पार मुरली कौन बजा रहा है? हिमपात हो चुका है, यदि पंख होते तो मैं तुम्हारे पास उड़ जाती[२]।

२.१.७.५.४. अंग्रेजी सरकार की आलोचना करते हुए कहा गया है कि ऐसी सरकार को आग लगे जिसने छेद वाले पैसे चला दिये[३]। कांग्रेसी राज्य की स्थिति यह

१- 'बेडु पाको बार मास हो नरैना काफल पाको चैत, मेरि छैला।
रुण फुणा दिन आया नरैना पूजो म्यारा मैत, मेरि छैला।
त्यार खुंट कांड़ो बुड़ो हो नरैना म्यार बुटा पीड़, मेरि छैला।
--- --- --- --- ---
पारा डाण्ड देखि छै कू जो नरैना, ज्याना तारा जसि,मेरि छैला।
लड़ि मरि के होलो जो नरैना लड़ाई कू धोखा मेरि छैला।
हरि भरी रई चैं कू जो नरैना धरती की कोख मेरि छैला।
बेडु पाको --- --- --- ---'।।

२- 'पार डाणा को छ भागी सुर सुर मुरली बाजि गे
पड़ि ग्यो बरप सुवा पड़ि ग्यो बरप।.....'

३- 'आग लागो सरकार डबल में पड़यो टोटो
नानी भौ को कैया तैं खाट पकड़े फट।.....'

है कि डाक्टर बिगड़ गये हैं[1]। नेता खद्दर पहन कर ऊपर से सरल लगते हैं लेकिन भीतर से अमीर हैं। नवीन सुधारों की दृष्टि से कांग्रेसी राज्य की प्रशंसा की गयी है क्योंकि ऐसा समय आज तक कभी नहीं आया[2], जंगलों में जहां बन्दर लंगूर घूमा करते थे, वहां अब मोटरें दौड़ने लगी हैं[3]। फाड़ों में नवीन विकास योजनाओं और सुधारों का विस्तृत वर्णन मिलता है। जागृति का संदेश, संगठित होकर उन्नति करना[4], ग्राम सुधार[5], आदि समयिक विषयों से सम्बद्ध प्रभावपूर्ण गीत उपलब्ध हैं। दरिद्रता, बढ़ती हुई महंगाई, सरकारी कर्मचारियों की स्वार्थ परता आदि विषयक उक्तियां इन गीतों में मार्मिकता के साथ व्यक्त हुई हैं। स्थानीय जन भावों की स्वाभाविकता फाड़ा में सहज ही व्यक्त हो गयी है। वृद्ध लोग यदि नवीनता के प्रति कुछ संकीर्ण होकर नवयुवकों की स्वच्छन्द प्रवृत्ति को आलोचनात्मक दृष्टि से देखते हैं तो नवयुवक प्राय: उनकी उपेक्षा करते हैं। नवीन शिक्षा प्रणाली के परिणाम स्वरूप कुछ कुरीतियां भी आ गयीं हैं। अत: फाड़ों में नवीनता के प्रति आग्रह के साथ आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी रहता है जिसका उद्देश्य समाज कल्याण है। प्राय: सभी विषय -- पुरातन, नवीन, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि 'फाड़ा' के माध्यम से वर्णित हुए हैं। ये मात्र वर्णन न होकर हृदय की कसक और टीस लिए हुए हैं।

१- 'कांडरेशा का राज में डाग्डर बिगड़ि गीं
    वड़की की दवै मांडनू कुनैन दो दिनी।....'

२- 'आज जैसो राज भाइ न आयो क्वे राज में
    क्या भल सुधार भयो कांग्रेसा का राज में।.....'

३- 'धन काडरेसी सरकार
    जो घिरकंद्या गुन बानर वां घिरकनी कार।.....'

४- 'आओ भाइ संगठन करनूं पूरी करनी विकास योजना
    सरकारी हुकम है रौ छ सामूहिक कार्या..... .'

५- 'ताला माला गों का भाइ बन्दो
    बात हमारी सुणि लिय तुम
    मैलों आगण नक देखी छ
    लागनी भुरा मच्छर दस।.....'

२. १. ७. ६.   छपेली

चांचरी और झोड़ा की तरह छपेली भी नृत्यगीत है। यह गीत दो प्रेमियों का है। दो व्यक्ति प्रेमी, प्रेमिका, भाई-बहन, पिता-पुत्र, कोई भी हो सकते हैं। किन्तु अब यह शब्द केवल प्रेमी प्रेमिका के लिए रूढ़ सा हो गया है। इसमें भाव सरल और उल्लासपूर्ण होते हैं। प्रेमी या प्रेमिका के एक हाथ में रंगीन रूमाल तथा दूसरे हाथ में दर्पण रहता है। हुड़का और बांसुरी लेकर भी अलग से कुछ लोग गाते हैं। नृत्य करने वाला पुरुष भी हुड़का लेकर नृत्य करता हुआ गाता है। स्त्री अंग संचालन और भाव भंगिमा द्वारा उसे स्पष्ट करती है। गायक के पृथक होने पर प्रथम पंक्ति के उपरान्त दूसरे व्यक्ति उसे सामूहिक रूप में गाते हैं। नृत्य की गति तीव्र होती है। अब दूसरा पात्र भी स्त्री के स्थान पर पुरुष होने लगा है। उल्लासपूर्ण संगीत, आकर्षक गति, भावपूर्ण गीतात्मकता और सजीव अर्थपूर्ण अंग भंगिमा छपेली की विशेषतायें हैं। इसमें उन्मुक्त प्रेम का वर्णन रहता है। एक छपेली में वर्णन है कि तिलका प्रेयसि की लम्बी लट देख कर प्रेमी की कामना है या तो मन जैसी बात होती या मृत्यु ही हो जाती[1]। चनूली कोई अत्यन्त रूपसी है जिसकी दन्त पंक्ति का सौन्दर्य चाहे विस्मृत हो जाय किन्तु मुखचन्द्र नहीं भुलाया जा सकता। इतना प्रेम व्यापार नहीं फैलाना चाहिए नहीं तो स्वप्न तक में उसके दर्शन होते हैं। धन्य भाग कि मार्ग चलते-चलते भेंट हो गई फिर भी उसके घर में रहने से लोकापवाद का भय है[2]। इसी प्रकार संयोग की इच्छा व्यक्त करने वाले भाव छपेली में मिलते हैं जिनमें यौन का आवेग प्रबल रहता है। इस प्रकार छपेली हृदय की उन्मुक्त तरंगों के प्रवाह की एक स्वच्छन्द शैली के रूप में परिलक्षित होती है।

२.१.७.७.   ऊपर मुक्त गीतों का जो विवरण प्रस्तुत किया गया है, वह अध्ययन की दृष्टि से एक विश्लेषण मात्र है। वस्तुतः मुक्तक गीतों का विषय,वस्तु

१- " ओ तिलका तेरो लंबो लटी के भी मरो जानी
    देराणी जेठाणी मांगा तेरो नथा नानी।....."

२- " ओ बाना चमूली चकोरा त्वीलै धारी बौला
    ओ लौंडुवा कुन्दन अमीन त्वीलै धारी बौला।....."

या शैलीगत कोई सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती है । विषय अनन्त है ,शैलियां अनन्त हैं और हृदय का उच्छ्वास असीम है, यह सब मुक्तक में अभिव्यक्ति का उन्मुक्त मार्ग पाता है । लोक गीतों में मुक्तक गीत ही सर्वाधिक प्रचलित हैं और लोक प्रिय में सब से अधिक हैं । एक हृदय से दूसरे हृदय तक निर्बाध रूप से सहज ही पहुंचने की क्षमता इन गीतों में रहती है ।

२, २, लोक गीतकार और उनकी रचनाएं

गत परिच्छेदों में उन लोक गीतों का उल्लेख ही किया गया है जो परम्परित रूप से प्रचलित हैं और जिनको रचयिताओं के नाम से सम्बद्ध नहीं किया जा सकता है । यहां वे लोक गीत विचार्य हैं जिनका रचयिताओं से सम्बन्ध ज्ञात है । और जो लिखित रूप में प्राप्य है । संक्षेप में रचयिताओं का जीवन परिचय भी दिया गया है ।

२,२,१, कविवर गुमानी

२, २, १, १, गुमानी हिन्दी तथा पर्वतीय भाषा के प्रसिद्ध कवि हैं । इनका जन्म पिठौरागढ़ जिले के उपराड़ा ग्राम वासी पन्त परिवार में संवत १८४७ में हुआ था। गुमानी का वास्तविक नाम लोकरत्न था । इनके पितामह पं० पुरुषोत्तम पन्त प्रेमवश इन्हें गुमानी कहते थे । इनके पिता पं० देवनिधि पन्त तथा माता देवमंजरी थीं । गुमानी के पूर्वज चन्द्रवंशी राजाओं के राजवैद्य थे । गुमानी का बाल्यकाल पितामह पुरुषोत्तम की देखरेख में उपराड़ा तथा काशीपुर में व्यतीत हुआ और २४ वर्ष की आयु तक इनकी शिक्षा-दीक्षा पं० राधाकृष्ण वैद्यराज तथा पं० हरिदत्त ज्योतिर्विद के संरक्षण में सम्पन्न हुई । गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के पश्चात एकाएक ही उन्होंने १२ वर्ष की अवधि तक ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने की प्रतिज्ञा की । तीर्थराज प्रयाग में रह कर चार वर्ष तक गायत्री का जाप किया । कहते हैं कि एक दिन भोजन बनाते समय इनका जनेऊ जल गया और उन्होंने संकल्प किया कि व्रत की समाप्ति तक पका हुआ ह अन्न ग्रहण ही न करेंगे और फलाहार ही पर दिन व्यतीत करते रहे । प्रयाग में दुर्वा रस पीकर ही गुमानी ने तपस्या भी की थी । बारह वर्ष के के व्रत की समाप्ति के पश्चात उन्होंने पुनः गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया[१] ।

१- सांस्कृतिक अंक (प्रथम खण्ड)- कालेज मैगजीन बेरीनाग,१९६१-६२, पृष्ठ-३८ ।

२.१.२.१.२. गुमानी कवि का अध्ययन बहुत गम्भीर था । उन्होंने संस्कृत का उच्च अध्ययन किया था और वेद, उपनिषद्, पुराण, दर्शन आदि का विशाल अवलोकन । उनकी भाषा भी पाण्डित्यपूर्ण और संस्कृतमयी मिलती है । उनकी रचनाएं संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, और गंगोली बोली में हैं । गुमानी कला के संचय की दृष्टि से एक लापरवाह कवि थे । उन्होंने रचनाएं स्वान्त सुखाय ही की हैं । यहां उनकी गंगोली बोली में लिखी रचनाएं ही विचार्य हैं ।

२.२.१.३. गंगोली की पचलित पर्वतीय भाषा में गुमानी की वाणी से जो शब्द निकले वे प्रत्यक्ष एवं मूलवत चित्रण प्रस्तुत करते हैं । उन्होंने अपने निवासस्थान उप्राड़ा के विषय में लिखा है कि वनों में काफल तथा किल्मोड़े के रसीले फल पके हैं, घर के बगीचों में दाड़िम, काकड़ी के स्वादिष्ट फल हैं, गोठ(गोशाला) में गाय दुधारु है. घर और बाहर सब प्रकार की भरोहरों में उप्राड़ा ग्राम श्रेष्ठ है --

बनै बनै किल्मोड़ी काफल छ,
बाड़ा मणि दाड़िम काकड़ी छ
गोठिन में गोरु लैंण बाखड़ी छ
थातिन में उत्तम उप्रड़ी छ ।।

अपनी विपत्ति के दिनों तथा अकाल के समय गंगोली वासी बिना चले मोटे आटे की मोटी और बड़ी रोटियां, गत्त, गुरुंश और मट्ठ का फना(जिसमें पानी अधिक और अनाज कम हो और पतला उबाला गया हो) बिना नमक डुबुके, बिना घी या तेल में भुनी पिण्डालू(अर्वी) की सब्जी खाकर ज्यों त्यों अकाल की घड़ियां व्यतीत करते हैं--

आटा का अणचालियां खसखसा,
रोटा बड़ा धाक्ला,
फानो गत्त गुरुंश और मट्ठ को,
डुबुका बिना लूण का,
खानो साग बिना भुटंण को,
पिंडालू का नौल को,
ज्यों त्यों पेट भरो अकाल कटनो
गंगावली रौणियां ।

कहते हैं कि एक बार गुमानी को स्वप्न में सोने की बिल्ली मिलने का निर्देश हुआ, इस बात को उन्होंने अपने भाइयों के सम्मुख प्रदर्शित किया लेकिन स्वप्न में मिला हुआ धन भी नियमानुसार सरकार का ही होता है, इसी भय से भाइयों का साहस न हुआ, तब गुमानी उन्हें समझाते हुए कहने लगे कि सुतार नामक गांव के घर के बगल में बिल्ली तरुड़(एक कंद) के खड्ड में गिर गई है, निकाल ला, राज्य अंग्रेजों का है पर हितार्थ धन के लिए क्या भय --

सुतार गौं का घर का करेड़ा,

तरुड़ की खाड़ पड़ी बिराली ।

निकासिला राज फिरंगी काह

कल्याण धन की डर के निहाली ।

गुमानी की उक्तियां अत्यन्त अनुभूति परक होती हैं । जैसे कि कांटेदार झाड़ी से हिसालू फल कष्ट से प्राप्त किये जाते हैं, उसी प्रकार दूध देने वाली गाय भी भले ही कुछ करे उसे सह लेना पड़ता है । इसमें बुरा नहीं मानना चाहिए --

हिसालू की जात बड़ी रिसालू,

जां जां जाछे उधेड़ी खां छै,

यै बात को कैर नटां भी मानो,

दुधाल की बात सहनी पड़न्छ ।

२.३.१.४. संस्कृत के श्लोकों में कुमाउंनी लोकोक्तियों की संगति बैठा कर गुमानी ने आकर्षक प्रयोग किये हैं । कई श्लोकों - पदों में चारों पंक्तियां विभिन्न भाषा के हैं --

बाजे लोक त्रिलोकनाथ शिव की पूजा करें तो करें,

क्वै क्वै भक्त गणेश का जगत में बाजा हुनी त हुन,

राम्रो ध्यान भवानि कर चरणमा गर्दन कसैलैगरन,

धन्यात्माजुलधामनीह रमते रामे गुमानी कवि:

उक्त पद में पहली पंक्ति हिन्दी, दूसरी गंगोली, तीसरी नेपाली, और चौथी संस्कृत भाषा की है ।

इसी प्रकार तीन पंक्तियां संस्कृत की और अन्तिम पद में गंगोली बोली में लोकोक्ति का प्रयोग भी पाया जाता है । निम्नलिखित में कवि ने कहा है -- कौआ कांव कांव करता है, सांप चूहों के बिल में वास करता है , काना भगड़ालू तथा लंगड़ा अन्यायी होता है ---

रतमत्युच्चैं रसकृन्यायी
कुरुते काक: पुरत: स्थायी
अहिराखूनां गृहे मूशायी,
काणो कच्यायो ठुनो अन्यायो[1]

इसी प्रकार काल की करो बिराली म्याऊं की कर, नकटा लाज न हन्तरा मशो, कपूत चेलान कटक को डान, पीड़ कुठार कि वैध जिठाणो, सैसांज का मरिय सों कब लग रुण्णु, ज्वे जै ठुलि ससम जै नानु, आदि अनेक क्षेत्रीय लोकोक्तियों का प्रयोग भी किया है ।[2]

२.२.१.५. गुमानी जी ने तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों का भी चित्रवत वर्णन किया है जिनमें उनकी राष्ट्रीय भावना भी व्यक्त होती है । अंग्रेजों से पूर्व विवेच्य क्षेत्र में गोरखों का राज्य था । उनके निरंकुश शासन से प्रजा परेशान थी । कवि ने सजीव शैली में गोरखों के अत्याचारों पर व्यंग्य किया है कि खजाना ढोते-ढोते प्रजा के सिर के बाल उड़ गये पर एकाधिपत्य गोरखों का ही रहा । कोई भी उसका राज्य छोड़ कर नहीं गया । अत: हे गोरखाली राजा तुम धन्य हो --

दिन दिन खजाना का भार का बोकिया ले,
शिव शिव चुलि में का बाल नें एक कैका ।
तदपि मुलुक तेरो छोड़ि नें कोई भाजा,
इति वदति गुमानी धन्य गोर्खालि राजा ।

१- इण्डियन एण्टीक्वेरी -- जिल्द ३८(जुलाई १६०६) पृ० १८८

२- वही पृष्ठ १८५-१८६ ।

कवि ने एक असहाय विधवा की दशा का करुण चित्रण करते हुए कहा है कि बेचारी को मुश्किल से हलिया(हरवाहा) मिला । लेकिन दोपहर हो गई है , केवल बायीं ओर जोता जाने वाला बैल मिला है, दायां नहीं । खिचड़ी एक माना(माप का एक बर्तन) भी उसे कहीं उधार नहीं प्राप्त होती । बेचारी क्या करे, निराश होकर सोचती है कि मेरे लिए काल भी नहीं आता --

हलिया हाथ पड़ो कठिन ले, है गैछ दिन धोपरी,
बांयाँ बल्द मिलो छ एक दिन ले कांजूं मैं दै णाहूं राणी ।
माणो एक गुरुंश को खिचड़ो पैंचो नी मिलो,
मैं ढोला सूं काल हराणी कांजूं कै धन्दा करूं ।

२.२.१.६. प्रकृति चित्रण में भी कवि ने सूक्ष्म वर्णन दिया है । हिसालू की प्रशंसा में वे लिखते हैं कि पर्वतीय प्रदेश में यह मेवा एक तोहफा है । चौथे पहर जब कुछ ठण्डी हवा चलने लगती हैं तो हिसालू की मिठास का आनन्द लेने में अमृत भी फीका पड़ जाता है :--

छनाई छन मेवा रत्न सगला पर्वतन मैं,
हिसालू का तोपा छन बहुत तोफा जनन मैं,
पहर चौथा ठण्डा बखत जनरो स्वाद लिण मैं,
अहो मैं समजंछु अमृत लग वस्तु क्या छुनलो ।

इसी प्रकार काफल के विषय में कवि का कथन है कि स्वर्ग लोक में देवताओं के योग्य काफल इस धरती पर आ जाने के कारण दु:खी हैं । क्रोध के कारण उनका रंग लाल पड़ने लगा है । उनमें जो वृद्ध हैं , वे अपनी इस दशा पर लज्जित हैं और उनका रंग नीला धुमैला पड़ने लगा है --

खाणी लैक इन्द्र का हम छिया भूलोक आई पड़ा,
पृथ्वी मैं लग यो पहाड़ हमरो थातो रची दैव ले,
एसो चित्त विचारि काफल सबै राजा भया क्रोध ले,
कोई और बुड़ा बुड़ा शरम ले नीला धुमैला भया ।

इस प्रकार पर्वतीय फलों और प्राकृतिक सौन्दर्य पर मार्मिक उक्तियों द्वारा कवि ने अपने कल्पनाशील हृदय का परिचय दिया है ।

२. २.१.७.   इस प्रकार गुमानी कवि ने सीधी सादी, स्पष्ट और सरल भाषा में काव्य रचना की है। इनकी रचनाएं हास्य,व्यंग्य और सरस चुटकी के लिए प्रसिद्ध हैं। "स्वभाव का फक्कड़पन, प्रत्युत्पन्नमति और लौकिक व्यवहार का मार्मिक अनुभव उनकी कविताओं में सर्वत्र मिलता है।"[१]

२. २. २.   श्रीकृष्णपन्त(बच्चीराम)

२.२.२.१.   बचीराम पन्त बेरीनाग के मटियाँ नामक ग्राम के निवासी थे। कुछ समय पूर्व इनका देहान्त हुआ है। ये प्राइमरी पाठशाला के प्रधानाध्यापक थे और स्वान्त सुखाय कविता, गीत लिखते थे। उनके पुत्र श्री नरेन्द्र नाथ जी के पास बचीराम की रचनाओं की हस्त लिखित प्रतियां जिनका प्रस्तुत लेखक ने अवलोकन किया है।

२.२.२.२.   पं० बचीराम ने भक्ति, दर्शन एवं समसामयिक विषयों पर कविता लिखी है। उनकी कविता में हृदय की तन्मयता , भावों की गम्भीरता , भाषा की सरलता और विषय की विविधता मिलती है।

कृष्ण ग्रन्थमाला नाम से उन्होंने अपनी रचनाओं का प्रकाशन भी कराया था जिनमें से महिला धर्म प्रकाश, नामक कविता संग्रह प्राप्त हो सका है। 'सत्यबीर बाला', 'होली संग्रह', तथा कविता मंजरी नामक ग्रन्थों की हस्तलिखित प्रतियां उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त तेरह अन्य हस्तलिखित संग्रह प्रस्तुत लेखक को प्राप्त हुए।

२.२.२.३.   महिला धर्म प्रकाश स्त्री शिक्षा विषयक कुमाउंनी गीतों का संग्रह है। धर्म चर्चा, पति प्रेम, बाल विधवा, पति विरह, द्रौपदी वाक्य, आदि विषयों पर संगीतात्मक छन्दोबद्ध रचनाएं इस पुस्तक में संगृहीत हैं। अबोध बालिका जब विधवा होती है , उसके गहने और अन्य शृंगार सज्जाएं उतार दी जाती हैं। बेचारी अबोध विधवा को यह भी ज्ञात नहीं होता कि यह सब क्यों खोला जाता है। वह कहती है, 'हे मां तू ये गहने क्यों खोल रही है। सिंदूर क्यों मिटाती है ? चूड़ियां क्यों तोड़ती है , ये चूड़ियां तो बहुत अच्छी हैं, इन्हें न तोड़ना, हाथ शोभा हीन हो जायेंगे।'

१- श्री गिरीश जोशी, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, १७ जून १९५९ ई०।

बिना गहनों के शरीर के विभिन्न अंग बुरे दिखाई देंगे[1]। 'सत्य बीर बाला' में एक आर्य बाला की जीवनी का कवितामय वर्णन है। उदाहरण --

रूपवती कन्या छिई, तै राजा की एक ।
भली दिखीणी चांणकी, गुणन की भरी अनेक ।।
पूरी युवती तौ भई जब ब्याहन का योग ।
दैव योग विपदा पड़ी, आय पड़ौ संजोग ।
रूपवती की रूप की, महिमा सुणी अपार ।
बादशा औरंग मन, प्रफुल्लित भयो अपार ।।

कविता में मंजरी में अनेक सामयिक विषयों पर लिखी गयी कविताएं संगृहीत हैं। एक कविता में पिछले दिनों की प्रशंसा की गयी है। 'वे दिन स्वप्न हो गये हैं जब एक रुपये में एक बोझा गेहूं मिल जाता था। बीस सेर दूध दही मिलता था, तीन सेर का घी था। अब तो सेर भर का अनाज नहीं मिलता है और औषधी की भांति अनाज की मात्रा भी मिलने लगी है'[2]।

बचीराम की कविता में व्यंग्य का पुट भी मिलता है। जीवित रहते हुए तो माता-पिता की सेवा नहीं की जाती है, मरने के बाद 'गतिक्रिया' (मरणोत्तर संस्कार) की जाती है। जीवित रहते हुए तो दूर से भी रोटी का टुकड़ा दुर्लभ रहता है, मृत्यु होने पर चहल पहल के साथ दावतें दी जाती हैं। इसी प्रकार के भाव निम्नलिखित उदाहरण में अनुस्यूत हैं :--

---

१- तू आज किलै यों कूंछी, इजहि कुरि कुरि कै रूंछि ।
कै कारण गळणा स्वऊंछी, सौर को सिन्दूर मिटूंछो ।
तौ भौत भलाछन चूड़ा, इज अन फोड़िये दो चूड़ा ।
अब शोभा नी रै हाथन की, सब शोक उठो यै मन की।
नैं सैंच बर्यों हा टूट्यों, यो सुन्दर दाणो फूट्यों ।
लटि छौ बांटो पौंके की, तू आज किलै कि स्वऊंछी ।

२- श्वीण है गई उं दिन ।
एक रुपै में एक बौफ ग्यूं, मिलि जां छि हो जै दिन ।
बीस सेर दै दूध उंछियों, सीर बणन छो वो दिन ।

शेष पृष्ठा अगले पर--

जन करिया जन करिया तुमि हौ, गति किरिया जब करिया ।
ज्यून छनै तौं दूर दूर मै, रौटी गास दुरलभ मै ।
मरि बैर बसि फर फर छैँ, लटूस की दावत मै ।[1]

घूस के सम्बन्ध मैं कवि का कथन है कि घूस लेकर जनता को ठगा जाता है । वोट (मत) के लिये भी घूस का सहारा लिया जाता है ।[2]

समय की गति का किसी को पता नहीं रहता है । समय शीघ्रता से बीतता जाता है । यह ज्ञात भी नहीं होता है कि कब बीता । समय का सदुपयोग ही उसका मूल्य जानना है --

समय तुरौड़ी जांछौ, पतौ निहातो कांछौ ।
लाख करोड़ौं रुपया दीनी, कभै न लौटी ऊनो ।
वीर बहादुर सबै थकी गै, क्वै न वापस लूनो ।
---   ---   ---   ----
अति अमोल यौ बखत कभै लै, व्यर्थ गयूंनौ नी दैनौ ।

पं० बची राम ने बाल विनोद, भक्ति एवं उपदेशप्रद कविताएं भी लिखी हैं जो समय समय पर अंचल मैं प्रकाशित होती रही हैं । ग्रामसुधार सम्बन्धी एक उपदेशात्मक कविता मैं उन्होंने ग्राम वासियों से सुधार का मार्ग अपनाने के लिए आग्रह किया है । बच्चों को

पिछले पृष्ठ का शेष--

तीन सेर को ऊ घ्यू कां गै, हलुवा खांछ्यां दिन दिन ।
सेर भरी को अन्न नि मिलनौ, औंस्द मात्रा है गै ।
आज सेर को पेट आब तौं, बिल्कुल रीतो रै गै ।
---   ---   ---   ---   ---
बाड ढकण हूं विषड़ नि मिलनौ, कीमत भौत बड़ी गै ।
कृष्ण तुमन किन खबर लियौ को, हाहाकार पड़ी गै ।
-- कविता मंजरी(बचीराम) हस्तलिखित प्रति पृ० ४ ।

१- वही पृ० १३

२- " एजनटन की बड़ी फर फर मै, घूस रूप मैं मिठै दिई गै ।
खरच बरच यौ कसो सजीलो, जनता मूरख यसी ठगी गै ।। वही पृ० २३

पाठशाला भेजें, धर्म नीति की शिक्षा भी दें। ग्राम को स्वच्छ रखें[1]।

एक कविता में कवि ने ईश्वर की दया एवं शक्ति का वर्णन किया है[2]। एक बाल गीत में उन्होंने शिशु को सुलाने के लिए सुन्दर तुकबन्दी की है। माताएं शिशु को सुलाने के लिए इस प्रकार के गीत गाती हैं[3]। इनके अतिरिक्त पहेलियां, समस्यापूर्तियां भी बचीराम ने लिखी हैं।

२.२.३. लालमणि उप्रेती

श्री लालमणि उप्रेती पिठौरागढ़ नगर के निकट स्थित ग्राम कुजौली के निवासी थे। इनका जीवन काल सन् १६००-१६६३ ई० रहा है। आप राष्ट्रीय आन्दोलन में कई बार सजा पा चुके थे। आप संस्कृत अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान रखते थे। 'कुमुद', 'उत्थान' आदि अनेक पत्रिकाओं से आपका सम्बन्ध रहा है। इनके लघुभ्राता श्री माधवानन्द उप्रेती जी से इनकी कविताओं की हस्त-लिपियां प्राप्त हुई हैं। श्री लालमणि की कविता समसामयिक विषयों से ही प्राय: सम्बद्ध मिलती हैं। विभिन्न ऋतुओं, नित्य प्रयोग की वस्तुओं आदि को अपनी कविता विषय बनाकर स्थानीय साहित्य की अभि-

---

१- हमरि बातन कणि मन में धरिया।
बालकन भेजि दिया सदै इस्कूल ॥
नरक्स पढ़ै लिया जन करौ भूल।
\+ \+ \+ \+
गौं बटिया सबै मैंस बड़ै दियौ साफ।.... ॥
-- अचल,१६३८, श्रेणी-१, श्रृंग-३

२- हे नाथ दयालु तुम बड़ छौ,
यै बात हृदय में धारी छौ।
\+ \+ \+ \+
दीन बचूणा हूं यौहि अंछा,
भुलि बात अंछा, सब वाहन की।...।
--अचल १६३८, श्रेणी-१, श्रृंग-५

३- हौलरि हौलरि - रेजा निनुरि .
म्यर मौ बचि जौ,
ठुलौ बणो जौ।...।-- वही १६३६, श्रृंग-१२

वृद्धि में आपका योगदान रहा है । आपकी भाषा स्थानीय तत्वों से युक्त रहती थी । शैली आकर्षक एवं ओजपूर्ण थी । उन्होंने एक कविता में आषाढ़ के आगमन का वर्णन किया है । जब दिन ढल गया, धूप चली गई । भाभी अपने स्वामी को जगाने लगी कि ओ छोटो के पिताजी उठते क्यों नहीं । संध्या हो गई है , तारे भी निकल गये हैं । तुम तो सारे दिन इसी प्रकार सोये रहते हो, इसीलिए तुम को रात में नींद नहीं आती तुम तो कभी बाहर भी नहीं निकलते हो, देखो । बाहर कैसी बहार छाई हुई है । सब के हृदय कैसे रंगीले हो उठे हैं.... ।[१] बीड़ी के विषय में उनका कवितामय वर्णन है कि छोटे बच्चों को बिगाड़ने वाली यह बीड़ी है । यह बीड़ी क्या है डंक लगाने वाली कौड़ी(सांप) है । सांप का काटा हुआ तो अच्छा हो जाता है , किन्तु इसका काटा हुआ अच्छा नहीं होता है ....[२] ।

जुए की हानियों का वर्णन करते हुए लोककवि लालमणि ने लिखा है कि जुआ का खेल बुरा है । इसे नहीं खेलना चाहिए । यह मीठी हार है जो मोहित किये रहती है । जीतने वालों के लिए भी थोड़ी देर के लिए बहार रहती है और शीघ्र हारने की

१- जब दीन डुबि ग्या सब घाम न्है ग्यो,
मौजि आपन बैग जगून पैगे ।
रे हो । छोटिक बाबु उठना किलै नै ,
तार लै निकलि ग्यान , अब सांझ पै गे ।
सार दिन रूंछा इसिकै घुरीना,
राति में तबै नीन तु मन नैं ऊनी ।
--- --- --- --
तुमत कबै भैर नैं निकलना,
कसि मार ऐ रै बन उपवन में ।..... ।।

२- नान् नान्तिनान की बिगड़नैर बीड़ी
बीड़ी क्या छयी, काटनैर कीड़ी ।....

बारो आती है..... ।[१]

गोपियों को छोड़ कर जब कृष्ण मथुरा जाते हैं , उस समय के वर्णन को भी आलोच्य कवि ने वाणी प्रदान की चेष्टा की है । कवि का कथन है कि " नटवर श्रीकृष्ण बहुत ही नटखट था । स्वयं तो कुब्जा के साथ मग्न है और हमें(गोपियों को) निष्ठुरता से छोड़ गया है । जब पनघट का स्मरण आता है तो सुध बुध नहीं रहती है । मुरली की ध्वनि अब भी मेरे कान में गूंज रही है ।..... उसकी कला को हम कैसे भूलें, वह कैसा नटखट था ।[२]

श्री लालमणि की कविता का विषय प्राय: दैनिक वस्तुओं , घटनाओं तथा परिस्थितियों से सम्बन्धित मिलता है । युद्ध में जाने वाले सिपाही , राष्ट्र के लिए सर्वस्व देने वाले देश भक्त, श्रद्धालुओं के मध्य पधारने वाले सन्त जनों आदि के सम्बन्ध में तुरन्त भाव एवं संगीतपूर्ण तुकबन्दी करने में आप कुशल कलाकार थे । आपकी कला का स्थानीय क्षेत्र में पर्याप्त मान था और आप प्रसिद्ध स्थानीय कवि के रूप में जाने जाते थे ।

१- " जुवा को खेल बुरो छ, जन खेलो हो ।
जुवा मीठी हार छ, जन०......
बड़ो बुरो कार छ, जन०.....
भिक घड़ि बहार छ, जन०.....
फिरि हारन तार छ, जन०.....
--- --- --- ---
घर कुड़ी उजाड़ छ, जन०...... ।"

२- " नटखट छो बहुतै नटवर,
आपूं मग्न मोहन, कुबजा संग में,
हम कैं छोड़िगो निमोहिं निठुर ।
--- --- --- ---
कसिकै भुलनू सखि वीकि कला, क्यो नटखट,
छो बहुतै नटवर.... ।।

२.२.४. चन्द्रसिंह तड़ागी

चन्द्रसिंह तड़ागी ग्राम दाड़िम खोला , पिठौरागढ़ के निवासी थे । आप कुमाउंनी में कविता लिखने के प्रति अत्यन्त रुचि रखते थे । इनकी कविताओं का हस्त लिखित संग्रह , बहुत प्रयत्न करने पर भी प्राप्त न हो सका । अल्मोड़े से प्रकाशित होने वाले मासिक पत्र अचल में इनकी अनेक कविताएं देखने को मिलीं जिनके आधार पर उनके कवित्व कला की झांकी सहज ही मिल जाती है ।

एक कविता में कवि ने `अचल` के फलने फूलने की कामना प्रकट की है कि `अचल स्थायी रहे । इसका मान पहाड़ और मैदान सर्वत्र हो । इस पर शत्रुओं का दांत न गड़ने पाय । अचल में विद्वान तथा मूर्ख सभी के गीतों का मान होता है । अपनी टूटी फूटी बोली में मैं अपना गंवार पना ही प्रकट करता हूं । अचल का सर्वत्र प्रचार हो ।[1] स्वर्गीय श्री तड़ागी ने छोटे-छोटे विषयों को लेकर कविता की रचना की है । कवि मेथी के विषय में लिखता है कि `तेरी भीनी भीनी सुनहली गंध है । तू अन्य खाद्यों का आस्वाद तीव्र करती है । छौंके के द्वारा भोजनों को सुस्वादु बनाती है । रोगी हो अथवा स्वस्थ सभी इसका पान कर लेते हैं । तेरे बड़े और गहरे गुणों के वर्णन के लिए एक भारी ग्रन्थ रचना की आवश्यकता होगी । दूब से भी अधिक तेजी से तू बढ़ती है, यह तेरी नेकी का परिणाम है[2]।

१- भगवान`अचल` को थिर है जो बाशी ।
`अचल` हूं कभै लगै नि जो काल पाशी ।
`अचल` को मन है, जौ, देश औ पहाड़ ।
जन बुड़ौ`अचल` में शत्रुरी को दाड़ ।
इलम का कमि मैंख भलौ लै नी चाल
ठाटि काठि सेवा मेरो, ठाटि काठि बोली.... ।`
-- अचल, १९३८, श्रेणी-१, अंग-५

२- भीनी भीनी गंध तेरो सुनैली ।
डैली राई रैतुवा संग रैना ।
तेरा गरुवा और गैरा गुणों सूं
मैथी बैठ एक भारी सुग्रन्थ ।।-- वही,१९३९, श्रेणी-२, अंग-४

कविता के अतिरिक्त श्री तड़ागी लेख, निबन्ध तथा आलोचना लिखने के भी अभ्यस्त थे, `पहाड़ी छन्द`, एक हुड़किया बौल` जैसे उनके आलोचनात्मक लेख विवेच्य लोक साहित्य में उल्लेखनीय महत्व के हैं ।

२.२.५ लीलाधर उप्रेति

श्री लीलाधर उप्रेती ग्राम कुजौली, पिठौरागढ़ के निवासी हैं । छोटी अवस्था से ही ये कविता लिखने लगे थे । घरेलू जीवन से अत्यन्त त्रस्त होने के कारण इस समय आपका पूरा समय साहित्य सेवा में लगता है । पिठौरागढ़ से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक पत्र `उत्तराखण्ड ज्योति` के आप सम्पादक हैं । आपकी कवितायें समय-समय पर पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं । सम्प्रति अपनी रचनाओं के प्रति श्री लीलाधर इतने निरपेक्ष हैं कि प्रस्तुत लेखक द्वारा अनेक बार आग्रह करने पर भी अपनी कविताओं का पूरा संग्रह नहीं दिखा सके । उनकी कविता का एक उदाहरण यहां दिया जा रहा है । इस कविता में कवि ने हिमालय की महिमा का वर्णन किया है कि `संसार में तुझसे बड़ा कोई नहीं है । तू सेवा करने में अटल है । पवित्रता में भी तू सबसे बढ़ कर है । हम कुमाऊं वासी तुझे रोज नमस्कार करते हैं । तू हमारे ही निकट है । अन्य स्थानों पर रहने वालों के लिए तेरा दर्शन तक दुर्लभ है । हम तुझे रोज उठते ही देखते हैं । --

न्हेतिन जगत में त्वे है ठुलो क्वे,
सेवा करणा में लाग्यों अटल छै ।
पवित्र तैं छै सब है बड़ी बेर,
नमस्कार त्वे कें हम रोज करनूं,
तैं दूद है ले बांकी धवल छै ।।

\+ \+ \+

नमस्कार त्वे कें हम रोज़ करनूं,
कूमू का न्हेर हमरा नगल छ छै ।
सबन हूं दरशन तेरो कठिन छ,
हम रोज देखनू चतुक सरल छै ।।[१]

१- `अंचल` १६३६, श्रेणी २, अंग ८ ।

२.२.६ `कैलाश` कुमाऊंनी

`कैलाश` कुमाऊंनी पिठौरागढ़ी के नवोदित कवि हैं। कोमलता एवं करुणा आपकी वाणी से छलक पड़ी है। करुणा की स्रोतस्विनी इनके काव्य में अजस्रत: प्रवहमान मिलती है। कवि करुणा में जीवन भर डूबा उतराया है और कोई भी काव्य प्रेमी उसमें डूबे उतराये बिना न रहेगा। हिमालय के वन प्रान्तरों का अनेक रुदन कवि के काव्य में चू पड़ा है। पहाड़ी बालाओं का रुदन उसके काव्य में समुपस्थित है। घुटती (पहाड़ का एक उदास पक्षी) का उदासी स्वर और उसकी कविता एक ही निसर्ग के दो कंठों से निर्गत गान हैं। उसके काव्य में प्रेमी-प्रेमिका के सांसारिक रिश्ते की कसक के दर्शन नहीं होते, उसमें किसी मंगल प्रेम का बिम्ब प्रदर्शित नहीं हुआ है, यद्यपि ये प्रतीक के रूप में आये हुए हैं। वस्तुत: उसके सारे के सारे काव्य में मुस्लिम सूफ़ियां और हिन्दू भक्त कवियों की भांति प्राथी के परमात्मा के पास जाने का अनहद नाद सुनाई देगा। मां को भेंटने के लिए जाने का बेटी का कामना का रूपक भी कवि को बहुत भाया है। `मां कब लौटूंगी अब मम्क-मायके। कब भैयादूज होगी और कब आऊंगी --

ओ हवा सुण तु, मैं कब ऊंलो,
कब होली दुतिवा, कब भेत ऊंलो।
मैं घर जूंलो हैला फोड़ूंलो,
ओखल जातारो करि वन जूंलो।`

यदि लड़की मायके नहीं पहुंच पाती है तो शान्त्वना के लिए दूसरी युक्ति खोजती है --`मां मुझे तू भेटौली कब देगी ? ससुराल में मैं रूखा-सूखा खाऊंगी (चैत्र तक)

रुख सुख खानूं पिनू, बासि रोटो खंलो।
कब आलो हवा मेरा भेटौलो।`

कवि का अन्तर्मन किसी माध्यम की खोज में उस अदृष्ट के लिए तड़प उठता है। लड़की के भेटौल में मार्फ जो है, मां और बहिन के बीच का माध्यम बन जायेगा।

`उस पहाड़ की ऊंचाई में चढ़ता हुआ जाता है, नहीं है मेरा प्रिय। वह (प्रिय) गाता चला जाता है उस पार में। सुनाई पड़ने वाला गीत उसी का है --

`वी पार है आंछ रे
प्रिय, वीको छ गीत रे ...

'फूल जहां खिलेगा वहीं वह सूखकर गिर जाता है । सृष्टि भी सृष्टि को उत्पन्न करने के बाद उसी में लय हो जाती है --

जां फुलोलो पुष्प वां फड़ोलो
सृष्ट ले लय सृष्टि उगालो ।'

कवि अपने अदृष्ट को कण-कण में, फूल-पात में, पेड़-पौधों में, पशु-पक्षियों में, जड़-चेतन में सभी में ढूंढता फिरता है । वस्तुत: कवि यहां पर दार्शनिक हो उठा है । उसने काल और दर्शन के संगम में स्वयं स्नात होकर, भारतीय दर्शन के संगम में स्वयं स्नात होकर, भारतीय दर्शन के 'कण कण में भगवान' के विचार में सबको डुबा दिया है । किन्तु उक्त दार्शनिकता के अन्दर भी कवि ने वस्तुगत सृष्टि से मुंह नहीं मोड़ लिया है । उसे अपने पर्वतों और वहां के पर्वत पुत्रों की पूरी परख है । वह जानता है कि पर्वत पुत्रों ने पहाड़ों के चोखे जल और पवित्र अन्न को खाया पिया है, वेश भी उनका सीधा सादा है । कवि ने अपने एक स्वदेश गान में अपने लाड़ले देश की सुधि में इसी प्रकार की अनियमित सहज अभिव्यक्ति प्रकट की है --

'है जो हमौस मेरो मुल्क
कसो लाड़िलो मेरो देश ।
चौखो अन्न चोखो पानी,
चोखो हमरो सारो वेश ॥

कसो लाड़िलो मेरो देश'

देश-प्रेम की सहज राहज माटी से प्रेम का नाम नहीं है । उसमें बसे लोगों की मंगल-कामना ही तो देशप्रेम की सबसे बड़ी चाह होती है --

काली वारह गंगा पार, कूर्म कुमाऊं वटि कैलाश ।
सुखी हैरौं नर नार हर दीन, हरवार हर वर्ष ॥

कैलाश की शैली गीतात्मक है साधारण से विलंब को लेकर अनेक श्रुतिमधुर गीतों की रचना । 'किस प्रकार पार जाऊं ? बादल गरज रहे हैं, बिजली चमक रही है, व वायु विपरीत चल रही है, किस प्रकार उस पार जाऊं ? ----

कसिके बूंलो पार ।
बादली की गड़ागड़ी,

बिजुली की फड़फड़
चलि फिरि उल्टी ब्यार ।
कसिके झूंलो पार । ....

चैत्र मास में फूलदेई के दिन बहिनें देहरी में पुष्प डालकर पूजा करती हैं । कार्तिक में भैया दूज के दिन बहिनें भाइयों का सिर पूजती हैं । कवि ने इन्हें भावों में समेट कर लिखा है । ओ बैना (बहिन) देहरी की पूजा कर दो । इसमें फूल बिखरा दो । अक्षत और रोली बढ़ाकर भाई को आशीष दे । मैं तेरे चरणस्पर्श करूंगा तू दुतिया (भैया दूज) की धार लगाना और भाई के दीर्घ जीवन की कामना कर देना --

पुज दिय देळा ओ बैना,
फिजि दिय फूल ओ बैना ।
अक्षयत पिठ्यां में झूंलो,
जी रये जागि रगे भाया ।
दुदिया की दुतिया की धार,
इन दीन दिन वर्ष बार,
जी रये जागि रये भाया,
खुटटा में टोक में झूंलो ।.....

मिलन की घड़ियों को लेकर कवि भाव विभोर हो उठता है और उसका अन्तर्मन अभिव्यक्ति का मार्ग खोज ही लेता है --`ओ सखे तेरा साथ कितना मधुर था । तुम्हारा साथ और तुम्हारी फिड़की दोनों ही कितने मोहक थे --

रिख शिवि शिवि शौबत तेरी दिग दिग दगोड़ो,
तुमरि शौबत भिज्यू तुमोरो झगोड़ो ।

--- ---

जाणि है दिये जनी, र गया अजाण,
मिल्लो भिज्यू दगोड़ो, मिल्ली पक्क्याण ।

केलाश ने सूक्तियों द्वारा भी अपने काव्य को सजाया है --`जो परिश्रम करता है, वही कार्यकुशल है । जिसके पास बल और बुद्धि है, उसी की धन दौलत है --

इलम इ सीप वी थें, काम जो करछ,
जथें छ ताकत बुद्धि, जिमि जागा विकीछ ।`

२.२.७ पूर्णानन्द भट्ट

श्री भट्ट जी ग्राम खिलौली, पिठौरागढ़ के निवासी हैं। आपका जन्म फरवरी सन् १९१३ में उक्त ग्राम में हुआ था। पहाड़ी लोक धुन पर आधारित गीत लिखने का आपको बड़ा चाव है। गीतों के अतिरिक्त आपने जनवाणी में होली गीत भी लिखे हैं जिनमें `सोर घाटी की होली` नाम से होली संग्रह के अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। गीतों के अतिरिक्त आप कहानी भी लिखते हैं जो अभी तक अप्रकाशित रूप में हैं।

भट्ट जी ने चांचड़ी[1], ठुमका[2], झुम्का[3], हतजोड़ा[4], ठूला खेल[5] आदि शैली में गीतों की रचना की है। इनकी कविता का विषय प्राय: पौराणिक, धार्मिक अथवा उपदेशात्मक रहता है। प्रकृति चित्रण के साथ-साथ उत्सव का वर्णन इनकी अपनी ही शैली है। `प्रसिद्ध पहाड़ी फल बेड़ू पक गया है किन्तु मैंने नहीं चखा। अब चैत में काफल पकेगा, होली खेलो --

वेड़ू पाको मिलैनी चाखो,
होरि खेलो आज, काफल पाको चैत।....`

कौरव तथा पाण्डवों के संघर्ष का वर्णन करते हुए लोक कवि ने चांचड़ी शैली में गीत रचना प्रस्तुत की है --

`मइया तैंत पाण्डू चेलो, रासी दम लड़ छ हैं।
कर्मभूमि धर्मभूमि, कुरुक्षेत्र रण में।
महाभारत कुरुक्षेत्र, रण भूमि ठाड़ो तैं। मइया....`

भट्ट जी ने ठुम्का शैली में भी अनेक गीतों की रचना की है -- लंका का राजा रावण, सीता को चुराने के कारण प्रसिद्ध हो गया। वाटिका में सुन्दर मृग आया है, हे स्वामी उसे मार कर ले आइये, उसमें मेरा मन लग गया है --

लंका को रावनु राजा चमक्यो चोर चोरी सीता,
बाग माक मृग पोथो, अंगल्यूनि आरो स्वामी। लंका....`

१- १,२,३,४,५ -- चांचड़ी, ठुमका, झुम्का, हतजोड़ा, ठूला खेल -- ये लोकगीत की शैलियां हैं जिनमें प्राय: गायन के साथ-साथ नृत्य भी होता है।

मृग मारी ल्यै दिय, तेयें मेरो मन स्वामी । लंका...`

जनकपुर में धनुष यज्ञ हो रहा है । विश्वामित्र राम और लक्ष्मण से वहां चलने के लिए कहते हैं । इस प्रसंग का वर्णन कवि ने लम्बी चांचड़ी शैली में किया है--

ह्टि रामचंदर अलाड़ा देखन, सीता को व्याहुंछ जनकपुर में ।

---- ---- ----

उठया रामचन्दर धनुष तोड़न, सीता हालि गैन विजय माला ।

इसी प्रकार सुलोचना का प्रसंग कवि ने झुम्का शैली में लिखा है --

छन छन नारी सुलोचना तू । छ०.... ।

सती मैछ, गैछ पति संग । सती०.... ।

आज मेरो मन अति रंज में । आज... ।

एक अन्य गीत में लोक गायक ने दिखाया है कि प्रत्येक वस्तु अपने अपने संबंध में रत है । नदी सागर में, सागर चंद्रमा में, हरवाहा बैल में, बैल हल खींचने में लीन हैं । .... दुखी बारहों मास दुखी रहते हैं और चोर रात्रि में रमण करते हैं --

छोलि छालि गीतुवा गीनछु धरी कानु में ।

नदी झुरी सागर में, सागर झुरयो चांद में ।

हल्या झुरयो बलद में, बल्द झुरयो बान में ।

--- --- ---

दुखी झुरया बारो मास, चोर झुरया रात में ।

मुर्गा झुरयो रात ब्याना, कुकुर झूरो जात में ।

उक्त गीत की शैली `हतजोड़ा` शैली है ।

भट्ट जी ने स्थानीय बोली में होली गीतों की रचना की है । उनमें से अनेक गीत अत्यन्त लोकप्रिय हैं और होली के अवसर पर बड़े चाव से गाये जाते हैं । सामाजिक जीवन के विविध प्रसंगों को लेकर कवि ने उक्त होली गीत लिखे हैं । एक गीत में रसिक हृदय देवर का वर्णन है --

रस चाखिलो देवर घर आरोछ । रस०.... ।`

एक अन्य गीत में युवावस्था के उत्साह का वर्णन है --

बालि उमरि में शिकारि चमक्या को, बालि०... ।`

गोरि गोलड़ि में शिकारि पलक्या को, बालि० ... ।`

`गांव के पीछे की दिशा में दोखरी है जिसका पानी सुस्वादु एवं शीतल है । ओ

जोगी लौट जा, मेरा सिर न खा --

गौं का पिछाड़ि पौखरि जैको ठंडो पानि
अहो जोगी मुड़िजा मेरी खोरी खाजा न ।

२.२.८ ख्यालीराम शिल्पकार

लोक कवि ख्यालीराम पिठौरागढ़ के निकटस्थ ग्राम जाखनी के निवासी हैं । आपको पहाड़ी भाषा में कविता लिखने की सहज रूचि है । आपके अनेक गीत संग्रह प्रकाशित भी हो चुके हैं । 'ख्याली का खेल', 'ख्याली की खिचड़ी' आदि इनके सुप्रचलित लघु कविता संग्रह हैं । अपनी कविता के लिए ख्याली ने विभिन्न विषयों को चुना है । इनकी कविता स्थानीय बोली में लिखी गयी हैं । शैली बहुत सहज तथा सरल है । एक कविता में कवि ने सेना में गये हुए पुत्र की मां की भावनाओं को चित्रित किया है -- मां कहती हैं 'उदर की आग में कैसे भूलूं' अपना घर छोड़कर मेरा पुत्र सैनिक बन गया है । छह माह मैंने उसका भार वहन किया, उसके बाद दूध की धार पिलाई । अब वह विदेश में है । पुत्र के बिना मुझे उदास लगता है । वह बेहद मेरा लाड़ला न जाने किस प्रकार रहता होगा । तुझे भी मेरी याद आती होगी और इजू (मां) इजू कहता होगा । मेरे बेटे तू रोना मत, मुझे केवल तेरा ही सहारा है[१]।

एक कविता में सैनिक की पत्नी की भावनाओं को वाणी प्रदान की गयी है --

---

१- 'वदर की आग कसी मैं भूलूं कसीक ।
देश डांणा छाड़ी मेरो बैलो बन्यो सैनिक ।।
दश मैना को भार, बलन दश दूध धार की ।
बिन च्येला उदास लागो मैं पागल प्यार की ।
मेरा लाटू ए मेरा छौना कें भांति हुन हुवे ।

--- --- ---

इजू इजू नी रोये मैं लाग बाटूनी ।
आसरो एक तेरो बाज्यू कसिके काटूली ।।.....'

'वह मेरे मन का राजा है और सिर का ताज है। देशरक्षा के लिए उसने सैनिक के वस्त्र धारण किये हैं। हे स्वामी मुझे बड़ी बेचैनी हो रही है जिसे तुम नहीं देख सकते। ओ स्वामी हम खेतों में और जंगलों में घर खुला छोड़कर जाते थे किन्तु तुम्हारे जाने के बाद दरवाजा बन्द रहता है। तुम्हारे साथ मेले और उत्सव रुचिकर प्रतीत होते थे, अब वे सूखी लकड़ी की तरह लगते हैं। हे स्वामी अब तुम शय्या में तो क्या स्वप्न में आते हो और न रोने के लिए कहते हो.... ।[१] एक अन्य गीत में कवि ने पहाड़ों में होने वाले मेलों के बारे में कहा है --' कि पहाड़ों के मेले और उत्सव बहुत अच्छे लगते हैं। 'त्यौहार आ गया है' कहते हुए उन्हें लोग धूमधाम से मनाते हैं। युवावस्था में युवक भ्रमर सब कुछ भूल जाता है।'[२]

ल्याली अपने चारों ओर के पर्वत शिखरों को देखकर भाव विभोर हो उठता है -- 'पर्वतों के शिखर और अन्य भाग क्या ही अच्छे लगते हैं। उनसे निकलने वाला शीत जल क्या ही भला लगता है। पहाड़ों की शोभा ही भिन्न है। उसमें स्थित नदी, नाले, जंगल सब बहुत अनोखापन लिये रहते हैं। जंगलों में बुरुंज के फूल, बम्यर की बहार, कोयल की तान, श्वेत चादर के समान हिमावरण -- ये सब अवर्णनीय सुख प्रदान करते हैं।[३]

१- 'मन को राजा मेरो सिरोको ताज,
सैनिकों को चोला धरयो देशरक्षा काज।
उड़भड़ाट लागो स्वामी यो नि देखि तुमस

---- ----

मेला खेला भला लाग्या यो तुमारा दगाड़ा,
आब ह्वो लागो स्वामी जसा सुखा लकाड़ा।....'

२- 'पहाड़ों का मेला खेला क्या भला लागनी
आयो त्यौहार कई बेर उठी ठाड़ा जागनी .... ।'

३- 'पहाड़ा का डाणा काणा क्या भला लागनी
जस भात है लेक माण स्वाद लागनी......... ।'

प्रेमी अपनी प्रियतमा से बिछुड़ने में परदेश वास को कारण रूप मानता है। और इसीलिए 'पापी परदेश' कहता है। कवि प्रेमी की मन:स्थिति को चित्रित करते हुए कहता है' कि ओ रानी! तू नौला धारा(जल के स्थान) में पनिहारी के वेश में होगी और मैं तेरी याद में पीड़ित पापी परदेश में हूं। श्रावण के महीने में अठ-वाली[1] होगी और गौरा देवी की पूजा भी होगी। भाद्रपद में घोघा[2], ककड़ी आदि तैयार हो जायेंगी और आश्विन में धान की फसल कटेगी। मेले और उत्सव भी होंगे।[3] किन्तु मेरे मन की बात मन में ही रहेगी। मैं दूर से तुझको किस प्रकार बताऊं, तेरे विरह में रात-दिन मेरे प्राण सूने सूने रहते हैं। मेरा ऐसा भाग्य कब होगा कि तेरी गोद में अपना सिर छिपाऊं[4]।' 'बखत की बलिहारी' शीर्षक गीत में स्याली ने समय की प्रबलता की ओर संकेत किया है --' समय की बलिहारी है, कैसा समय आया है। माता पिता के बीच रहते हुए भी भाई- भाई परस्पर के सम्बन्ध को भूल जाते हैं। ऐसा समय आया है कि ईश्वर भी रूठ गया है। कभी जल देता है और कभी गम्भीर सूखा पड़ता है। फैसन इस रूप में बढ़ गया है कि खाना पहनना दूर, केवल शरीर सज्जा की सुधि रह गई है[5]।'

स्याली ने सुधार विषयक कविता भी लिखी हैं। एक कविता में कवि ने अच्छे-अच्छे कार्य करने तथा विद्याध्ययन की ओर ध्यान आकर्षित किया है। बुरे व्यसनों

१- अठवाली - यह वर्षाऋतु में मनाया जाने वाला एक उत्सव है।

२- मक्का।

३- अधिकांश स्थानीय मेले और उत्सव, पिठौरागढ़ के आस पास, वर्षा और शरद ऋतु में होते हैं।

४- ' तैं होली रानी नौला धारा, पनियारी का वेष में।
याद में तेरी सुन ले प्यारी, मैं पापी परदेश में।।
---- ---- ---- ----
मन की बात मन में रैगै, कऊं दूर है कसि कै बात में।

५- बखत की बलिहारी आयो क्या बखत... ।'
खानी पीनी लागो लागो बदन को साज...।'

को छोड़ने और सदाचरण अपनाने का आग्रह किया है । जाति पाँति का बन्धन तोड़ने की प्रेरणा दी है[1] ।

प्रेमी तथा प्रेमिका अनेक प्रसंगों को लेकर ख्याली ने मधुर गीतों का प्रणयन किया है । वस्तुतः ख्याली को पिठौरागढ़ी गीतों का पूरा ध्यान रहा है । स्थानीय गीतों के सभी तत्त्व उनकी कविता में मिलते हैं । उनकी सभी कविताएं गीतात्मक हैं जिन्हें विभिन्न अवसरों पर गाया जाता है ।

एक गीत में कवि ने स्वामी की याद में बैठी प्रेमिका के हृदय का चित्रण इस प्रकार किया है " आग पुरा रही है,[2] स्वामी जी आयेंगे । इसको देख कर खुशी लगी- ए का का करते रे काए तू शुभ समाचार देना । मेरे स्वामी को गये हुए दो वर्ष हो गये हैं । उस माघ में गये थे और इस पूष में आयेंगे । उनके आने की आशा में मन में गुद गुदी हो रही है और चित्त प्रसन्न है । स्वामी जी के आने पर उनसे पूछूंगी कि कैसे उन्होंने दिन बिताये । हमारे लिए चिट्ठी तक न दी ।[3] घूंघट डाल कर मैं कोने में बैठी रहूंगी । वे मिन्नतें करेंगे तो मैं कुछ मान करूंगी... ।"

मकर संक्रान्ति के दिन पर्वतीय भागों में घुघुती का[4] त्योहार मनाया जाता है । ख्याली ने उसे भी वाणी प्रदान करने की चेष्टा की है । कन्यादान जैसे सामाजिक विषय पर लिखे गये गीत में कवि ने कहा है कि " हे भाई बन्धुओं । कान खोल कर सुन लो, कन्यादान एक पवित्र कार्य है । रुपया लेकर लड़की का विवाह करना असामाजिक कार्य

१- " सुन भी जवानो मेरी यो बात । जात पात की तोड़ दे नाता ।..."

२- पर्वतीय भागों में आग पुराने(अर्थात आग जब जलती है तो लकड़ी आदि टूटते समय आवाज होती है)से यह अर्थ लगाया जाता है कि कोई प्रिय जन याद करता है ।

३- " आगो पुरायो स्वामी ज्यू आला ।
देखो खुश मन हुली पाला ।।
का का करन्यां सुन रे काग ।
भलो खबर दियै तैं मेरा भाग ।... ।"

४- उत्तरी पुस्कुड़ी मैन देखी आयी घुघुतिया त्यार ।
जो भागी धरिया तोड़ा, देख भायी घुघुतिया बगार ।।...

३

लोक गाथा

लोक - गाथा

३. ०. पिठौरागढ़ संभाग में गाथाओं के अनेक प्रकार प्रचलित हैं। इनमें से परम्परागत, धार्मिक, पौराणिक, और वीर गाथाएं प्रमुख हैं। 'मालूशाही' और 'रमौल' जैसी लोक गाथाएं परम्परागत प्रकार की हैं। धार्मिक गाथाओं का आधार- धार्मिक अनुष्ठान अथवा लोक विश्वास है और ये तंत्र मंत्र, पूजा तथा देवता नचाने की क्रिया से सम्बन्धित हैं। इनमें 'जागर', 'स्याला', आदि प्रमुख हैं। 'जागर' वर्ग गाथाओं की पृष्ठभूमि में के रूप में आख्यानिक गाथात्मक अंश हैं और ये पौराणिक कोटि के हैं। पौराणिक गाथाएं हिन्दू धर्म गाथाओं से सम्बन्धित हैं। स्थानीय वीरों की युद्ध सम्बन्धी तथा व्यक्तिगत शौर्य सम्बन्धी गाथाएं वीरगाथाओं के अन्तर्गत आती हैं जिनके लिए यहाँ 'भड़ौ' शब्द का प्रयोग होता है।

३. १. परम्परागत लोक गाथाएं

परम्परागत लोक गाथाओं 'मालूशाही' तथा 'रमौल' प्रमुख हैं।

३.१.१. 'मालूशाही' अत्यन्त प्रचलित लोक गाथा है। इसके कलेवर में समय-समय में वृद्धि होती रही है। तथा इसमें परवर्ती घटनाओं का समावेश होता रहा है। यह गाथा पिठौरागढ़ संभाग की नहीं सम्पूर्ण कुमाऊं प्रखण्ड में प्रचलित है। इसमें 'मालूशाही' और 'राजुली' नामक प्रेमी प्रेमिकाओं की परस्पर प्राप्ति चेष्टाओं का विवरण है। गाथा निम्नलिखित प्रकार है।

३.१.१.१. मोटक देश का सुनपत शौका नामक व्यापारी और उसकी अनुपम सुन्दरी पत्नी गांगुली हरिद्वार स्नान करने जाते हैं। गांगुली को जो भी देखता, देखता ही रह जाता था[१]। उन्हीं दिनों गेवाड़ में कत्यूरी राजा, सिलौरा में शाही

१- गांगुली सिंगार देखी, चिक चलूंछा,
आंखी लै नजर लागी, देखिया रे आंख।

राजा थे । सातो की पुत्री का नाम कमा देवी था जिसका विवाह धर्मदेव से हुआ । तब नरमाली कोट में चन्द्रा राजा रहते थे । दोनों राजा हरिद्वार स्नान के लिए गए । मार्ग में दोनों की भेंट हो गयी । वहां सुनपत शौका[1] और उसकी गांडली भी थे । गांडली को देखकर दोनों राजा सुध बुध भूल गए । वे सोचते हैं इसकी कोई कन्या हो तो उसकी मंगनी करके इनसे मित्रता की जाय । वे दोनों[2] सुनपत के पास गये और उससे नाम परिचय आदि पूछा तथा अपना परिचय दिया । उन दोनों ने बताया कि वे औलाद की कामना से आए हैं और उन्होंने यह निश्चय कर लिया है कि किसी प्रकार आपसे मित्रता हो जाय। सुनपत शौका स्वयं निःसन्तान होने के कारणकोई रिश्ता करने में उस समय अपने को असमर्थ पाता है परन्तु यदि ईश्वर[3] की कृपा से ऐसी कोई स्थिति उत्पन्न हो गयी तो मित्रता का वचन देता है । तब सुनपत भोट

१- "गांडली थै लागी गैल्हा, दिनों की नखरा,
किलझी मैं हौंस लगा, है गोल्हा चक्कर ।
धरा देरा भवा लगा, धनैया है बानी,
लिया कारण आफवा मैं, ऐसी बात करनी ।
पागल है गोंथ लगा, देखी हनी गाता,
धर्मदेव सिरिया हलों, क्या लगो बाता ।

२- "लिया कारण यदि गयो, सुनपतैं पाछा,
मित्रामो कूल कवै, करो रैसा आशा ।...."
सुनपत शौक हणि, ऐसी कनी बाता,
क्या तुमर नाम भैया, क्या तुमरी बाता ।
सुनपत शौक कहि सुण मेरि बात, भोटक मुलुक म्यर शौक मेरि जात ।
गांडली शौक्याणी मेरी, सुनपत नामा, भोटान्तका देश भवा, व्यापार कामा ।
औलाद का कारण आयूं नाणा हरिद्वारा, हरा कणी लगर छ भारी कुर-बार ।..

३- "ऐसा उन गीता लगा, आधि नाना सीना,
कुमानसा करी लूंठा, ज्यों छक पछिना ।....."

के लिए वापस लौट गया । सोचते - सोचते उसे बागनाथ देव का स्मरण हो आया । बागनाथ से सुनपत ने पुत्र उत्पन्न होने के लिए प्रार्थना की किन्तु बैराठ के धर्मात्मा राजा के घर पुत्र उत्पन्न हुआ जो मालूशाही या मालशाही नाम से प्रसिद्ध हुआ और गांडली से रजुली या राजुला नामक लड़की उत्पन्न हुई । सुनपत को बहुत खेद हुआ और उसकी लड़की के विवाह की चिन्ता हुई[1] ।

३.१.१.२. सुनपत के घर में 'राजुला' की चिन्ता हो रही थी । सुनपत शौका चिन्ता से भरा हुआ जहां तहां राजुला की चर्चा करने लगा[2] । उसका विवाह समीप ही करना था ताकि माता-पिता भी कभी-कभी देख-रेख करते रहें । सुनपत वर की खोज में निकला किन्तु पर्याप्त भटकने के उपरान्त भी उसे कोई वर न मिला । जहां भी चर्चा करता , सभी कहते कि लड़के वाला लड़की की खोज में जाता है, लड़की वाला जाने का तात्पर्य तो यह है कि लड़की में कोई खोट होगी । अन्त में रुपवा हुणिया[3]

१- दिन आई गया क्वा, क्वीं मनका लागी ।
बागनाथ बैराठ में पैदा भ्यछ सैनी ।।
बाद भया गांगुली की, हई गैछा चेली ।
जनमन सुनपत,अबा माँहा चेली ।।
जनक का कली चेली,खुशी प्यारा धरा ।
मौसा जनमी ज्वा, नि रती फिकरा ।।

२- सुनपत शौक कणी, हई गै फिकरा ।
ज्यां ज्यां कणा लाग, रजुला विचारा ।।
जरांका की चेली छैंगे, अबू है बिवाहणी ।
जहां कवै करी कुछ मागणी जांचणी ।
मिलि जाछ प्यार कान, मिल की फिकरा ।

३- हुणियां, हूणा जाति के लोग ।

के पास पहुंचा । कुरूप, मैला, बेडौल,दुर्गन्धयुक्त रुदुवा का शरीर था । रुदुवा राजुला को देखने के लिए आया और राजुला के सौन्दर्य को देखते ही बेसुध हो गया[1] । होश आने पर परम प्रसन्नता से अपने लड़के का राजुला के साथ रिश्ता करने को तत्पर हो गया । राजुला तब छोटी थी, अत: बात पक्की करके रुदुवा लौट गया । घर आकर उसने अपने लड़के से बहू[2] के अनुपम सौन्दर्य की चर्चा की । दोनों ने इसी प्रसन्नता में वर्षों व्यतीत कर दिये । उधर बैराठ में मालूशाही जवान हो गया । राजुला भी विवाह योग्य हो गई । एक दिन राजुला को स्वप्न में मालूशाही के साथ भेंट हो गई । उसी समय बैराठ में मालूशाही को भी स्वप्न में राजुला दिखाई दी । स्वप्न में ही मालूशाही ने राजुला से कहा कि तेरे मेरे पिता ने हरिद्वार में परस्पर मित्रता और सन्तान होने पर सम्बन्ध करने का प्रण किया था । उन्हीं के प्रसाद से तेरी और मेरी जोड़ी हुई है । तू जैसे[3] कहेगी वैसे वचन निभाना । तू यदि खानदान की लड़की होगी तो वचन निभायेगी । जागने पर दोनों ने विचार किया और अपने-अपने माता-पिता से

१- राजुला पै लागी मैला, हुणीये नजरा ।
देखिबे हुणिये काणि आई गो चक्कर ।।

२- ब्या बतानू च्यारा च्येला, सुण बब हाल ।
सुन्या राजिका बौ, सब भरी बाला ।।
च्येला बाप सुणी है रै मन मन भला ।
बहू बाला बीत गइ, बात बात भ्या ।।

३- बैराठा मैं स्वीण हैगो, मालूशाई कणी ।
आपसा मैं बात है रै, द्विया ज्वौं कणी ।।
त्यरा बज्यू म्यरा बज्यू, हरिद्वारा गया ।
मितरागी गुड़ भेलि, कौला करी आया ।।
त्यर म्यर ब्याहु हाय, बोलिक परचाया ।
खान दान की तू छली, सुकत चेली ।
वसा तक देली चाली, वचन निभाली ।।

पूछा कि उन्होंने हरिद्वार जाकर क्या कहा था । बागनाथ की कृपा से स्वप्न में मालूशाही ने घुघुत और राजुला ने घुघुती पक्षी का रूप धारण किया और दोनों उड़कर बैराठ के महलों के पास पहुँचे । मालूशाही ने उड़ते-उड़ते ही अपने महल तथा बैराठ का हाल कहा । दोनों ने बागेश्वर के मेले में पुन: मिलने का निश्चय किया और राजुला अपने पिता के घर भोट को लौट गई । जाते समय मालूशाही ने आने की युक्ति बताई और अवश्य आने को कहा[१] ।

३.१.१.३. दोनों नींद से जागते हैं और बागेश्वर के मेले के बारे में अपनी माताओं से पूछते हैं कि वह मेला कब होता है । मालूशाही स्पष्ट कहता है कि राजुला को बैराठ में लाऊँगा। माँ उसे समझाती है और जब वह नहीं मानता है तो क्रोधित होकर उसे सात दीवारों के अन्दर वाले कमरे में बन्द करा देती है । मालूशाही रोते-रोते सो जाता है । इधर राजुला अपने स्वप्न की चर्चा अपने पिता से करती है कि हरिद्वार जाकर उन्होंने क्या प्रण किया था । पिता सच्ची बात नहीं बताते और पालोपछांह देश की बुराई करते हैं । वह पूछती है कि बागनाथ का मेला कब होता है क्योंकि स्वप्न में बागनाथ ने पिता के उस प्रण को पूरा करने के लिए कहा है कि सन्तान होने पर पूजा दूँगा । वह पेट में दर्द का बहाना बनाती है । सभी उपाय करने पर भी जब दर्द ठीक नहीं होता है तो वह पिता से कहती है कि मेरे कान में आवाज आई है कि तेरे पिता ने पूजा देने का वचन दिया था , वह नहीं दी है[२] । इसलिए मैं सता रहा हूँ , अब भी पूजा दे दो और साथ में किसी को न लाना । अन्त में सुनपत और

१- अब जा तू रुणो, रह्यै भलिका ।
जरूरै तू आये सुवा, बागनाथ कौतिका ।।

२- फिरो मैंका पोटुलीड़, क्या धरो बानूँ ।
एक छै आवाज आछूं, आई म्यार कानूँ ।।
यो बागनाथा म्यर, क्यो कानों धारा ।
मैंला लानी खू कैनी, राजुला तिमारा ।।
त्यारता आज्यूछ एक, कै रैछि झुकाना ।
पूजा बुला बागनाथ, दै बाली सन्तान ।।
भुलि गया मैं के तुम, तब यस कर ।
पूज दिण यस बाड, बी फाड ब सैर ।।

गांउली राजुला को बागनाथ के मैले में जाने की अनुमति दे देते हैं और तैयार होकर पूजा की सामग्री के साथ राजुला विदा होती है। उस समय उसका सौन्दर्य पूनिम की चांदनी जैसा खिल रहा था[1]। किन्तु बलि के लिए बकरी का बच्चा साथ में लेना भूल गयी थी जिससे बागनाथ अप्रसन्न हो गये और बैराठ में मालुशाही सोया ही रह गया।

३.१.१.४. राजुला बागनाथ का रास्ता भूल जाती है। भटकते हुए ममेरी बहिन के यहां पहुंचती है और उनके आग्रह पर नृत्य[2] दिखाती है। उस समय का उसका रूप इन्द्र की परी के समान चित्रित किया गया है। वहां से राजुला रमोली कोट जाती है जहां सदुवा रमोल उसे देखते ही छेड़-छाड़ शुरू कर देता है। सदुवा उसे मनाता है और किसी प्रकार न मानने पर उसके पैर जादू से स्थिर कर देता है। राजुला विष की फूंक लगाती है। जादू का प्रभाव दूर होते ही राजुला आगे बढ़ती है और घने जंगलों को पार करते हुए बागनाथ पहुंचती है। मैले में मालुशाही को न पाकर वह निराश होती है। राजुला बागनाथ के मन्दिर में जाकर पूजा और विनय करती है। वह एक आंख फोड़ देती है। इससे बागनाथ रुष्ट होकर फटकारते हैं कि मालुशाही से तुम्हारी भेंट नहीं होगी और आंख फिर जायेगी। यह सुन कर राजुला मालुशाही से मिलने के विचार से बैराठ देश को रवाना होती है। बैरेड़ कोट में कठुवा बैरेड़ मिलता है। उसके ही पुत्र

१- सब मांगी हाली तब है मैं मन जाली।
 राजुला देखिण लागै, पून्यौ जून जसी।।
 चान्दीक छुपिण लिया, चान्दीक पतरा,
 पूजक सामाना लिवै, बट्टा लागी गैछा।।

२- राजुला मनक चेली सेवी नाच करी।
 क्योंकी चमकारी हो, जैसी करी ठनी।।
 पहाड़ी मी राजुला है, क्या लिया बैणी।।

— — — — — —

 राजुला नाचण लागी, उनू है वे दूर।
 इन्द्र जैसी परी है हैं, राजुला मशूर।।

—— शेष पृष्ठ आगे पर

वो नो नाती थे । लड़के, नाती, और पत्नी से छिप कर वह राजुला को विन्दिया देश में ले जाता है वो राजुला को एक गुफा में ले जाकर बन्द कर देता है । राजुला अपने सतीत्व की रक्षा के लिए चिन्तित होती है । उसके हृदय में मालशाई का ध्यान रहता है । कलुवा के लड़के और नातियों को जब राजुला के बारे में पता चलता है तो वे उक्त गुफा पर पहुंचते हैं । कलुवा अपने लड़कों से कहता है" मोसी को प्रणाम करो" और नातियों से कहता है"दादी को प्रणाम करो" । किन्तु उसके पुत्र और नाती प्रणाम न करने को कहकर स्वयं उससे विवाह करने की बात कलुवा से कहते हैं । वे अपने पिता और दादा कलुवा से कहते हैं कि दो सौ बाईस वर्ष की उम्र में तुम क्या विवाह करोगे ? तुम गुफा से बाहर आओ । बुड्ढे पर पुत्र और नातियों की मार पड़ती है और वह उनकी मार से प्राण छोड़ देता है । तब लड़कों और नातियों में राजुला को ग्रहण करने की बात को लेकर झगड़ा होता है । वे परस्पर सलाह करके बुड्ढे को दफनाने जाते हैं और कहते हैं कि जो पहले लौटेगा, राजुला उसी को मिलेगी । बुड्ढे को दफनाकर लौटते हैं तो उन्हें राजुला

पिछले पृष्ठ का शेष--

३- देस देखा लगि गों कौतोका ले येदो ।
   हे ईश्वरा भगवाना, मालशाई कसो ।।

   ---- ---- ---- ----

   नी मिल मादशाई अवा हैं गैछा निराशा ।

   जस लु देखो आल, गिवाड़ा में बानू ।
   आपणा मालशाई कणी, कसै मिलनू ।।
   हला म्यर इष्टा देवा, बोति पूजै दिया ।
   मेरी पती कणी तुमा, आब भरी दिया ।।

१- बुडे कुवा कैदे व्यला, कै जाठे पैला का ।
   एक बारा कैदे नाती, अम्मा ले पैलाका ।।
   नाती क्यला कनी तबा, पैलाका नि कूनू ।
   य तिरिया कणी अवा, मन लक लिनू ।।

नहीं मिलती है[1]। क्योंकि उनके जाते ही वह अवसर पाकर वहां से चल देती है और किसी प्रकार भटकते-भटकते द्वाराहाट पहुंच जाती है।

३.१.१.५. द्वाराहाट में पदुवा दैराल राजुला को देखकर बेहोश हो जाता है। और उसे बाबुली बाग ले जाता है[2]। राजुला अपने इष्ट देव और माल्शाई का ध्यान करके पदुवा से पानी लाने को कहती है। अवसर पाकर वहां से भी प्रस्थान कर जाती है। मल्लकोट पहुंचने पर उस पर सात भाइयों का नजर पड़ती है। वे राजुला को घोड़े पर बिठाकर घर ले जाते हैं और ब्राह्मण को बुलाकर आंचल लाने को तैयारी करते हैं। राजुला अपनी अंगुली की मुद्रिका को ब्राह्मण को देकर उससे लाज बचाने को कहती है। ब्राह्मण सात भाइयों से कहता है कि यह कुलनाशिनी स्त्री है, इसके साथ विवाह करना नाश का कारण है[3]। इस प्रकार ब्राह्मण के द्वारा राजुला की

१- गुस्सा बामो कहवे कै, बाई गोड़ प्यारा।
जुई राजा पड़ो गोड़ा, व्याला नातो मारा ।।
व्यलू का तरफ जांछा, नाती पीनी मारी।
नातो का तरफ बांछा, व्यल लीनी धुरी ।।
व्याला और नातीयू को थैली हैरै बाता।

वोकी यो तिरिया ल्यो, औ पैठी आ जाउ।
राजुला ले देखी जाथ, ले गयो निराशा ।।

२- द्वाराहाट में ह्य नाई, पदुवा दैरावा।
तोन पठो भवा हैरै, वोकी कड़ो गावा ।।
राजुला पै लागी जवा, पदुवै नजरा।
हरिला किमड़ो गैरा, आ गाये चक्करा ।।

लि गायें राजुला कणी, बाबुई बाना।
३- कुलनाणी देणी छा य, व्याना अँ धरणा।
यैती कणी आई वैरा, योई भरो बाणा ।।

रक्षा होती है और वह अनेक कष्ट सहती हुई बैराठ देश में पहुंचती है । खोजते-खोजते मालूशाही के महल के निकट आती है । द्वार पर कुत्ता भौंकने लगता है । राजुला विष की डिबिया खोल कर महल के आस पास के सभी रक्षकों पर विष का प्रभाव छोड़ती है । मालूशाही के पास जाकर उसे जगाती है किन्तु बागनाथ के शाप के कारण किसी भी युक्ति से मालूशाही नहीं जागता है । वह निराश होती है , रोती है, कलपती है, तब भी मालूशाही की नींद नहीं खुलती है[1] । वह भोट देश से अनेकों महान बाधाओं और कष्टों को पार करके आई है किन्तु मालूशाही के साथ भेंट नहीं हो पाई । वह निराश होकर लौट जाती है[2] । लौटते समय पत्र लिख कर उसके तकिये के नीचे रख जाती है कि यदि जीवित माँ के बेटे होवोगे तो भोट देश आकर मुझे लावोगे । नौ लाख कत्यूर वाशो यदि सच्चे पूत होंगे तो मेरे लिये भोट देश आयेंगे । मैं तो यहां आकर अपना वचन निभा गयी हूं[3] । भोट देश किस युक्ति से आना होगा, यह सब राजुली

१- बैराठा मैं आई मैंहा, ज्वा ता राजुला ।
   सोविण त लागी रैछा, स्वामीक मल्ला ।।

— — —

ज्वका अवैत ह भी, पड़ी भेड़ लाशा ।
राजुला पहुंची मैंहा, मालुशाई पाशा ।।

२- मालुशाई सेई रौछा, नीन पड़ी रैछा ।
उठौ उठौ स्वामी प्यारा, राजुला औंछा ।।
तुमरा कारण स्वामी कस कष्ट चल ।
किसे पउट छा स्वामी, ज्वा तुम मुख ।।
कबून कारण आयू, मैं तुमर पाशा ।
है गयू निराश वापशा ज्वा, है बेरा निराशा ।।

३- ज्यौन मां का च्यला हला, भोट है आदला ।
मरी मां का च्यला हला, बैराठा रहला ।
नौ लाख कत्यूर हला, तुम ज्वा च्यला ।
अपण परण पारी, भोट मैं आदला ।
मैं त यसी आई मैर, निभैगू परण ।। .

पत्र में लिख गयी । राजुला हृदय की आग को नहीं बुझा सकी और मालुशाही के चरणों में शीश नवाकर लौट गयी । वह सोचती है कि वैराठ कितना सुन्दर स्थान है किन्तु उसके लिए सभी देवता रुष्ट हो गये हैं क्योंकि उसका मिला हुआ सुहाग छूट गया[1] । वैराठ से चल कर राजुला घर लौट आई । उसके माता पिता की खुशी का पार न रहा[2] ।

३.१.१.६. इधर मालुशाही की नींद खुलती है और राजुला का स्मरण होते ही वह बेचैन हो उठता है । पत्र पढ़ते ही वह पागल सा हो जाता है । वह अपनी मां से राजुला के आने की चर्चा करता है और भोट जाने की बात कहता है । मां भोट देश की कठिनाइयों का वर्णन करके कहती है कि वहां जाकर कोई जीवित नहीं लौटता है । भोट के रहने वाले जादू जानते हैं और वहीं मार देते हैं । उसके सामने किसी की नहीं चलती है । राजुला से भी अच्छी रूपवती तेरे लिए खोज देंगे, तू उसका नाम राजुला रख लेना । अनेक प्रकार से समझाने पर भी मालुशाही अपना हठ नहीं छोड़ता है । वह राजुला के लिए सब कुछ मांगने को तैयार होता है[3] । मां पुनः हठ और अभिमान के विरुद्ध मालुशाही को सावधान करती है । रावण, कीचक, आदि का उदाहरण देकर स्त्री कारण किये गये हठ का परिणाम दिखाती है । मालुशाही तब भी नहीं मानता और सब ईश्वर पर छोड़कर जाने का निश्चय दोहराता है[4] ।

१- माळुशाऊ छुटू मजा, सीस लैं नवाइ ।
हाथा जोड़ो बेर तबा, बटा लागो गेइ ।
कसु छिय यो मुलुक प्यार निरभागा ।
आजा छुटि गोय रामा, मिलिया सुहाका ।।

२- राजुला पहुंचा गैछा अपण लै घरा ।
राजुला की मामू कणी, खुशी है अपारा ।।

३- मैता नि मानूनं ज्वा तैरी एका बाता ।
अब हठ भुलुला, राजुला परवाब ।।

४- नि मानून माळुशाई, मां की एक बात ।
सबका करणी क्यो , ईश्वर का हाता ।।

वह गुरु के घर जाता है और नौ लाख कत्यूर वासी क्षत्रियों को योगी के वेश में साथ लेकर भोट को प्रस्थान करता है। चाहे भोट देश में[1] उसके प्राण निकल जांय किन्तु अपना प्रण न छोड़ने के लिए मालशाई निश्चयबद्ध है।
गुरु सहित जोगी के वेश में नौ लाख कत्यूरों के साथ मालशाई मार्ग में "मरुकोट" के चोरों को हराते हुए भोट देश में प्रविष्ट होता है। दोनों दलों में युद्ध छिड़ जाता है। दोनों ओर से जादू मंत्र के सहारे शक्ति परीक्षा होती है। मालशाई "घुघुत" के रूप में राजुला के पास पहुंचता है। राजुला "घुघुत" के लिए पिंजड़ा लेने जाती है और इधर "विरखा" घुघुत को मार कर उसका शिकार बनाती है। राजुला उसे छुड़ा कर सोने के पिंजड़े में रखती है[1,2]। स्वप्न में गुरु को इस घटना की सूचना मिलती है और जागने पर वे एक चोर को बाघ बनाकर पिंजड़ा उठा लाने को कहते हैं। पिंजड़े में मृत घुघुत को गुरुजी मंत्र द्वारा जीवित कर देते हैं। तब मालशाई फकीर बन कर राजुला के द्वार पर अलख जगाता है और राजुला उसे पहचान लेती है[3]। दोनों साथ ही भोजन करते हैं और दोनों महल से निकल कर खेत में आते हैं। महल में शोर हो जाता है कि राजुला हर ली गयी है। दोनों दलों में विविध प्रकार से

१- बैरी बाठ बस, छ राजुला कारण ।
चाहे भोट मरी जुला, नि छोडू परण ।।

२- मैलुका जोगना तबा, माळशाई बाबा ।
<u>घुघुत</u> बनाई भेष, <u>राजुल</u> का <u>पाखा</u> ।।
राजुला भितेरा गैई, विरखा की प्यारा ।
<u>घुघुत</u> पकड़ो <u>चोंचै</u>, बनाय <u>शिकारा</u> ।
मरीया घुघुत कणी, पिंजर धरीछा ।।

३- फिरा माळशाई कणी, बनाय फकीरा ।
भोट छणी न सो गैछा, छत्रो वंशी वीरा ।।
<u>राजुला</u> का <u>द्वारा</u> परा, <u>अलख</u> <u>जगाई</u> ।

पछ्याणी गी दिया फकण, खुसी हुई गई ।
खुसी खुसी राजुला लै। दिया छुटा ध्वयो ।।

युद्ध होता है और युद्ध में भौटियों की हार[1] होती है। भौटियों ने विधि विधान से विवाह करके राजुला को ले जाने को कहा। कत्यूरों को एक दिन रात्रि कर भोजन करने को तैयार किया और भोजन में विष मिला दिया। राजुला और मालशाही सहित सभी कत्यूरों ने विष[2] मिला भोजन किया। राजुला के कारण नौ लाख कत्यूर काल कवलित हुए। इस प्रकार भौटियों की चाल सफल हुई।

२.१.१.७. 'मालशाही' गाथा के अनेक रूप में मिलते हैं। उनमें से जो ऊपर एक उल्लिखित है। रूपान्तरों में कुछ न कुछ अन्तर मिलता है। ये रूपान्तर स्थान भेद से हैं। मूल कथा की रूपरेखा समान है। पात्रों के नाम और प्रमुख घटनाएं समान हैं :--

मालूशाही का नाम समान है। रजुली का नाम रंजु, रंजुला या राजुला मिलता है। यह दोनों की प्रेम कथा है। हूण देश के शासक का उल्लेख सभी रूपों में है। 'रंद विखपाल', उदैपाल, रुदपाल, नाम भेद हैं। उनकी भयंकर आकृति और वेश-भूषा समान हैं। देवी प्रसाद से सन्तान होने की बात समान है। राजुला का भोट देश से चल कर बैराठ तक पहुंचने का वृत्तान्त और स्थानों के नाम समान हैं। मालूशाही के सिरहाने पत्र रखने, मातृ दूध की शपथ दिलाने और उसके ब्रीते रखने की चर्चा सब में है। मालूशाही द्वारा राजपाट छोड़कर भोट देश में राजुला से भेंट करने का वर्णन सब में एकसा है। मंत्र-तंत्र, युद्ध वर्णन, पूर्वानुराग, सौन्दर्य की चर्चा तथा सुनपत की समृद्धि का वर्णन समान रूप से मिलता है।

१- कत्यूरा दघड़ा है मै, भौटियू को हारा ।।

विधि विधान लै क्या ब्याहा करो बूला ।।

२- गौडाळी छगड़ा ल्यया, बाबू का विषका ।
कत्यूर दगड़ा माई, यस करो च्वका ।।

नौ लाख कत्यूरा कणी, विष लागी गौडा ।

भोट रई गया आया, राजुला कारण ।

३.१.१.८.   अन्तर की दृष्टि से सब से बड़ा अन्तर वृत्तान्त का सुखान्त और दु:खान्त होना है। भोटियों के साथ घमासान युद्ध होने पर मालूशाही की विजय जो क० समान है किन्तु कुछ रूपान्तरों में जिनमें उपर्लिखित एक है, जाते समय भोजन में विष देकर राजुला और मालूशाही सहित नौ लाख कत्यूरों को मार डालने का वर्णन है और कुछ में युद्ध में विजयी होकर मालूशाई द्वारा राजुला को अपने साथ बैराठ ले जाने और अनेक वर्षों तक सुखपूर्वक राज्य करने का वर्णन है। राजुला का स्वयं मंत्र-तंत्र की शक्तियों में निपुण होना सभी रूपान्तरों में वर्णित नहीं है। वह अपने मंत्र बल से मालूशाही को जीवित करती है किन्तु अन्य रूपों में यह श्रेय गुरु को दिया गया है।

३.१.१.६.   मालूशाही के उक्त विभिन्न रूपों में कौन मूल रूप है, यह कहना तब तक संभव नहीं है जब तक पाठों का स्वतंत्र रूप से गहन एवं तुलनात्मक अनुशीलन न किया जाय और यह कार्य इतना विस्तृत है कि एक स्वतंत्र अध्ययन का विषय है। इसकी प्राचीनता असंदिग्ध है। मूल कथा भूत ऐतिहासिक है जिसका समय निर्धारण तो संभव नहीं है किन्तु उल्लेखों के आधार पर उसका कुछ अनुमान किया जा सकता है। प्रमुख घटनाएं और स्थानों के नाम अभी तक किसी न किसी रूप में प्रसिद्ध हैं।

३.१.१.१०.   बैराठ मालूशाही या मालूशाई की राजधानी कही गई है जो इस समय द्वाराहाट से पिथौरागढ़ जाने वाले मार्ग में चौखुटिया से लगभग दो मील की दूरी पर है। वहाँ अनेक प्राचीन भवनों के खंडहर अभी तक विद्यमान हैं। किला एक ऊंची पहाड़ी पर था जहाँ स्थानीय किंवदन्तियाँ राजुला के स्नान करने एवं एक पनचक्की का उल्लेख करती हैं। रंगीली बैराठ का नाम लोगों को अभी स्मरण है। बागनाथ बागेश्वर के प्रसिद्ध देवता हैं जिनका मन्दिर अल्मोड़ा से पैदल मार्ग पर सत्ताइस मील दूर है। यह प्राचीनकाल से ही एक धार्मिक केन्द्र रहा है। अन्य स्थानों में भोट, सोमेश्वर, द्वाराहाट आदि अब भी इन्हीं नामों से विद्यमान हैं। पटकोट के गावा, जालों के केले, कोस्यां के चावल आदि अब भी उतने ही प्रसिद्ध हैं जिस रूप में उनका उल्लेख हुआ है। जोहार से चलकर रखुली द्वारा बैराठ तक पहुंचने का यात्रा मार्ग सही है। वृत्तान्त में उल्लिखित कुमाऊँ जातियाँ ऐतिहासिक हैं। 'शौक' या 'शौका' जोहार, दारमा क्षेत्रों में ऊन का व्यापार करने वाले लोग हैं। सुनपत इन्हीं का कोई पूर्वज था। कैड़ारो में कलेड़ो जाति रहती थी। इस जाति के काटू कलेड़ो ने राजुला का मार्ग रोका था।

३.१.१.११.   मालूशाही कत्यूरी वंश का शासक था । स्थानीय इतिहास कत्यूरी राज्य का संकेत करता है जो चंद वंश की स्थापना के पूर्व विस्तृत था । गाथा में धामदेव, ब्रह्मदेव का नाम आया है । ब्रह्मदेव का उल्लेख अन्य गाथाओं में भी है । कत्यूरवंश की अस्कोट वाली वंशावली में अन्तिम पांच नामों में धामदेव और ब्रह्मदेव का भी उल्लेख आता है । अन्तिम नाम अभयपाल का है जो सन् १२७९ ई० में कत्यूर से अस्कोट गया था । उस समय की राजनैतिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए धामदेव,ब्रह्मदेव का समय तेरहवीं शताब्दी का मध्य ठहरता है । अभयपाल ने अपनी पदवी 'देव' से 'पाल' की थी क्योंकि देव छत्रधारी कत्यूर वंश का प्रतीक था । यदि उसका समय कत्यूरी वंश की सार्वभौम सत्ता की समाप्ति का समय माना जाय तो धामदेव, ब्रह्मदेव से इस प्रतापी वंश का अवसान माना जा सकता है । जन श्रुतियों से भी यह प्रमाणित है कि वे बहुत अत्याचार करने लगे थे । मालूशाही को धामदेव, ब्रह्मदेव का समकालीन मानने पर उसका समय तेरहवीं शताब्दी के आस-पास ठहरता है । मालूशाही की स्थिति कत्यूर वंश के अन्तिम समय की है । गाथा के कतिपय रूपान्तरों से भी यह बात प्रकट होती है क्योंकि भोटियों के विष से मालूशाही सहित सभी कत्यूरों का नाश हो गया था[1] । राजुली का प्रसंग मात्र कल्पनाप्रसूत नहीं जान पड़ता । उसकी माता गांगुली बड़ी दानी थीं । अल्मोड़ा से लेकर मिलम तक प्रत्येक पड़ाव में उसके नाम से धर्मशालाएं बनी हुई हैं । दानपुर में ग्रामदेवताओं के मन्दिरों में आमरण करते समय राजुला का नाम आता है । गीतों से ज्ञात होता है कि राजुला अवश्य जोहार की रहने वाली थीं[2] । 'सुनपत शौक' को भी ऐतिहासिक व्यक्ति माना गया है । उसने मंदाकिनी का निकटवर्ती प्रान्त बसाया और व्यापारिक मार्ग खुलवाये[3] ।

१- राजुला समेत बैठो, करनो भोजना ।
   कसो माया रची रैछ, ईश्वरा भगवाना ।।
   नौलाखा कत्यूरा कणी, विष लागो गोढा ।
   सब डको गोढा रामा, नाश पड़ी रैछा ।।

२- 'शक्ति' — साप्ताहिक - ६ अप्रैल १६५५(कुमांचल के प्राचीन ग्राम्यगीत) ।

३- कुमाऊं का इतिहास — बद्रीदत्त पाण्डे, पृ० ७९ ।

३.१.१.१२. मालूशाही मूलत: ऐतिहासिक प्रेम काव्य है । यह लोक गायकों की कण्ठस्थ स्थिति में निरन्तर विकसित होता रहा है और अनेक आश्चर्य-पूर्ण घटनाओं से युक्त होता गया है । अलिखित होने के कारण इसका आकार निश्चित नहीं है। कोई लोक गायक सात सात दिन तक निरन्तर इसे सुना सकता है । यह एक प्रकार से विकासशील महाकाव्य है । राजनैतिक तथा सामाजिक दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण गाथा है जिसमें तत्कालीन सामन्ती शासन और सामाजिक व्यवस्था पर प्रकाश पड़ता है । बहुपत्नीत्व और इच्छा के अनुकूल विवाह की ओर संकेत मिलता है । जाति व्यवस्था का विरोध झलकता है ।

३.१.२. रमौल

३.१.२.१. `रमौल` अनेक गाथाओं का एक सामूहिक नाम है जो एक वंश के वीर व्यक्तियों के सूत्र में गुंथी हुई हैं । लोक गायकों से लगभग सत्रह व्यक्तियों का उल्लेख मिलता है । उदाहरणार्थ — जैसू रमौल, बिसू रमौल, सकू रमौल, रैला-रमौल, मैला रमौल, बौणा रमौल, पौणा रमौल, गंगू रमौल, सिदुवा रमौल आदि । रमौल एक विशिष्ट गायन शैली है । इसके अनुसार कंस के जो सात पुत्र मार डाले गये थे उन्हीं में एक बरमी कंवल(कृष्ण कंवल) माने जाते हैं और सिदुवा-बिदुवा रमौलों को उनका मामा कहा गया है । कृष्ण कुंवर की गाथा में कृष्ण अपना शरीर रगड़ कर भ्रमरों को उत्पन्न करते हैं और उनके द्वारा अपने भाई कृष्ण कुंवर के पास यह संदेश भेजते हैं कि तिब्बत के जुला ताल में जाकर तुम मोतीमाला से विवाह ले आओ । कृष्ण-कुमकोट में रहते थे । `सुजकुंवर की गाथा में भी कृष्ण ने अपने भाई सुरजू के पास हिम विमालोकोट में भौंरों के द्वारा पत्र भेजा था । इससे ज्ञात होता है कि सुरजू और बरमी दोनों ही कृष्ण के भाई थे । इन्हीं गाथाओं में प्रासंगिक रूप से सिदुवा और बिदुवा रमौलों का उल्लेख है । सुरजू द्वारिका जाकर कृष्ण से कहते हैं कि रमौलीगढ़ के सिदुवा को भी साथ में ले आओ, तब कृष्ण उसे बुला लेते हैं कृष्णकुंवर की गाथा में कृष्ण ने रमौलीगढ़ के बिदुवा के पास सहायता के लिए पत्र भेजा है । बिदुवा को सिदुवा का छोटा भाई और उसी के समान वीर जादूगर कहा गया है । वह चंदनगढ़ जाकर नागराज को मारता है और कृष्णकंवल को जीवित करके पायरमाला के साथ द्वारिका ले आता है । बरमी कुंवर की एक अन्य गाथा में देवकी माता के विदि

रमौल और बुद्धि रमौल दो भाई कहे गये हैं जिन्हें इसलिए बुलाया जाता है कि नाग लोक में नागराज द्वारा उनका भांजा कृष्ण कंवल डंस लिया गया है और वे उसे जीवित करके द्वारका ले आये। सिदवा-बिदुवा या सिद्धि-बुद्धि एक ही हैं। बुद्धि रमौल अपनी साठ विद्याओं को साथ लेकर नागलोक में अपने पराक्रम तथा संजीवनी विद्या द्वारा सफलता प्राप्त करते हैं[1]। कृष्ण ने गंगू रमौल की पुत्री अर्थात् सिदुवा की बहिन के साथ विवाह कर लिया था। कृष्ण को जब कभी मंत्र-तंत्र विषयक आवश्यकता हुई तो उन्होंने इन दोनों भाइयों की सहायता से सफलता प्राप्त की। रमौलों के स्वभाव की विशेषताओं के अन्तर्गत युवती स्त्री को मार्ग न चलने देना, खेतों में कुल्हाड़ी तक न लगने देना, भेड़ बकरी न चरने देना आदि प्रमुख हैं[2]।

१.१.२. २.   रमौल के अन्तर्गत अनेक गाथाएं परस्पर संबद्ध हैं। लोक गायक अधिकतर गंगू, सिदुवा-बिदुवा, सुरजू-बरमी के प्रसंगों का वर्णन करते हैं जो अपने आंतरिक गठन में स्वतंत्र भी होते हुए केवल 'रमौल' नाम से एक सूत्र में बंधे हैं। रमौल बड़े स्वेच्छाचारी, मुर्ख तथा पराक्रमी थे। गंगू रमौल सौ वर्ष की अवस्था में भी एक-एक पत्थर से एक एक लाख सेना मार गिराता था[3]। जनता में रमौलों का आतंक छाया रहता था। ज्योतिषी ब्राह्मण उन्हें देखते ही छिप जाते थे। वे गायन विद्या में बड़े निपुण थे। उन्होंने नौ तल्ले का नगाड़ा बजाकर बाईस बहिन

१- " बिदुवा छियो बांको भड़ एक चोट मांजो स्योले,
   नाग जतुक ऊंचो उतुक चौड़ करी हालो,
   ----- ----- ----- --
   कांउर को जड़ो कुल्हाड़ो दिया,
   डाड़ो उठि गयो जाड़िलो बरमी ।..."

२- " बरड़ु बाकर कन चरण नि दीन
   पुंगे पातों किरिण बामण नि दीन
   चिठे कावड़ किरिण लामण नि दीन ।..."

३- " तब एक त्वाड़ा मार तो एक लाख मरनो
   द्वि त्वाड़ा में द्वी लाख मरनीं ।...."

परियों को मुग्ध कर लिया[1]। उन्हें महा कुलबल वाला बौक्साड़ी विद्याओं से युक्त तथा बलवान कहा गया है। इनकी तान्त्रिक सामग्री में मुर्दों की गड्डियां, कांउर[2] की जड़ी, चौरस्ते की धूल, लंबनी पत्ती, मोहन मुरली आदि वस्तुएं रहा करती थीं।

३.१.२.३. 'रमौल' 'मालूशाही' की अपेक्षा वस्तु संगठन में शिथिल और स्वतंत्र घटना कड़ों से पूर्ण है किन्तु उसका मूल रूप या मूल कथा वृत्त मालूशाही की तुलना में अधिक प्राचीन ज्ञात होता है। सुरजू कुंवर, बरमी कुंवर, तथा अर्जुन-वासुदत्ता के प्रणय प्रसंग में वर्णित कर्शों और आर्यों के युद्ध के आधार पर यह अनुमान किया गया है कि सुरज कुंवर, संभवत: नागवंशी था जिसने अनेक कठिनाइयों के बाद तिब्बत पर विजय प्राप्त करके वहां राजकन्या जोतरमाला से विवाह किया था[3]। यही प्रसंग अब कुमाऊं के पर्वत सम्बद्धीय वातावरण में ढल गये हैं। 'रमौल' को असम्बद्ध घटनात्मक लोक महाकाव्य कहा जा सकता है। रमौल और मालूशाही दोनों ही सर्वाधिक प्रसिद्ध और व्यापक लोक गाथाएं हैं जिन्हें लोक गायक अत्यन्त प्राचीन काल से परम्परानुसार गाते रहे हैं।

३.२. धार्मिक लोक गाथा

३.२.१. धार्मिक लोक गाथा का सम्बन्ध तंत्र-मंत्र, पूजा और देवता नचाने की क्रिया से रहता है। यहां इनके लिए 'जागर' और 'स्याला' शब्द प्रचलित है। 'जागर' शब्द जागरण से सम्बन्धित है। देवता 'कम्पर' को जागृत करने अथवा देवता को नचाने के लिए जो गाथाएं गाई जाती हैं वही 'जागर' है। रात-रात भर जागते हुए जिसे 'जागरिया' नामक विशेष गायक इन्हें गाते हैं। मनोरथ पूर्ति हेतु

१- "तब रमौल का बाजी बजूंनी वो सल्यिा दुंगी में,
   वो कैद वैणी छकुआणियों, बाजो सुणि बैर मोहिति है गो,"

२- गुरु दारो बाकुल सैरबन की फाटी कांउर की जड़ी,
   चौबाटे की धूल मुष्टक माठ रमौल उपण लगाई।...

३- गढ़वाली लोक गाथाएं - डा० गोविन्द चातक पृ० १४

विभिन्न देवी देवताओं का प्रयोजन के अनुसार आह्वान किया जाता है । अपनी ओर से संतुष्ट रखने का वचन देते हुए उनसे ऐश्वर्य धन सम्पत्ति की रक्षा अथवा रोग से मुक्ति की प्रार्थना की जाती है । जागरों में देवताओं के अवतरण का लक्षण डंगरिया का नृत्य है । डंगरिया उस व्यक्ति को कहते हैं जिसके शरीर में इष्ट देवता अवतरित होता है ।

३. २. २. 'जागरों' में नाचने वाला व्यक्ति अर्थात् डंगरिया ~~उस व्यक्ति को कहते हैं जिसके शरीर में इष्ट देवता अवतरित होता है ।~~ स्त्री पुरुष कोई भी हो सकता है । थाली, डमरू, ढोल-नगाड़ा आदि वाद्यों के मध्य जब विशिष्ट क्रम से गीत बद्ध कथाएं गाई जाने लगती हैं तो सम्पूर्ण वातावरण के प्रभाव और आंतरिक प्रेरणा के फलस्वरूप डंगरिया कांपने लगता है । उठकर नाचता हुआ और-और से घूम कर हुंकारता है तब इस स्थिति में 'जागरिया' उसकी गति को नियंत्रित रखता है । देवता का अवतरण जानकर उस समय लोग अभीष्ट प्राप्ति हेतु उससे प्रश्न पूछने लगते हैं । आहूत देवता के अवतरित होने तक का क्रम तीन भागों में बंटा है । पहला जब आरम्भ में 'जागरिया' सम्पूर्ण प्रकृति में सुषुप्त चेतना को जागृत करने का प्रयत्न करता है । दूसरा, जब वह सृष्टि के आरम्भ का वर्णन करते हुए विभिन्न देवी देवताओं का आह्वान करता है । तीसरा जब वह विशिष्ट देवता को आमंत्रित करता है । तदुपरान्त अभिप्रेत देवी या देवता की कथा आरम्भ होती है । समाप्ति पर 'आशीष्य' में शुभकामना प्रकट करते हुए कहा जाता है कि वह देवता अपनी छत्रछाया में सब की मनोकामनाएं पूर्ण करें[१] ।

---

१. व. व. ' है सुमिया भल करिये सिद्धि करिये
निरंकार है हो शंभु निरंकार
---- ---- ---- ----
अबा तुम धाम वाबो रया
औकारै की स्वाबा कणि मानि किया
औकार हुणि सुफल है जया ।....'

३. २. ३. जागर और स्याठा लगभग समान कोटि के हैं । दोनों में देवताओं का आव्हान किया जाता है । गंगनाथ का `जागर` यहाँ `स्याठा` कहलाता है । इसी-प्रकार भाठिया या भोठानाथ का जागर है । जागरों में प्राय: धूनी जलाई जाती है। और उसके चारों और जगरिया, डंगरिया, बाजा बजाने वाले लोग और श्रद्धालु लोग बैठते हैं । जीवनी प्रधान होने के कारण `जागर` घटनामूलक होते हैं । इन देवताओं में कुछ को पशु बलि भी दी जाती है । गंगानाथ, हरु, सैम, भोठानाथ, कैलु, कुसरिया, काल्पमशाण, ऐड़ी, नरसिंहवीर, भुमियां, सिद्ध आदि की गाथाएं प्रमुख धार्मिक गाथाएं हैं । ये गाथाएं तीन प्रकार की हैं । पहले प्रकार में देवताओं और देवियों के जागर आते हैं , दूसरे के अन्तर्गत सहायक शक्तियों के जागर और तीसरे प्रकार के अन्तर्गत शासकों के जागर आते हैं । देवता और देवियां स्थानीय शक्तियां हैं जिनके जीवन वृत्त बड़े आकर्षक एवं मौलिक हैं । इनमें किसी का उल्लेख स्थानीय इतिहास में नहीं है । अत: लोक कल्पना के विस्तार के लिए पर्याप्त अवसर है । प्राचीनकाल में यदि कोई व्यक्ति आकांक्षा पूर्ण न होने पर या किसी अन्य उद्देश्य की सिद्धि के लिए मृत्यु के पश्चात अपने परिजनों को कष्ट देता रहा और पूजा-बलि देने पर ही संतुष्ट हुआ या अपने जीवन काल में ही किसी विशेष गुण के कारण जन साधारण में मान्य हो गया तो कालांतर में उसकी देव रूप में प्रतिष्ठा कर दी गई और नियमित रूप से उसकी पूजा होने लगी । यह प्रवृत्ति इनके मूल में रही है ।

३.२.४. यहां की धार्मिक गाथाओं में सर्वाधिक गाथा `ग्वाल्ल` जिसे गोरिल, गोरिया, या ग्वेल भी कहते हैं, की है । स्थान-स्थान पर `ग्वाल्ले` देवता के थान (देव स्थल) बने हैं । निश्चित समय पर इनकी पूजा और जागर लगते हैं । इनकी पूजा के मूल में कामना पूर्ण कराने, रोग व्याधि से मुक्ति पाने, या भूत-प्रेत उतारने की भावना रहती है । ग्वाल्ल देव की गाथा के एकाधिक रूपान्तर मिलते हैं ।

३.२.४.१. ग्वाल्ल या गोरिला के जन्म का प्रसंग अत्यन्त विचित्र रूप में मिलता है । चम्पावत के कत्यूरी राजा हलराय की छोटी रानी कालिका, राजा को अत्यन्त प्रिय थी । राजा कालिका को उसी की प्रेरणा से लाया था । रानी कालिका ने स्वप्न में राजा को प्रेरणा दी थी` कि यदि जीवित मां का पुत्र होगा

तो मुझे ब्याह कर ले जायगा और मेरी कुई का पूत होगा तो चौंळी कुमाकोट में हो रहेगा । तेरे निमित्त मैंने श्रावण के सोमवार, पूस के इतवार और माघ के मंगळवा को व्रत रखे हैं[1] । नींद खुलते ही राजा दिन वार सोचता है । माँ के पूछने पर स्वप्न की बात बताता है । माँ भळरानी राजा से कहती है कि पुत्र उस वैर्याळे देश में मत जा। वह विषैला देश है । वहाँ तुझे मार देंगे[2] । राजा नहीं मानता है और तैयार होकर ऊंची हिमालय की चोटियों को पार करता[3] हुआ काळिका के पास पहुंचता है । काळिका के साथ विवाह करके लौट आता है । रानी गर्भवती होती है। राजा उसकी इच्छा पूरी करने के लिए प्रत्येक प्रयत्न करता है किन्तु भळरानी और काळिका की सात सौतें ईर्ष्या करती हैं । उनके दुर्व्यवहार का पता जब राजा को चलता है तो वह क्रोधित होता है । गर्भावस्था का दसवाँ महीना लगने पर काळिका रानी राजा से कहती है कि हे स्वामी मेरी सात[4] सौत और द्वेष रखने वाली सास हैं । प्रसव पीड़ा होगी तो मैं किसका मुंह देखूंगी । राजा उसके पास एक घण्टी

१- "त्यारा निमित्त राजा सौना का सोमवार नाछू ।
पूसा का इतवार माघा को मंगळ छौ......
त्यूमो माई को ब्योली हौ ले मैंस वैवाह त्याळे
मेरो माई की ब्योली लो ले , चौंळी कुमाकोट रौळे ।..."

२- न जा भजा पूत वैर्याळा मुलुक...
बोस पत्नी देश छ त्वैक मारी देला हो ।

३- भळराई राजा एकै न मानन,

बटौन पै ग्यो राजा भळराई
वी ऊंचीक हिंल्माळ दिन बाटा लागो ग्याछू हो,
काळिका का संग राजा विवाई करछ
वेद की विधि ले काळिका विवाछ ।
वापस आ गयो राजा चौंळिकुमाकोट ।

४- पुर पुरो आ ग्यो, दसूं मैन कुमकाळी,सुण स्वामी म्यारा तुम हृदय की बात
कुमकाळी ।
सात छन सौतुन म्यारा,सयारि छ सासू,अब लागल मैंस, कैक मुख चाँलो ।

रखकर कहता है कि "पीड़ा आरम्भ होते ही घण्टी बजा देना और मैं जहां भी रहूंगा तुरन्त आ जाऊंगा"[1]। रानी आजमाने के लिए बिना पीड़ा के ही घंटी बजा देती है, राजा बड़े वेग से घर पहुंचता है और कोई विशेष दशा न देख कर रुष्ट होकर लौट जाता है। एक दिन रानी को सचमुच पीड़ा होती है, वह घण्टी बजाती है किन्तु राजा उसे हंसी मजाक समझ कर टाल देता है। सातों सौतें और सास रानी के पास जाकर बैठती हैं। वे कालिका की आंखों में पट्टी बांध देती हैं। उसी समय बालक गोरिला या ग्वाल्ल उत्पन्न होता है[2]। सौतों और सास ने फाड़ तोड़ कर गोरिया को गोठ(गोशाला) में डाल दिया और कालिका के पास सिल और लोढ़ा लाकर रख दी[3]। रानी की आंख से पट्टी खोल दी गयी और उसे बताया कि उससे ये पत्थर उत्पन्न हुए हैं[4]। रानी हुंकार भरती है और कहती है कि यदि मैं सच्ची रानी हूं तो ये पत्थर भी देव रूप धारण कर लें। तब लोढ़ा 'लोढ़ीमल' और सिल 'कालासिल' नामक देवता हो गये। जो रक्त वहां गिरा था उससे 'भैलुवा', दुनस्ता से 'भुम्यिा'[5], गर्भावरण से बाँस पाल बन गये और कालिका का रक्त भी व्यर्थ नहीं गया।

१- जै घुरा जै डांणा हुंलो मैं घर आ जूंलो।

२- "आज रानी कालिकास की पीड़ लागीछ,
इकुली नाकुली कै, रुन लागी गैछ।
सात सौत कालिका का मुख थैं बैग्यान
आंखा पिनि कालिका का पट्टि बांधि गैछ
आब बालो गोरिया पैद जो ग्योछ।"

३- "पाल काटी उ बालक, गोठ लिती ग्योछ,
कालिका का मुखतिर, सिल लोढ़ी धर्यो।..."

४- "त्वै कई कालिक रानी, हुइ पाथे ग्याछा।..."

५- "लोढ़ो बन्यो लोढ़ीमल, सिल कालसिल,
खून लै के कालिक को ब्यर्थ रहि नै गयो।...."

३.२.४.२. राजा के लौटने पर उसकी माता ने बताया कि उसकी लाडली रानी ने पत्थरों को जन्म दिया और इस सूचना से राजा का दिल टूट गया। इधर फूल-रानी अपनी सातों रानियों को कहती हैं कि गोठ से मृत बालक को खाद के ढेर में दबा दें। रानियों ने देखा तो बालक जो आगे चलकर ग्वाल्ल गौरिया कहलाया, गाय के थनों से दूध पी रहा है[1]। उसे खाद के ढेर में ढक दिया गया। तीसरे दिन गौरिया खाद उलट कर खेलने लगा। तब उसे बिच्छू घास में फेंका गया, हाथी के पैरों तले डाला, तब भी बालक को कुछ न हुआ। नमक के भण्डार में डाला। किन्तु वह बालक नमक को चीनी की तरह खा गया। सभी युक्तियां असफल होते देख कर रानियों ने उसे एक लोहे के पींजड़े में बन्द करके काली नदी में डाल दिया[2]। उस पिंजड़े को एक मछली निगल गयी। वह मछली उन्मत्त होकर काली नदी से गोरी नदी में आ गयी जहाँ एक मछुए ने उसे पकड़ लिया और उसका पेट चीरने पर एक लोहे की पेटी मिली। पेटी खोली तो "ट्याहुर" "ट्याहुर" करता हुआ बालक निकला[3]।

३.२.४.३. मछुवा उस बालक को घर लाता है और उसे पालता है। बालक घर में आते ही उसकी बांझ स्त्री के स्तनों में दूध उतर आता है और बारह वर्ष से बांझ गाय दूध देने लगती है[4]। सात आठ वर्ष का होने पर वह बालक — गौरिया अपने धर्म पिता से काठ की घुड़िया मांगता है और जंगल की ओर जाने वाली बकरियों की टांग फोड़ देता है। पानी के लिए जाने वाली स्त्रियों के घड़े फोड़ देता है।

१- "बालक थन लागि बेर दूध पिन रयोछ।..."

२- "बालक समाबो लैले, प्यौलि में धरोछ,
 लु प्योलो समाछ लैले, कालि गंडा बगाछ।..."

३- बारो लु की प्योली, एक माछा लै नैलि दीछ।
 माछ काटी ध्यौरिया लै, लु प्योलो निकलो,
 प्योलो खोली ध्यौरिया लै,
 ट्याहुरि, ट्याहुरि, बालक आयो।

४- जनम कि बांझि थी दूध फुटि रयोछ।
 गोठ पनि ध्यौरिवाक गै लैकै ब्यौरैछ।

इस प्रकार के अनेक उत्पात वह करता है[1]। मझला गौरिया से उस प्रकार के खेल छोड़ देने के लिए कहता है। तब गौरिया काठ की घोड़ी मांगता है और उस पर जीन, लगाम आदि कसकर सवार होता है। उधर घमौला के सेरा में हलराई राजा का रोपाई का काम हो रहा है। रानी कालिका को बैल के साथ हल चलाने के लिए लगाया गया है। गौरिया वहां पहुंच कर काठ की घोड़ी को पानी पिलाने के मिस कूल तोड़ देता है और रोपाई के लिए किसी प्रकार जल की पूर्ति नहीं होने देता है। तब राजा हलराई क्रोधित होकर गौरिया से कहता है तू ने यह सब क्या किया है, तू कैसा अनाड़ी है, कहीं काठ की घोड़ी भी पानी पीती है[2]। गौरिया राजा से कहता है कि कहीं स्त्री भी हल में चलती है[3]। वह कहता है कि मैं हलराम का पुत्र हूं और फलराव का नाती। राजा उसे गोद में उठाकर खेत में ले जाता है। सातों रानियां उसे अपना अपना पुत्र कहती हैं। गौरिया कहता है कि वह उनमें से किसी का पुत्र नहीं है। जिसके दूध की धार सात तवे और सात कड़ाइयों को भेद कर उसके मुख में आयेगी, वह उसी का पुत्र होगा[4]। सातों रानियों में से किसी के दूध की धार

१- मै सिर बनी दे बाबा बासुकि गुठेलि,
गुठेलि खेलन लाग्यो, तैं बाळो गौरिया।
बन जान्या बाकरान आंखा फोड़ि दीन्हि,
पाणि जान्या स्यानिन का घाड़ा फोड़ि दीन्हि।
बाड़ा बाड़ा उत्पात कर्या, तै बाळो गौरिया।

२- "दूर है हमार्या तैले, तैं कसो अनाड़ो है
काठक घ्वाड़ा ले के कांइ पाणि खायो कि ?..."

३- "आवा बाल्यो गौरिया बाळो, तैं कसो अनाड़ी राजा,
स्यानी ले [illegible] क्वै, हल बायो राजा कि ?..."

४- वी कसत पूछ गौरिया हलरायी को पूत हूं।
फलराय को नाती।
अबा सात रानी मौलिन, मेर मेर पूत,
तुम बाजुन दूध छोड़ि, कै दूध सुन माण छेड़ि,
म्यर साथ बाळो, बीक पूत हुंलो।...."

उसके कहे अनुसार उसके मुख में नमों पहुंचती है। गौरिया हल में जाती हुई बुढ़िया को बुलाने के लिए कहता है। वह निकट आते ही अश्रुपूर्ण हो जाती है और अपने सत धर्म का स्मरण करके कहती है कि मैंने दस माह गर्भ में सहा, तुझे बैरिणियों ने मेरी दस धार दूध भी नहीं पीने दी, आज मेरी दूध की धार तेरे मुख में चली जाय[1]। सभी बर्तनों को भेद कर उसके दूध की धार गौरि.ा के मुख में जाती है और गौरिया माता के चरणों में सिर रख देता है[2]। इस प्रकार बाप-बेटे और पुत्र का परस्पर परिचय होता है। रानियों की करतूत को सुनते ही राजा ने सातों को लोहे की कढ़ाई में भूनकर मार डाला और इस प्रकार धौलि धुमाकोट में रानी कालिका को पुन: अपना रानी का पद प्राप्त हुआ[3]। गौरिला की गाथा के दूसरे रूपान्तर के अनुसार कुमाऊं के एक राजा सात रानियां होने पर भी निस्संतान थे। शिकार खेलते हुए उन्होंने एक स्त्री देखी जिसने दो लड़ते हुए भैंसों के सींग पकड़ कर अलग कर दिया। राजा ने मुग्ध होकर उससे विवाह कर लिया। गर्भवती होने पर अन्य सातों रानियां उससे द्वेष करने लगीं। आगे अन्य बातें समान होने पर भी इस रूपान्तर में काठ के घोड़े से सम्बन्धित वृत्तान्त कुछ भिन्न है। इसके अनुसार गौरिया एक दिन काठ के घोड़े पर चढ़ कर शिकार खेलते हुए राजा के उद्यान में पहुंचता है। वहां सातों रानियां पनघट में पानी भर रही थीं। उसने उनके सब स्वर्ण कलश

१- "दस मैन गर्भ में बोके, रोपा लागी रै छ...
दस धार दूध म्यरो बैरीन ले नी खान्दी
आज मेरो दूध की धार, त्यर जाय न्है जो।..."

२- " गौरिला का सापढ़ मैं छ, यो दद की धार।
यो बखत गौरिया ले चरण में सीर राख्यो..."

५- "लू मे में खिति घेर, साते रानि मार्या।
बाल गौरिया ज्यैलो भयो, लराय पति भयो,
रानी कालिका रानो भै छ, धौलि धुमाकोट फिरि।
-- ग्वोल्ल राजघाट।

तोड़ते हुए कहा-- पहले मेरा घोड़ा पानी पियेगा । रानियों के इस बात पर आश्चर्य प्रकट करते हुए उसने उत्तर दिया -- जिस प्रकार स्त्री को गर्भ से पत्थर उत्पन्न हो सकता है उसी प्रकार काठ का घोड़ा पानी पी सकता है । बात राजा तक पहुंची । उसे बताया गया । रहस्य खुलने पर राजा ने सातों रानियों को कढ़ाई में उबाल कर तुरन्त मार डालने की आज्ञा दी किन्तु उसकी प्रार्थना पर वे सब उसकी माता की दासियाँ बना दी गयी । यह रूपान्तर गंगोली क्षेत्र में मिलता है ।

३.२.४.४. एक अन्य रूपान्तर के अनुसार, जो बेरीनाग क्षेत्र में० में परिलुत हुआ है, चम्पावत के कत्यूरी राजा झालराव की छोटी रानी काला राजा को प्यारी थी । शिकार खेलते-खेलते दूर जंगल में तपस्विनी काली पर मोहित होकर जब राजा ने प्रणय की याचना की तो काली बोली --' रे राजा, मैं तेरे राजमहल में तब आऊँ जब तू मेरा अंगूठा थामने से पहले वचन दे कि मेरी कोख से जन्मा बालक तेरे राज्य का उत्तराधिकारी होगा । और रानियाँ जो मन की मलिन चुड़ैलों की बहनें हैं मेरे बच्चे का कुछ बिगाड़ न करेंगी ।' राजा ने बात मान ली और काली को अपने राजमहल में ले आया । घंटी बजाने का प्रसंग भी कुछ भिन्न है । प्रस्तुत रूपान्तर के अनुसार अन्य रानियाँ सौतिया डाह से बिना प्रयोजन के ही घंटी बजा देती हैं । कई बार रानियों ने घंटी बजायी और राजा आया तथा चला गया । प्रसव पीड़ा के समय जब काली ने जब घंटी बजायी तो राजा ने सोचा कि यह घंटी भी तो वैसे ही बजी होगी। वह न आया । अन्य प्रसंग समान हैं । रानी का नाम 'कालिका' और 'काली' दोनों मिलता है ।

३.२.४.५. गोल्ल ने अपने जीवन में अनेक वीरता पूर्ण कार्य किये । तंत्र-मंत्र की शक्तियों से युक्त होकर बैताली घाट में भयंकर मगर को नाथा, डोटीगढ़ के मणकुवा जन डोट्याल को पराजित किया, आदि । अन्त में राजा बना और कुशलतापूर्वक शासन किया । मृत्यु के बाद गोल्ल सारे कुमाऊँ प्रदेश में देवता की भांति पूजा जाने लगा और अब भी गोल्ल कुमाऊँ का सर्व प्रिय लोक देव है । कुमाऊँ प्रखण्ड में स्थान-स्थान पर इसके मन्दिर हैं । अल्मोड़े में चितई के पास बोरारो पट्टी में चौड़, उच्चकोटि के कसौट गांव में, मल्ला पट्टी के कुमौड़ गांव में, हैड़िया गांव में, मल्ला डोटी, काली-

कुमाऊं, कत्यूर, गागर गौल, आदि स्थानों पर तो गोल्ल देव के सुन्दर मन्दिर हैं। विवेच्य क्षेत्र में भी स्थान-स्थान पर गोल्ल या ग्वाल्लदेव के थान हैं और उसकी गाथा श्रद्धा के साथ गायी जाती है।

३.२.५.१. गंगानाथ का जागर सामाजिक मान्यताओं की दृष्टि से उल्लेखनीय है जिसमें वर्ग वैषम्य पर व्यंग्य किया गया है। गंगानाथ की गाथा निम्नलिखित प्रकार है।

३.२.५.१. काली पार डोटियाल देश में सूर्यवंशी राजा भवैचन्द के आठ पुत्रों में सब से छोटा राजकुंवर गंगानाथ जब जन्मा, उसके गर्भ से छूटते ही कांसे की थालियां टूट गयीं, बांस के गुर्वें(अंकुर) फूट गये। इस घटना से राजा को बड़ा विस्मय हुआ और उसने ज्योतिषी से बालक के बारे में पूछा। ज्योतिषी ने बताया कि गंगानाथ ग्यारह वर्ष की उमर तक बड़ा उत्पात करेगा। उसके उपरान्त वह स्त्री कारण जोगी होकर राज्य के बाहर चला जायेगा। ज्योतिषी की वाणी सत्य निकली। बचपन में गंगानाथ बहुत उपद्रवी हुआ। तरह-तरह से जनता को परेशान करने लगा, किन्तु राजा का कोई वश न चलता था। प्रजा परेशान हो गयी।

३.२.५.२. एक दिन गंगानाथ ने स्वप्न में एक अनुपम रूपवती छोरी को देखा। स्वप्न में ही उसने राजकुंवर गंगानाथ से कहा कि मैं तेरी पूर्व जन्म की वैरी हूं। और तेरी याद में काली पार अल्मोड़े देश में सूख कर लकड़ी हो गयी हूं। आंख खुलते ही गंगानाथ पागल सा होकर स्वप्न की प्रतिमा को खोजने लगा। राजा तथा रानी उसकी दशा देख कर पूछने लगे कि उसकी परेशानी का क्या कारण है? किन्तु गंगुवा अर्थात् गंगानाथ चुप रहता है। बारह वर्ष की उम्र में वह अपनी प्रेमिका का पता लगाने का संकल्प करके चिमटा कमंडल लेकर जोगी के वेश में घर से चल पड़ा। काली नदी के घाट में उसे कालभैरव, कलुवा मसान, कलुवा प्रेत और उनके बांन बान(सेवकगण) मिले। तीन रात, तीन दिन तक गंगानाथ और घाट के मसान में भयंकर युद्ध हुआ। अन्त में मसान की हार हुई और गंगानाथ की वीरता से प्रसन्न होकर उसने विपत्ति में याद करने को कहा जब वह अपनी मजाकरी लेना से उसकी सहायता करेगा।

३.२.५.३. काली घाट के मसान को अपने वश में कर गंगानाथ पिठौरागढ़ के इलाके में आया । वहाँ गांव गांव घर घर उसने अपनी प्रेमिका की खोज की । रामेश्वर का दमाल, बाराबीस के रौल जीते । हाट कालिका के दर्शन कर कत्यूर और वहाँ से हरिद्वार चला गया । हरिद्वार में नागा कनफटे के जमाव में जा मिला । कनफटों ने गंगानाथ का अपमान करना चाहा किन्तु गंगानाथ द्वारा कालीघाट के मसान को म याद करते ही फाकरी सेना ने सब नागाओं को मार कर गंगा में बहा दिया । हरिद्वार से गंगानाथ कांवण देश गया । वहाँ जादूविद्या सीख कर मोतिया पाथर चला आया । मोतिया पाथर से अल्मोड़े में अपने जादू के बल से यह जान लिया कि उसकी प्रेमिका माना जोशी के घर जोशी खोले में तड़प रही है कि उसे रात नींद नहीं और दिन भूख नहीं है ।

३.२.५.४. गंगानाथ ने माना जोशी के घर में अपना डेरा डाल दिया और माना के हलिये(हल चलाने वाला) फकरुवा को अपने वश में कर लिया । फकरुवा लोहार को गंगानाथ ने कहा कि वह माना बामनी को संदेश ले जाय कि गंगुवा जोगी डोटियाल देश के है ज्यूनार गो कुमार की थाल पर लात मार कर तड़पता भटकता आ गया है । फकरुवा गुप्त रूप से माना बामनी को बाग में बुला लाता और गंगानाथ तथा माना बामनी का प्रेमालाप बढ़ता गया, माना बामनी का गंगानाथ से गर्भ रह गया । माना जोशी को जब अपनी बामनी की करतूतें ज्ञात हुईं तो उसने रात में सोते हुए गंगानाथ, अपनी बामनी और फकरुवा लोहार तीनों की लोहे के हथौड़ों से हत्या कर दी । इन तीनों प्राणियों के साथ गर्भ का बालक बरमी भी प्रेतात्मा बन गया और कहते हैं कि ये प्रेतात्माएं जोशी कुल को सताने लगीं ।

३.२.५.५. जोशी कुल ने इन प्रेतात्माओं को प्रसन्न रखने के लिए स्थान-स्थान पर इनके मन्दिर बनवा दिये और पूजा तथा बलि के रूप में इनका भाग दिया जाने लगा । अब भी विवेच्य अंचल ही नहीं सारे कुमाऊं प्रखण्ड में इनकी पूजा की जाती है । गंगानाथ की कथा गीतों के साथ गायी जाती है । हुड़के की तड़क भड़क और थालियों की झनझनाहट से गंगानाथ को नचाया जाता है और उसे बुलाया जाता है[१] । तब व्यक्ति विशेष के शरीर में गंगानाथ का अवतार होता है जो यह बताता

१- जो रे गाड़ू डोटी को रौतान छियै, पछिमा दीवान छियै,
बाबू भवैचना को कुंवर छियै, माता प्यूला को लला छियै,
गाड़ू के उ दैल बैराग लागो त्यो के डोटी गढ़ में, --- शेष अगले पृष्ठ पर

है कि गंगानाथ के रुष्ट होने का क्या कारण है और कैसे विपत्ति से उसे छुटकारा मिलेगा ?

३.२.५.६. यहां के लोक देवताओं में गंगानाथ प्रमुख माने जाते हैं । इन्हें जगाने और बुलाने का उत्सव 'ज्याग' कहलाता है । गंगानाथ को जोगी रूप में भी अभिहित किया जाता है जो भूत,प्रेतों द्वारा सताये जाने या अन्यायपूर्वक दबाये जाने पर 'ज्याग' देने से रक्षा करता है । 'ज्याग' में बुलाते समय यात्रा सम्बन्धी वाक्य दुहराये जाते हैं[१] ।

३.२.६. गंगानाथ की तरह ही भोलानाथ भी पूजे जाते हैं । भोलानाथ को उन्हीं के भाई ज्ञानचन्द ने राज्य के लोभ से गर्भवती पत्नी सहित मरवा दिया था । तीनों की प्रेतात्माएं तरह-तरह से चन्द वंश के लोगों को सताने लगीं । तभी से आठ प्रकार के भैरव के मन्दिर स्थान-स्थान पर बने और भोलानाथ और गणों के साथ पूजे जाने लगे ।

३.२.७. देवियों के जागर गाथाओं के नाम यद्यपि भिन्न भिन्न मिलते हैं जैसे गणदेवी, काली, चण्डिका, आदि किन्तु इनका माहात्म्य ही मुख्य रूप से गाया जाता है जो प्राय: एक समान है । देवी के जागर में 'देवी' प्रसिद्ध है । अन्य अनेक देवी देवताओं की गाथाएं अत्यन्त संक्षिप्त होती हुई अब लगभग गाथा तत्व से रहित हो चली है, केवल उनकी स्तुति और माहात्म्य वर्णन ही शेष रह गया है । इनमें गणदेवी, नरसिंह, भुमियां, निरंकार, कालांकन आदि प्रमुख हैं । देवी के जागर में उनके अवतार धारण कर दैत्यों का संहार करने, चतुर्भुज रूप धारण कर हाथ में खप्पर लेने तथा सर्व दिशाओं में विद्यमान रहने का वर्णन किया जाता है । दैत्यों के घेरे में पड़कर वह एक दैत्य को मारती है तो सौ उत्पन्न होते हैं, सौ

पिछले पृष्ठ का शेष—

तेरो पुरवा अर्म की बैरि निकलि भाना बामणी,
दन्या कुछ कौली बटी के कुलबोली की बैठी ।...."

१- " बाई गढ़ी बाबी होटी की उठियो काली तीर आयो,
जोगी रे गंगानाथ काली तीर आयो ।...."

दैत्य मारती है तो हजार उत्पन्न होते हैं । अन्त में मस्किा रूप धारण कर वह उनको निर्वंश कर डालती है[1] । इस प्रकार का वर्णन किसी भी देवी के लिए प्रयुक्त हो सकता है । ग्राम देवताओं में देवियों की संख्या सर्वत्र अधिक मिलती है

३.२.८. गाथाओं से ज्ञात होता है कि मध्य युगीन सिद्ध नाथों की परम्परा ने स्थानीय धर्म भावना को प्रभावित किया । ' गंगानाथ ' , 'भोलानाथ' जैसे नामों के साथ ' नाथ ' शब्द मिलता है । सिर मुड़ाने , कान छेदने, तंत्र-मंत्र की शिक्षा, गुरु का महत्त्व आदि कार्य इसी प्रभाव के कारण ज्ञात होते हैं ।

३.२.६. देवताओं की भाँति अनेक भूत प्रेत आदि के जागर भी मिलते हैं । कलुवा वीर, ऐड़ी, बौलिए सौ भूत, अनेक परियाँ आदि के वृत्तान्त इसी प्रकार के हैं जो किसी देवी देवता के साथ नचाये जाते हैं । ये एक प्रकार से देवी देवताओं के गण हैं । देवियों के साथ सहायक शक्तियों के रूप में परियां, आंचरी और कींचरी नाचती हैं । इस प्रकार का विश्वास किया जाता है कि यदि कोई व्यक्ति असमय में मर जाय या पीड़ित होकर मरे अथवा आत्महत्या कर ले तो अतृप्त कामना पूर्ति हेतु भूत बनकर भटकता हुआ परिजनों को कष्ट देता है । तब उसकी स्थापना की जाती है और देवता रूप में पूजा की जाती है । इस प्रकार की स्थितियां प्रायः स्त्री पुरुष दोनों की पायी जाती हैं । स्त्रियां देवीवत् पूज्य

१- ' जो देवी लेली सम साण घाट भगवती के उतार ल्हैली,
भगवती पड़ी गे छ दैत्यन का ध्यारा के बाली
मारला हजार दैत्यन एक दैत्य मारन छ सौ उब्जनी ।
सौ दैत्य मारन छ हजार उब्जनी,
करी त्योले क्वार देवी चतुर भुजा धारण
भगवती किर्बुँडि लगा सम साणी क्तार
धरण लगायो त्योल माछिन को रूप
करी दैत्यूं वंश को निरवंश अब गाड़ी भगवती छै
माल्धुरा को हुँग अमूण लगायी धारुणी को राली ।..

होती है। उनकी पूजा परिजनों द्वारा ही होती है, अन्य लोगों से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। पुराणों में कलविष्ट की इसी प्रकार की गाथा है। कलविष्ट एक वीर पुरुष था। उसने अपनी वीरता से मनुष्य तो क्याभावर को एक बार शेरों से खाली कर दिया। श्रीकृष्ण पाण्डेय नामक एक राज पुरोहित की चाल से धोखे से उसकी मृत्यु हुई। मरने के बाद कलविष्ट की आत्मा प्रेत बन गयी। सब से पहले वह श्रीकृष्ण पाण्डे के लड़के को चिपटी कि वह कलविष्ट श्रीकृष्ण पाण्डे के वंश को खत्म कर देगा। पाण्डे ने कपड़खान में कलविष्ट का मन्दिर बनवाया। उसकी पूजा अर्चना की कि तू मेरा देवता है, मेरे वंश की रक्षा कर। कलविष्ट ने उसे छोड़ दिया और तब वह उन सभी षड्यंत्र कारियों को चिपटा जिन्होंने उसकी मौत की मनौती की, अब स्थान-स्थान पर कलविष्ट के थान(पूजा स्थल) हैं और उसकी पूजा होती है। भूत प्रेतों की पूजा के मूल में इसी प्रकार का वृत्तान्त मिलता है। उनका जागर स्वतंत्र रूप से भी लगाया जाता है।

१.२.१०. किसी व्यक्ति के विशिष्ट गुण शौर्य अथवा सफलता के आधार पर उसको सम्मान दिया गया है और जागर उसी के प्रतीक हैं। जागर गाथाएं किस प्रकार व्यक्तियों के आधार पर बनती हैं, इसका एक सुन्दर उदाहरण पुरुख पन्त की गाथा है।

१.२.१०.१. पुरुख पन्त गंगोली में जन्मे और अपने ममकोट चिमाली में पले तथा बढ़े। चिमाली पिठौरागढ़ के सोरा परगन्ना में है। उस समय प्रदेश में सोराकोटि राजा हरिमल्ल का एक छत्र राज्य था। उसके अत्याचारों से प्रजा त्रस्त थी। चिमाली प्रवास में बालक पुरुख पंत ने यह सब देखा और सुना। तिथि त्योहारों में आस-पास के निवासियों को उन दिनों सिरा कोटी राजा को डाली[1] देनी पड़ती थी। एक दिन बालक पुरुख पंत भी गया। वह बड़ा स्वाभिमानी और साल्वो[2] वीर था। डाली देने के लिए अन्दर जाने से पहले द्वार पर के कुत्ते को ढोक देना पड़ती थी, तभी दरबार में जाकर राजा को ढोक दिया जा सकता था। बालक पुरुख पंत ने कुत्ते को ढोक देना आत्म सम्मान के खिलाफ समझा और बिना ढोक दिये अंदर जाने से उसे रोक दिया गया। पुरुख पंत ने संकल्प किया कि या राजा हरीमल और उसके कुत्ते को जिन्दे ही काली नदी में बहाऊंगा या स्वयं डूब मरूंगा।

१- भेंट विशेष । २- बहादुरी ।

३.२.१०.२. उक्त संकल्प के बाद पुरुष पंत को रात नींद नहीं और दिन भूख नहीं रही । उसने घर घर बोरा कोटि राजा के अत्याचार की चर्चा करते हुए केवल साठ सत्तर व्यक्तियों के साथ राजा पर धावा बोल दिया किन्तु कहाँ राजा की सेना और कहाँ पुरुष पंत के थोड़े से व्यक्ति । वह हार गया । बड़ी आत्म ग्लानि उसे हुई । वह साधु हो गया । साधु वेश में गांव-गांव घूमने लगा । एक दिन एक बुढ़िया के यहाँ उसका डेरा पड़ा । बुढ़िया ने खीर बना कर दी और पुरुष पंत बीच-बीच में से उठाकर गरम खीर खाता और गरम खीर के कारण मुख से आवाज करता । बुढ़िया ने कहा कि यदि किनारे-किनारे से खीर खाता तो मुख न जलता और यदि पुरुष पंत पहले खजाने का धन ले लेता तो न हारता । पुरुष पन्त के मन में बात बैठ गयी । उसने जोगी के वेश में बोरा कोट के खानापानी नौले में जाकर रुपया प्याला पानी लगा दिया । प्रत्यंकर जिन के गीत गाने लगा । बोरा कोटि राजा तक बात गई । वह सुवर्ण थाल भरकर जोगी के पास आया । जोगी के तेज को देखकर सहम गया और रुपया प्याला पानी लगाने की जोगी की बात की अनुमति दे दी । कुछ ही दिन में राजा का गोठाखिया खजाना पुरुष पन्त ने खींच लिया और वह एक दिन चुप चाप गंगोली चला आया । पुरुष पन्त की अद्भुत बुद्धि से उस समय का कुमाऊँ का राजा रुद्रचन्द बहुत प्रभावित हुआ । उसने पुरुष पन्त को अपनी सेना का सेनापति बना दिया । सेना लेकर पुरुष ने सोरा कोटि राजा पर हमला करके उसे और उसके कुत्ते को जिन्दे ही काली नदी में डाल दिया । इस प्रकार अपने संकल्प को पूरा किया । उसके बाद उसने सोरा कोटि राजा के राज्य में पढ़ियारी सेना द्वारा प्रजा पर किये गये अत्याचारों का बदला लिया । कत्यूर में स्थित पढ़ियारों की बस्ती में सभी पढ़ियारों को मार डाला । विधवाओं माताओं की करुण ने उसे अशान्त कर दिया और वह बद्रीनाथ तपस्या करने चल दिया । उसने तब तक अन्न-जल ग्रहण नहीं किया जब तक लक्ष्मी जी ने दर्शन देकर भोजन नहीं परोसा । अन्त में पुरुष पन्त लौटते समय समय पढ़ियारों की स्त्रियों के हाथ धोखे से मारा गया ।

३.२.१०.३. पुरुष पन्त के विस्मय कारक कार्यों के प्रभाव से लोग उसे पूजने लगे और उसके गुणों का बखान करने लगे । आज भी उसकी पूजा जागर के माध्यम

से श्रद्धा के साथ की जाती है। उक्त वृत्तान्त १५६८ ई० के पश्चात का ज्ञात होता है जब कि रुद्रचन्द का समय १५६५-९७ के मध्य रहा है[1]।

३.२.११. जागरों के नृत्य का विभिन्न मुद्राओं से घनिष्ठ सम्बन्ध है। कुछ जागरों में वार्तालाप तक होते हैं। इस दृष्टि से इन जागरों में एक प्रकार की नाटकीयता आ जाती है।

३.२.१२. जागरों में शैव तत्व की प्रधानता मिलती है। जोगी का वेश, फाउली, चिमटा, त्रिशूल आदि का जागरों से अभिन्न सम्बन्ध है। शिव की विशेषताओं का अवतरित होने वाले देवताओं में आरोप करने का प्रयत्न किया जाता है। धूनी लगाना, भस्मावलेप आदि भी यही प्रकट करते हैं। शैव तत्वों की प्रधानता इन्हें तांत्रिक पद्धति से प्रभावित सिद्ध करती हैं। इनकी विशिष्ट ध्यान पद्धति जिस प्रकार साधक को क्रमश: इष्ट के निकट ले जाकर के तादात्म्य करने में सफल होती है और वह तदाकार होकर नाचने लगता है, उस पर तांत्रिकों की साधना पद्धति का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। कैलाश शिव का आवास है। आंचरी उनकी शिष्यायें हैं जो ऊंचे हिम शिखरों पर रहती हैं। हिमालय की घाटियां अनेक सिद्ध-नाथों की करामातों से संयुक्त रही हैं। सम्भवत: किसी समय इनमें से अनेक स्थल तांत्रिक उपासना के केन्द्र भी रहे होंगे।

३.३. पौराणिक गाथाएं

३.३.१. पौराणिक गाथाओं के अन्तर्गत वे पौराणिक आख्यान आते हैं जो जागर तथा धर्म गाथाओं के पूर्व पृष्ठभूमि के रूप में आख्यायित होते हैं। दोनों का पूर्वापर सम्बन्ध है। जागर स्थानीय देवताओं के लगते हैं और जागृत करने के लिए उद्बोधन के रूप में पौराणिक आख्यान गाये जाते हैं।

३.३.२. पौराणिक गाथाओं में महाभारत, राम, कृष्ण, शिव, चौबीस अवतारों आदि सम्बन्धी विविध प्रसंग रहते हैं। इनकी रूपरेखा हिन्दू पुराणों से

१- देखिये- कुमाऊं : राहुल सांकृत्यायन, पृ० ८२।

वर्णित वृत्तान्तों के समान है । कहीं-कहीं मौलिक उद्भावना भी मिलती है । इस कोटि की अधिकांश गाथाएं महाभारत में वर्णित प्रसंगों की हैं जिनमें अभिमन्यु वध, भीम को विष दिया जाना, दुर्योधन और भीम का वैमनस्य, भीम-हिडिंबा और अर्जुन-वासुदत्ता का प्रेम मुख्य हैं ।

३.३.३. कौरव पाण्डव वैमनस्य का कारण एक नवीन उद्भावना है जिसमें युद्ध का मूल दोनों की राज्य सीमा पर उगा हुआ एक वृक्ष कहा गया है । वृक्ष में शहद की मक्खी का छत्ता लगा हुआ था । दोनों ने उसे प्राप्त करने की चेष्टा की । भीम ने सीढ़ी लगाई और अर्जुन ने उस पर चढ़ कर पूरा छत्ता गोद में भर लिया[१] । उधर सौ भाई कौरव सेना सहित आ गये और महाभारत युद्ध आरम्भ हो गया[२] । एक अन्य प्रसंग में पाण्डवों की बिल्ली और कौरवों की मुर्गी उक्त युद्ध के मूल में हैं । इस प्रकार की उद्भावनाएं लोक रुचि,वातावरण तथा देश काल के अनुसार मिलती हैं । गांवों में छोटी-छोटी बातों को लेकर लड़ बैठना साधारण बात होती है । लोक गायक जैसा देखता है, उसके अनुसार घटनाओं के कारणों को रूप देता है । पाण्डवों का वनवास तथा पांचाली के विवाह का प्रसंग महाभारत के अनुसार है । किन्तु यहां की गाथा में पाण्डु पुत्रों की अपेक्षा कुन्ती को अधिक महत्व दिया गया है । उसके पिता का नाम हिमपति कहा गया है और कुंती, गांधारी तथा पार्वती एक ही पिता की संतान कही गई हैं । कर्ण जन्म के प्रसंग में कहा गया है कि कुन्ती ने पुण्यात्मा तीर्थ में स्नान करके मन्त्र जाप करते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया तब कर्ण का जन्म हुआ ।इसके मूल में यह विश्वास है कि सूर्य की किरणें गर्भाधान में सहायक होती हैं । अनेक आदिम जातियों में कुमारी कन्याओं को ऋतुकाल के समय सूर्य दर्शन से बचाया जाता

१- " जब न्हैंगे कुंवर पाण्डव पट्टै हाल पहुंण
एक दिन उनन लै भंवर छत्ता देख्यों,
वु भारत जुड़न पैगै अबा कुंवर पाण्डव को ।..."

२- " रानियै ब्याह लड़नै लड़नै हई गैछ,
पाण्डव की बिराली लौटि बैर लै गैछ ।
हमारै बिराली रोब रोब लड़ै कनी.।..."

है[1]। अभिमन्यु वध महाभारत के अनुसार मिलता है। सप्तम द्वार में पहुंचने पर सातों महारथी एक साथ टूट पड़े और जयद्रथ ने अपने बाण से उसको मार दिया[2]।

३.३.४. कृष्ण जन्म का वृतान्त कुछ पात्रों और स्थानों का नाम छोड़कर पौराणिक है। देवकी के छः पुत्रों के मारने के उपरान्त सातवें बालक के जन्म लेते समय सात प्रकार के मेह बरसने लगे। संसार सागर में अन्धकार छा गया। कंस ने जिन नौ लाख नागों, सिंह शार्दूलों एवं सोलह सौ दासियों को नियुक्त किया था उन्हें मोह निद्रा आ गई। भादों की रात्रि में जिस समय यहां कृष्ण का जन्म हुआ उसी समय नंदिनीपुर में नंदमहर के घर एक कन्या ने जन्म लिया। आगे का वृतान्त यथावत् है। उक्त वर्णन में यह अन्तर है कि नंद का स्थान नंदिनीपुर कहा गया है और कृष्ण को देवकी का सातवां पुत्र, जब कि पुराणों में नंद गोकुल वासी थे और कृष्ण देवकी की आठवीं सन्तान।

३.३.५. रुक्मिणी हरण में हरण के पूर्व दोनों को प्रेम में प्रयत्नशील चित्रित किया गया है। कृष्ण याचक का रूप धारण कर कुण्डलीपुर जा पहुंचे जहां रुक्मिणी का पिता भीष्मक राज्य करता था। उसने उनकी लीलाओं की चर्चा सुन कर सोते-जागते, खाते-पीते उन्हीं का यशोगान आरम्भ कर दिया। बाद में जब रुक्म ने बलपूर्वक उसका विवाह शिशुपाल से करना चाहा तो एक ब्राह्मण के हाथ उसने कृष्ण के पास अपना संदेश भेजा और कृष्ण उसका उद्धार करने चल पड़े[3]। कृष्ण का चरित्र

१- देखिये - 'दि गोल्डन बाउ' - जे० जी० फ्रेजर, भा०२, पृ० ७८० ।

२- '.... बाणा की सिस्टी बाधी अभिमन्यू का सिरा,
तीखणी का छूटा रे ड बैकुण्ठाँ का ठाटा ।'

३- आपूं नारायण बाटी लागो गई
मंगायो दारुण स्यबके सारथी पवन को रथ गरुड़ो वाहन
रथ माजी बैठाणी तीन लोकी रे गोविन्द
रुक्मिणी बामण दारुण सारथी बाटो लैमीं ।।

एक रसिक के रूप में सामने आता है जिसका सम्बन्ध ग्राम्य जीवन के साथ है। उनकी प्रणय लीलाएं प्रसिद्ध हैं। गायक रानियों के रसिक और फूलों के शौकीन के रूप में उनका स्मरण करता है। ये प्रसंग पौराणिकता की अपेक्षा उनका नवीन व्यक्तित्व प्रस्तुत करते हैं। नवीन प्रसंगों की कल्पना करते हुए भी पौराणिकता का निर्वाह किया गया है। कृष्ण जन्म, कालिय दमन, गोकुल पूजा, रास-लीला, चीरहरण, पूतना वध, आदि प्रसंग मुख्यत: गाये जाते हैं और प्रणय लीलाओं में राधा की अपेक्षा सत्यभामा और रुक्मिणी को प्रधानता दी गयी है।

३.३.६. राम कथा विषयक प्रसंग अपेक्षाकृत कम हैं। उनके मर्यादापूर्ण जीवन को विस्तार पाने का कम अवसर मिला है। रामावतार, मारीच वध, राम-रावण युद्ध, सीता वनवास आदि कुछ अधिक प्रचलित हैं। मारीच वध के प्रसंग वर्णन में मौलिकता लिए हुए है। सीता एक सामान्य गृहिणी के रूप में चित्रित हुई है। जलाशय में स्वर्ण मृग को बांधने का प्रयत्न करते हुए देर हो जाने पर राम को शंका होने लगती है कि कहीं उसने गागर तो नहीं तोड़ दी या गले का हार तो नहीं खो दिया। कारण की यह उद्भावना गायक ने अपने ही मानसिक स्तर के आधार पर की है। इसलिए ऐसे वर्णनों में एक प्रकार की आत्मीयता का दर्शन होना स्वाभाविक है। जन साधारण को राम और सीता अपने जैसे ही पुरुष नारी प्रतीत होते हैं। यह प्रवृत्ति सभी पौराणिक पात्रों के विषय में एक सी है। राम के राज्याभिषेक के उपरान्त सीता को निष्कासित करने में लोक कल्पना का आधार ग्रहण किया गया है जिसके अनुसार अयोध्या में राम की बहिन के सीता से यह प्रश्न करने पर कि बारह वर्ष रावण की राजधानी में रहते हुए भी वहां के ऐश्वर्य की न तुमने कोई चर्चा की न कोई रहस्य बताया, सीता ने लंका का एक विस्तृत चित्र तैयार किया जिसमें दशमुख रावण का चित्र भी बना ही रही थी कि राम आ पहुंचे। उन्हें सीता के पातिव्रत पर शंका हो गई और तुरन्त लक्ष्मण द्वारा वनवास हेतु भेज दिया।[१]

१- भगवान रामचन्द्र ज्यू की ,बैणियो बात करन पैगे।
बार बरस रयी सीता लंका रै ध्यान भांजा,
अभी बात को वे दिदी त्योंई भेद भी बतायो,
हे भगवान सारी लंका को सीता माता हे चित्र बनै हालो,
तब मैरो सीता है, वे सारी लंका पति को,तस्वीर ऐसी हाला लंका बाराम,
तब बोच बोच बांधा है रावण की तस्वीर देबन फैगे,
रतु बात सुना भाबा रे गया राम चन्द्र स्वामी।....

३.३.७. शिव विषयक आख्यान भी कम मिलते हैं । इसका कारण अन्य गाथाओं के साथ इन आख्यानों का घुलमिल जाना है । दक्ष प्रजापति का विध्वंस कामदेव भस्म, बाणासुर और भस्मासुर के वृत्तान्त अधिक प्रचलित हैं । कहीं-कहीं शिव-पार्वती का स्मरण वर-वधू के रूप में किया गया है और वे हिमालय वासी तथा अनेक तांत्रिक शक्तियों के भण्डार कहे गये हैं । शिव का स्वभाव प्रायः गम्भीर दिखाया गया है किन्तु मनोविनोद भी मिश्रित है । वे पार्वती के साथ हास-परिहास करते हैं और त्रिया हठ पर व्यंग्य करते हैं । एक बार संसार भ्रमण की इच्छा होने पर शिव गौरा पार्वती से कहते हैं कि तुम नीलकण्ठ हिमालय में बैठी रहना किन्तु पार्वती हठ पूर्वक साथ चलने को उद्यत हो जाती है । भ्रमण करते-करते दोनों ~~[illegible]~~ अलख वन में पहुंचते हैं जहाँ मक्खी तक नहीं भनकती । गौरा हड्डियों का समूह देख कर घबड़ा उठती हैं । इस अवसर पर शिव जी हंसते हुए कहते हैं कि संसार में ऐसी लीलाएं तो नित्य प्रति होती हैं।[१] यह वृत्तान्त लोक कल्पना पर आधारित है ।

३.३.८. चौबीस अवतारों से सम्बन्धित आख्यानों की रूपरेखा मुख्यतः पौराणिक है । कहीं-कहीं प्रसंगों, घटनाओं और स्थानीय नामों के विषय में लोक कल्पना स्वाभाविक रूप से सक्रिय मिलती है । वाराहावतार, नृसिंहावतार, वामन अवतार आदि इसी प्रकार के आख्यान हैं ।

३.३.६. इस प्रकार अपौराणिक गाथाएं प्रायः पुराणों का आधार लेकर प्रकट हुई हैं । लोक रुचि तथा वातावरण के अनुसार प्रसंग कल्पना प्रसूत भी हैं, जिनसे आख्यानों में स्वाभाविकता ही आयी है ।

१- गरेणा घाटा लागि गया गुरु महादेव,
अधिक रे न्हे मैं कंन औ गौरा वे माता,
जाना जामा न्हे वहै अलख वन माजा,
जां माखी भी भड़ली कानो बड़ली,
गौराज्यौ नवर लागी अलख वण माजा,
एक हाडूं की कोपल मांज गौरजा की नजर,
सुण मेरी गौरजा देखदि तैं तमासा ।।

३.४. वीर गाथाएं

३.४.१. वीर गाथाओं के अन्तर्गत स्थानीय वीरों की युद्ध तथा शौर्य सम्बन्धी गाथाएं आती हैं। इस प्रकार की गाथाओं के लिए यहां 'भड़ौ' शब्द का प्रयोग किया जाता है। 'भड़ौ' मूलतः भट या भड़ शब्द है। भड़ौ गाथाओं का समय प्रायः ग्यारहवीं शताब्दी से लेकर अठारहवीं शताब्दी तक ज्ञात होता है क्योंकि इन गाथाओं में आने वाले वर्णन उसी काल के राजाओं अथवा वीरों से सम्बन्ध रखते हैं। वीरों के लिए 'माल' या 'मल्ल' शब्द भी प्रयुक्त हुआ है। कुछ स्थानीय शासकों के साथ मल्ल शब्द संयुक्त है। डोटी के राजाओं ने हरिमल्ल ने राजा रुद्रचन्द को हराया था। सम्भवतः मल्ल शब्द का सम्बन्ध 'मालवा' प्रदेश से हो। भाबर का प्रदेश अब भी 'माल' नाम से जाना जाता है।

३.४.२. वीर गाथाएं प्रमुखतः कत्यूरी तथा चन्द राजाओं से सम्बद्ध हैं। कत्यूरी शासकों में 'धाम शाही' और 'बरम शाही' आदि के वृत्तान्तों से उनके राज्य तथा शौर्य का परिचय मिलता है। 'बरम शाही' को खिमसारी हाट में रहने वाला कहा गया है जिसकी अनेक पत्नियां और रानियां थीं, विशाल सेना थी, और मनोरंजन के लिए वेश्याएं थीं।[1] एक गायन में बरम शाही का चम्पावत के राजा से युद्ध वर्णित है। धाम शाही, बरम शाही ने चम्पावत के राजाओं ठोरचंद, मानचंद को जब कर देना बन्द कर दिया तो उन्हें कत्यूरगढ़ छोड़ देने की आज्ञा हुई। फलतः 'अवाखो-सेरा' में दोनों का युद्ध हुआ। चंदों की सेना में मुगल पठान थे किन्तु बरम शाही ने ठोरचंद को मार कर अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। कत्यूरों के 'भड़ौ' बहुत कम मिलते हैं। चन्द राजाओं में हर्ष चन्द, रतनचन्द, विक्रम चन्द, भारतीचन्द

१— 'खिमसारी हाट रौंसी लिए औंरो पाट
अवारो अवाई चौथो हुवाई
— — —
राजा बरमा की नारिका बारिका
मी सैना रौतेली इनका पांचर।....'

और ज्ञानी चन्द के 'भड़ौ' अधिक प्रचलित हैं। ये सभी इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। ज्ञानीचन्द एक वीर पुरुष था। नीलू कठायत, कुंबोपाल, कीर्तिपाल, सौनूं बिरमू जैसे वीरों के नाम उसके साथ मिलते हैं। कुमाऊं में सन १३७४ से १४१९ तक ज्ञानीचन्द ने राज्य किया[1]। जन श्रुति के अनुसार मुहम्मद तुगलक के साथ शिकार खेलते हुए उसने वीरता प्रदर्शन के कारण 'गरुड़' की उपाधि प्राप्त की। अन्य चन्द राजाओं में भारतीचन्द विशेष उल्लेख्य है। वह लोकप्रिय, साहसी, वीर तथा चरित्रवान राजा था। उसके 'भड़ौ' में मल्ल वंशजों के साथ युद्धों का वर्णन है जो बमशाही के नाम से पिठौरागढ़ के इलाके में प्रभुत्व जमाये हुए थे। रतनचन्द के 'भड़ौ' में डौटी के रैका राजाओं के साथ युद्धों का वर्णन है जिनको उसने अपने अधीन किया।

३.४.३. कत्यूरी और चन्द राजाओं के अतिरिक्त दूसरे जातीय वीरों की गाथाएं हैं जिनमें 'ककड़वा रौत', 'रामी बौर', काछु कठैड़ी, 'भोना कठैत', 'पत्ता रौतेला', 'पत्नु दौराल', रतवा फड़त्याल आदि उल्लेखनीय हैं। 'रानी रौत' 'हलकौल' आदि के नाम भी लिए जा सकते हैं। इनमें से कुछ लोग ऐतिहासिक घटनाओं से सम्बन्ध रखते हैं और कुछ मिथक संघर्ष प्रमुख हैं । इन गाथाओं में संघर्ष प्रमुख है। संघर्ष का कारण पारस्परिक रागद्वेष अथवा प्रेम सम्बन्ध रहा है। दोनों स्थितियों में दर्प एवं वीरोल्लास के दर्शन होते हैं। 'अजू बफौल का वृत्तान्त इसी प्रकार का भड़ौ है। अजू बफौल भारतीचन्द का समकालीन था। भारतीचन्द ने अपनी रानी के कहने में आकर बफौली कोट में आग लगवा दी। वहां का गढ़पति नथू बफौल सौते हुए मर गया। उसकी पत्नी दुदुकैला अपने पुत्र अजुवा बफौल को साथ लेकर अपने भाई पिरमा बहरो के यहां बहौरो कोट चली गई और जैसे तैसे दिन व्यतीत करने लगी। पिरमा बहरो की पत्नी को यह असह्य हुआ। इसलिए अजुवा बफौल के एक दिन यह कहने पर कि मैं जंगल में निश्चिन्तता पूर्वक जाकर अपने मामा को भोजन दे आऊंगा, उसने ताना दिया कि ऐसे ही वीर पुत्र होते तो अपने बफौली कोट में रहते। कायर होने पर ही हमारे बहौरो कोट

१- देखिये - कुमाऊं, राहुल सांकृत्यायन, पृ० ७८।

में आकर टुकड़े टुकड़े के लिए तरसे । वीर पुत्र उसे कहते हैं जो अपने पिता की थात का उपभोग करते हैं । बात अजुवा बफौल को लग गई । क्रोध में लाल होते हुए अपनी माता के पास आकर इस विषय में पूछताछ की और तथ्य ज्ञात होने पर बदला लेने के लिए चल पड़ा । बफौली कोट में आकर उसने हल चल मचा दी । मार मार कर सब मैदान कर दिया और वहां अधिकार कर लिया । राजा को जब इसकी सूचना मिली तो उसने अपने चार मल्लों के साथ युद्ध करने के लिए बुलाया । अजुवा बफौल ने सर्व प्रथम अपने पिता की सूर्यवंशी घोड़ी को वश में किया और तब भारतीचन्द के यहां जा पहुंचा। चारों मल्लों को ललकारा । तीन दिन, तीन रात लड़कर पूर्व दिशा के मल्ल को मार गिरायाऔर इतने समय में पश्चिम दिशा के मल्ल को । उत्तर दिशा के मल्ल ने उसे वीर मानते हुए हार मान ली और दक्षिण दिशा का मल्ल भागते-भागते यह कह गया कि बीस वर्ष पश्चात किसी साथी को लेकर युद्ध करेगा[१] ।

२.४.३. उक्त गाथाओं में वीरत्व प्रदर्शन के प्रेम मूलक अनेक प्रसंग मिलते हैं । उदाहरणतः 'रूकहित' का यहां उल्लेख्य है । इसके मूल में सात भाभियों का एक व्यंग्य वचन था । भाभियों ने रूकहित को पक्षियों का शिकार करते हुए देखकर कहा कि तुम कितने मूर्ख हो, यदि वीर पुत्र हो तो सिखवा कोट से सिखवालली को विवाह करके ले आओ[२] । माता ने कितना ही समझाया कि तुम मेरे एक मात्र

१- पुरबिया माल तय्यार है गोछ, लड़नै लड़नै तीन दिन तीन रात ।
तिसारा रात रात मांझी पुरबिया माल मारो,
तीन रात पछिमिया माल मारो,।
उतरिया माल दगड़ि बब भयो ठाडा मोड़ ।
सुणि ले रे माल के कसूं त्वी कणी .
बीस साल भाजी फिरि आयणो ज्वाड़ बणी बेर,
त्यूंलो पै तेरो म्हारो फिरि लड़ै होली ।

२- बब पुतब गंवार तु रे रूक हिता ।
मरद को ब्याल सुनै त्यूनी डोल बधो,
सुपिया का कोट छली सिखुवा छली ।

पुत्र हो , वहां से लौट कर कोई नहीं आता आदि किन्तु वह नहीं माना, मक्खन जैसे स्वच्छ शरीर में भभूत लगाकर योगी बन गया और अंगूठी द्वारा एक दासी की सहायता से उसके महल में आ पहुंचा । गुप्त वेश में ही उसे साथ लेकर शत्रुओं के बीच होते हुए वह रात दिन एक करता हुआ लौट आया और भाभियों से बोला कि देखो मैं वीर पुत्र हूं — सिलवा लखी का डोला लेकर आया हूं[1]।

३.४.४. यहाँ अर्थात वीर गाथाओं में अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन प्रायः सर्वत्र मिलते हैं । इनके अनुसार वीर लोग नौ नौ मन का हंसिया, टोपी पर बोझ का घसिला और जेबों में दो मन अनाज लेकर चलते थे । घाड़ियां कुएं के समान स्वर्ग में और पानी के समान पाताल में चली जाती थीं । युद्ध भूमि में रक्त की ऐसी नदियां बहती थीं कि पनचक्की चलाई जाती थी । ५: वर्ष के बालक वीर गाय भैंसों को एक गट्ठर में बांध कर अपने कंधे से लटका लेते थे । रतनुवा वीर धरती के समान चौड़ा, आकाश के समान ऊंचा था । जब स्वर्ग की ओर देखता था तो भेद देता था और जब धरती में चलता था तो धरती छिलने लगती थी[2]। इसी प्रकार के अतिरंजनापूर्ण वर्णन यहाँ में मिलते हैं । सारी भूमि नष्ट भ्रष्ट कर देना, क्रोध में आकर नागिणी का गर्व तोड़ देना जैसे वर्णन भी इनमें समाविष्ट हैं ।

३.४.५. उक्त स्थानीय वीर गाथाओं से सामाजिक स्थितियों, मान्यताओं, रीतिरस्मों, आदि पर प्रकाश पड़ता है । भोजन बनाने, भोजन के लिए बैठने ।

१- प्यार भौजियो वो खाता भौजियो
राणी को निवास तुमर कूटी मल जालो
मरदा को ब्यल छियो मैं लखो को डुवाला ल्यावूं
ज्यूनो मैं को क्येल छियू मैं घर लौटि आयूं ।।

२- रतनुवा मड छियो धरती क्नू चौड़
आसमान क्नू उच्च छियो
सरग चांही सरग भेद लगौंछी
धरती में छिटन हो धरती छिलन हो ।।

आदि के विशिष्ट विधान होते थे । छत्तीस प्रकार ज्यौनार, भोजन में सम्पूर्ण घी का पीपा, चिकना दही, गाबा, रबड़ी आदि इसी प्रकार के वर्णन हैं जिससे इन पदार्थों की प्रभूत मात्रा की ओर संकेत मिलता है । युद्ध के लिए वीर गण विशेष प्रकार के वस्त्र धारण करके ढाल, तलवार, और कटार से सुसज्जित होकर प्रयाण करते हैं । स्त्रियां घाघरा, पिछौड़ी, अंगिया, कंचुली, हाथों में पौंची, कानों में मोती दस अंगुलियों में जोड़ अंगूठियां आदि धारण कर अपना श्रृंगार करती हैं । उद्देश्य पूर्ति के लिए जोगी का वेश बनाने का प्रयत्न प्राय: मिलता है । नायिकाओं का वर्णन विलास मूलक है । विवाह तथा विषय मूलक आदर्श साधारण कोटि के चित्रित हुए हैं । प्रेमी अपने हठ को पूरा करने के लिए सब कुछ करने को उद्यत हो जाता है । इस प्रकार के चित्रणों में वीर के साथ श्रृंगार का भाव अनिवार्यत: लगा हुआ मिलता है ।

२.४.१. लोक गाथाओं के उपर्युक्त विवेचन से प्रकट होता है कि इनके रचयिता अज्ञात हैं और इनके आरम्भ होने के समय में भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है । अलिखित होने के कारण समय समय में इनके रूपों में अन्तर तथा वृद्धि होती रही है । मूल पाठ के अभाव में इनकी प्रामाणिकता पर भी अभी तक विचार नहीं हो सका है । उक्त लोक गाथाओं के साथ संगीत का तात्पर्य भी रखता है और गायन पद्धति में लोक गायक का विशेष कौशल प्रकट होता है । प्रसंग और परिस्थिति के अनुसार वह गाथा को बढ़ा घटा और नया रूप भी दे सकता है ।

— o —

४

लोक-कथा

लोक कथा

४.०. लोक कथाओं की प्रवृत्ति लोक गाथाओं से भिन्न है । लोक गाथाओं में विस्तार पाया जाता है, जब कि लोक कथाएं संक्षिप्त होती हैं । लोक गाथाओं में एक ही गाथा के साथ विभिन्न कथाएं अंग बनकर आती हैं । लोक कथा में एक ही कथा रहती है । गाथा में कल्पना के साथ ऐतिहासिक तत्व भी रहता है । कथा पूरी तरह कल्पना के आधार पर गढ़ी होती है । इस प्रकार भी होता है कि ऐतिहासिक सत्य लोक गाथा से क्रमश: लुप्त होता हुआ लोक कथा में बिल्कुल लुप्त हो गया है । लोक-गाथाओं के विषय ऐतिहासिक पुरुषों के चरित्र हैं और वे प्राय: वीरकाव्यात्मक हैं । ये पद्यात्मक शैली के प्रबन्ध गीत हैं । इनसे स्थानीय इतिहास पर प्रकाश पड़ता है । लोक कथा में मनोरंजन का उद्देश्य रहता है और शिक्षा देना भी इनका अभिप्राय है । इनमें उपस्थित चूहे, बिल्ली, लोमड़ी, शेर, कौआ, सर्प आदि भी अपने कार्यों द्वारा बुरी बातों से सावधान तथा भली बातों के प्रति सम्मान का भाव उत्पन्न करने में सहायक होते हैं । विषय की दृष्टि से विवेच्य क्षेत्र की लोक कथाओं को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :-

(क) धार्मिक कथाएं

(ख) प्रेम और साहस परक कथाएं

(ग) उपदेशात्मक कथाएं

(घ) भूत, प्रेत, और परियों की कथाएं

(ङ) ऐतिहासिक कथाएं

(च) अन्य कथाएं ।

४.१. धार्मिक कथाएं

४.१.१. विवेच्य अंचल, आधुनिक सभ्यता के मध्य भी, अब तक धार्मिक भावनाओं से ओत प्रोत है । स्त्रियों की तो हर क्रिया धर्म सिद्धान्तों द्वारा संचालित है । वस्तुत: यहां लोक मानस में धर्म के प्रति श्रद्धा और विश्वास का भाव पूर्णत: भरा हुआ है ।

संकट में भी धर्म का निर्वाह कर्तव्य समझा जाता है। जप, तप, ज्ञान, श्रवण, सभी का आश्रय ग्रहण किया जाता है। पर्वत कंदराओं, जल प्रवाहों के संगमों, ग्राम ग्रामों में सर्वत्र ही धार्मिक स्थल बने हुए हैं। सार्वजनिक धार्मिक स्थलों के अतिरिक्त घर घर में धार्मिक वेदियां प्रतिष्ठित हैं। किसी न किसी रूप में सभी जातियां धार्मिक प्रक्रियाओं से सम्बद्ध हैं। धार्मिक कथाओं के दो रूप मिलते हैं। एक, देव कथाएं तथा दूसरी व्रत सम्बन्धी कथाएं। देव कथाओं में राम, कृष्ण, शिव, शक्ति, सम्बन्धी कथाएं प्राय: सुनी सुनायी जाती हैं। इनका स्वरूप पिछले प्रकरण में उल्लिखित धार्मिक गाथाओं से भिन्न है। उक्त देव पुरुषों के सम्बन्ध में छोटी छोटी कथाएं कही जाती हैं जो मौखिक और गद्यात्मक होती हैं जब कि गाथाएं विस्तृत और प्राय: गीतात्मक होती हैं, देव कथाओं में मौलिकता का अंश प्राय: नहीं रहता है। वे रामायण भागवत आदि प्रचलित ग्रन्थों के आधार पर कही जाती हैं।

४.१.२. इस क्षेत्र में कथा कहने से ही देव या व्रत सम्बन्धी कथा समझा जाता है। इनके अतिरिक्त अन्य कथाएं कहानी कही जाती हैं। भागवत और राम लीला की कथाएं विशेष पर्वों तथा ऋतुओं में कही और सुनी जाती हैं। सत्यनारायण की कथा का भी पर्याप्त प्रचार है। ये कथाएं कथावाचक द्वारा स्थानीय बोली में सुनाई जाती हैं और इसी रूप में लोक मानस में निवास करती हैं। भागवत के विविध प्रसंग छोटी छोटी स्फुट कथाओं के रूप में कहे जाते हैं। श्रीकृष्ण की लीलाओं से संबंधित अंश श्रद्धालु भक्तों को तृप्त करते हैं। रामलीला आश्विन मास की नवरात्रियों में मनायी जाती है। राम चरित्र के विविध अंश स्वतंत्रत: कहे और सुने जाते हैं। उदाहरणत: सीता का उत्पन्न होना, राम जन्म, धनुष यज्ञ, कैकेयी की निष्ठुरता, राम वनवास, सीताहरण, आदि प्रसंग छोटी छोटी कथाओं के रूप में परिलक्षित होते हैं। सत्यनारायण की कथा के अन्तर्गत, लकड़हारे का कथा सुनना, तथा संकल्प करना, मनोवांछित फल पाना, सुख और ऐश्वर्य में भगवान को भूलना, व्यापार के लिए जाना, कष्ट भोगना, धन धान्य को लेकर आना, भगवान की परीक्षा लेना, नारायण से क्षमा याचना करना, आदि प्रसंग मिलते हैं। समृद्धि और सुख सौभाग्य के लिए कहीं प्रतिमास और कहीं साल में एक बार सत्यनारायण की कथा होती है। शिव की कथा अनेक रूपों में परिलक्षित होती है। स्थान स्थान पर शिव के मन्दिर हैं जिनमें से

कुछ 'केदार' नाम से भी अभिहित होते हैं। थलकेदार, बूढ़केदार, पाताल भुवनेश्वर, रामेश्वर आदि स्थानों में इसी प्रकार के मन्दिर हैं जिनके बारे में भिन्न भिन्न कथाएं प्रचलित हैं। इनके अतिरिक्त बस्तियों के निकट शिव मन्दिर हैं। यहां के लोगों का शिव पर विशेष विश्वास है और उनके बारे में अनेक कथाएं कही और सुनी जाती हैं।

४.१.३. शक्ति पूजा का भी पर्याप्त प्रचलन है। अनेक नामों से शक्ति की पूजा होती है। गौरी, पार्वती, दुर्गा, चण्डिका, जयंती, काली, भद्रकाली, उग्रकाली, महाकाली, कौशल्या, उल्कादेवी आदि नाम शक्ति के ही हैं जिनके बारे में पृथक-पृथक कथाएं कही जाती हैं। शक्ति की पूजा के साथ-साथ एक रूप मातृ पूजा का है। आठ देवताओं की आठ शक्तियां मातृ कहलाती हैं और देवी की तरह ही पूजी जाती हैं। विवाह, जनेऊ और अन्य शुभ कर्मों में मातृ पूजा विशेष रूप से की जाती है। अष्टमी की तिथि को शक्ति पूजा का विशिष्ट प्रावधान है। चैत्राष्टमी तथा नवरात्रियों में प्रत्येक देवी के मन्दिर में पूजा उपासना और कथावाचन का नियम मिलता है।

४.१.४. शिव के पुत्र गणेश के सम्बन्ध में अनेक शास्त्र सम्मत कथाएं मिलती हैं। गणेश प्रत्येक शुभ कार्य के आरम्भ में ही सब से पहले पूजे जाते हैं और इनसे निर्विघ्न कार्य की प्रार्थना की जाती है। दही और मोदक का नैवेद्य लगता है।

४.१.५. सूर्य के सम्बन्ध में शक्ति, ज्योति, आयुवृद्धि विषयक अनेक कथाएं प्रचलित हैं। कन्याएं पौष के महीने में प्रत्येक रविवार को सूर्य की पूजा करती हैं।

४.१.६. देव तत्वों -- देवी देवताओं के सम्बन्ध में प्रचलित कथाओं के अतिरिक्त धार्मिक कोटि की कथाओं में व्रत सम्बन्धी कथाएं आती हैं। पूर्णमासी, एकादशी, वैकुण्ठ चतुर्दशी, शिवरात्री, संकट चौथ, सोमवार, मंगलवार, इतवार, शनिवार, सांक्रांति आदि पर्वों एवं दिनों में व्रत कथाएं प्रचलित हैं। प्राय: स्त्री समाज इस ओर अधिक तत्पर मिलता है। उपरोक्त सभी व्रत कथाएं मनाती हैं। विभिन्न देवताओं को अपने त्याग, तपस्या और शरीर को कष्ट देकर मनाया जाता है। व्यावहारिक जीवन की सफलता के साथ किसी निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भी स्त्रियां व्रत लेकर सुख और सौभाग्य को प्राप्त करने की चेष्टा करती हैं। इन व्रतों में श्रद्धा और

विश्वास फलित होकर फल देते हैं और इसी विश्वास को लेकर किसी कामना को ले युवती किसी देवता को प्रसन्न करने के लिए विशेष व्रत लेती हैं। इन व्रतों में विभिन्न उद्देश्यों की कामना की गई है। जैसे सन्तान प्राप्ति का उद्देश्य, अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति का उद्देश्य, सुख समृद्धि का उद्देश्य आदि।

४.१.७. यद्यपि व्रत कथाओं का एक साधारण उद्देश्य सुख,समृद्धि, शान्ति और मोक्ष प्राप्त करना है, तथापि विशेष व्रत कथाओं में शान्ति द्वारा मनोवांछित फल प्राप्ति का विश्वास है। बैकुण्ठ चतुर्दशी में सन्तान प्राप्ति का एक ऐसा ही विश्वास है। इस दिन स्त्रियां शिव मन्दिरों में रात भर घी से भरा दीपक लिए खड़ी रहती हैं। सन्तान प्राप्ति के लिए वे रात भर शिव जी की उपासना करती हैं। पत्नी की तपस्या में पति भी साथ देता है। चतुर्दशी और रविवार व्रत कथा दोनों का भाव सन्तान प्राप्ति है। कार्तिक पूर्णिमा, सोमवार व्रत, संकट चौथ कथाओं का भी यही उद्देश्य है। सौभाग्य की रक्षा के लिए स्त्रियां व्रत लेती हैं। यह भावना लगभग सभी कथाओं में मिलती है। भैया दूज में भाई बहन के प्रेम की मर्मस्पर्शी कहानी है। यहां बहिनें तथा अन्य विवाहित कन्यायें पिता के घर आकर भाई और पिता का सिर पूजती हैं और उनके दीर्घ जीवन की कामना करती हैं। "सिर पूजन" व्यंजनों से होता है जो पवित्रतापूर्वक विशेष प्रकार से तैयार होते हैं। भाई तथा पिता के घर का पुरुष वर्ग लड़कियों को दक्षिणा देता है। शिव चतुर्दशी व्रत को स्त्रियां अपनी मान रक्षा के लिए रखती हैं। इस कथा में स्त्री की मान रक्षा के भाव हैं। इसी भाव से प्रेरित होकर इस व्रत को लेती हैं। विधवा स्त्रियों का जीवन भार स्वरूप होता है। इस लोक में उनके लिए कुछ भी नहीं है जीवन की साध और उमंगें सुहाग के साथ ही चली जाती हैं। परलोक सुधारने की भावना उनमें बलवती होती है। एकादशी व्रत कथा में विधवा स्त्रियों के लिए यही भाव मिलता है। तुलसी की पूजा, परिक्रमा कर वे परलोक सुधारने और मुक्ति पाने के लिए तपस्या करती हैं। एकादशी और निर्जला एकादशी व्रत कथा में कठिन परिश्रम द्वारा मुक्ति की कामना के भाव मिलते हैं। वस्तुतः स्त्रियों द्वारा किये जाने वाले सभी व्रतों की एक-एक कथा है। ये कथाएं उनके व्रत की अंग ही बन गई हैं।

४.१.८. व्रत कथायें किसी वास्तविक जीवन या घटना का चित्रण नहीं जान पड़ती हैं। कल्पना के आधार पर व्रत विशेष का महत्व बतलाने के लिए इनकी रचना की गयी ज्ञात होती है। प्रत्येक कहानी में उस व्रत के करने वाली एक कल्पित स्त्री को कहानी का मुख्य पात्र मान लिया गया है और उस कथा के द्वारा व्रत करने वाली स्त्री को लाभ और व्रत न रखने या आवश्यक नियमों का पालन न करने वाली को हानि बतलाई गई है, उदाहरणत: धर्मराज की कथा में बताया गया है कि एक वृद्धा बड़ी व्रत करने वाली थीं। वह व्रत करते-करते मर गई। जब वह मर कर परलोक पहुंची तब उससे धर्मराज ने कहा कि तू ने सब व्रत किये पर मेरा व्रत नहीं किया, इसलिए तू संसार में वापस जाकर मेरा व्रत कर, तभी तुझे मुक्ति मिलेगी। वह पुन: संसार में आई उसने कार्तिक पूर्णिमा से धर्मराज का व्रत आरम्भ किया। एक वर्ष पूर्ण होने पर एक दिन भगवान ब्राह्मण के वेश में आये। वे गांव के बाहर वृद्धा को मिल गये। उन्होंने वृद्धा से पूछा कि मां तू कहां जा रही है। वृद्धा ने उत्तर दिया कि वह धर्मराज के जोड़े को निमंत्रण देने जा रही है। भगवान ने कहा कि तू मुझे ही निमंत्रण दे दे, मैं वृन्दावन से जोड़े सहित आ जाऊंगा। वृद्धा ने उन्हें निमंत्रण दे दिया। उसका भोजन तैयार होते ही भगवान राधा जी के साथ उसके घर भोजन करने आये। दोनों ने बड़े प्रेम से वृद्धा के घर भोजन किया। भोजन के पश्चात वृद्धा उन्हें गांव के बाहर तक पहुंचा कर अपने घर आ गई। इतने में देव लोक से विमान आया और वह उस विमान में बैठ कर वैकुण्ठ चली गयी। कथा के अन्त में कहा गया है कि धर्मराज जैसे वृद्धा से प्रसन्न हुए उसी प्रकार सब से प्रसन्न हों। कथा का सम्पूर्ण सार इसी अन्तिम कथन में है जिसका कथा से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह एक आशीर्वादात्मक कथन है जिसमें लोक कल्याण की कामना निहित है। इस प्रकार के कथन सभी व्रत कथाओं के साथ रहते हैं।

४.१.६. धार्मिक कथायें चाहे वे देव चरित्रों से सम्बन्ध रखती हों अथवा वे व्रत कथायें हों, इस क्षेत्र में ब्राह्मण और क्षत्री जातियों द्वारा ही प्राय: प्रचलित होती हैं। इनमें भी ब्राह्मण वर्ग स्वभाव से ही प्राय: धार्मिक विचार के रहे हैं। ब्राह्मणों की स्त्रियां व्रत रखने में पहल करती हैं। इस प्रकार की कथाओं का वाचन भी ब्राह्मण

वर्ग ही करता है,यद्यपि खसो जाति के लोग भी इन कथाओं की परम्परा और व्यव-
हार से जानते हैं । शूद्र अथवा शिल्पकार वर्ग के लोगों के भी व्रत-पूजा विधान हैं,
किन्तु उनका कार्य प्राय: उच्च वर्ग की सेवा होने के कारण , पूजा-व्रतों की ओर
उनमें व्यावहारिक व्यापकता नहीं मिलती है । नयी शिक्षा,सभ्यता तथा राजनैतिक
प्रभाव में अब निम्न वर्ग भी उच्च वर्गों के समान आचरण करने में जागरूक है ।

४.१.१०. देव-चरित्रों तथा व्रत-कथाओं— दोनों में शिक्षा और उपदेश का
तत्व भी रहता है । इतना भाव तो प्रत्येक कथा में सन्निहित रहता ही है कि तप,
त्यागऔर संयम का फल उत्तम ही होता है तथा इसके विपरीत आचरण कष्ट का
कारण बनता है । देव-चरित्रों के साथ आदर्श की भावना तथा व्रत-कथाओं में तप,
संयम तथा नियम बद्धता अनुस्यूत रहती है जो समाज को एक विशेष ढांचे में बनाये
रखने एवं मर्यादाओं का महत्व स्वीकारने में सहायक होती है ।

४.२. प्रेम और साहस परक कथाएं

इस कोटि की कथाओं में प्रेम तथा साहस का आदर्श प्रस्तुत हुआ है ।
पर्वतीय जीवन, बस्ती का जीवन कम और जंगलों का जीवन अधिक रहा है ।स्त्री और
पुरुष दोनों ही वर्ग साथ-साथ घर के बाहर काम करते हैं — खेतों में भी और वनों
में भी । वनों में पशुओं को को चराने, लकड़ी तथा घास एकत्र करने का काम होता
आया है । पुरुष की अपेक्षा यहां की स्त्रियां प्रकृति से ही अधिक साहसी हैं ।
जंगलों से बड़े-बड़े बोझ लाना उनका दैनिक कार्य रहता है । भार ढोने के अन्यत्र
साधनों के अभाव में यहां मनुष्य को ही यह कार्य अपने सिर अथवा पीठ पर करना
पड़ता है । जंगलों में अनेक प्रकार के वन्य पशुओं से रक्षित रहने में भी कम साहस का
परिचय नहीं मिलता है । स्त्रियां अकेली दुकेली गहन वनों में निर्भीक: जाती हैं और
सफलतापूर्वक कार्य करके लौटती हैं । पहाड़ों पर खेती करना वैसा ही नहीं है जैसा
मैदानों में । बड़े कठिन परिश्रम तथा साहस से खेती का आरम्भ होता है । पग-पग
पर साहस और शौर्य का प्रदर्शन होता है । पर्वतीय मानव जितना बाहर से साहसी
तथा निर्भीक है, उतना ही अन्तर से कोमल और स्निग्ध है ।

४.२.१. प्रेम यहां प्रणय भावना मात्र नहीं है । प्रेम मनुष्यों का ही परस्पर

स्नेह बन्धन नहीं है। अपितु प्रेम की एक ऊंची भावभूमि का प्रत्यक्षीकरण विवेच्य संभाग में मिलता है। अपने जंगल से, अपने खेतों से, अपने पशुओं से, फल,फूलों और पक्षियों से एक विशेष लगाव यहां के लोक मानस का विशेष भाग ग्रहण करता है। भाई का भाई के प्रति, भाई का बहिन के प्रति, मां का पुत्र के प्रति, मित्र का मित्र के प्रति प्रेम अपनी विशेष गहनता लिए हुए मिलता है। इस प्रेम के सम्बन्ध में विविध कथाएं कही और सुनी जाती हैं। उदाहरण रूप में ऐसी अनेक कथाएं प्रचलित हैं जिनके अनुसार वन के प्रति इतना लगाव कुछ व्यक्तियों का हो जाता है कि वे वन छोड़ कर घर नहीं आते हैं, पक्षियों के प्रति लगाव प्राणों तक की भी परवाह नहीं होने देता है। पशुओं और मनुष्यों के प्रति तो बात ही भिन्न है। पशुओं को रोग या कष्ट होने पर प्रेमी जनों की भांति दु:खी होना,सब कुछ करने को उद्यत होना, यही भाव प्रकट करते हैं। पर्वतीय जीवन प्रिय जन के प्रवास से पीड़ित जीवन है। जीविका के लिए पुत्र को, पति को, भाई आदि प्रिय जनों को छोड़ कर परदेश जाना पड़ता है और उनके विरह में खूब तड़पन होती है। पर्व और त्योहारों में रुलाई आती है, गुण गाये जाते हैं, मनौती होती हैं आदि। इन प्रसंगों को लेकर भी अनेक कथाएं कही जाती हैं और अपनी ही जैसी स्थिति कहानी के पात्रों की सुनकर संतोष किया जाता है और प्रेरणा ग्रहण की जाती है। एक कहानी में मां अपनी पुत्री के वियोग में दु:खी है। उसकी पुत्री श्रावणी के त्योहार के दिन नहीं आई है जब कि सब की लड़कियां आती हैं। वह सब कुछ छोड़ कर यही सोचती रहती है कि पुत्री क्यों नहीं आई। इतने में उसे सूचना मिलती है कि इस बार उसकी पुत्री नहीं आयेगी। इस मां पुत्री को सामने पाने के लिए तड़फड़ा उठती है और अपनी व्यथा दूसरों से कहती है उसके दु:ख को हल्का करने के लिए उससे एक कहानी कही जाती है " कि एक राधिका नाम की लड़की थी। उसकी मां का नाम गांगुली था, वह प्रातः उठ तो गई किन्तु उसका किसी काम में मन न लगा। उसकी हंसी चली गई। क्योंकि उसने पहले दिन रात में बुरा स्वप्न देखा था और प्रातः उठने पर बुरे शकुन हुए थे। उसे अपनी राधिका की फिकर लग गई। राधिका के बिना वह वैसे ही मुश्किल से जी रही है। यदि उसको कुछ हुआ तो पुत्री वियोग को वह सहन नहीं कर सकेगी। मां राधिका के पिता से कहती है कि राधिका जीवित है या नहीं ?

वह राधिका के पिता को राधिका की खबर लेने भेजती है । पिता जाते हैं । राधिका ससुराल में नहीं मिलती है । ननद से ज्ञात होता है कि राधिका को क्रूर सास ने मार डाला है । पिता के हृदय की जो स्थिति हुई वह अवर्णनीय है ,माता के हृदय का तो कहना ही क्या ? इस प्रकार की कथाएं सभी सम्बन्धों को लेकर रची गई हैं और अभी तक इनका निवास लोक मानस में ही है ।

४.२.२. प्रिय पात्र की प्रसन्नता के लिए किए गए साहसपूर्ण कार्यों से संबंधित कहानियां सभी वर्गों द्वारा परिचालित होती हैं । इनके अतिरिक्त स्वतंत्र साहसपूर्ण कार्यों का कल्पित उल्लेख भी मिलता है । इनमें बहुत बड़े-बड़े पत्थरों को अकेले उठा देना, पर्वत शिखरों को तोड़ देना, एक साथ कई शेरों से लड़कर विजयी होना, आदि आशय वाली कहानियां सम्मिलित की जा सकती हैं । जंगली पशुओं को सामने देख कर भयभीत होना यहां का निवासी नहीं जानता है अपितु वह साहस और युक्ति से अपनी रक्षा करता है । मालू जिसके मुख पर भी बड़े-बड़े बाल होते हैं, पहाड़ पर चढ़ाई की ओर शीघ्रता से भागता है और नीचे उतार या ढाल की ओर आंखों के आगे बाल आ जाने के कारण धीमी गति से चलता है । उससे बचने के लिए ऊंचे-ऊंचे स्थानों से कूद पड़ना या लुढ़ककर नीचे जाना सभी का कार्य नहीं है । भयंकर पर्वतीय मार्गों और कन्दरों की कहानियां एक ओर रोमांच उत्पन्न करती हैं , दूसरी ओर साहस । पर्वतीय नदियां जब वर्षा में उमड़ती हैं, उनको पार करना बड़े साहस का काम रहता है । केवल तैरने की कला ही उसके लिए पर्याप्त नहीं है । प्राणों का खतरा बना ही रहता है । इस प्रकार के कार्यों से संबंधित कहानियों को पर्वतीय जन बड़ी रुचि से सुनते सुनाते हैं । वस्तुत: साहस पर्वतीय जीवन का स्वभाव और प्रकृतिगत विशेषता है । हर पग पर,हर क्षण साहसपूर्ण उदाहरण और कथाएं इनका पथ प्रदर्शन करती हैं ।

४.३. उपदेशात्मक कथाएं

४.३.१. इनमें पशु पक्षियों से संबंधित कहानियां प्रमुख हैं । पशु पक्षियों को माध्यम बना कर पंचतंत्र की कथाओं की तरह नितिकथ्य संभाग में कहानियां मिलती हैं।

पशु तथा पक्षी दोनों से संबंधित कहानियों का उद्देश्य उपदेशात्मक रहता है । इनमें घुघुति[1], कौवा, टिटिरी, या तितीरी[2], कठफोड़, मल्यो, स्याल[3], हाथी, बाघ[4], हिरन, मुसो[5], बिराउ[6], आदि से संबंधित कहानियां प्रचलित हैं ।

४. ३. २. पक्षियों की कहानियां छोटी हैं किन्तु इनमें शिक्षा का अनोखा पुट मिलता है । शिक्षा या उपदेश का तत्व होते हुए भी इनको रुचि से सुना जाता है । घर-घर में बूढ़े बच्चे सभी इन्हें सुनते हैं । लालच और धोखा बुरी चीज है । लालच के कारण ही एक बहिन को शाप मिला और वह चोली[7] बनकर आसमान में घूमती है । "सर्ग ददा पानी पानी"[8] पुकारने पर भी उसे पानी नहीं मिलता है । दोनों बहिनें खलिहान में बैलों के साथ काम में थीं । पिता ने बैलों को पानी पिलाने के लिए कहा और साथ ही जल्दी बैल को पानी पिलाने वाली को खीर खिलाने का वायदा किया । दोनों अलग-अलग बैलों को लेकर चलीं । एक सोचती है क्यों न बैलों के पैरों को पानी से भिगोया जाय और खीर खाई जाय ? खीर के लालच में वह बैल के पैरों को भिगोकर बिना पानी पिलाये ही लौट आती है । लौट कर खीर खाती है । बैल खलिहान में जोता जाता है । प्यास के कारण वह दम तोड़ देता है और लड़की को शाप देता है कि "तू भी पानी के लिए तड़प कर मरना" । बैल की असंतुष्ट आत्मा से निकली आवाज के कारण लड़की की मृत्यु हो जाती है । मरकर वह चोली पक्षी बनकर पानी के लिए पुकारती है किन्तु मुख में बरसते पानी की बूंद भी नहीं जाती है । बुरे काम का परिणाम बुरा

१- कबूतर की जाति का एक पक्षी ।

२- कबूतर की ही तरह का एक पक्षी ।

३- सियार ।

४- बाघ + बघेर नर और मादा ।

५- चूहा ।

६- बिल्ली ।

७- चातक ।

८- आसमान भाई मुझे पानी दे— चातक पुकार ।

होता है । ठीक हित को देखते हुए अच्छे कार्य करने चाहिए । कौआ और कोयल की कहानी में फैसला बदलने वाला राजा जीवन भर पश्चाताप की अग्नि में जलता है । उसे शान्ति नहीं मिलती है । कोयल कौए के घोंसले में अपने बच्चों को रख देती है । कुछ दिन बाद कोयल अपने बच्चों को मांगती है । दोनों में झगड़ा होता है ।वे राजा के पास न्याय के लिए पहुंचते हैं । राजा दोनों की बात सुनते हैं और कोयल के बच्चों क को लौटाने का फैसला सुनाते हैं लेकिन कौआ अपने पंखों पर स्वर्ग दिखाने का लालच देता है । राजा लालच में आकर अपना फैसला बदल देता है । वह कौए की पीठ पर बैठ कर स्वर्ग पहुंचता है । स्वर्ग में वह अपने मित्रों को नर्क में देखता है । पितरों से इसका कारण पूछता है । वे इसका कारण उसके द्वारा अन्याय करने का पाप बताते हैं । राजा दु:खित होता है और जीवन भर पश्चाताप की अग्नि में जलता रहता है । सामूहिक प्रयत्न और सहयोग से असाध्य कार्य भी संभव हैं । व्यावहारिक जीवन में इनकी बड़ी उपयोगिता है । एक साधारण चिड़िया भी हाथी जैसे जानवर से सहयोग और सहायता के सहारे बदला लेती है । चिड़िया और हाथी की कथा इसी उद्देश्य से मिलती है । चिड़िया का घोंसला हाथी द्वारा रौंदा जाता है । चिड़िया,कठफोड़, मेंढक और मक्खी से सहायता मांगती है । तीनों चिड़िया की सहायता के लिए चलते हैं । मक्खी हाथी के कान में गुनगुना कर उसे सताती है । कठफोड़ उसकी आंखों को फोड़ देता है । उसे पानी ढूंढते हुए देख कर मेंढक गड्ढे में गिरा देता है । चिड़िया अपने सहयोगियों की मदद से हाथी से बदला लेने में सफल होती है । तृष्णा तृप्ति के लिए आत्मा भटकती रहती है । " काफल पाको मोले नो चाखो"[1], " भाई भुक्को"[2] आदि ऐसी ही उपदेशात्मक कथाएं हैं जिनमें असन्तुष्ट आत्माएं परितुष्टि हेतु पक्षी के रूप में अपना असंतोष व्यक्त करती हैं ।

४.३.२.१. बीमार भाई अपने भाई को आते देखकर खाना तैयार करने को कहता है । कहते ही वह बेहोश हो जाता है । थोड़ी देर में उसकी मृत्यु हो जाती है ।उसकी मृत्यु के साथ ही उसकी आत्मा का असंतोष चला जाता है । " भाई भुक्को"- भाई भुक्को" कहता हुआ पक्षी आज भी घूमता है । मां सौतिया बेटी पर चोरी लगाती

१- "काफल पक गये हैं पर मैंने उसे नहीं चखा"-- इस नाम की एक कथा ।
२- " भाई भूखा है" नामक कथा । इसका अर्थ है भाई भूखा है ।

है । उसके काफल घट जाते हैं[1] । वह सौतिया बेटी को मार देती है । सौतिया बेटी अपने प्रति किए गए अन्याय के प्रति असंतोष के कारण पक्षी का रूप धारण करती है और काफल पाको मिठैनी चाखौं द्वारा अपना स्पष्टीकरण देती है । दूसरे दिन सौतिया माँ अपनी बात अपनी सहेली से कहती है । सहेली काफल घटने का कारण बताती है । माँ अपने किए पर पछताती है । उसकी आत्मा में असंतोष घर कर लेता है और वह जीभ काट कर मर जाती है । मर कर वह पक्षी बनती है और सतर माना (माप की एक इकाई) पुरै पुरै[2] कहती हुई अपनी आत्मा का असंतोष व्यक्त करती है ।

४.१.२.२. टिटी और समुद्र की लोक कथा एक दृढ़ संकल्पी का संकल्प है जिसके सामने समुद्र को भी झुकना पड़ा । समुद्र ने ज्वार भाटे के बहाव में टिटी का घोंसला बहा दिया । इससे पक्षी बड़ा दु:खी हुआ । वह एक एक बूंद पानी उठाकर सूखे मैदान में छोड़ने लगा । समुद्र उसके ऐसे संकल्प को देख कर विचलित हुआ और उसने अपने बहाव द्वारा टिटी के घोंसले को अण्डों सहित पानी से बाहर फैंक दिया । इस प्रकार की अनेक कहानियाँ प्रचलित हैं ।

४.१.३. पशुओं की कथाओं में सब से अधिक सियार से संबंधित कथाएं मिलती हैं । सियार बड़ा चालाक तथा मक्कार दोनों ही माना जाता है । सियार अपनी चातुरी से अन्य पशुओं को खूब छकाता है अन्य पशुओं में कुत्ता, बाघ, भालू, बकरी, हाथी, चूहा, बिल्ली और सर्प प्रमुख हैं ।

४.२.३.१. एक लोक कथा के अनुसार एक बार एक सियार भूखा था । वह एक भैंस को अच्छी अच्छी घास का लालच देकर पर्वत के ऊंचे भाग पर ले गया , वहाँ उसने भैंस से नीचे की ओर झुक कर घास चरने को कहा । नीचे पैर रखते ही भारी शरीर वाली भैंस फिसल कर गिर पड़ी और मर गई । सियार ने बड़े चाव से उसका मांस नोच खाया । इसी प्रकार "सियार और हाथी" नामक कथा में एक हाथी लालच में

१- काफल सूखने पर घट जाते हैं ।

२- सतरह माने (एक माप) काफल पूरे हो गये थे कहती है ।

आकर सियारों की मक्कारी का शिकार होता है। सियारों का एक झुण्ड हाथी के पास गया और बोला, कि महाराज हम यहीं पर आपके लिए हरी हरी घास लेते आयेंगे, आप हमारे राजा हैं, हमें हुक्म दीजिये, हाथी सियारों के चक्कर में आ गया। सियार हरी हरी घास लेकर रोज हाथी के पास पहुंचा आते। एक दिन वे कोमल घास लेकर आये। हाथी को घास बहुत अच्छी लगी। हाथी को ललचाया देख कर सियार बोले महाराज स्वयं चलिए और जी भर खाइये। हाथी सियारों के साथ चल दिया और वे उसको दल दल की ओर ले गये। हाथी घास खाने में मस्त होकर दलदल में फंस गया। सियार हाथी को ऊपर उठाने लगे किन्तु हाथी अपने भारी शरीर के कारण डूब गया। मक्कार सियारों ने हाथी के मांस को खूब खाया। "तितरा और सियार" की कथा में अपनी मक्कारी के कारण सियार को बुरा परिणाम भी भोगना पड़ा है। तीतर ने सियार को खूब हंसाया। हंसते-हंसते सियार का पेट फूल गया. तो वह रोने की बात कहता है। तितरा रुलाने के लिए मना करता है। सियार मना करने पर भी नहीं मानता। तितरा सियार को एक झाड़ी में छिपने को कहता है। स्वयं फुदक फुदक करता हुआ वह एक कुत्ते के सामने आ जाता है। कुत्ता तितरे के पीछे दौड़ता है। तितरा झाड़ी की ओर बढ़ता है। झाड़ी में उसे सियार मिलता है। कुत्ता तितरे को छोड़ कर सियार पर झपटता है और उसे खूब नोच डालता है। हार कर सियार तीतर से रक्षा की याचना करता है। तीतरा पुनः कुत्ते के सामने फुदकता है। कुत्ता सियार को छोड़कर तीतर पर झपटता है। सियार मौका पाकर भाग जाता है। तितरा उड़ कर सियार के पास आता है और उससे रोने का कारण पूछता है। इसी प्रकार "हिरण, कौवा और सियार" की कथा में अपनी मक्कारी के कारण सियार पर कुल्हाड़ी की चोट पड़ती है।

५.३.३.२. स्वामिभक्ति और बुद्धिमानी के लिए कुत्ता प्रसिद्ध है। लोक कथाओं में उसको इसी रूप में स्थान मिला है कुत्ते के बारे में कहा जाता है कि वह प्रार्थना करता है कि घर में उसके स्वामियों की संख्या बढ़े जिससे उसको अधिकाधिक भोजन के ग्रास मिलें[१]। ईमानदार कुत्ता अपने स्वामी के लिए प्राणों की आहुति तक दे देता है।

१- विवेच्य पर्वतीय अंचल में भोजन का समय होने पर कुत्ता द्वार पर बैठ जाता है और जब प्रत्येक व्यक्ति भोजन करके बाहर आता है तो उसके लिए एक ग्रास बचा हुआ भोजन लाता है। कुत्ता तब तक बैठा रहता है जब तक परिवार के सब व्यक्तियों से उसका भाग नहीं मिल जाता है।

बड़ी तत्परता से घर की रखवाली करता है । पर्वतीय प्रदेशों में बस्तियों में बाघ भालू आदि जंगली जानवर आते हैं । बाघ गोठ(गोशाला) में से गाय या बछड़ों को मार कर खा जाता है । कुत्ता बाघ तथा भालू से मालिक को सावधान करता है , और यथासम्भव इन जानवरों का सामना करता है । एक कथा के अनुसार एक गांव में एक बड़ा बाघ आता था और कभी किसी का और कभी किसी का पालतू पशु गाय , बछड़ा, बकरी आदि मार कर खा जाता था । एक दिन वह उस घर के गोठ में(पशुशाला) घुसा जिस घर में एक कुत्ता था । कुत्ता भी बड़ा हृष्ट पुष्ट था । दरवाजे पर बाघ की आवाज सुनते ही कुत्ते ने भौंकना शुरू किया । बाघ ने उस पर ही आक्रमण कर दिया क्योंकि बाघ कुत्ते को भी अपना शिकार बनाता है । कुत्ता बहादुरी से लड़ा और घायल अवस्था में किसी प्रकार वह उस दरवाजे पर धक्का लगा देता है जिसके अन्दर परिजन सोये होते हैं । इस पर मालिक जागता है और शोर करके बाघ को भगा देता है । किन्तु कुत्ते की मृत्यु होती है और उसके विरह में स्वामी आत्महत्या कर डालता है । एक अन्य कथा में एक चालाक कुत्ता अपने मालिक की स्वामिभक्ति का परिचय देकर इनाम सहित जब वापस लौटता है तो धोखे में अपने पुराने मालिक द्वारा मारा जाता है । अपनी बुद्धिमानी से वह अपने मालिक को ऋण से मुक्त कर लेता है । दुखी होकर कुत्ते का पुराना मालिक स्वयं आत्महत्या कर लेता है । ईमानदारी, निष्ठा और सदाशयता के भाव को लेकर कुत्ते के माध्यम से कथाएं कही सुनी जाती हैं ।

४.३.३.३. लोक विश्वास के अनुसार बाघ भगवती का वाहन है । वह जंगल का राजा है । बाघ को लेकर अनेक गाथाएं परिश्रुत होती हैं । एक ब्राह्मण कथा में बाघ की बुद्धिमानी का परिचय मिलता है । कथा में एक गरीब ब्राह्मण अपनी बेटी के विवाह के लिए रुपये कमाने परदेश जाता है । रास्ते में उसकी बाघ से भेंट होती है । बाघ उससे परदेश जाने का कारण पूछता है । ब्राह्मण अपनी विवशता प्रकट करता है । बाघ ब्राह्मण के लिए यथेष्ट धन की व्यवस्था करता है। बाघ ही स्वयं आमंत्रित किये जाने की शर्त स्वीकार कराता है । बाघ शादी में जाता है । बारातियों को बाघ के मुख की दुर्गन्ध मालूम पड़ती है । वे ब्राह्मण

से दुर्गन्ध का कारण पूछते हैं । ब्राह्मण उसे गन्दे भाड़े की दुर्गन्ध बताता है । यह सुन कर बाघ बहुत दु:खी होता है । बारात की विदाई के बाद बाघ ब्राह्मण से अपने सिर में कुल्हाड़ी द्वारा घाव कराता है । कुछ समय बाद ब्राह्मण बाघ के पास जाता है । बाघ उक्त घाव का स्थान दिखाता है जो भर चुका था । वह कहता है कि तुम्हारी कुल्हाड़ी की चोट भर गयी है । किन्तु वाणी चोट वैसी ही है ।बुरी बात कह कर किसी का दिल नहीं दुखाना चाहिए । एक अन्य कथा में बाघ विश्वास-घात के कारण मारा जाता है । एक बाघ जाल में फंसा हुआ था । वह एक मुसाफिर को अंगूठी का लालच देकर जाल से छुड़ाने के लिए कहता है । मुसाफिर लालच में आकर बाघ को खोल देता है । बाघ मुसाफिर पर झपटता है ।मुसाफिर पेड़ों से फैसले के लिए कहता है । पेड़ फैसला करने से इनकार करते हैं । दोनों सियार के पास जाते हैं । सियार बाघ से पहले की तरह बैठने के लिए कहता है । बाघ पिंजड़े के अन्दर बैठ जाता है । सियार बाघ को बन्द कर देता है । तब बाघ लोगों द्वारा मारा जाता है । बाघ के माध्यम से अन्य अनेक उपदेशात्मक कथन चरितार्थ किए गए हैं ।

५.३.३.४. भालू या रीछ को भी लोक कथा में स्थान मिला है । यहाँ उसे मन्द बुद्धि जानवर के रूप में चित्रित किया गया है । सियार और भालू की कथा का ऊपर एक उदाहरण तो दिया ही गया है जिसमें वह चतुर सियार द्वारा मारा गया । एक अन्य कथा में भी रीछ को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है । पहली बार बरें उसे काटते हैं । दूसरी बार वह पेड़ की शाखा से गिरता है और तीसरी बार वह नकली भैंस की पूंछ खींचने पर गिरकर मर जाता है । रीछ सियार द्वारा अनेक प्रसंगों में छला गया है ।

५.३.३.५. बिल्ली आलोच्य क्षेत्र में एक पालतू जानवर है , यद्यपि जंगली बिल्लियाँ, जो 'बनबिलाव' कहलाती हैं , भी होती हैं । बिल्ली यद्यपि विश्वासहीन कपटी और स्वार्थी कही जाती है तथापि लोक स्थलों पर उसकी स्वामिभक्ति के उदाहरण भी मिलते हैं । लोक विश्वास में बिल्ली का रास्ता काटना अशुभ समझा जाता है । चूहे उसका भोजन हैं और 'चूहे तथा बिल्ली' सम्बन्धी कथायें प्राय: सुनी

जाती हैं । चूहे तथा बिल्ली की मैत्री में सुखी होने पर बिल्ली चूहे को खत्म करके ही संतोष करती है और अपने विश्वासघाती स्वभाव को प्रकट करती है । दूसरी ओर अनेक कथाओं में वह अपने मालिक के प्राण बचाती है । एक कथा में अपने प्राणों की आहुति देकर भी वह मालिक के पुत्र की रक्षा करती है । कहते हैं कि सर्प का विष बिल्ली को नहीं लगता है । मालिक के सो जाने पर आते हुए सर्प से बिल्ली का युद्ध होता है और वह सर्प को मारकर मालिक की प्राणरक्षा करती है ।

४.१.३.६. स्याप(सर्प) के विषय में विश्वास है कि वह धन की रक्षा करता है । यदि कोई बहुत लालची होता है तो मरने के बाद धन की रक्षा के लिए सांप बन कर आता है । जिस स्थान पर सांप निरंतर रहता है, उस स्थान के बारे में अनेक प्रकार की कथाएं कही जाती हैं । जैसे एक कथा के अनुसार एक राजा था । वह बहुत लालची था । उसने अपना धन एक स्थान पर गड्ढे में दबा दिया । जब उसकी मृत्यु हुई तो वह सर्प बन गया और जहां धन गड़ा हुआ था, उस स्थान पर निरंतर रहने लगा । उस धन की रक्षा के लिए ही वह उस स्थान पर रहता है । इसमें यह भावना निहित है कि मनुष्य को बहुत लालची नहीं होना चाहिए ।

४.१.४. कीड़े मकौड़ों की कथाओं में मौना[१] और किरमोली[२] प्रमुख हैं । ये दोनों सहयोग और कठिन परिश्रम के लिए प्रसिद्ध हैं । शहद की मक्खियों में एक रानी होती है, अन्य श्रमिक होते हैं, सारा व्यापार अत्यन्त व्यवस्थित होता है । इस प्रकार की धारणा आरम्भ में कथा रूप में ही रही है । अब उसे वैज्ञानिक कथा के रूप में भी कहा जाने लगा है । यही बात चींटियों के सम्बन्ध में कथ्य है ।

४.१.५. इस प्रकार पशु पक्षियों की कथाएं प्रमुखत: उपदेश परक होती हैं । स्थानीय वातावरण से सम्बन्ध रखने के कारण इस कोटि की कहानियों की मौलिकता असंदिग्ध है किन्तु ये सभी परम्परागत रूप में परिलक्षित होती हैं । बालक

१- शहद की मक्खी ।

२- चींटी ।

बालिकाओं और अपरिपक्व मानस पर उक्त उपदेशात्मक कथाओं का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है । और वे मनोरंजन और कौतूहल के सब सुमार्ग पर प्रेरित करती हैं

४, ३, ६, उपदेशात्मक कथाएं पशु पक्षियों के अतिरिक्त मनुष्यों को आधार मानकर भी प्रणीत हुई हैं । " एक राजा था " या " एक ब्राह्मण था ", इस प्रकार के कथनों से कथा आरम्भ होती है । "राजा के लड़कों की कथा" , "एक माई की कथा" आदि इस कोटि की कथाएं हैं जो विभिन्न रूपों में सुनाई जाकर जीवन की विविध समस्याओं को सामने रखते हुए उनका समाधान प्रस्तुत करती हैं । इनमें उपदेशात्मक के साथ-साथ इनसे पति-पत्नी, भाई-बहन, गुरु-शिष्य, मित्र-मित्र के पारस्परिक सम्बन्ध प्रकाश में आते हैं । उदाहरणतः एक गरीब ब्राह्मण था , उसकी दो पत्नी थी । पहली का एक पुत्र था, दूसरी निस्संतान थी । दूसरी स्त्री ने अपने सौतेले पुत्र को मारने का प्रयत्न किया पर सफल न हो सकी आदि । विषय वस्तु का चुनाव सामाजिक क्षेत्र से होने पर भी कथा का प्रमुख आधार कल्पना तत्व रहा है । चिरगुणों और उसकी बहन देबुली की कथा इस कोटि की है जिसके द्वारा यह भाव स्पष्ट होता है कि सब के दिन एक समान नहीं रहते और कटु बातें सदा याद रहती हैं । या सम्पत्ति के बदले में किसी विद्वान या साधु सन्त से कुछ उपदेश लेने का वर्णन आया है । जैसे एक कथा में धनी व्यक्तियों के पुत्र ने चार हजार रुपये देकर चार शिक्षाएं मोल लीं । अर्थात् कभी अकेले यात्रा न करो, किसी बिस्तर पर उसे अच्छी तरह देखे बिना न बैठो, संकट के समय जागते रहो और क्रोध का दमन करो । ये शिक्षाएं आगे चलकर उसके जीवन में काम आईं । काल्पनिक होते हुए भी इस प्रकार की कथाएं व्यावहारिक जीवन के निकट हैं और जीवन के विविध पक्षों पर अनेकशः प्रकाश डालती हैं ।

४. ४. भूत, प्रेत और परियों की कथाएं

४. ४. १. भूत, प्रेतों के सम्बन्ध में यहां अनेक प्रकार की बातें कही जाती हैं । उनकी कथाएं भी विविधतः परिलक्षित होती हैं । "भूत", और "प्रेत", ये शब्द कभी पर्याय रूप में और कभी भिन्न रूप में समझे जाते हैं । व्यक्ति प्रायः जब कोई व्यक्ति धोखे से मार दिया जाता है, या हत्या की जाती है या स्वयं दैवी प्रकोप

से मरता है अथवा आत्महत्या करता है तो घटना के कुछ समय बाद ही कहा जाता है कि वह 'भूत' रूप में घटना के स्थान पर रहता है। जिनके विषय में इस प्रकार की कोई घटना की सम्बद्धता नहीं भी मिलती है और जिनका कोई भयानक और आश्चर्यजनक आकार परिकल्पित या परिदर्शित होने की बात प्रचलित हो जाती है, वे भी भूत कोटि के हैं। ये कथाएं भयभीत करने वाली होती हैं और बालक बालिकाओं को नहीं सुनायी जाती हैं। 'एक भूत था'-- इस कथन से आरम्भ होने वाली अनेक कथाएं मिलती हैं। इनमें भूत की भयानक शक्ल की चर्चा होती है, जैसे' भूत का मुख आगे को और पैर पीछे को होते हैं। भूत प्रेतों का निश्चित स्थान होता है। उस स्थान से आने जाने वाले वालों से चिपटने की बातें कही जाती हैं। नदी नालों के एकान्त मार्गों, श्मशान आदि स्थलों में ये प्रायः कथित होते हैं।

४.४.२. कथाओं के अनुसार भूत मनुष्य को परेशान और सहायता दोनों करता है। 'घट्ट का भूत' कथा में भूत आटा पीसते हुए आदमी के पीछे पड़ता है और उसे खाने की कोशिश करता है लेकिन आदमी उसे चकमा देकर भाग जाता है। एक कथा में एक आदमी श्मशान घाट से आ रहा था। वहां उसे कुछ आधी जली लकड़ी दिखाई दीं। उसने सोचा यहीं बैठकर खाना बनाया जाय। उसने खाना बनाया और वहीं सो गया। ज्यों ही रात हुई वहां बहुत से भूत आ गये और अपनी जली हुई लकड़ी मांगने लगे। मुसाफिर वहां से भाग निकला। गांव में पहुंच कर उसने लोगों से सब बातें कहीं। तब से मुर्दे की जली हुई लकड़ी अशुभ मानी जाती है। 'भूत और उसका लड़का' शीर्षक कथा के अनुसार भूत ममता के कारण अपने लड़के को खजाना दिखाता है और खजाना देकर फिर कभी न आने को कहता है। लड़के का अपने पिता से बहुत प्यार था। पिता का देहान्त होने पर वह रोज श्मशान की तरफ पिता की खोज में जाने लगा। पिता की भूत आत्मा को बच्चे को देख कर बहुत दुःख हुआ और उसने आकर बच्चे का आलिंगन किया। बच्चा खूब रोया। पिता ने एक गड़े हुए खजाने की ओर संकेत किया और बच्चे से उठा ले जाने के लिए कहा। तब से बालक को श्मशान में भूत पिता कभी नहीं मिले। 'भूत और ओझा २' कथा में भूत अपनी करामात दिखाता है। एक आदमी को चलते-चलते रात हो गई। वह एक कुटिया पर देखता है और उसी में घुस जाता है। घर में उसे एक बीमार आदमी चारपाई पर पड़ा मिलता है। बीमार आदमी उससे

खाना बनाने के लिए कहता है । आदमी खाना बनाता है । वह रसोई में नमक ले जाना भूल जाता है । भूत नमक की ओर संकेत करता है और लेटे लेटे ही बीस गज दूर रखे नमक को उठा कर दे देता है । ऐसा देख कर वह आदमी वहां से भाग जाता है । भूत भी उसके पीछे दौड़ता है । आदमी गांव के एक घर में घुस जाता है । दूसरे दिन जब वहां पहुंचा । मकान में उसे मरा हुआ आदमी मिला जिसके पैरों पर घास फूस चिपकी हुई थी । साधारणतः भूत आतंककारी रूप में वर्णित हुआ है । उसको वश में कर लेने पर अनेक असाध्य कार्यों के पूरे होने में सहायता मिलने की चर्चा की जाती है । ऐसी भी कथाएं मिलती हैं जिनमें भूत की सहायता से शत्रुओं पर विजय, एक स्थान से दूसरे दूरस्थ स्थान को तुरन्त पहुंचाना, अद्भुत शक्ति पैदा करना आदि बातें आती हैं । किसी के शरीर से भूत के चिपट जाने की कथाएं भी पर्याप्त मिलती हैं । इनमें भूत के प्रभाव से प्रभावित व्यक्ति बेहोश हो जाता है । भूत किस प्रकार आया और उस व्यक्ति से चिपटा — यह कथा का आधार बनता है ।

४.४.३. भूतों की भांति प्रेतों की भी चर्चा होती है । दोनों समान अर्थ में प्रयुक्त होने पर भी कभी-कभी कुछ भिन्नार्थकता मिलती है । 'अमुक व्यक्ति की आत्मा मृत्यु उपरान्त प्रेत बन गई'— प्रायः इस प्रकार की उक्तियां कथाओं के पूर्व मिलती हैं । प्रेतात्मा भूत की तरह कष्टकारी नहीं कहे गई हैं । प्रेतात्मा तितली कीड़े आदि के रूप में भी आती हैं, इस प्रकार का विश्वास अब भी लोक में मिलता है ।

४.४.४. परियां यहां दैवी शक्तियों से युक्त मानी जाती हैं । इनके बारह प्रकार कहे जाते हैं ये किसी व्यक्ति — प्रायः स्त्री को लग जाती हैं तो उसे अनेक प्रकार के कष्ट मिलते हैं और पूजा करने पर छुटकारा मिलता है । परियों का किसी व्यक्ति से चिपटने की बात परियों की कथाओं में आधार बन कर आती है और अनेक कथाओं की सृष्टि होती है । दूसरी ओर परियां असाधारण सौन्दर्य से युक्त मानी जाती हैं । इनके कार्य भी असाधारण रहते हैं । आदमी को जानवर, पत्थर और फिर कुकर आदमी बनाना तथा अदृश्य रूप में पंखों के सहारे उड़ना इनके लिए साधारण कार्य है । 'स्त्री चरित्र' कथा में मेढ़ा डोंगों में बिठा कर 'सौकार' को एक ऐसे स्थान पर ले जाता है जहां उसे सात परियां मिलती हैं । एक परी का सौकार से प्रेम हो जाता है । वह

उसे उठाकर स्वर्ग ले जाती है । वहाँ वह इन्द्र सभा का नाच देखता है । परी उसे फिर पृथ्वी पर ले आती है । दूसरी लोक कथा में परी एक लड़की की सहायक बनकर उसे बुढ़िया के जाल से छुड़ाती है । लड़का बुढ़िया को आग के भाड़ में फोंक कर बहुत से बन्द बालकों को जिन्दा करता है । इस प्रकार की कथाओं का आधार स्थानीय लोक मानस है जिस पर बाह्य प्रभाव भी पड़ता रहता है और कथाओं के रूप में परिवर्तन होता रहता है ।

४.५. ऐतिहासिक कथाएं

४.५.१. यहाँ के लोक साहित्य में ऐतिहासिक तत्वों से युक्त कथाएं भी उपलब्ध होती हैं । इनमें मात्र कल्पना न होकर ऐतिहासिक आधार भी रहता है । वस्तुत: ऐतिहासिक सत्य विकृत होकर लोक कथाओं का रूप ले लेता है । इस कोटि की कथाओं में ध्रुव, प्रह्लाद, हरिश्चन्द्र, मोरध्वज आदि की कथाएं प्रस्तुत होती हैं । स्थानीय ऐतिहासिक व्यक्तियों से सम्बन्धित कथाएं, पूर्व पुरुषों की कथाएं आदि भी इसी वर्ग की हैं । अन्य गोरखा राजाओं की कथाएं प्राय: सुनने में आती हैं । गोरखों के अत्याचार के भय से लोग अपनी वस्तुओं को जंगलों में छिपाकर रखते थे । अच्छे कपड़े अन्दर पहन कर ऊपर से फटे पुराने कपड़े पहनते थे जिससे उन्हें दीन-हीन समझ कर गोरखा लोग न छेड़ें । यहाँ तक कि दूध, दही, घी भी वे पर्वतों की गुफाओं में छिपाकर खाते थे । आये दिन के गोरखा अत्याचारों से वे त्रस्त थे । अब भी कितने बन वाले 'दूध गैर', 'दै गैर', आदि प्रकार के नाम उक्त बात को प्रकट करते हैं । स्थानीय व्यक्तियों के अतिरिक्त देश के ऐतिहासिक व्यक्तियों के सम्बन्ध में तरह-तरह की अनेक कथाएं प्रचलित हैं जिनका बड़ी रुचि से श्रवण होता है । इनमें अशोक, अकबर, बुद्ध, महात्मा गांधी आदि के सम्बन्ध में उपलब्ध कथाएं प्रमुख हैं ।

४.६. अन्य कथाएं

इस वर्ग के अन्दर वे कथाएं विवेच्य हैं जो उपर्युक्त किसी भी वर्ग के अन्तर्गत नहीं आती हैं और जिनके विषय उक्त कहानियों से भिन्न हैं । कथक या कथन फराल[१], कड़कड़[२], जिज्ञासा बुद्धिहीनता जैसे विषय इन कथाओं में रहते हैं ।

१- भव्य एवं विस्मय जनक कल्पनाएं ।

२- ध्वन्यात्मक शब्द हैं । इसके अन्तर्गत 'फुकफुक कड़कड़' अर्थात बुड्ढे जी की कड़कड़, जैसी कथाएं आती हैं ।

४.६.१. फसक, फसका या फसक फराल कोटि के प्रसंग केवल आश्चर्य उत्पन्न करते हुए मनोरंजन करते हैं । इनका उद्देश्य प्राय: समय व्यतीत करना रहता है ।शीत काल की लम्बी रात्रियों में आग के चारों ओर बैठे हुए वयस्क व्यक्ति और किशोर इनमें बड़ी रुचि लेते हैं । प्रसंग के अनुकूल लोक मानस इनकी रचना करता है । एक फसक फराल में कथन आता है कि एक बहुत गप्पी व्यक्ति थे उनका नाम ही गप्पदत्त ज्यू हो गया था । एक बार वे कई लोगों के साथ पैदल चलकर तीर्थ यात्रा को गये और लौटकर आने पर यात्रा में घटित होने वाली आप बीती सुनाने लगे । अन्य लोगों ने भी अपनी-अपनी बात कही, गप्पदत्त ज्यू ने बताया" कि वे जब बरेली पहुंचे तो एक बाघ आया । सभी लोग उसकी छाया देखते ही भाग गये किन्तु मैं वहीं एक आम के पेड़ पर चढ़ गया । बाघ पेड़ के नीचे आकर बैठ गया । बहुत देर तक भी वह नहीं हटा । मैंने एक आम तोड़ कर उस पर इसलिए मारा कि वह चला जायेगा . किन्तु उसने आम पकड़ कर चूस लिया और ऐसे मेरी और देखने लगा जैसे और आम चाहता हो । मुझे लघु और दीर्घ शंका की शिकायत हुई तो काफी देर तो रोके रहा जब न रोक सका तो वहीं से शंका दूर करने लगा । बाघ उसकी धार के सहारे ऊपर चढ़ने लगा । मेरे तो होश हवाश ही उड़ने लगे । मैंने संभल कर अपनी कमर से तलवार निकाली और धार को बीच में मारा तो बाघ चित होकर नीचे गिर गया"। एक अन्य फसक फराल में एक स्त्री कहती है"कि वह इसलिए बहुत दु:खी है कि कल रात एक कटोरा दही मंगाया था । उसमें थोड़ा लड़के को दिया, थोड़ा सास को, थोड़ा पति को, थोड़े में मीठा डाला, थोड़े में नमक मिलाया, और बचा हुआ आल्मारी में रख दिया किन्तु आलमारी बन्द करना भूल गई । रात में बिल्ली आई और उसने जितना खा सकती थी खाया और बाकी गिरा दिया । गिरे हुए दही को उठाते-उठाते मेरे हाथ दुखने लगे और प्रात: के कार्य भी अभी तक नहीं कर पाई हूँ" । एक फसक फराल में वर्णन है कि किरमोड़ू[१] का पत्ता था । उसमें तीन कांटे थे जिनमें दो टूटे हुए और एक बिना मुख का था । जिसमें मुख ही नहीं था उसमें

१- एक कंटीली झाड़ी, जिसमें इसी नाम के फल भी लगते हैं ।

तीन नाले[1] बनाये जिनमें दो सूखे थे और एक में पानी नहीं था । जिसमें पानी नहीं था उसमें तीन हांड़ी थीं जिनमें दो फूटी हुई और एक बिना तले की थी । बिना तले वाले हांडी में तीन चावल पकाये जिनमें दो कच्चे ही रहे और एक पका ही नहीं। जो नहीं पका था उसे खाने के लिए तीन पाहुने आ गये जिनमें से दो मरे हुए थे... । उस प्रकार के आश्चर्यजनक वर्णन "फसल फाराल" में कहे जाते हैं । एक अन्य फसक में एक व्यक्ति का चाकू खो गया । वह बहुत ढूंढता है पर चाकू नहीं मिलता । वह अपने साथी से चर्चा करता है । वह साथी "फसक" लगाने में कुशल था । उसने कहा-- " मिल जायेगा , छोटा बहुत परेशान करता है । एक दिन की बात है मैंअपने पेड़ की शाखा में कुल्हाड़ी से लकड़ी काट रहा था । कुल्हाड़ी हत्थे से निकल कर दूर झाड़ी में छिटक गई। बहुत खोजा नहीं मिली । मैंने झाड़ी के आस-पास के कांटे-कांटे, झाड़ी साफ की । सूखने पर झाड़ियों को जलाया । वहां हल चलाया, गेहूं बोये और फसल तैयार होने पर फसल काट कर घर लाया । गेहूं पीसे, रोटी बनाई किन्तु तब तक भी कुल्हाड़ी नहीं मिली । जब मैंने रोटी का ग्रास मुख में डाला तो मुख में "कड़क" की आवाज हुई । दाढ़ों के मध्य हाथ लगाया तो कुल्हाड़ी निकली ।" वाणी के माध्यम से मनोरंजन के लिए उक्त प्रकार की अभिव्यक्ति विवेच्य क्षेत्र के जीवन की विशेष दशा की ओर संकेत करती है । लम्बी लम्बी रात के अतिरिक्त दिन में भी समय बिताने के लिए उक्त प्रकार के आश्चर्यजनक कथन वर्णित होते हैं । शीतकाल में बाहर बर्फ ही बर्फ रहता है , लोग अन्दर बैठ कर किसी प्रकार समय बिताने की चेष्टा करते हैं । कोई अन्य कार्य तो होता नहीं है । घरेलू धन्धों का भी अभाव रहा है । अत: खाली समय में जो भी सोचते रहें, गम्य है; कहना युक्तियुक्त है । एक कथन में "फसक" कहने वाला कहता है कि" अब पूर्णमासी और अमावस को गंगा स्नान करके मैंने प्रण कर लिया है कि आगे फसकें नहीं मारूंगा क्योंकि शास्त्र में कहा है । :-

त्यागे लिगूट कुरे च, महा फसक मारणो ।
पुन्यु अमुसि संयोगे, गंगा स्नानं समाचरेत ।।"

---

[1]- पानी पीने के लिए बनाया गया जलकुण्ड ।

और कहते - कहते पुन: बेसिर पैर की कथाएं कहने लगता है । इसी प्रकार अन्यत्र भी कहा है :-

" ये गायन्ति फगुवं,
कविता वाचयन्ति ये ।
ते सर्वे नरकं यान्ति,
यावच्चन्द्र दिवाकरौ ।। "

किन्तु फिर वही जड़ मूल हीन बातें आरम्भ की जाती हैं । इस कोटि के कथनों से लोगों का मनोरंजन मात्र होता है ।

४.६.२. कुछ कथाएं "किस्से" कहलाती हैं । ये बहुत कुछ अनुभव के आधार पर कही जाती हैं किन्तु प्रस्तुत प्रकरण में विवेच्य किस्से लौकिक कोटि के किस्सों से भिन्न हैं । इनमें "ज्याठज्यू क किस्स" पर्याप्त प्रचलित हैं । इनके कुछ उदाहरण हैं —पर्वतीय प्रदेश में सम्मिलित परिवार में सास-ससुर के बाद जेठ का दबदबा रहता है । उनकी मनमानी खूब चलती है । इसकी एक झलक यहां प्रचलित "ज्याठ ज्यू क किस्स" से मिलती है । बहू द्वारा यहां अपने जेठ के सम्मुख मुख खोलने और बोलने की रीति नहीं रही है । किन्तु घूंघट के भीतर से ही जेठ जी की खबर ली जाती है । एक किस्से में आता है कि एक चतुर बहू ने अपने जेठ के घर होने पर बहुत प्रसन्नता दिखाई । किसी घटना के होने पर वह कहती — "अच्छा हुआ जेठ घर थे, अन्यथा न जाने और क्या क्या होता । जेठ सयाने हुए, उन्होंने सब अच्छा ही किया । घूंघट के भीतर इस प्रकार कह कर बहू ने जेठ के ऊपर व्यंग्य कसा । इस तरह के अनेक कथन जेठ के विषय में कहे जाते हैं जो वस्तुत: एक प्रकार के व्यंग्य वचन हैं ।

४.६.१. किस्सों की तरह ही 'क्वीड़' भी आलोच्य लोक मानस में पर्याप्त व्याप्त हैं। लोग प्राय: एक स्थान पर बैठकर जो कल्पना की उड़ानें लेते हैं उन्हें और कुछ कल्पना मिश्रित तथ्यात्मक कथनों को 'क्वीड़' की संज्ञा दी जा सकती है। 'क्वोड़' अनेक नामों तथा प्रसंगों से अभिहित होते हैं। जैसे 'उड़ुयान का क्वीड़', 'श्यैनीन का क्वीड़' आदि। इनमें भी आश्चर्यजनक बातें कथित होती हैं। उदाहरणार्थ: लोग बिल्कुल काले वर्ण के उड़ुहार बात करते हैं 'कि पहाड़ी चाहे कितनी ही बदसूरत हों किन्तु पैदा होते हैं गोरे ही' जब कि वे खुद अपने लिए बात कर रहे होते हैं। एक व्यक्ति पूछता है 'तुमने आलू बनाये या मुटके'? इस प्रकार के कथनों के ऊपर में कल्पना और तथ्यों के सहारे लम्बी चौड़ी कथाएं गढ़ी जाती हैं।

४.६.४. 'किस्से' तथा 'ग्रोड़' में 'ठकू काठ्यारिक संतान' नाम से अनेक मनोरंजक और व्यंग्य पूर्ण कथाएं कही जाती हैं। 'गंगोलीहाट के निकट काठ्यारा नामक एक ग्राम है। किसी समय वहाँ के एक प्रधान का नाम 'ठकू काठ्यारो' पड़ गया। उसके नौ लड़के थे। हर लड़के के जन्म के समय ठकुवा ने खूब धूमधाम की। देवी देवताओं की भी खूब सेवा की। लड़के बड़े सुन्दर, सुडौल शरीर वाले जवान हुए। किन्तु वे अकल के नाठ[१] निकले। उनसे तरह तरह की हानि होती थी। जहाँ जाते नुकसान ही करते

१- अकलहीन।

आते थे । हानि लाभ वे समझते ही न थे । एक दिन लड़कों के पिता ने मकान बनाना शुरू किया और लड़कों से कहा कि जंगल में जाकर मकान के लिए बल्लि[1] भराणों[2], धूर[3], बनाकर ले आवो और हाथ से नाप ले जावो, ठीक नाप से लाना । लड़के जंगल में गये और एक एक हाथ के निशान बनाकर सुन्दर टुकड़े बनाने लगे । जब लाहू का मजदूर ले जाने आया तो इन लड़कों की बुद्धिमत्ता पर खूब खीझा । एक दिन पिता ने इन लड़कों को घर की औरतों के लिए कपड़े सिलवाने के लिए भेजा। जाकर इन्हें यह याद न रहा कि कितनी स्त्रियां हैं । गिनने में कभी मां को भूल जाते, कभी बहिन को तो कभी चाची को, किसी प्रकार गिनती हुई तो कमर की नाप का प्रश्न आया, कुछ न देख बगीचे के पौधों को देख कर उन्हों के चारों ओर घाघरा सी दिया । जब काफी दिन बाद भी लड़के नहीं लौटे तो पिता देखने गये और उन्होंने पाया कि पौधे लाल पीले रंग के घाघरे पहने हुए हैं । लड़कों में आपस में झोड़[4] हो रहे हैं कि घाघरे तो बहुत अच्छे सिले हैं किन्तु वे तो पौधों में उलझ गये हैं, अब उन्हें किस प्रकार निकालें । एक बार ये लड़के लकड़ी एकत्र करने जंगल में गये । वहाँ बाघ दिखाई दिया । भय से सब भाग खड़े हुए । इनमें से एक ने जो कुछ आगे पहुंचा था, आवाज दी देखें तो हैं सब हैं कि नहीं । सब एक आवो । आखिरी लगी तो एक कम ही बाघ क्योंकि गिनने वाला अपने को भूल जाता था । जब सब ने गिना और वही बात निकली तो रोने और विलाप करने लगे कि एक भाई को बाघ ने मार दिया है । उनको रोते देख कर एक मुसाफिर ने रुक कर पूछा और एक एक थौल[5] उनके सिर पर मार कर उनको बताया कि सभी भाई मौजूद हैं । एक बार लाहू ने उन लड़कों के लिए दुकान खोल दी । अनेक प्रकार का कपड़ा दूकान में रख दिया । कुछ दिन बाद पिता ने लड़कों से पूछा कि कैसी बिक्री चल रही है । लड़कों ने उत्तर दिया कि ऐसी बिक्री हो रही है कि किसी की कभी हुई न होगी । जो कपड़ा हम रुपये में आठ गज लाये थे वह हाथोंहाथ रुपये में बारह गज बिक रहा है । ड्योढ़ा लाभ हो रहा है । पिता को कुछ कहना न आया । पिता के मरने के बाद गरुड़ पुराण का पाठ हुआ । उसमें लंब नाम से जीवात्मा

१- ,२,३,-- मकान में लगने वाली इमारती लकड़ी ।

४- झगड़ा ।   ५- मार ।

की चर्चा हुई । उकुवा के लड़कों ने समझा कि चिड़िया की तरह उड़कर हंस रूप में पिता से भेंट कर सकेंगे । उन्होंने अपने कालों में बांध के बड़े बड़े सूप बांधे और पहाड़ की चोटी पर गये और वहां से कूद पड़े ।" इस प्रकार के अनेक किस्से क्वोड" ठकू काठ्योरो की संतान" के नाम से प्रचलित हैं । इनमें मनोरंजन,समय बिताना, त्रुटियों से सावधानी आदि उद्देश्य निहित रहे हैं । कुछ किस्सों में नौ के स्थान पर सात ही पुत्र कहे गये हैं ।

४.६.५. यात्रा सम्बन्धी कथाएं

पर्वतीय जीवन अत्यन्त सत्व, सरल और परलोक पर विश्वास करने वाला रहा है । स्थानीय तीर्थ स्थलों में तो प्रत्येक पर्व को जाना पुण्य कार्य समझा ही जाता था , पर्वतीय प्रखण्ड के बाहर के तीर्थों में भी लोग जीवन में एक बार ही जाना अनिवार्य समझते थे । अब भी वरिष्ठ जन यही भावना रखते हैं । यह बात उनमें अधिक है जो किसी दुर्भाग्य का शिकार हो बैठे हैं । जैसे विधवाएं, सन्तानहीन जन आदि । स्थानीय तीर्थों में जागेश्वर, बागेश्वर, रामेश्वर, पन्चेश्वर, आदि हैं । उत्तर की ओर सीमान्त के निकट कैलाश और सीमा के पार मानसरोवर है । पश्चिम में गंगोत्री, यमनोत्री, बद्रीनाथ आदि सुप्रसिद्ध तीर्थ हैं । इनके अतिरिक्त हरिद्वार, प्रयाग, काशी, गया, पुरी, द्वारका सेतबंध रामेश्वर आदि लोक प्रिय तीर्थ हैं जहां जाकर अपनी आत्मा को संतुष्ट किया जाता है । सन् ५० से पूर्व पिठौरागढ़ जिले में कहीं भी मोटर या अन्य यातायात के साधन नहीं थे । पैदल ही आना जाना होता था । पिठौरागढ़ जिले अथवा यहाँ से टनकपुर[१] तक आने में ही लोगों को ४,५ दिन लग जाते थे । इससे अधिक भी लग सकते थे । यात्रा के समय लोगों को अनेक प्रकार की परिस्थितियों का सामना करना पड़ता था । उक्त परिस्थितियों को लेकर अनेक प्रकार की कथाएं परिश्रुत होती हैं । जिनमें सत्य का भी अंश रहता है और कल्पना का उभार भी । यात्रा सम्बन्धी कथाओं में मार्ग में जंगली जानवरों का सामना करने, मैदानों में ठग और चालाकों द्वारा ठगे जाने आदि और तीर्थ स्थलों में भगवद् स्वरूपों के साक्षात्कार से सम्बन्धित कथाएं प्राय: लोक मानस में उपलब्ध हैं जिनका मनोरंजन एवं शिक्षात्मक दोनों प्रकार का महत्त्व है ।

१- पिठौरा गढ़ का निकटतम रेल्वे स्टेशन ।

४.६.६. हास्य व्यंग्य प्रधान कथाएं भी विवेच्य लोक कथा साहित्य में मिलती हैं। समयानुसार जैसी आवश्यकता होती है, ये गढ़ लिये जाते हैं। विकृत वेषभूषा मूर्खता या कोई विचित्र युक्ति इनका आधार बनती है। इन्हें स्थानीय वाणी में 'काथाक किस्स' भी कहा जाता है। "एक आदमी का पिता खड़िक[1] के पेड़ से गिर पड़ कर मर गया। मरते समय उसके हाथ में बड़्याठ[2] और शरीर में कम्बल था। उसका श्राद्ध कराने के लिए जो विद्वान पण्डित आता था एक बार वह नहीं आया। एक दूसरा ब्राह्मण ठहराया गया जो वस्तुत: कुछ नहीं जानता था। वह केवल 'तिरपितृताम्[3]' कह देता था। श्राद्ध कराते समय उसने कम्बल और बरयाठ तथा घर के सामने एक खड़िक वृक्ष देखा। उसने श्राद्ध कराया -- 'कामलाय तृप्यन्ताम', बड़्याठाय तृप्यंताय', 'खड़िका बौटाय तृप्यन्ताम'। लड़के ने समझा ब्राह्मण के इस छोरे ने मेरे पिता का ठीक श्राद्ध कराया।" एक अन्य चुटकुले में आता है कि "एक सास जमाई के भोजन के समय उसकी थाली में घी की ल्हुपी[5] उल्टी करके कहती थी कि जवें[6] क्या करें घी नहीं है। होने पर हम हाथ से निकाल कर कभी नहीं देते हैं, हम तो बर्तन उलट कर देते हैं। जमाई सास की चाल समझ गया। उसने एक दिन भोजन से पहले ही घी की ल्हुपी गरम कर दी। सास ने उस दिन भी घी का बरतन उल्टा करते हुए रोज की तरह कहा। बर्तन उलटते ही सब घी जमाई की थाली में आ गया। घी बहुत था। जमाई न खा सका और बहुत सा घी थाली में शेष रह गया। जमाई भोजन करके उठा तो सास ने उस थाली को अपने पास रख कर कहा 'जवैंक जुठौ की राण न खालि' अर्थात् जमाई का जूठा कौन स्त्री नहीं खायेगी। इस प्रकार के व्यंग्य हास्य पूर्ण चुटकुले कुछ प्रत्येक व्यक्ति के मुख से सुने जाते हैं।

१- एक वृक्ष का नाम।

२- बड़ा हंसिया जिससे लकड़ी काटी जाती है।

३- संस्कृत के अनुकरण पर असंस्कृतज्ञ द्वारा उच्चारित शब्द।

४- लड़का

५- घी रखने का काठ पात्र।

६- जामाता।

४.७. विवेच्य अंचल की कथाओं में प्राय: शिक्षात्मक तत्व मिलते हैं जिनमें दिखाया जाता है कि बुरे काम का फल बुरा होता है। मनुष्य को सदा अच्छा कार्य करना चाहिए। बुरा कार्य चाहे कुछ समय तक छिपा भी लिया जाय, तुरन्त चाहे उसका कोई दण्ड न मिले किन्तु उसका बुरा फल मिले बिना नहीं रहता है। प्रस्तुत कथाओं में परलोक पर विश्वास और पुनर्जन्म के प्रति आस्था मिलती है। जिससे इस जीवन में सावधानी से कर्म करने की प्रेरणा मिलती है। परस्पर सहायता एवं सहयोग का भाव अनेक कथाओं में प्रकट हुआ है। सच्चाई एवं कर्तव्य निष्ठा, कथाओं में मुख्य तत्व बन कर आयी है। मंत्र, तंत्र एवं गणना पद्धति[१] पर विश्वास व्यक्त किया गया है। भगवान और उसकी शक्ति पर विश्वास, पश्चाताप की प्रवृत्ति, सौतिया माँ का व्यवहार, प्रेम की प्रधानता, सास बहू का झगड़ा, भूत-प्रेतों का समावेश उपदेशात्मक के साथ मनोरंजकता, विस्मय और चमत्कारपूर्ण कथन, शरीर छोड़ कर दूसरे जीव में स्थिति आदि तत्व आलोच्य कथाओं का अपनापन है। सब मिला कर इनमें मनोरंजन, रोचकता, शिक्षा, उपदेशात्मकता के साथ विचारों के उन्नयीकरण की सामग्री रहती है।

–०–

१– अज्ञात बात को जानने के लिए अपनायी जाने वाली पद्धति जिसमें गणक को "गन्तुवा" और गणना क्रिया को "गन्त करना" कहते हैं।

५

लोकोक्ति साहित्य

५

लोकोक्ति साहित्य

५.० आलोच्य लोकोक्तियां संक्षिप्तता, सरलता और अनुभूतिपरकता की अपनी विशेषताओं के कारण सम्बद्ध लोक जीवन की अभिन्न अंग बन गयी हैं। प्रसंग एवं परिस्थिति के अनुसार भाव को प्रभावपूर्ण ढंग से तुरन्त व्यक्त कर देने में ये लोकोक्तियां सक्षम सिद्ध होती हैं। इनका सम्बन्ध प्राय: किसी न किसी घटना से मिलता है। परिस्थिति और आवश्यकता के अनुसार इनका निर्माण एवं गठन होता रहता है। ये लोकोक्तियां -- कहावतें, मुहावरे और ऐना या आणा (पहेली) इन तीन वर्गों में विभाजित होकर विवेच्य हैं।

५.१ कहावतें

५.१.१ कोई उक्ति समाज द्वारा स्वीकृत हो जाने पर कहावत का परिवेश ग्रहण करती है। कहावतों को अनेक दृष्टियों से उपवर्गीकृत किया जा सकता है। यथा; विषयानुसार, स्थानानुसार, जातीयतानुसार आदि। इनमें से विषयानुसार भेद अधिक सुविधाजनक तथा समीचीन है। विषयानुसारिणी दृष्टि से सामाजिक कोटि की कहावतें सर्वाधिक प्रचलित हैं। विशिष्ट जातीय पद्धतियां एवं सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलू इनमें सन्निहित मिलते हैं। इनमें जाति, धर्म, नीति-रीति, आचार-व्यवहार, अर्थ-राजनीति, खान-पान, व्यक्ति आदि के प्रति भाव व्यापार एवं दृष्टिकोण विशेषत: प्रकट होता है।

५.१.२ जातीय कहावतों में ऊंच-नीच की भावना और जातीय भेदों पर प्रकाश डाला गया है। कुछ जातीय वर्ग, विशिष्ट स्वभाव के कारण और कुछ अपने गुणों के कारण कहावतों के आधार बने हैं। एक वर्ग दूसरे वर्ग के लिए कहावत बनाता है जो कालान्तर में सर्वमान्य हो जाती है। `बिना पन्त के षड्यंत्र नहीं होता' इसी प्रकार की एक कहावत है जिसे मध्य काल में उप्रेती ब्राह्मणों ने पंतों के लिए बनाया। गंगोली में मणिकोटी राजाओं के समय से पंत और उप्रेती ब्राह्मणों में पारस्परिक भेद-भाव चला आता था। राजा दिलीपचन्द के समय यह अधिक उभरा क्योंकि एक उप्रेती ब्राह्मण की संपत्ति छीनकर पंतों को दे दी गयी थी। मरते समय उसकी इच्छा थी कि अगले जन्म में वह पन्तों से बदला लेने वाला बने। जब राजा दिलीपचन्द ने राज्याधिकार संभालते ही पंतों को सताना आरंभ किया तो उन्होंने यह प्रचार

फैलाया कि राजा उप्रेतियों का अवतार है और उनके नेता लोग उप्रेतियों के गांव लूटने लगे। तब से उप्रेतियों ने पंतों के लिए यह कहावत बना दी। इससे प्राचीन जातीय स्थिति का संकेत मिलता है --

।बिना पंत वाले मैं। 'बिना पंत के षड्यंत्र नहीं'

५.१.३ जातियों को लेकर अनेक कहावतें प्रचलित हैं। जातियों में ब्राह्मण को उच्च स्थान प्राप्त है। उसे सर्वाधिक जातीय सम्मान मिलता है। ब्राह्मण का पढ़ा लिखा होना आवश्यक है ताकि वह अपने पौरोहित्य कार्य को निभा सके। पढ़ने लिखने के अभाव में उसके लिए एक कहावत भी प्रचलित हो गई कि 'बिना पढ़े-लिखे ब्राह्मण का नाम नारायण पंडित क्यों रक्खा जाय'[1]। ब्राह्मण को जन्मजात गोरा होना चाहिए और शूद्र को काले वर्ण का। इसमें अन्तर पड़ने से शंका उत्पन्न होती है। काले ब्राह्मण और गोरे शूद्र को देखकर रुद्र भी कांपते हैं।[2] ब्राह्मण पौरोहित्य कर्म के कारण समाज को मान्य अंग है। फिर भी कहावतों में उसकी मूर्खता, भिक्षावृत्ति, दक्षिणा-लिप्सा और भोजनप्रियता पर व्यापक प्रकाश पड़ता है। 'ब्राह्मण पेट भी भीर खाकर भी तृप्त नहीं होता'[3] 'श्राद्धों के आरंभ होने पर ब्राह्मण जाग उठते हैं और समाप्त होने पर सुस्त हो जाते हैं,[4] 'चाहे मरे या बचे दक्षिणा लेना उसका काम है'[5] आदि कहावतें इसी ओर संकेत करती हैं। एक कहावत के अनुसार 'ब्राह्मण पुत्र उजड़ता हुआ रसोइया बनता है और जमींदार पुत्र उजड़ता हुआ घसियारा बनता है।[6] जो ब्राह्मण कुम्हला रहता है वह अपने यजमान को भी उजाड़ देता है।[7]

५.१.४ सामाजिक स्तर में नीचे हो जाने पर अन्य व्यक्तियों की तुलना में ब्राह्मण का आदर-सत्कार कम किया जाने लगता है। एक कहावत में राजा और अपराधी के

१- "पोथि न पातड़ि नाम न रैन पंडित।"

२- "काल बामन गोर शूद्र इनून देखि कापूं रुद्र।"

३- "अघै न बामन भैलाक खीर।"

४- "सराद लाग बामन जाग, सराद निकण बामण चिमण।"

५- "ज्यौल मरौ या ज्यौलि दक्षिण लिकन मेर काम।"

६- "बामनक च्यालाक उजड़न बायो रस्यार बन्यो, जमदाराक च्यालाक उजड़न बायो घस्यार बन्यो।"

७- "कुड़की बामन जजमानन उजाड़न।"

विषय में प्रचलित है कि जो अपने को बनिये से चतुर समझे वह मूर्ख "[1], "घोड़ा केवल दिन में दौड़ता है किन्तु सूद रात दिन"[2], बनिया लाभ उठाने के लिए अपनी स्त्री के वस्त्र भी बेच सकता है[3], वह लेनदेन को उसी प्रकार बिगाड़ देता है जैसे बनिया मसाले को[4]।" आदि

५.१.५ गृहस्थों से अलग जोगियों का वर्ग मिलता है यद्यपि जोगी कहे जाने वालों में भी अनेक गृहस्थ पाये जाते हैं। जोगी धन संपत्ति से रहित कहे जाते हैं। अतः कभी उनमें झगड़ा हो जाय तो केवल साधारण बर्तन ही टूटते हैं।[5] वे एक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जोगी बनते हैं कि वह लक्ष्य और साधने लगते हैं।[6] "उचक्के और जोगियों का कोई निश्चित स्थान नहीं, जहां जाते हैं वहीं अपना भोजन जुटा लेते हैं।[7] मांस खाने वाले जोगी का कोई निश्चय नहीं।[8] जोगी को लेकर ही कहा गया है कि "घर का जोगी और दूर का सिद्ध।"[9]

५.१.६ बलवान को देखकर भूत भी भाग जाता है।[10] धन का चला जाना बहुत दुखदायी होता है।[11] समाज में जिसकी चलती है, उसी की बात रहती है।[12] गांव की दशा का पता उसके रास्ते से चलता है।[13] स्त्री को पर्याप्त महत्व दिया गया है। जिस घर में स्त्री नहीं होती उस घर का काम काज अव्यवस्थित रहता है। स्त्री

१-"बणिया है ज्यादे बी हुस्यार उ बेकूफ ।"
२-"घ्वाड़ु त दिन दौड़ी ब्याज रात दिन ।"
३-"बणि नफा कू बि ज्वैक घागरि बेचि दें ।"
४-"सौद बिगाड़ बनिया मसाल बिगाड़ बणियां ।"
५-"जोगी जोगी लड़ टिटिरि फुट ।"
६-"एक ढिपु हुं जोगि मै वा ढेपु जोग्यूण लाग ।"
७-"उचका जोगि फटके डाल, जखि जाल तखि खाल ।"
८-"मांस खवा जोगि क्वे कसव ।"
९-"घरौक जोगि टाड़ौक सिद्ध ।"
१०-"बली देखि भूत भाजी ।"
११-"धाति हरण पिता मरण ।"
१२-"जैकि बात तैकि ह बात ।"
१३-"गौंक लक्षण गल्याट बटि ।"

ही अपनी सबसे घनिष्ठ सहायक होती है। इसीलिए कहा गया है कि जिसकी स्त्री नहीं होती है, उसका कोई नहीं होता।[1] समाज में साहस का अपना महत्व होता है। भय के विरुद्ध कहा गया है कि "वही सबकुछ कर सकता है जो मौत से भी नहीं डरता है।"[2] थोड़ा खाना सुख का कारण है।[3] कुछ समाज विषयक कहावतों के उदाहरण निम्नलिखित हैं :

। मात से बेर जाति पुछाती ।	"काम निकाल कर परिचय पाना।"
। हाथ में माला मन में छुरि ।	"अन्दर बाहर से एक न होना।"
। आपणा घर में कुकर शेर्।	"अपने घर में कुत्ता भी शेर है।"
। बिना खाफ मारिये सर्प नै देवीन ।	"युद्ध करने से काम होता है।"
। मैक बांठी मीक बांटी ।	"बलवान को सब सुलभ है।"
। आपणि मैंक मांव हाथ परि मैक युद मात।	"अपनी मां का सिर पर रक्खा हाथ ही पर्याप्त है।"
। ठळकर जोगी, फटकर झाला बनकी खाला उनकी खाला ।	"जोगी का क्या है, जिधर जायेगा उधर खायेगा"
। जांग मित्र, खाइ शत्रु ।	"मित्र खाता है शत्रु भागता है।"
। जाग सूरज को रोकं ।	"उगते सूर्य को कौन रोकता है।"
। कुकाल तुलि फुकणाइ ।	"कपूत चुल्हा फूंकता है।"
। कठी है बाड़, बामणा है बाड़ ।	"ठठिया को नहाकर और ब्राह्मण को खाना खाने के बाद जाड़ा होता है।"
। शैले सैल ब्याल हुव जोति, लोले लोले ब्यारि ऊण बांते ।	"लड़का होने तक खा ले और बहू आने तक पहन ले।"
।घर पिनाळु बन पिनाळु, ममा घर लम पिनाळु ।	"घर में घुइयां वन में घुइयां, मामा के घर लम्बी घुइयां।"
। घरै स्वाब ताब ढक, मुखै स्वाब नाक ढक ।	"घर की शोभा दालान से और मुख की शोभा नाक से।"

१- "बैकि ज्वे मैं तेको क्वे मैं।"

२- "जो मरणा है न डरी उसव कुछ करी।"

३- "कुछाड़ खाण सुखी रनू।"

। घर के है मवास में स्याली । "घर का ही तो है ।"

। बाणि के मुशा चेलि मुसे के । "जैसे का तैसा ।"

। बारु बेहू मिवारु एग्लटी ह्वे । "विविध स्वर के लोग एकत्र हुए हैं ।"

। उजड़ गौं थिमोड़ पधान । "उजड़े गांव का प्रधान ।"

। लूण सुस्याणि किड़ पड़ । "गुरु से शिष्य बढ़े, नमक मिर्च में कीड़े पड़े ।"

। चौरन कैल वै मौर मरना, मावरी रिव है बान । "चारों से मौर नहीं मरते ।"

५.१.७ धर्म नीति संबंधी कहावतों का कोई समय या स्थान नहीं है । प्रसंग आने पर उनका उल्लेख किया जाता है । इस कोटि की कहावतों का संबंध लोक विश्वास, ईश्वर विलयक, धारणा, शुभ-अशुभ लक्षण आदि के कथन से मिलता है । ये अन्ध विश्वास विषयक कहावतों से भिन्न है क्योंकि इनका कथन आज भी जन सामान्य द्वारा सत्य के रूप में होता है । इनमें नैतिक-अनैतिक कहावतें सम्मिलित हैं । अनैतिक कहावतों का उद्देश्य व्यंग्य रहता है । इस संदर्भ में माता पिता की मृत्यु के उपरान्त पुत्र उनका श्राद्ध करता है, पिण्डदान करता है । यह परम्परागत रीति है । नई सभ्यता से प्रभावित लोग यह कर्म दूसरों पर टालने का प्रयत्न करते हैं — । मैं जाना भेद बाबक पिण्ड पाटि क्या । "गया जाना तो मेरे पिता का भी श्राद्ध कर देना ।" अशुभ मुहूर्त में कार्यारम्भ नहीं करना चाहिए इसकी अभिव्यक्ति यहां भी है —

। भद्रा मरणि कबै न करणि ।

भाइयों में बंटवारा होकर रहता है जो कि हाथ की रेखाओं की तरह अमिट है —

। माडूं क बांट रूपुलिक रयाखा ।

जो लोग अपने सहायक लोगों के प्रति विश्वासघात करते हैं उनके लिए प्रचलित है — जिस पत्तल में खाया उसी में छेद किया । —

। जै पातलि खै, वी मैं ढोट पाड़ि ।

धार्मिक स्थलों के प्रति एक सामान्य आकर्षण रहता है क्योंकि दो दिन के जीवन में वहां मन को शान्ति मिलती है । इसलिए कहा गया है कि द्वार बन्द करो और हरिद्वार चलो —

। ढक बार छिट हरिबार ।

सभी जीवन में सब सीखा जाता है, जन्म से सीखा हुआ नहीं होता -

। पेट बटि कौ सिखि बैर के रै ।

दैव जब विपत्ति देता है तो किसी को सूचना तक नहीं होती —

। दैवैक मार बवर नै बार ।

कुछ कहावतों में विशिष्ट सामाजिक रीति-नीति, आचार, व्यवहार, प्रथम, त्यौहार आदि के साथ-साथ संतान पालन, अतिथि स्वागत, पारिवारिक मान्यताओं और संस्कार विषयक धारणाओं पर प्रकाश पड़ता है। जैसे "संध्या के अतिथि को बाहर ही स्थान देते हैं "—

। सांझक पौणा उबल सार ठौर ।

दो घरों का अतिथि भूखा मरता है —

। द्वि घरोक पौण भुख मरों ।

अतिथि रुष्ट हो जाय तो अच्छा है क्योंकि खाना बचेगा —

। पौण रिसै बौ त खाण बचौ ।

जिसके घर बालक हों, उनके यहां नित्य ही त्यौहार समझना चाहिए —

। जैक घर बाइलि बीक घर कौतिक ।

छोटा व्यक्ति बड़े को प्रणाम करता है — यह एक सामान्य शिष्टाचार है। तिरस्कार करने पर कहा जाता है —"तुम्हारा प्रणाम मेरे लिए निष्प्रयोजन है ":

। त्यारि पैलाग म्यारि कपम ।

मां दस महीने के बालक को गर्भ में वहन करने के उपरान्त नौ महीने सेवती है फिर भी वह धोखा दे जाता है —

। दस मैण बोक नौ मैण सेक पै फिरि धोक ।

परिवार में जेठ का स्थान उच्च एवं मान्य होता है। उनसे आशा की जाती है कि बाहर से घर आते समय कुछ लेकर आयें अन्यथा कहा जाता है कि वे नाम मात्र के ही जेठ जी हैं —

। जसिक मै आसिक रै नामाक ज्याठज्यू मी ।

जब नेतृत्व करने वाले व्यक्ति का अभाव हो तो कहा जाता है — बिना दूल्हे की बारात हुई :

। बिन ब्यौलैक बरयात मी ।

बिरादर[1] लोग कभी सहायक नहीं होते। न मालूम किस रूप में और कब विरुद्ध हो जायं, इसलिए आग की भांति उन्हें कभी बुझा हुआ नहीं समझना चाहिए — दोनों मूलत: नष्ट नहीं होते —

। स्वार बुझि मरि गो निकूल,
आग बुझि निभि गो निकूल ।

समाज में पुत्र जन्म पर हर्ष प्रकट किया जाता है। कन्या जन्म पर उतना नहीं, इसलिए कहावत है कि —"कन्या जन्म की भांति खिसियाहट किस प्रकार की"

। ब्यादि हब्बे कि बाघ खिंडणि के ।

अपनी रीति के अनुसार चलने एवं मितभाषी होने से ही कार्य सम्पन्न होता है —

। रीत हिटणा मिठ बुलाण ।

कोई स्त्री विवाह प्रयोजन के प्रत्येक स्थान पर जाकर उपस्थित हो जाय तो उसके लिए प्रचलित कहावत है —"बैसख जहां वैसी वहीं मरती गुस्याण ।"

। जां बैसखा वां मरलि गुस्याण ।

यहां बसकी यद्यपि एक विशिष्ट नाम है लेकिन यह उस विशेष प्रकार के नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। इस प्रकार कहावतों के पीछे कोई न कोई प्रसंग रहता है।

यदि मन चंगा है तो कठौती में गंगा है —

। मन चंगा त कठौति मैं गंगा ।

विपत्ति सभी पर आती है। अच्छे दिनों के बाद विपद आती है। कहा जाता है कि अच्छे दिन नहीं रहे तो ये विपद के दिन भी नहीं रहेंगे। तात्पर्य यह है कि धैर्य रखना चाहिए, बुरे दिन शीघ्र ही उसी प्रकार समाप्त हो जायेंगे जैसे अच्छे दिन चले गये —

। सु दिन रहैं त, यो का दिन रौ ।

१- एक ही पूर्वज की संतानें जब अलग-अलग हो जाती हैं तो वे परस्पर "स्वारा" या "बिरादर" कहलाती हैं।

यह सामान्य धारणा है कि अधिक भोजन स्वास्थ्य के लिए श्रेयस्कर है। मिता-हार सुखकर होता है। इसी को लेकर कहावत है कि --"कम खाना और सुखी रहना"--

। कम खाण सुखी रौंणा ।

इसी अर्थ में अन्य कहावत है --

। कम खानु कम खानु ।

घर में चाहे कम आय हो या कम सुविधायें प्राप्त हों, तब भी घर में रहना अच्छा समझा जाता है --

। घरै कि आधि भलि ।

असामंजस्य होने पर कहा जाता है --"सारा शरीर नंगा और सिर में पगड़ी --

। सारै आङ नाङोड़ स्वारन पागोड़ ।

जिससे किसी प्रकार का लाभ होता है, उसकी बात भी सहन करनी पड़ती है। इस पर कहावत है कि "दुधारु गाय की लात सहनी पड़ती है"--

। दुधाळ की लात सहणी पड़न्द ।

व्यक्ति जिसके आश्रय में रहता है उसके गुण गाता है। प्रायः उसके प्रतिकूल आचरण नहीं करता है। आश्रयदाता चाहे कैसा भी हो, उसको आश्रित उचित ही कहता है। इसलिए कहा है कि "जिसका भात खाया, उसका गुण गाया।"--

खाली बर्तन थोड़ी-थोड़ी मात्रा से भी भर जाता है किन्तु छिद्र युक्त पात्र नहीं भरता है --

। रित भरीं, टोटो नि भरीन ।

थोड़ा जानना हानिकारक होता है, यह बात जन साधारण के द्वारा भी व्यक्त की जाती है --

। अधूरी विद्या जियाकु काल ।

यह एक नीति की बात है कि बेकार बैठने से बेगार उत्तम है --

। बेकार से बेगार भलि ।

पहाड़ों में दाड़िम (खट्टा अनार) को लेकर भी एक कहावत बन गयी है। दाड़िमें के सिर पर खड्ड जैसा स्थान देख कर कहा जाता है कि "दाड़िम अपने सिर में खुद खड्ड खोदता है। इसका अभिप्राय है कि फल अपने कार्यों का ही परिणाम होते हैं --

। दाड़िम आपन स्वार मैं खाड़ आफी खंणाद ।

प्राणियों की यह विशेषता है कि वे अपनों का पक्ष ही लेते हैं। इस बात को लेकर उक्ति है कि "हंसिया अपनी ओर ही काटती है"--

। आंखि आपनी तरफ काट्छि ।

अच्छे दिन सभी देखते हैं किन्तु बुरे दिन कोई नहीं देखता है। इसीलिए कहा जाता है कि "बच्चा होते हुए सबने देखा, वृद्ध पड़ते किसी ने नहीं देखा --

। नौलामण्ण सबनैल देख्यो, कन्यार पड़न कैल देख्यो ।

पर्वतीय प्रदेशों में अस्त होता हुआ सूर्य पर्वत शिखरों से जाता हुआ दिखाई देता है और इस प्रसंग को लेकर कहावत मिलती है कि --"धार में के दिन है"--

। धार में क दिन ।

इसका तात्पर्य है कि थोड़े दिन का जीवन शेष है ।

जब किसी में उच्च गुण या किसी की अन्य उच्च स्थिति नहीं होती है तो ऊंचे स्थान पर जाने से वह ऊंचा नहीं कहलाता है। इसलिए कहावत है कि "पर्वत शिखर पर जाने से कोई ऊंचा नहीं हो जाता"--

। धुर में बै बैठ उच्च कै हुन्छ ।

किसी कार्य में हाथ ही नहीं डाला जायेगा तो उसके परिणाम का प्रश्न ही नहीं उठता है। इसी कहावत है कि "न करो व्यापार और न होगी हानि"--

। नि करो व्योपार नि आयो टूवाटा ।

ढलानों के खेतों में पानी नहीं ठहरता है। अब कहा जाता है कि "ढलानों के खेतों का [illegible] पानी"--

। पधाड़ाक पातोक क्य पाणि ।

इस प्रकार रीति-नीति सम्बन्धी अनेक कहावतें भावों की रोचक एवं प्रभावशील अभिव्यक्ति में सहायक होती हैं।

५.१.८ अर्थ राजनीति विषयक कहावतें जन-जीवन में अपने सहज और स्वाभाविक रूप में मिलती हैं। कोई भी वार्तालाप हो, प्रसंग आते ही इन कहावतों द्वारा प्रयोजन व्यक्त करने में वक्ता को बड़ी सुविधा और सन्तोष का अनुभव होता है।

आर्थिक स्थिति की ओर व्यंग्य करते हुए कथन है कि भीतर कुछ भी नहीं है, बाहर दिखावा करते हैं --

। भितर न्हा कुछ भाण्भाव भ्यार लूगी भिलैति ताप ।

राज दरबार या राज सम्मान के प्रति जन साधारण के अपने अनुभव हुआ करते हैं। राजा अपने ही राज्य में कुशलतापूर्वक निवाह कर सकता है। इसलिए कहा

है, वे लोक की दृष्टि से बचते नहीं । कहा गया है कि " खाने के लिए बैठी नहीं और पेटी बांध कर चलीं" --

। खाण हुं नि बैठि, कमरन बांधि पेटि ।

५.१.१० यद्यपि सभी कहावतें व्यक्ति से सम्बन्ध रखती हैं, तथापि व्यक्ति को ही संकेत करके भी अनेक कहावतें प्रचलित हैं । इस प्रकार की कहावतों का संबंध प्राय: मनोविज्ञान पर आधारित रहता है । "दाढ़ी बचके वाले खा गये किन्तु मूछ वाले पकड़े गये " इसी कोटि की कहावत है --

। खै गै दाढ़ि वाल, पकड़ी गै मुछ वाल ।

उक्त कथन में तात्पर्य मुसलमान और हिन्दू से है ।

जैसा पारिश्रमिक दिया जायेगा, वैसा ही काम भी किया जायगा । यह बात बड़े रोचक ढंग से कही है, "कि जैसी दक्षिणा दोगे वैसा सप्तशती का पाठ होगा ।"

। नमस्तस्यै नमस्तस्यै,

जसि तेरि दक्षिण तसि मेरि सप्तशती ।सप्तशती।

५.१.११ कुछ कहावतें विशिष्ट युक्तियों से सम्बद्ध हैं । कोई कष्ट या बाधा आने पर यहां अनेक प्रकार की युक्तियां काम में लायी जाती हैं । कुछ समय पूर्व किसी के घर में कोई बड़ी चोरी हो जाती थी तो खोई गयी हुई वस्तु को खोज निकालने के लिए अनेक उपाय करते थे । इनमें से चावल के दाने मांगना, पानी पिलाना आदि अब भी प्रचलित हैं । इनमें अनेक अवसरों पर सफलता मिलती थी । इन उपायों में एक उपाय के अनुसार एक सूखी लकड़ी तुमड़ी ।तुंबी। में छेद करके उसके भीतर छिपकली, मेंढक आदि अनेक जीव बन्द करते थे और उसमें उड़द चावल आमंत्रित करते थे । वह तुमड़ी खुद आगे आगे चलने लगती थी और उस स्थान पर रुकती थी जहां चोरी या खोई हुई वस्तु मिलनी होती थी । इसी बात को लेकर कहावत है कि "तुंबी अपने मार्ग पर चल ।"--

। चल तुमड़ी बाटै बाट ।

एक बार एक जमींदार के पास एक कुवा था । वह अपने कुवे की बड़ी बड़ाई करता था । वह प्राय: कहा करता कि मेरे कुवे को देख कर बाघ भी डरता है । एक दिन उसके कुवे को बाघ ले गया । गांव वालों ने दिखाते हुए कहा कि देख तेरे कुवे को बाघ ले जा रहा है । बाघ ने कुवे को अपनी पीठ पर रक्खा हुआ था । उसे देखकर जमींदार बोला- "देख लो फिर भी मेरा कुवा ऊपर है ।" इस बात के आधार पर कहावत मिलती है --

। फिर लै म्यरै कुकुर माथ छै ।

५.१.१२ पर्वतीय समाज में भी समय के साथ-साथ परिवर्तन हो रहे हैं और नवीन

धारणाओं का समावेश हो रहा है किन्तु कहावतों में उनके प्रति आलोचनात्मक दृष्टि ही मुख्य है, नवीनता को भी वे इसी रूप में स्वीकार करती हैं। इसका कारण यह ज्ञात होता है कि कहावतों का निर्माण जिन व्यक्तियों के हाथों में है वे इसी दृष्टि-कोण के हैं। वे स्थानीय विश्वासों, परंपराओं और संस्कारों पर प्रकाश डालती हैं। उचित निर्देश और मार्ग-दर्शन भी इनके द्वारा लक्षित है। प्रत्येक स्थिति के लिए निजी अनुभवों के आधार पर एक विशिष्ट दृष्टिकोण बन जाता है और वह जीवन, जगत, समाज, आचार विचार आदि को उसी से निर्धारित कसौटी पर तौलता है। ऐसी कहावतों में कहीं अनुभूतियों के आधार पर समानता होती है और कहीं भिन्नता। कर्म का महत्व स्वीकार करते हुए भी भाग्य की प्रबलता स्वीकार की गयी है। इस कोटि की कहावतों में भाग्यवाद और कर्म फल एवं लोक सत्य की अभिव्यक्ति मिलती है। भवितव्यता घटित होकर रहती है जिसके उपयुक्त परिस्थितियां स्वतः बन जाती हैं। "तराजू के पलड़े कभी नीचे होते हैं कभी ऊपर —

। तराजुक पलड़ कभी तलि कभी मालि।

कुण्डली क्या देखना माथा देखना चाहिए —

। कुंडलि कि देखाणि, मुखनि देखाण।

कोई कहता है क्या खाऊँ और कोई कहता है किसमें खाऊँ —

। क्वे कूँ के खूं, क्वे कूं के में खूं।

बादल का चलना और धूप का ढलना कौन देखता है —

। ब्याराक चलन घोटक ढलन।

भाग्य का प्रभाव सबसे ऊपर है। अभागे मनुष्य का पुरुषार्थ भी व्यर्थ होता है। समय बलवान है, उसके सामने किसी की नहीं चलती। इस प्रकार के अनुभवों को लेकर भाग्य को अपरिवर्तनीय समझ लिया जाता है। भाग्य की प्रबलता दिखाने वाली कहा-वतें अकर्मण्यता की ओर नहीं ले जातीं अपितु भाग्यवादियों को व्यंग्य का आधार बनाते हुए कर्म की ओर प्रेरित किया जाकर गया है। कर्म ही दूसरे जन्म का भाग्य बनता है, अतः जन्मान्तर विषयक विश्वास व्यंजित है। जिस प्रकार सौन्दर्य में कोई ईर्ष्याभाव नहीं, उसी प्रकार कर्म को भी कोई नहीं बांटता। प्रत्येक व्यक्ति का अपना निश्चित कर्म होता है —

। रूप रीस में कर्म बांट में।

कर्मठ व्यक्ति ही प्रशंसा का पात्र है जो धनिए के एक-एक दाने में राई का दाना जोड़ता है या अपने ही कर्मों से पार उतरता है। तभी कहा जाता है — "कर्म का बच्चा।" —

। कर्मकि पोथी।

५.१.१३ उपदेशात्मक कहावतें

यह कहावतों का एक उपयोगी एवं शिक्षात्मक रूप है। इनमें अनेक उत्तम शिक्षाएं सन्निविष्ट हैं। उदाहरण :--

। सत्य देखि कभी न डर।	"सत्य से कभी न डरो।"
। भला काम कभै नि भुलीन।	"अच्छे कार्य कभी नहीं भूले जाते।"
। विद्या धन छ।	"विद्या ही धन है।"
। धैर्य सब काम बणानी।	"धैर्य से सब काम बनते हैं।"
। हर एक आपणा लिवी, परमात्मा सबका लिवी।	"प्रत्येक अपने लिए होता है और ईश्वर सबके लिए।"
। राजा छु जो प्रजाक सुख चा।	"राजा वह है जो प्रजा का सुख चाहता है।"
। कुलवन्त छौ जैक जाति आदर करौं।	"वही कुलवन्त है जिसका जाति में सम्मान होता है।"
। देशाक काम आवो।	"देश के काम आओ।"
। हाथ भी काम में डाल, जै ठीक समझ छा।	"हाथ उसी में डालो जिसको ठीक-ठीक समझते हो।"
। खर्च उतुकै करौ जतुक लैक सामर्थ छ।	"खर्च उतना ही करो जितनी सामर्थ्य है।"
। निन्दा करणोंकि आदतानि डालौ।	"निन्दा करने की आदत न डालिए" आदि

यद्यपि उक्त प्रकार के कथन अन्य क्षेत्रों में अथवा भाषाओं में भी मिलते हैं तथापि स्थानीय आचरण इनका लोकगत महत्व रखता है।

५.१.१४ कहावतें दोष के ही आधार पर भी प्रचलन में आती हैं। एक कहावत में ढोर की नाली (एक नाप) और कस्तूर के माना (नाली से छोटी नाप) की तुलना

ऊंची पत्नी और ठिगने पति से की गयी है --

। ग्वैरैकि गाति कत्यूरीक मानो ।

व्यवहार में `गाली` बड़ी होती है और `माना` तौल में छोटा किन्तु ग्वैर (पिठौरागढ़ के केन्द्रीय स्थल) में प्रचलित `गाली ` कत्यूर नामक स्थान में प्रचलित `माना` से तौल में छोटी है जो कि उचित नहीं है। अतः उक्त कहावत का प्रयोग औचित्य सूचित करता है। स्वाभाविक रूप में पति को पत्नी से ऊंचा होना चाहिए किन्तु यहां वह छोटा है। इस ऐतिहासिक तथ्य द्वारा एक सामाजिक स्थिति का उल्लेख मिलता है जिससे प्रकट होता है कि ग्वैर में पुरुष की अपेक्षा स्त्री का प्रभुत्व अधिक होता है। विवेच्य क्षेत्र पर सन् १७६० से लेकर सन् १८१५ तक गोरखा लोगों का राज्य रहा। ये लोग अत्यन्त क्रूर और अत्याचारी थे। गांव और कस्बों में आकर लोगों को घर से निकाल देना, आग लगा देना, लूट-पाट करना, खेती आदि उजाड़ना आदि उनके लिए साधारण बात थी। मारपीट करके बेगार तक लेते थे। उनके उक्त अत्याचारों को दृष्टि में रखते हुए कहा जाता है "कि क्या होता है गोरखों का राज्य ही क्या है" --

। के मैं हूं गोरखियोंक राज है गो ।

उक्त कहावत गोरखों के अत्याचार की ओर संकेत करती है और इसी प्रकार का व्यवहार के प्रसंग में इसका उल्लेख होता है।

रयत्याड़ी अल्मोड़ा नगर के निकट एक गांव है जो फल-फूल, दूध दही के लिए प्रसिद्ध है। पहले यहां सब्जी उत्तम हुआ करती थी। गंगोली क्षेत्र में बाघों का आतंक रहता था। इस आधार पर कहावत प्रचलित मिलती है कि "रयत्याड़ी का साग और गंगोली का बाघ।" --

। रत्याड़िक साग गैडोलिक बाग ।

इस प्रकार यहां की कहावतें जीवन की प्रत्येक दिशा से सम्बन्ध रखती हैं। इनसे जनमानस की अभिव्यक्ति दृष्टि के साथ साथ समाज का चित्र भी दृष्टिगत होता है, सांस्कृतिक झलक मिलती है और समाज को एक निश्चित निर्देश प्राप्त होता है।

"कांटा कांटे से निकलता है" --

। काणी काणाले निकलूं ।

कांडे ऊपर चढ़ी रहने से पैर फिसल जाता है --

। कांड रे चढ़ि बाट गैरछि ।

कच्ची लकड़ी झुक सकती है किन्तु सूखी नहीं —

। काच काठ न्युड़ि सुक्खो न मैं ।

लोहा का शत्रु लोहा है और बिरादर का शत्रु बिरादर —

। लुआड्काल लु श्मारक काल श्मार ।

आदि कहावतें एक निश्चित दिशा की ओर विचार और चिन्तन का मार्ग प्रशस्त करती है। इनमें उपदेश या नीति कथन की प्रवृत्ति अप्रत्यक्ष रूप में रहती है। प्रत्यक्ष रूप में भी यह प्रयोजन अभिव्यक्त होता है। जैसे 'किसी को भोजन दे देना चाहिए किन्तु आवास नहीं।' —

। गास दिया बासी नैं ।

तुम बालिश्त भर झुकोगे तो मैं हाथ भर झुकूंगा --

। तु बैत भरि न्हुड़लैं मैं हाथ भरि । आदि

कहावतें कर्तव्य अकर्तव्य की ओर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों रूप में संकेत करती है। ये व्यावहारिक ज्ञान की संचित राशि है। और इनका आधार अनुभवगत होता है।

५.२ मुहावरे

विस्तृत भावों को कम से कम शब्दों में प्रकट करना मुहावरों का काम है। कहावतों की भाँति ही मुहावरों का प्रयोग यहां के दैनिक जीवन में निरन्तर होता है। कहावत में एक पूर्ण अभिव्यक्ति एक पूर्ण वाक्य द्वारा होती है। मुहावरे बातचीत या बोली में प्रयुक्त होने वाले वे वाक्य खण्ड हैं जो अपनी उपस्थिति से समस्त वाक्य को सबल, सजीव और रोचक बनाते हैं। मुहावरा एक वाक्यांश होता है और उसकी सार्थकता वाक्य में प्रयुक्त होने पर ही सिद्ध होती है। यह अपने मूल रूप में प्रयुक्त होता है और शब्दों में परिवर्तन करने से अर्थ में भी परिवर्तन हो जाता है। लोक व्यवहार में जिन जिन वस्तुओं और विचारों को मनुष्य कौतूहल से देखा-समझा और बार-बार अनुभव किया जाता है, वे शब्दों में बंधकर मुहावरे कहलाते हैं। इनकी उत्पत्ति के मूल में प्रयत्नलाघव की प्रवृत्ति रहती है। मुहावरे भावात्मक और अत्यन्त संक्षिप्त मिलते हैं। रोचक और चुस्त होने के कारण पाठकों या श्रोताओं पर इनका तत्काल प्रभाव पड़ता है। यहां प्रत्येक प्रसंग, प्रत्येक व्यवहार मुहावरों के प्रयोग को समेटे हुए है। मुहावरों के भी अनेक प्रकार मिलते हैं। क्रिया, प्रकृति, वस्तु, स्थान आदि से संबंधित मुहावरे अलग-अलग व्यक्तित्व लिए हुए

है । समाज, धर्म, रीति-नीति, शिक्षा-उपदेश, कृषि-व्यवसाय आदि विषयों के आधार पर ये विविधतः विभाज्य हैं । इनके अनुशीलन से स्थानीय जीवन तथा समाज की विविध परंपराओं, रूढ़ियों एवं रीति-नीति की झांकी मिलती है । समाज की आर्थिक स्थिति पर प्रकाश पड़ता है ।

५.२.१ फल पेड़ पर लगते हैं आकाश में नहीं । कोई वस्तु प्राप्त होना असम्भव होता है तो मुहावरा है कि 'आकाश के फल' --

। अकाशाक फल । 'आसमान के फल'

ईर्ष्या द्वेष समाज में साधारण बात है । अपने मार्ग से किसी को हटाने के लिए उसी भांति प्रयत्न किया जाता है जैसे आंख में पड़े तिनकों को हटाना । इसको आधार लेकर कहा जाता है --

। आखिक काड़ । 'आंख का तिनका'

निराशा में चारों ओर शून्य ही शून्य दृष्टिगत होता है --

। आकाश ताकिं । 'आकाश देखना'

कोई व्यक्ति अधिक खाता है तो उसके लिए मुहावरा प्रयुक्त होता है --

। खानाहू स्याल । 'बहुत अधिक खाने वाला'

अभिधा से उक्त वाक्यांश का अर्थ होता है -- 'खाने वाला सियार ।'

विवाह के उपरान्त व्यक्ति अनेक उत्तरदायित्वों के बन्धन में पड़ जाता है । पत्नी की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बंधे हुए नियम और कार्य करने पड़ते हैं । विवाह करना उसी प्रकार है जैसे किसी के पैर उलझा देना । तभी कहा जाता है --

। खुटा उलझ्यूणो । 'पैर उलझना ।'

असम्भव बात के लिए कहा जाता है --

। ढुड में जड़ । 'पत्थर में जड़'

श्राद्ध करने के विषय को आधार मानकर मुहावरा प्रचलित है --

। तीन पिढ़ी सराद करणा । 'तीन पीढ़ी का श्राद्ध करना ।'

समाज में ऐसे लोगों की कमी नहीं होती जो हृदय में भिन्न भाव रखते हैं और बाहर से दूसरे भाव प्रकट करते हैं । इसके लिए उपयुक्त उक्ति है --

। धुकाक आंशा लगुणा । 'धुक के आंसू लगाना ।'

संग साथ का बहुत महत्व है -- । अच्छे से अच्छा भोजन जैसे 'दूध भात' छोड़ा जा सकता है किन्तु संग साथ नहीं छोड़ना चाहिए --

। दूध भात छोड़नी क्नोड़ी न छोड़नी ।

" दूध-भात छोड़ देना, साथ न छोड़ना"

लज्जित होने के प्रसंग में कहा जाता है --

। नाक कन ।   'लज्जित होना '

"कौनी " यहां एक अनाज का नाम है। यह रोगी को पथ्य के रूप में दिया जाता है। अत: यह बहुत उपयोगी वस्तु है। पुराना होने पर इसकी और भी उपयोगिता बढ़ जाती है । तभी कहा जाता है --

। पुरानी कौनी । "पुराना कौन (एक अनाज)"

व्यर्थ की बात की ओर प्रयत्नशील होने या बहुत ऊंचे की ओर संकेत करते हुए मुहावरा है --

। बड़ल ठाड़[1] लहुनी ।

विपत्ति प्रत्येक मनुष्य पर आती है। जैसे तैसे विपत्ति के दिन पूरे करने होते हैं। तभी कहा गया है --

। काल दिन पूरा करणा ।   "काले दिन पूरे करना ।"

५.२.२   इस प्रकार मुहावरे यहां जीवन क्षेत्र के प्रत्येक प्रसंग से जुड़े हुए और पर्याप्त संख्या में मिलते हैं। इनसे समाज की भिन्न स्थितियों पर प्रकाश पड़ता है। कुछ अन्य मुहावरे उदाहरण स्वरूप इस प्रकार हैं --

। घर फुकनी ।   'घर फूंक होना ।'

उक्त मुहावरा ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होता है जो अपनुस्व स्वयं नष्ट होने के कारण अपनी मर्यादा खो बैठता है।

। फं फां करनी ।   "फूं फां करना ।"

। घुटुक खानी ।   "घूंट घूंट पीना ।"

। खै खाड़ खालन ।   "खाकर नष्ट करना ।"

। भट्ट घुटि खान ।   "भट्ट घुटकर खाना ।"

। खुड़ खानी ।   "सूई खोचना"

१- तोरई, ककड़ी, कद्दू आदि की बेलें लम्बी होती हैं। उन्हें सहारा देने के लिए पेड़ की मजबूत शाखायें जो 'ठाडों' कही जाती हैं बेलों के निकट जमीन में गेढ़ा दी जाती हैं। इन्हीं के सहारे उक्त बेलें ऊपर को उठती हैं और पूरी शाखा में फैल जाती हैं।

। पिंडी बासणी । "पिनालू उबालना"

सामाजिक प्रथाओं को प्रकट करने वाले मुहावरे बड़ी संख्या में मिलते हैं। उदाहरण :—

। चौक भैटण । "चौक बैठना ।"

। शांक बजून । "शंख बजाना"

। शांक घांट बजून । "कोई मंगल कार्य आरंभ करना ।"

। मुनी जान । "हक्का बक्का रह जाना ।"

। गल काटन । "अन्याय करना"

। माट्टि पलीद करनी । "नीचा दिखाना"

। छूत लागनी । "छूत का प्रभाव होना"

। छिम्पी करनी । "छींकना"

। फाड़ फोड़ हुनी । "लड़ाई होना"

। बाच हालन । "हानि पहुंचाने का प्रयत्न"

। स्याल बासन । "अशुभ सूचक"

। अङाल हालन । "आलिंगन करना ।"

। हूं सैलन । "हुक्का पीना ।"

। छोड़ि छैलन । "तमाशा करना ।"

अशुभ विचार पर यहां बहुत ध्यान दिया जाता है। ।स्याल बासनी ।, ।कावड़ बासनी । आदि से सियार, कौवे आदि के बोलने पर ही अशुभ की सूचना ग्रहण की जाती है। भद्रा में कोई कार्य करना असफलता का पूर्व निर्देश है। इसलिए कहा जाता है — ।भद्रा करनी । । सामान्य जनता का विश्वास है कि मरते समय गोदान करने पर परलोक सुधरता है, वह गाय की पूंछ पकड़कर पार उतरता है। ।गोरु क पुछड़ पकड़न । मुहावरा इसी लोक विश्वास को प्रकट करता है। जब कोई व्यक्ति एकाएक पागलों की भांति प्रलाप करने लगे तो उसे कोई भूत-प्रेत लगा हुआ माना जाता है —

। भूत लागन । "भूत लगना"

इनके अतिरिक्त व्यक्तिगत विशेषताओं पर प्रकाश डालने वाले मुहावरे भी मिलते हैं :—

शाति फुलुन	"छाती फुलाना -- अहंकार के अर्थ में"
लाड़िल हुन	"प्यारा होना"
गांठ बाधन	"गंठ बांधना"
फाकरि थामन	"गाल नोचना"
मुख लून	"मुंह लगाना"

कुछ मुहावरे विवेच्य बोली की विशिष्ट अभिव्यंजना की कोटि के हैं। ये प्रस्तुत बोली के मौलिक उदाहरण हैं --

भरे लागनो	"बहुत याद आना।"
मांठा टूटनो	"बहुत परिश्रम करना।"
उतलाहट हुनो	"उतावली होना।"
स्यारा हुनो	"खिसिया जाना"
टटाट करणा	"चिल्ला चिल्ला कर कहना।"
ऊँल कडौल करनो	"इधर उधर की बात करना।"
ल्याड़ा खाणो	"क्रुद्ध होना।"
चांछ लूलो	"चोट लगना।" आदि

इस प्रकार अनेक मुहावरे लोक वाणी में नित्य व्यवहृत होते रहते हैं और समाज, संस्कृति एवं स्वभाव की अभिव्यक्ति में सहायक होते हैं।

५.२ ऐना

ऐना पहेली कोटि के होते हैं। इन्हें `ऐणा` या `आणा` भी कहते हैं। `ऐना` शब्द चित्र है। प्रश्नकर्ता उस चित्र को उपस्थित करके अर्थात् पूर्व पक्ष की स्थापना करके दूसरों से उसके उत्तर पक्ष का उत्तर चाहता है। `ऐना` या `आणा` का उद्देश्य प्रधानतः मनोरंजन रहता है। इनमें छिपाने की प्रवृत्ति रहती है। जिससे बुद्धि कौशल द्वारा उनके मर्म को जाना जा सके। मनोरंजन के साथ-साथ इनसे लोक संस्कृति की अभिव्यक्ति होती है। `ऐना` अनेक प्रकारान्तरों में मिलते हैं। खान-पान प्रकृति, जीव, वस्तु, शरीर आदि से संबंधित `ऐना` बहु प्रचलित हैं। प्रकारों का निर्णय पहली के उत्तर के अनुसार किया है।

५.२.१ जीव विषयक `ऐना`।

इस कोटि की पहेलियों में मनुष्य, पशु-पक्षी आदि तथा इनके अंगों पर प्रश्न

किये जाते है। उदाहरण —

'किसी समय खेल खेल में इसके कारण सिर फूटते हैं —

।कनवें खेल खेलें थैक बीत स्यार फुटनी ।   "डंडी "

वह पक्षी कौन है जो रोज प्रातः अपने काका ।चाचा। को आवाज देता है -

। हु चड़ो को बुलाले जो रात्रि ब्याल रोज
बापन काक कैं याद लूं ।   "कौवा"

वह जानवर कौन सा है जिसको मनुष्य नाम रखता है —

। हु जानवर को कबै मैंस नाँ धरनी ।   "गधा"

वह मनुष्य कौन है जिसे सभी हेय समझते हैं —

। हु मैंस की भैसी सबै ख्याल करनी ।   "मूर्ख "

चार अक्षर का शब्द है कि लेकिन जिसके लाता है, खून खाता है। घर में रखा है, खाट में सोता है। मार मार के निकाला जाता है। तुमने देखा ही है, नाम बताइए —

। चार आंखर नौक शब्द छ,
जेके लागं चसौड़ि तुणि खाईं,   "खटमल"
कभ्णा ह्वं घरैं रैंछ, खाट में पड़छ,
मार मार   निकालन हूं,
तुमर घेखिये मैं, नौ बतावो ?

एक माँ और दो पुत्र थे, तीन रोटियाँ थीं। पूरा पूरा खा गये, यह कैसे हुआ —

। मैं — च्यालों मैं
तीनै रवाट् मैं।
पुर पुर खै गे
यो कसि है गे ? ।   "माँ, दो भाई "

वह ताल कौन सा है जिसे ताल तो कहते हैं किन्तु उसमें पानी की बूंद भी नहीं रहती है —

। एक ताल को छ जथै तालव कूंनी मगर
जमें पाणिक छिट लै न्हाति ? ।   "काथ"

पक्षी से झाड़ हुए, झाड़ से पक्षी हुए, नाम बताइये, वह क्या है —

। चाड़ा बटि झाड़ मै,
झाड़ बटि चाड़ा मै,

बनी है जो जीवनस्तर के अनुकूल है या जिनका ग्रामीण वातावरण एवं जनजीवन के साथ घनिष्ठ संपर्क है। सभी वस्तुएं प्रायः सामान्य व्यवहार की हैं। एक ही वस्तु के लिए अनेक पहेलियां भी कही जाती हैं। पहेलियां बौद्धिकता प्रधान होते हुए भी भावों की मधुर अभिव्यंजना से युक्त हैं। मुख्य भाव आश्चर्य या विस्मय का है। हास्य भी उपस्थित रहता है।

५.३.४ शहरों की अपेक्षा ग्रामों में पहेलियां अधिक निर्मित एवं प्रचलित होती हैं क्योंकि ग्रामीण व्यक्ति की कल्पना में नये नये उपमान आते रहते हैं। ग्रामीण जन इनमें विशेष अभिरुचि प्रदर्शित करते हैं। प्रश्नकर्ता की पहेली में वस्तु के गुण, रूप रंग, आकार प्रकार, उपयोग या स्वभाव के बारे में श्लेषमूलक संकेत रहता है। उसी को ध्यान में रखते हुए मूल वस्तु की खोज की जाती है। मनोरंजन, बुद्धि कौशल, कलात्मकता और कौतूहल इन पहेलियों की विशेषतायें कहीं जा सकती हैं।

५.४ आलोच्य अंचल में उपलब्ध लोकोक्ति साहित्य के उपर्युक्त विवेचन से यह सुस्पष्ट है कि स्थानीय जन-जीवन की जितनी प्रत्यक्ष झांकी लोकोक्तियों के माध्यम से हो सकती है, उतनी अन्य युक्तियों द्वारा नहीं। स्थानीय धर्म, रीति-नीति, आचार-व्यवहार, प्रकृति, खान-पान, राजनीति, अर्थ व्यवस्था, स्वभाव आदि विविध मानवीय पक्षों पर लोकोक्तियों द्वारा प्रकाश पड़ा है और साथ ही उनसे जन-जीवन अविराम होकर प्रेरणा प्राप्त करता रहा है। लोकोक्तियां शब्दावली की भांति ही स्थानीय मूल की तथा आगत दोनों कोटि की मिलती हैं। स्थानीय मूल की लोकोक्तियां क्षेत्रीय विशेषताओं तथा मौलिकताओं से युक्त मिलती हैं तथा आगत लोकोक्तियां अन्य भाषाओं एवं बोलियों में भी उपलब्ध उक्तियों से समानता रखती हैं। इस कोटि की उक्तियां भाषा, संस्कृति तथा संपर्क सूत्र के आदान-प्रदान द्वारा आयी हैं और स्थानीय परिवेश में घुल मिलकर क्षेत्रीय गुणों से युक्त हो गयी हैं। इनमें एकाधिक रूपों का समन्वय मिलता है। वस्तुतः लोकोक्ति साहित्य यहां की संचित ज्ञान राशि का प्रतीक है, समाज और संस्कृति का प्रकाशक है तथा भावी पीढ़ी प्रेरक हैं।

---o---

परिशिष्ट

सहायक ग्रन्थ

परिशिष्ट

सहायक ग्रन्थ

अंग्रेजी

१- ऐन इन्ट्रोडक्शन टु डिस्क्रिप्टिव लिंग्विस्टिक्स -- एच०ए० ग्लीसन, १९६१ ।

२- ए कोर्स इन माडर्न लिंग्विस्टिक्स -- सी० एफ० हाकेट, १९५८ ।

३- ए० ए मैनुअल आफ फोनोलाजी -- ,, ,, १९५५ ।

४- ऐन आउट लाइन आफ इंग्लिश फोनेटिक्स -- डेनियल जोन्स, १९६० ।

५- ए ग्रामर आफ दि हिन्दी लैंग्वेज -- एस० एच० केलाग, १९३८ ।

६- द वर्ड ज्याग्रेफी आफ द ईस्टर्न यूनाइटेड स्टेट्स -- १९४९ ।

७- एन इन्ट्रोडक्शन टु लिंग्विस्टिक साइंस -- स्टर्टेवान्ट -- १९४७ ।

८- एसेज इन लिंग्विस्टिक्स -- जे० एच० ग्रीनबर्ग, १९५७ ।

९- इवोल्यूशन आफ अवधी -- डा० बाबूराम सक्सेना, १९३७ ।

१०- फाउन्डेशन्स आफ लैंग्वेज -- एल० लुइस ग्रे, १९३९ ।

११- फन्डामेन्टल्स आफ लैंग्वेज -- आर० जैकोब्सन एण्ड एम० हाल ।

१२- जनरल फोनेटिक्स -- आर० एम० एस० हेफनर, १९४९ ।

१३- इन्ट्रोडक्शन टु कम्पैरेटिव फिलोलाजी -- पी० डी० गुणे, १९६२ ।

१४- इन्ट्रोडक्शन टु लिंग्विस्टिक स्ट्रक्चर्स -- ए० आर्चीबाल्ड हिल ।

१५- लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया -- जार्ज ए० ग्रियर्सन ।
वाल्यूम ९, भाग १ ।

१६- लैंग्वेज, थाट एण्ड रियलिटी (सं० जान,बी० कैरोल) बैंजामिन ली ह्वार्फ १९५६

१७- लैंग्वेज ; इट्स नेचर, डेवलपमेंट एण्ड ओरिजिन -- जेस्पर्सन ।

१८- मेथड्स इन स्ट्रक्चरल लिंग्विस्टिक्स -- जेड० एस० हैरिस, १९५१ ।

१९- मार्फोलाजी ; द डिस्क्रिप्टिव एनालिसिस आफ वर्ड्स
-- ई० ए० नाइडा, १९४९ ।

२०- माडर्न लिंग्विस्टिक्स -- साइमन पाटर

२१- ओरिजिन एण्ड डेवलपमेंट आफ बंगाली लैंग्वेज -- एस०के० चटर्जी, १९२६ ।

२२- आउट लाइन आफ लिंग्विस्टिक्स एनालिसिस -- बी० ब्लाक एण्ड ट्रेगर, १९४२

२३- प्रैक्टिकल फोनेटिक्स फार स्टूडेन्ट्स आफ अफ्रीकन लैंग्वेजेज
-- डी० वेस्टरमान एण्ड आइ०सी० वार्ड ।

२४- फोनेटिक्स - ए टेकनीक फार रिड्यूसिंग लैंग्वेज टू राइटिंग
— केनेथ पाइक, १९४७ ।

२५- फोनेटिक्स - ए क्रिटिकल एनालिसिस आफ फोनेटिक्स थ्योरी एण्ड ए टेकनीक फार द प्रैक्टिकल डिस्क्रिप्शन आफ साउण्ड्स
—केनेथ, पाइक, १९४३ ।

२६- द स्टडी आफ लैंग्वेज — ए सर्वे आफ लिंग्विस्टिक्स एण्ड रिलेटेड डिसिप्लीन्स इन अमेरिका — जान बी० कैरोल, १९५५ ।

२७- द स्ट्रक्चर आफ अमेरिकन इंग्लिश — डब्ल्यू० नेल्सन फ्रान्सिस, १९५८ ।

२८- द स्ट्रक्चर आफ इंग्लिश : ऐन इन्ट्रोडक्शन टु द कन्स्ट्रक्शन आफ इंग्लिश सेन्टेन्सेज — चार्ल्स फ्रायस, १९५८ ।

२९- द फोनीम : इट्स नेचर एण्ड यूज — डेनियल जोन्स, १९५० ।

३०- द फोनोलोजी एण्ड मार्फोलोजी आफ मराठी पी०एच०डी० थीसिस, कार्नेल विश्वविद्यालय, इथाका — ए० आर० केलकर । १९५८ ।

३१- द फोनोलोजी एण्ड मार्फोफोनेमिक्स आफ सिन्धी
—ई०एम० खुबीचन्दानी ।

<u>अंग्रेजी पत्रिकाएं</u>

१- इण्डियन लिंग्विस्टिक्स — लिंग्विस्टिक सोसायटी आफ इण्डिया, पूना ।

२- लैंग्वेज — लिंग्विस्टिक सोसायटी आफ अमेरिका ।

३- माडर्न फिलोलोजी — यूनिवर्सिटी आफ शिकागो, यू० एस० ए० ।

<u>हिन्दी ग्रंथ</u>

१- ध्वनि विज्ञान — गोलोकबिहारी धाल

२- निमाड़ी और उसका साहित्य — डा० कृष्णलाल हंस, १९६० ।

३- बुन्देली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन — डा० रामेश्वरप्रसाद अग्रवाल १९६३ ।

४- बुलन्दशहर और खुरजा तहसीलों की बोलियों का संकालिक अध्ययन
— डा० म० ऊ० जैन, १९६७ ।

५- ब्रजभाषा — डा० धीरेन्द्र वर्मा, १९५४ ।

६- मथुरा जिले की बोली — चन्द्रभान रावत, १९६७ ।

७- मध्य पहाड़ी का भाषाशास्त्रीय अध्ययन — डा० गोविन्द चातक, १९६६ ।

८- भाषा विज्ञान की रूपरेखा — डा० हरीश शर्मा - १९५८ ।

९- भाषा शास्त्र की रूपरेखा — डा० उदयनारायण तिवारी, सं० २०२० ।

१०- हिन्दी व्याकरण — कामताप्रसाद गुरु, ५ वां संस्करण, सं० २०१४ ।

११- हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास — डा० उदयनारायण तिवारी, सं० २०१२ ।

१२- हिन्दी भाषा — डा० भोलानाथ तिवारी ।

------o------